श्री गुरु अरजन देव जी विशेषांक

 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

चेत्र-वैसाख, संवत् नानकशाही ५४३
अप्रैल 2011 वर्ष ४ अंक ८

संपादक *सहायक संपादक*
सिमरजीत सिंघ सुरिंदर सिंघ निमाणा
एम. ए., एम. एस. सी. *एम. ए. (हिंदी, पंजाबी, अंग्रेजी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन: 0183-2553956-60, फैक्स: 0183-2553919



एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

जग अउरु न याहि महा तम मै अवतारु उजागरु आनि कीअउ ॥
तिन के दुख कोटिक दूरि गए मथुरा जिन्ह अंम्रित नामु पीअउ ॥
इह पधति ते मत चूकहि रे मन भेदु बिभेदु न जान बीअउ ॥
परतछि रिदै गुर अरजुन कै हरि पूरन ब्रहमि निवासु लीअउ ॥
जब लउ नही भाग लिलार उदै तब लउ भ्रमते फिरते बहु धायउ ॥
कलि घोर समुद्र मै बूडत थे कबहू मिटि है नही रे पछुतायउ ॥
ततु बिचारु यहै मथुरा जग तारन कउ अवतारु बनायउ ॥
जप्यउ जिन्ह अरजुन देव गुरू फिरि संकट जोनि गरभ न आयउ ॥ *(पन्ना १४०९)*

भट्ट साहिबान के सवैयों में शामिल इस पावन सवैये में भट्ट मथरा जी पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज द्वारा प्रभु-नाम को व्यापक स्तर पर कलियुग के अज्ञानता के अंधकार भरे जीवों के भटकाव की संभावना वाले समय में प्रचारने-प्रसारने से जगत-कल्याण करने के महान कारनामे को करने का वर्णन करते हुए उनकी प्रभु-नाम से अभिन्नता का गुण गायन करते हैं।

भट्ट मथरा जी कथन करते हैं कि संसार में अज्ञानता का बड़ा व्यापक पासार हुआ पड़ा है। इस घोर अंधकारमयी स्थिति में संसार को ज्ञान-प्रकाश में ले जाने के सक्षम महापुरुष यकीनी रूप में श्री गुरु अरजन देव जी ही तो हैं न कि कोई अन्य। हे मथरा! उनके करोड़ों ही दुख दूर हो गए जिन्होंने गुरु जी से नाम का अमृत पीया है।

भट्ट मथरा जी आगे कथन करते हैं कि ऐ मेरे मन! यही एक मात्र मार्ग है संसार के आत्मिक कल्याण का जो गुरु जी ने बनाया है, अत: तू भी इस मार्ग को अवश्य पकड़, इसी मार्ग पर चल। कहीं ऐसा न हो कि तू इस मार्ग को अपनाना ही भूल जाए। कहीं गुरु जी और हरि में फर्क न समझ लेना! गुरु अरजन साहिब के हृदय में पूर्ण ब्रह्म-ज्ञान समाया है। परमात्मा का उनके हृदय में प्रत्यक्ष रूप में निवास है।

भट्ट साहिब सच्चे गुरु की शरण में आने से पहले का अपना निज उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जब अभी मेरे माथे पर मेरा अच्छा भाग्य नहीं प्रकट हुआ था तब तक मैं भ्रमता फिरता था, अनेकों स्थानों पर दौड़-दौड़ कर जाता था। सच है कि कलियुग रूपी डरावने समुद्र में मैं डूबा हुआ था। हर समय मन पर पश्चाताप भारी पड़ा रहता था।

अंत में भट्ट मथरा जी अपने आप को और अधिक परिपक्व कराने के मनोभाव से संबोधन करते हैं कि हे मथरा! तू यह वास्तविकता भली-भांति विचार ले, स्वीकार ले कि परमात्मा ने सारे संसार को भवसागर से पार लगाने हेतु गुरु अरजन साहिब को महापुरुष बना कर भेजा है। अत: कलियुग के जिन-जिन अच्छे भाग्य वाले लोगों ने श्री गुरु अरजन देव जी को स्मरण किया वे फिर पुन: जन्म चक्र में नहीं आये, वे अध्यात्म की सर्वोच्च मंजिल पाने में सफल हुए हैं, उनकी भटकना समाप्त हो गई है। 



हरियाणा के गांव होंद चिल्लड़ का दुखदायक सिक्ख नसलकुशी कांड

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा सृजित सिक्ख पंथ कूड़-शक्तियों का स्वाभाविक ही विरोध करने वाला है। यह सदैव सरबत्त का भला चाहता ही नहीं बल्कि इसको अमल व व्यवहार में भी लाता है। सरबत्त के भले की इच्छा करने तथा इसको व्यवहार में लाने वाले सिक्ख पंथ के ही विरुद्ध उसके 'अपने देश' में नसलकुशी का प्रचलन घटना अति दुखदायक और शर्मनाक है। सिक्ख पंथ ने जिस देश के गले में सदियों से पड़ी हुई गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए सबसे आगे होकर काम किया और सबसे अधिक कुर्बानियां दीं उस देश के बहुसंख्यक लोगों का सत्ता पर काबिज होकर उसी पंथ को सामूहिक आक्रमणों का निशाना बनाना अति कृतघ्नता ही तो है! प्रारंभिक दोष बहुसंख्यक लोगों के प्रतिनिधि कुछ एक शासकों-प्रशासकों का है जो 'लोकतंत्र' के नाम पर सदैव ही घिनौनी राजनीति खेलते हैं, लोगों को मजहब, नसल, जाति, क्षेत्र और भाषा आदि के सवालों पर एक-दूसरे के साथ लड़ाते हैं, स्वयं ही समाज में एक दूसरे के प्रति घृणा एवं नफरत का विष घोलते हैं; इससे भी कई कदम आगे जाते हुए जर-खरीद गुंडे भेजकर देश में सुख-शांति के साथ रह रहे तथा देश की प्रगति में कई प्रकार से योगदान डाल रहे लोगों का जनसंहार करते हैं।

हमारे देश में उपर्युक्त घोर अन्याय दशकों से बरत रहा है। जून १९८४ और नवंबर १९८४ में सिक्ख पंथ पर तथाकथित अपनों ने सिक्ख जनसंहार का जो कुचक्र चलाया वह घोर अन्याय का शिखर कहा जा सकता है। भारत में हुए इस सिक्ख जनसंहार की अधिकांश घटनाएं वक्त की धूल तले दबकर रह गई हैं। हरियाणा प्रांत के वर्तमान रिवाड़ी जिले के होंद चिल्लड़ नामक गांव के सिक्ख परिवारों की नसलकुशी का कारा शासकों-प्रशासकों तथा उनके कारिंदों ने करने के बाद इसके सच को प्रकट होने से भी अब तक लगभग छुपाये रखा है। इस त्रासदी के विवरण लगभग २६ वर्षों के एक बहुत लंबे समय के बीत जाने के बाद कुछ साहस एवं जुर्रत दिखाने वाले व्यक्तियों के विशेष प्रयासों के कारण सामने आ रहे हैं। विशेषत: देश के प्रिंट मीडिया द्वारा लगभग छुपे रहे इस घोर जुल्म को जग-जाहिर करने का क्रम बहुत देरी के साथ उठाया एक सही कदम कहा जा सकता है।

२ नवंबर, १९८४ को हरियाणा के रिवाड़ी जिले में पड़ते गांव होंद चिल्लड़ की सारी की सारी सिक्ख आबादी को मार-मिटाने के लिए एक बहुत ही योजनाबद्ध रूप में लगभग ३०० जर-खरीद गुंडों द्वारा आग का खेल तथा खून की होली खेले जाने के सच से अब परदा उतरा है। गांव के सरपंच (सभापति) श्री धनपत सिंह यादव नामक एक मौके के गवाह के बताने के अनुसार प्रात: १० बजे के करीब २५० से ३०० तक की संख्या में हिंसक भीड़ बाहर से रोडवेज की बस और ट्रकों द्वारा लाकर इस गांव में उतारी गई। इस भीड़ के पास लोहे की राडें और डीजल-पेट्रोल की भरी हुई कैनियां (पीपे) आदि थीं। भीड़ को उपर्युक्त गांव से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर उतारा गया। गांव होंद में १३ सिक्ख परिवार रह रहे थे। ये सभी के सभी पाकिस्तान बनने के समय उधर से इधर आकर बसे हुए थे। होंद सहित तीन गांवों के सरपंच तथा इस भले पुरुष ने हिंसक भीड़ को अपने लगभग पांच साथियों सहित निर्दोष सिक्खों पर आक्रमण करने से रोकने का हर संभव प्रयास किया, परंतु उसको इस परोपकारी मिशन में सफलता न मिल सकी। इस प्रकार सिक्ख महिला-पुरुष-बच्चे ३२ लोग हिंसक भीड़

ने विभिन्न प्रकार से प्रताड़ित कर पल भर में खत्म कर दिये। इस उपलक्ष्य में स्थानीय थाने में रिपोर्ट भी दर्ज हुई, परंतु इस दुखदायक कांड पर पर्दापोशी का सिलसिला कई स्तरों पर चलाया गया। सिक्खों के प्रिय गुरुद्वारा साहिब की इमारत को भी आग लगाकर सर्वसांझीवालता के प्रतीक पावन धर्म स्थान का घोर अपमान किया गया। संबंधित सिक्ख परिवारों के कुछ सदस्य जैसे-कैसे अपनी जानें तो बचाने में सफल हो गए, परंतु स्वयं इतने बड़े दुखदायक सदमे के कारण न तो वे वहां रहने के लिए मानसिक-आत्मिक तौर पर तैयार थे और न ही उनको सरकारी अधिकारियों द्वारा सुरक्षा का आवश्यक विश्वास ही दिलाया जा सका। कातिल आक्रमणकारियों ने मकान तो खंडहर बना ही दिये थे साथ ही स्थानीय स्वार्थी तत्वों ने पीड़ित लोगों को आर्थिक लूट-खसूट का भी शिकार बनाया। जमीन रूपी संपत्ति भी इनसे कौड़ियों के भाव छीन ली गई। शेष बचे सदस्य मुख्यतः बठिंडा और लुधियाना (पंजाब) में आकर रहे और दुख-संताप को सीने में छुपाये हुए रोजी-रोटी के लिए जैसे-कैसे हाथ-पांव चलाते रहे।

कहा जाता है कि वक्त जख्मों को कुछ हद तक भर देता है, परंतु जो जख्म 'अपनों' द्वारा दिये जाते हैं, उनका भरना बहुत मुश्किल होता है। जिस तन को लगती है उस तन में निवास करने वाली आत्मा को ही इस पीड़ा की अनुभूति होती है। सच्ची बात तो यह है कि इन दुखियों को अपना दुख ठीक तरह से बताने का समय तथा माहौल ही नहीं मिला। अब, जब कि दुखदायक जनसंहार से पर्दा उठा ही है तो हरियाणा की वर्तमान राज्य सरकार और केंद्रीय सरकार का यह संवैधानिक फर्ज बनता है कि वो दोषियों की पहचान करके उनको गिरफ्तार करे और उनको अनुकूल दंड दिलाये।

यह एक ऐसा कांड है जिसके दोषियों की पहचान हो सकती है। इस कांड के चश्मदीद गवाह भी विद्यमान हैं। पीड़ितों को न्याय दिलाने के गंभीर प्रयत्न होने चाहिए।

इस जनसंहार के बारे में आवश्यक जानकारी एकत्रित करने के लिए सिक्खों की चुनाव-प्रक्रिया द्वारा बनाई गई प्रतिनिधि संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने संबंधित जनसंहार के घटना-स्थल पर जहां अपना प्रतिनिधि-मंडल भेजकर आवश्यक जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया वहीं शहीद किये गए सिक्खों की बिछुड़ी आत्माओं की आत्मिक शांति के लिए श्री अकाल तख्त साहिब, श्री अमृतसर में ४ मार्च, २०११ को श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के बाद सामूहिक अरदास की गई। इसमें सभी सिक्ख जत्थेबंदियां/संगठन शामिल हुए और उन्होंने संस्था को भरपूर तथा अर्थपूर्ण सहयोग दिया। संस्था ने अपनी क्षमता तथा साधनों के अनुरूप पीड़ित परिवारों को अनुकूल आर्थिक सहायता भेंटा के रूप में देकर अपने कर्त्तव्य को निभाने का प्रयास किया है, परंतु पीड़ितों को अनुकूल न्याय और दोषियों को कठोर दंड जितनी जल्दी संभव हो सके, देना या दिलाना सरकार का कर्त्तव्य है ताकि आगे से कोई भी ऐसा कार्य करने का प्रयास न कर सके, चूंकि देर तो पहले ही बहुत हो चुकी है।

एक न्यायिक कमीशन बनाकर उस कमीशन को बिना किसी बाहरी दबाव के सही ढंग से काम करने की इजाजत दी जाए और कमीशन द्वारा जांच का काम निश्चित किये गए समय में निपटाने के लिए अनुकूल माहौल की सृजना भी की जाए। जनसंहार कांड से पर्दा उठाने वाले पत्रकार पर आक्रमण का समाचार भी मिला है जो बहुत बुरी बात है तथा प्रेस की स्वतंत्रता छीनने का कुकृत्य है। ऐसी संभावी घटनाओं को रोकने के लिए कई स्तरों पर संबंधित पक्षों को चेतनता, सावधानी, क्रियाशीलता दिखानी पड़ेगी। इस कांड से पर्दा उठाने वाले पत्रकार भाई तो हार्दिक शाबाश के अधिकारी हैं। सिक्ख जनसंहार के इस कांड संबंधी आयोजित अरदास समागम में श्री अकाल तख्त साहिब के माननीय जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ की ओर से आत्म-रक्षा हेतु शस्त्रबद्ध होने की दी प्रेरणा को व्यवहार में लाना आज के वक्त की जरूरत है, क्योंकि देश में आज भी सिक्खों को जब्र-जुल्म का शिकार बनाने

वाले तत्व विद्यमान हैं। संबंधित उपर्युक्त सिक्ख जनसंहार के समय पीड़ित परिवारों में से एक सिक्ख व्यक्ति शस्त्र का सही समय पर उपयोग करके अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा करने में सफल रहा वरना हो सकता था कि वह भी अपनी जान की तथा अपने परिवार की सुरक्षा न कर सकता।

जैसे होंद चिल्लड़ सिक्ख नसलकुशी अथवा जनसंहार का कांड जग-जाहिर हुआ है ऐसे ही हरियाणा प्रांत के ही गुड़गांव जिले में स्थित पटौदी नामक उपनगर में भी एक अन्य सिक्ख जनसंहार उसी समय घटित होने के बारे में भी पता चला है। उस कांड संबंधी भी अन्य जरूरी विवरण एकत्र होने चाहिए। उसकी जांच करा कर पीड़ितों को न्याय और दोषियों को दंड दिलाने में सिक्ख पंथ को वक्त के भेदभावपूर्ण राजनैतिक प्रबंध में भरसक प्रयत्न करने पड़ेंगे।

सिक्ख पंथ को न्याय देने से वक्त का राजनैतिक प्रबंध लंबे समय से इंकारी होता आ रहा है, परंतु यदि सिक्ख पंथ अपने गुरु साहिबान के द्वारा बख्शे पंथक प्यार, परस्पर जत्थेबंदक मजबूती तथा 'एक दिल-एक ताल' होकर एकता को सही सच्चे रूप में कायम रखने की दिशा में मजबूत कदम बढ़ाता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब दोषी अपने किये का फल भुगतेंगे और अन्याय का लगातार बरताया जा रहा प्रचलन हक-सच तथा न्याय की व्यवस्था में बदलाना असंभव नहीं होगा। 

FORM IV

१.	प्रकाशित करने का स्थान	:	कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
२.	प्रकाशित करने का समय	:	प्रत्येक माह की पहली तारीख
३.	मुद्रक का नाम	:	स. दलमेघ सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
४.	प्रकाशक का नाम	:	स. दलमेघ सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
५.	संपादक का नाम	:	स. सिमरजीत सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	संपादक, गुरमति ज्ञान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
६.	मालिक	:	शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर

मैं सिमरजीत सिंघ घोषणा करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी अनुसार पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर/-
(सिमरजीत सिंघ)
संपादक, गुरमति ज्ञान।

तारीख-०१/०४/११

संपादकीय नोट

पाठकों, लेखकों, कवियों तथा विश्लेषकों के प्रति हार्दिक आभार

हम पहले की भांति एक बार फिर 'गुरमति ज्ञान' के पाठकों और लेखक-लेखिकाओं/कवियों-कवित्रियों के प्रति हृदय की गहराइयों से अपना आभार व्यक्त करते हैं जिनके भरपूर साकारात्मक प्रतिउत्तर से कुछ ही वर्षों में 'गुरमति ज्ञान' अपनी व्यापक स्वीकृति एवं सर्वप्रियता की स्थिति में जा पहुंचा है। सत्यवादी विश्लेषक तो 'गुरमति ज्ञान को धार्मिक पत्रिकाओं में श्रेष्ठतम पत्रिका कह/लिख कर भी हमारे हौंसले बढा रहे हैं। इसके बावजूद इसको इस तथ्य की अनुभूति है कि यह सब आप सभी की ओर से मिल रहे सहयोग के कारण ही है। अकाल पुरख परमात्मा की अपार बख्शिश का सदका गत कुछ महीनों से दस सिक्ख गुरु साहिबान के अद्वितीय जीवन वृत्तांत, उनकी पावन बाणी तथा निर्मल उपदेशों और उनके मानवता हितकारी महान कृत्यों को मुख्य ऐतिहासिक स्रोतों के अध्ययन के आधार पर विशेषांकों की शृंखला निरंतर रूप में चलाई जा रही है। इस शृंखला 'गुरमति ज्ञान के पाठकों की गणना में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। अब हम अप्रैल २०११ का श्री गुरु अरजन देव जी विशेषांक छापने की खुशी ले रहे हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी के सभी माननीय मैंबर साहिबान की तथा सभी संबंधित उच्चाधिकारियों की यह हार्दिक इच्छा है कि सर्वकल्याणकारी गुरमति विचारधारा अथवा सर्वसांझी गुरबाणी का सत्य-ज्ञान, अनुभव देश के घर-घर और द्वार-द्वार पर पहुंचना चाहिए जिसका एक प्रमाण आप सबके साथ सांझा करना आवश्यक है कि जब कुछ वर्ष पूर्व 'गुरमति ज्ञान को त्रैमासिक पत्रिका से मासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित करना आरंभ करने की तैयारी चल रही थी और जब कार्यरत अमले द्वारा मैंबर साहिबान और उच्चाधिकारियों के ध्यान में यह परिवर्तन लाते हुए इसका चंदा बढाने या वही रखने के लिए निर्णय करने के लिए लिखित रिपोर्ट प्रस्तुत की तो सब ने एक स्वर में चंदा वही रखने का समर्थन किया। यह बात अलग है कि 'गुरमति ज्ञान' की बढती हुई लोकप्रियता का मुख्य कारण इसका कम चंदा नहीं बल्कि इसका गुरमति के सत्यवादी फलसफे को आप तक पहुंचाने के लिए इसका समर्पण एवं निष्ठा है। पाठकों की संख्या में वृद्धि करने में कुछ एक निष्काम एवं सच्चे संकल्पधारी गुरमुखों का भी योगदान है जो अपना दसवंध समय और धन दोनों के रूप में देकर गुरु की खुशी ले रहे हैं। ज्ञान का पासार करने में सहायक होना अमूल्य सेवा है।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज का जीवन अपना उदाहरण आप है। चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी के गृह में श्री गुरु अमरदास जी महाराज की महा सुलक्षणी सपुत्री माता भानी जी की कोख से जन्म लेने वाले तीन पुत्रों में आयु में सबसे छोटे परंतु गुणों में से सब से बड़े श्री गुरु अरजन देव जी के बालपन, यौवन तथा उनके गुरु-काल की सुखद और चुनौती भरपूर दोनों प्रकार की परिस्थितियों का सही सच्चा विवरण इस विशेषांक में प्रस्तुत है। साथ ही गुरु जी की पावन बाणी के साथ भी आरंभिक जान-पहचान कराने का यह छोटा-सा प्रयास है। पहले विशेषांकों के निष्पक्ष प्रतिकर्म और प्रतिउत्तर की तरह आशा करते हैं कि इस बार भी हमको सत्यवादी विश्लेषक अपने अमूल्य विश्लेषण से धन्यवादी बनायेंगे। 

भट्ट कवियों की बाणी में श्री गुरु अरजन देव जी की उपमा

*-डॉ सत्येंद्रपाल सिंघ**

सद्विचार एक सुंदर पुष्प की तरह होता है जो समय के विभिन्न अंतरालों से गुजरता हुआ अपनी नाना अवस्थाओं को तय करके पल्लवित होता है। उसकी आदि से अंत तक की अवस्थाएं मोहक, आकर्षक और अर्थपूर्ण होती हैं। विकास का हरेक पड़ाव आगे बढ़ने और प्रचुरित होने का संदेश होता है। श्री गुरु अमरदास जी और श्री गुरु रामदास जी के काल से ही श्री गुरु नानक साहिब और श्री गुरु अंगद देव जी के विचार ने संस्थागत रूप लेना आरंभ कर दिया था। गुरु के लंगर की महान परंपरा की नींव पड़ चुकी थी। 'मंजियों' और 'पीहड़ों' की स्थापना हो चुकी थी। पवित्र नगरी श्री अमृतसर अपना आकार ले चुकी थी और सिक्खों ने गुरबाणी का नित्तनेम करना आरंभ कर दिया था। ऐसे समय में श्री गुरु अरजन देव जी के हिस्से में महान कार्य आया इन सारे प्रयासों को एक सुदृढ़ आधार प्रदान करने का। उन्होंने बड़ी सहनशीलता और दूरदर्शिता से अपने दायित्वों का निर्वहन किया जिससे गुरु नानक साहिब के दरबार की महिमा दूर-दूर तक फैलने लगी और बड़ी संख्या में लोग गुरु जी के विचारों से जुड़ने लगे। कहते हैं कि श्री गुरु रामदास जी के शरीर-त्याग के पश्चात दूर-दूर से सिक्ख अपनी भावनाएं प्रकट करने पहुंचे थे। दसवें दिन श्री गुरु अरजन देव जी की दसतारबंदी के दिन भट्ट कवि भी वहां उपस्थित थे जिनकी संख्या ग्यारह थी। वे गुरु साहिब के निकट आये तो अति प्रभावित हुए। जिस असीम आत्मिक आनंद का अनुभव उन्होंने गुरु साहिब की संगत में रहकर किया, अपने उसी अनुभव को उन्होंने सवैये रच कर प्रकट किया। श्री गुरु अरजन देव जी ने उन भट्ट कवियों की भावनाओं का सम्मान करते हुए ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उनकी बाणी शामिल की। इस तरह उन्होंने भट्ट कवि साहिबान की भावना को अमरत्व प्रदान कर दिया। गुरु तो घट-घट में निवास कर रहा है। जितना कोई उसके निकट है उतना ही गुरु उसके पास है। स्वयं श्री गुरु अरजन देव जी ने इस विचार को प्रकट किया :

घट घट वासी सरब निवासी नेरै ही ते नेरा ॥
नानक दासु सदा सरणागति हरि अंम्रित सजणु मेरा ॥ *(पन्ना ७८४)*

श्री गुरु अरजन देव जी में भट्ट कल सहार जी ने उस धर्म के दर्शन किये जो संसार में अलभ्य हो चुका था। गुरु साहिब में धर्म अपने सहज और विस्तारित रूप में विद्यमान था जो सांसारिक मनुष्यों के प्रत्येक प्रश्न, हर शंका का उत्तर देने में सक्षम था और उनके समस्त दुखों के निवारण में समर्थ था :

ध्रंम धीरु गुरमति गंभीरु पर दुख बिसारणु ॥
सबद सारु हरि सम उदारु अहंमेव निवारणु ॥
(पन्ना १४०७)

उपरोक्त सवैये में कहा गया भट्ट कल सहार जी का एक-एक शब्द गुरु अरजन साहिब

*ई-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो : ०९४१५९६०५३३

के पुनीत व्यक्तित्व का सटीक प्रतीक है। गुरु साहिब वास्तव में 'ध्रंम धीरु' अर्थात् वास्तविक धर्म का पर्याय थे। उन्होंने अपने समूचे जीवन काल में अपने सहज आचरण से धर्म की परिभाषा का साक्षात रूप प्रस्तुत किया। वे अपने पिता श्री गुरु रामदास जी के प्रत्येक वचन का पूरी श्रद्धा से पालन करते थे। एक बार श्री गुरु रामदास जी के निकट सम्बंधी श्री संहारी मल जी लाहौर से आये और अपने पुत्र के विवाह में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया। श्री गुरु रामदास जी उस समय श्री अमृतसर के निर्माण-कार्यों में व्यस्त थे इसलिये अपने बड़े दो पुत्रों को बारी-बारी से विवाह में जाने को कहा। दोनों ने ही मना कर दिया। श्री (गुरु) अरजन देव जी आयु में सबसे छोटे सपुत्र थे। वे अपने पिता की आज्ञा मान कर चले गये। श्री गुरु रामदास जी ने कहा कि विवाह सम्पन्न होने के पश्चात वहां कुछ समय रह कर संगत में सिक्खी का प्रचार-प्रसार करें और बुलाने पर ही वापस आयें। श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने पिता की आज्ञा का भली प्रकार पालन किया। बाद में वे श्री गुरु रामदास जी के दर्शन को व्याकुल हो उठे किंतु बुलावा आने पर ही लौटे। इस धर्माचरण की नींव इतनी सुदृढ़ थी कि श्री गुरु रामदास जी ने उन्हें गुरगद्दी सौंपने का निर्णय लिया। गुरगद्दी पर आसीन होने के बाद उन्हें अपने बड़े भाई प्रिथीचंद का सख्त विरोध झेलना पड़ा। प्रिथीचंद ने हर तरह से विरोध करके थक-हारने के बाद एक मुगल फौजदार सुलही खान को तैयार किया कि वह श्री गुरु अरजन देव जी पर आक्रमण करके उन्हें समाप्त कर दे। सुलही खान प्रिथीचंद के झांसे में आ गया और उसने गुरु साहिब पर आक्रमण के लिये कूच कर दिया। जब पता लगने पर सिक्खों ने सारी बात गुरु साहिब को बताई और कोई उपाप करने को कहा तो वे शांतचित्त और अडोल रहे। उन्होंने सबको परमात्मा पर भरोसा रखने को कहा। इस अवसर पर उन्होंने निम्न शबद का उच्चारण किया:

गरीबा उपरि जि खिंजै दाड़ी ॥
पारब्रहमि सा अगनि महि साड़ी ॥१॥
पूरा निआउ करे करतारु ॥
अपुने दास कउ राखनहारु ॥१॥रहाउ॥
आदि जुगादि प्रगटि परतापु ॥
निंदकु मुआ उपजि वड तापु ॥ (पन्ना १९९)

गुरु साहिब ने उपरोक्त शबद में कहा कि परमात्मा पूर्ण न्याय करने वाला है और ऐसा वह हर युग में आरंभ से ही करता आया है। वह अपने भक्तों की रक्षा स्वयं करता है और दुष्टों को, निंदकों को दंड देता है। हुआ भी यही। सुलही खान गुरु साहिब तक पहुंचने के पूर्व ही ईंट के एक भट्टे पर घोड़ा बिदकने से गिर कर, भट्टे की आग में भस्म हो गया। प्रत्यक्ष रूप से आसन्न संकट देखकर भी सहज, अडोल बने रहना व परमात्मा में विश्वास को दृढ़ रखना धर्म का उत्कर्ष है। श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार तो परमात्मा का नाम-सिमरन अनेक यत्नों से श्रेष्ठ है :

सिमरत नामु कोटि जतन भए ॥
साधसंगि मिलि हरि गुन गाए जमदूतन कउ त्रास अहे ॥ (पन्ना ८२४)

भट्ट कल सहार जी ने उन्हें धर्म का सार और परमात्मा के तुल्य गुणों वाला कहा जिसके दर्शन से ही सारे विकार मिट जाते हैं और दुख दूर हो जाते हैं। श्री गुरु अरजन देव जी की विनम्रता ने उन्हें तमाम विरोधों-प्रतिरोधों के बाद भी गुरु नानक साहिब के मिशन को

आगे बढ़ाने की सामर्थ्य प्रदान की। उन्होंने तमाम अभावों के बाद भी संसाधन जुटा कर श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण करवाया और अन्य निर्माण-कार्य कराये। उन्हें अपने परिवार का कीमती सामान तक बेचना पड़ा था। बाद में उन्होंने प्रत्येक सिक्ख से धर्म-कार्यों के लिए **'दसवंध'** (आय का दसवां हिस्सा) निकालने की प्रेरणा दी। **'दसवंध'** की प्रथा आज भी जारी है। उनकी विनम्रता परमात्मा से जुड़कर आरंभ होती थी और वे विनम्र होकर ही परमात्मा से जुड़ते थे। वे सदैव परमात्मा से जुड़े हुए थे, इसलिये सदैव विनम्र थे। वे परमात्मा में रमे हुए थे और परमात्मा उनमें रमा हुआ था। उनका रूप भी सत् था उनकी बाणी में भी सत था और उनका अंतर भी सत् था। यह सत् परमात्मा ने प्रारंभिक जीवन काल से ही उन्हें प्रदान किया था, तभी उनकी अनूठी आभा से पूरा संसार जगमग कर रहा था, जैसा कि भट्ट मथरा जी ने लिखा है :

सति रूपु सति नामु सतु संतोखु धरिओ उरि ॥
आदि पुरखि परतखि लिख्यउ अछरु मसतकि धुरि ॥
प्रगट जोति जगमगै तेजु भूअ मंडलि छायउ ॥
पारसु परसि परसु परसि गुरि गुरू कहायउ ॥
(पन्ना १४०८)

भट्ट मथरा जी की बात *"प्रगट जोति जगमगै"* को समझते तनिक भी देर नहीं लगती जब हम श्री हरिमंदर साहिब को अपनी दृष्टि में लाते हैं। अपने पिता श्री गुरु रामदास जी द्वारा आरंभ किये गये अमृत सरोवर की खुदाई के कार्य को श्री गुरु अरजन देव जी ने पूरा करवाया। उन्होंने इसे पक्का करवाया। इसके बाद उन्होंने सरोवर के मध्य में श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण की योजना बनाई और उसकी नींव मुस्लिम फकीर साईं मियां मीर जी से रखवाई जो गुरु साहिब के मित्र और श्रद्धालु थे। दर्शनी ड्योढ़ी से श्री हरिमंदर साहिब तक आने के लिये २४० फुट लंबा २१ फुट चौड़ा पुल बनाया गया। सारा निर्माण-कार्य श्री गुरु अरजन देव जी ने स्वयं अपनी देखरेख में कराया। आज श्री हरिमंदर साहिब सारे सिक्खों की श्रद्धा का केंद्र और पूरे विश्व के आकर्षण का स्थान है। अद्भुत छटा इस स्थान की भी है और इस स्थान पर गायन की जाने वाली गुरबाणी भी अद्भुत है। यह सब श्री गुरु अरजन देव जी के सत् प्रयासों से ही संभव हो सका है। भट्ट कल सहार जी ने उन्हें **'सबद सार'** कहा है और गुरु अरजन साहिब ने गुरु साहिबान, साथ ही भक्त साहिबान, गुरसिक्खों, भट्ट साहिबान की बाणी को संकलित कर जिस तरह श्री गुरु ग्रंथ साहिब का स्वरूप तैयार किया उसमें समस्त ज्ञान, समस्त आध्यात्म का सार समाहित हो गया और मनुष्य के सारे भटकाव समाप्त हो गये। गुरु साहिबान एवं भक्त साहिबान आदि की बाणी का संकलन एक बड़ा ही दुरूह कार्य था जिसके लिये धैर्य और बुद्धि-बल की ही नहीं सजगता की भी आवश्यकता थी कि कहीं अपमिश्रित, अकचित बाणी भी शामिल न हो जाये। बाणी की प्रमाणिकता की जांच करना एक ऐसा कार्य था जो गुरु साहिब के ही वश में था क्योंकि वे तो स्वयं ही भाई कल सहार जी के शब्दों में **'सबद सार'** थे और क्योंकि वे भाई मथरा जी के अनुसार समस्त विकारों से रहित पूर्ण निर्मल स्वरूप थे एवं उनकी क्षमताओं का कोई सानी ही नहीं था :

निरमल भेख अपार तासु बिनु अवरु न कोई ॥
मन बच जिनि जाणिअउ भयउ तिह समसरि सोई ॥
धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि ॥

भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ॥ *(पन्ना १४०९)*

भट्ट मथरा जी ने उन्हें 'प्रत्यक्ष परमात्मा' कहा है। इसका आधार भी उन्होंने बताया कि श्री गुरु अरजन देव जी ने परमात्मा को मन और वचन दोनों ही तरह से जान लिया है और जो हरि को इस तरह से अर्थात् सम्पूर्णता में जान, समझ और अंगीकार कर लेता है वह हरि के तुल्य ही हो जाता है। ऐसे स्वरूप की महिमा तो पृथ्वी और आकाश पर भी, नौ खंडों में होती है।

भट्ट हरिबंस जी ने भी भट्ट मथरा जी की ही तरह गुरु अरजन साहिब में हरि के रूप के दर्शन किये। उन्होंने एक कदम और आगे जाकर कहा कि गुरु अरजन साहिब के स्वरूप से जहां सत् की जय-जयकार हो रही है वहीं असत् का पराभव हो रहा है :

देव पुरी महि गयउ आपि परमेस्वर भायउ ॥
हरि सिंघासणु दीअउ सिरी गुरु तह बैठायउ ॥
रहसु कीअउ सुर देव तोहि जसु जय जय जंपहि ॥
असुर गए ते भागि पाप तिन्ह भीतरि कंपहि ॥
(पन्ना १४०९)

श्री गुरु अरजन देव जी श्री गुरु ग्रंथ साहिब का स्वरूप तभी सारी बाधाओं को पार करते हुए तैयार कर सके क्योंकि *"हरि सिंघासणु दीअउ सिरी गुरु तह बैठायउ"* अर्थात् परमात्मा ने स्वयं उन्हें यह कार्य सम्पन्न करने की प्रेरणा और सामर्थ्य प्रदान की। उनके इस महान कार्य का प्रभाव तब तक रहेगा जब तक यह सृष्टि रहेगी। श्रद्धालु-जन श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष मस्तक निवाकर बाणी के, परमात्मा के दर्शन करते रहेंगे और सत् की सत्ता चलती रहेगी। वास्तव में गुरु अरजन साहिब का गुरुत्व-काल गुरु नानक साहिब के मिशन का एक बहुत अहम पड़ाव साबित हुआ। श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन करके उसे श्री हरिमंदर साहिब में प्रतिष्ठित किया जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उन्हे ग्यारहवें और अंतिम गुरु के रूप में स्थापित करके एक वैचारिक क्रांति को अंजाम तक पहुंचाया।

गुरु अरजन साहिब ने गुरु-परंपरा में शहादत का आगाज किया तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बलिदान की उस भावना को ऐसा व्यापक और अद्भुत आयाम प्रदान किया कि सिक्ख कौम बलिदान की मिसाल बन गयी। भट्ट कल सहार जी ने कहा कि श्री गुरु अरजन देव जी का यश कभी मिटने वाला नहीं, सदैव जीवित रहने वाला है :

सद जीवणु अरजुनु अमोलु आजोनी संभउ ॥
भय भंजनु पर दुख निवारु अपारु अनंभउ ॥
अगह गहणु भ्रमु भ्रांति दहणु सीतलु सुख दातउ ॥
आसंभउ उदविअउ पुरखु पूरन बिधातउ ॥
(पन्ना १४०७)

भट्ट कल सहार जी ने कहा कि क्योंकि गुरु अरजन साहिब का यश सृजन-विनाश से परे का है और उस तक कोई पहुंच नहीं सकता, इसलिये वह अनमोल और शाश्वत है जो सारी शंकाओं का निवारण करने वाला तथा आत्मा को आनंद प्रदान करने वाला है। उनका प्रताप आत्मा को तृप्त करने वाला है। गुरु अरजन साहिब सद्विचार के प्रतिनिधि थे, सत् के प्रतीक थे। सम्पूर्ण सिक्ख धर्म-दर्शन ही सत् पर आधारित है। दसों गुरु साहिबान ने सत् को अपनाया और सत् का आचरण किया। सत् ही परमात्मा है और परमात्मा शाश्वत है। गुरु साहिबान सत् का स्वरूप थे, अतः परमात्मा का स्वरूप थे।

उन्होंने बस, सत् (सच) की ही बात की:
सचु सलाहनि से सचे सचा नामु अधारु ॥
सची कार कमावणी सचे नालि पिआरु ॥
(पन्ना ३४)

वही सच्चा अर्थात् परमात्मा में रमा हुआ है जो सच पर विश्वास करता है, उसे अपने जीवन का आधार बनाता है, सच्चा व्यवहार करता है और जिसे सच प्रिय है। गुरु अरजन साहिब ने भी इस बात की बराबर तसदीक की कि सत् में ही मनुष्य का उद्धार है और गुरु भी वही है जो सत् की बात करता है :
साच पदारथु गुरमुखि लहहु ॥
प्रभ का भाणा सति करि सहहु ॥१॥
जीवत जीवत जीवत रहहु ॥
राम रसाइणु नित उठि पीवहु ॥ (पन्ना ११३८)

गुरु साहिब ने कहा कि सच "राम रसायन" अर्थात् परमेश्वर का सार है। मनुष्य को चाहिये कि सच को अपना भोज्य पदार्थ बना ले। सारी जीवन-ऊर्जा सच से ही ग्रहण करे, सच गुरु के द्वारा ग्रहण करे। श्री गुरु अरजन देव जी की रसना पर भी हरि अर्थात् सच का निवास था, जैसा भट्ट कल सहार जी ने कहा:
भगति जोग कौ जैतवारु हरि जनकु उपायउ ॥
सबदु गुरू परकासिओ हरि रसन बसायउ ॥
(पन्ना १४०७)

भट्ट कल सहार जी के अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी भाग्यशाली हैं जिनका व्यक्तित्व सर्वोत्कृष्ट रूप से प्रकट हुआ है और उन्होंने हृदय में हरि के नाम को इस तरह दृढ़ करके टिकाया हुआ है कि उनका मन पूरी तरह से संतोष, शील, संयम को धारण करके माणिक के समान अमूल्य हो गया है। भट्ट साहिबान ने गुरु अरजन साहिब की आंतरिक शुचिता और गुणों की समृद्धता की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। भट्ट कल सहार जी, भट्ट मथरा जी और भट्ट हरिबंस जी तीनों ही भट्ट कवियों ने क्रमश: *"अमिउ रसना"*, *"मथुरा जिन्ह अंम्रित नामु पीअउ"* एवं *"नामु अंम्रितु मुखि लीअउ"* की बात करके यह सिद्ध करने का सत् प्रयास किया कि गुरु अरजन साहिब अमरत्व का रूप थे और उनकी कृपा मनुष्य सारे संकटों से उभार लेने वाली थी। गुरु साहिब ने अपने इसी अमर तत्व के बल पर धर्म की सत्ता स्थापित की और सद्गुणों को आधार दिया।
जनक राजु बरताइआ सतजुगु आलीणा ॥
गुर सबदे मनु मानिआ अपतीजु पतीणा ॥
गुरु नानकु सचु नीव साजि सतिगुर संगि लीणा ॥
गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास अपरंपरु बीणा ॥
(पन्ना १४०७)

उपरोक्त सवैये में भट्ट कल सहार जी ने स्पष्ट रूप से कहा कि श्री गुरु अरजन देव जी ने सत् का राज्य स्थापित कर दिया है। यह कोई आसान बात नहीं थी। गुरु नानक साहिब को सत् की बात कहने के लिये कितनी लंबी, थका देने वाली, साल दर साल यात्राएं करनी पड़ीं, कितने तर्क करने पड़े, कितने विरोध सहने पड़े, तब एक राह बनी। उस राह पर श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी और श्री गुरु रामदास जी ने चलकर राह को सुखद बनाया। उसी राह-राज्य को श्री गुरु अरजन देव जी ने विधिवत रूप देने का कार्य किया अपने सर्वश्रेष्ठ गुणों से अपने सत् आचरण और सृजन-कार्यों से तथा अंत में अपनी शहादत से उस राज्य की जगमग आभा को एक तेज व नई चमक देकर। वे भय से रहित थे और दूसरे के कष्टों का निवारण करना उनका उद्देश्य था। अपने उद्देश्य पर दृढ़ रहना ही उनकी उपासना थी और इसी लिये वे धर्म के

ध्वजवाहक बन गये :

भय भंजनु पर पीर निवारनु कल्य सहारु तोहि जसु बकता ॥
कुलि सोढी गुर रामदास तनु धरम धुजा अरजुनु हरि भगता ॥ (पन्ना १४०७)

स्वयं गुरु अरजन साहिब ने भी परमात्मा को भय दूर करने वाला बताया :

भै भंजना मुरारि ॥
करि दइआ पतित उधारि ॥ (पन्ना ८३८)

क्योंकि गुरु साहिब प्रत्यक्ष हरि का रूप थे, इसलिये भय से मुक्त थे और भट्ट कवियों की उपमा को पूर्णत: सही सिद्ध करते थे। उनकी शहादत भी उपमा के अनुकूल ही भय से रहित और सहज थी।

गुरु साहिब की शहादत वास्तव में एक मिसाल की तरह कायम हुई। इस शहादत ने जहां अन्याय और कुविचार की आंधी को थामने का काम किया वहीं लोगों में विश्वास उत्पन्न किया कि सत् का स्थान उच्च और पवित्र है जिसे बदला नहीं जा सकता और किस तरह निर्भय होकर असत् का प्रतिरोध किया जा सकता है। इस शहादत ने यह भी सिद्ध किया कि सत् सदैव निर्भय होता है। गुरु अरजन साहिब का अवतार ही लोगों का उद्धार करने के लिये हुआ था। उनका अवतार मानवता के भाग्योदय की तरह था।

जब लउ नही भाग लिलार उदै तब लउ भ्रमते फिरते बहु धायउ ॥
कलि घोर समुद्र मै बूडत थे कबहू मिटि है नही रे पछुतायउ ॥
ततु बिचारु यहै मथुरा जग तारन कउ अवतारु बनायउ ॥
जप्यउ जिन्ह अरजुन देव गुरू फिरि संकट जोनि गरभ न आयउ ॥ (पन्ना १४०९)

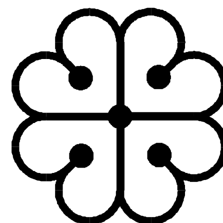
श्री गुरु अरजन देव जी महान दाता हैं। भट्ट मथरा जी ने कहा कि ऐसे गुरु के चरणों की शरण लें जो परमेश्वर में रमा हुआ है।

तिह जन जाचहु जगत्र पर जानीअतु बासुर रयनि बासु जा को हितु नाम सिउ ॥
परम अतीतु परमेसुर कै रंगि रंग्यौ बासना ते बाहरि पै देखीअतु धाम सिउ ॥
अपर परंपर पुरख सिउ प्रेमु लाग्यौ बिनु भगवंत रसु नाही अउरै काम सिउ ॥
मथुरा को प्रभु स्रब मय अरजुन गुरु भगति कै हेति पाइ रहिओ मिलि राम सिउ ॥
(पन्ना १४०९)

श्री गुरु अरजन देव ने सिद्ध किया कि परमेश्वर के प्रेम से अधिक श्रेष्ठ कोई रस नहीं है। जन्म लेने से लेकर शहीद होने तक यह प्रेम-रस उनमें बना रहा। उन्होंने *"जनमत गुरमति ब्रहमु पछाणिओ"*, ब्रह्म (प्रभु) को जन्म लेते ही पहचान लिया और इसी लिये *"सरि संतोख समाइयउ"* अविचलित भाव से अंत तक जीवन को जिया। ऐसे सतिगुरु तो किसी के भी जीवन का आधार हैं :

लाल गोपाल दइआल रंगीले ॥
गहिर गंभीर बेअंत गोविंदे ॥
ऊच अथाह बेअंत सुआमी सिमरि सिमरि हउ जीवां जीउ ॥ (पन्ना ९९)





भाई गुरदास जी की नजर में श्री गुरु अरजन देव जी

*-स. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा**

गुरबाणी के शिरोमणि व्याख्याकार भाई गुरदास जी ने सिक्ख धर्म के इतिहास, सिद्धांत और मर्यादा की व्याख्या अपनी वारों में की है। भाई गुरदास जी को श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का चरण-स्पर्श और संगत प्राप्त रही है। यही कारण है कि चार गुरु साहिबान के गुरु-काल में हुई घटनाओं को देखा, जाना और उस पर प्रतिक्रम भी दिया। पद्य रूप में इतिहास को उसी तरह नहीं चित्रित किया जा सकता जैसा गद्य रूप में। फिर भी ऐसे दृष्टांत, संकेत, चिन्ह आदि काव्य-रचना से प्राप्त हो जाते हैं जिनके साथ इतिहास की कड़ियों को जोड़ा जा सकता है। इस आलेख के द्वारा भाई गुरदास जी की नजर में पांचवें सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी के जीवन-इतिहास एवं शख्सियत के बारे में जानकारी ले रहे हैं। गुरु इतिहास में भाई गुरदास जी के श्री गुरु अरजन देव जी के साथ सबसे निकटवर्ती एवं अति स्नेह वाले संबंध रहे हैं। भाई गुरदास जी उम्र में बड़े थे और उनका सांसारिक रिश्तेदारी में सतिगुरु जी के साथ मामे-भाणजे का रिश्ता था। पातशाह बचपन में भाई गुरदास जी के हाथों में खेले, पले और बड़े हुए। इस प्रीति का जो वर्णन भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में दृष्टांत के द्वारा किया है वो बहुत खूबसूरत है। श्री गुरु अरजन देव जी का काल सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार और संगठन के पक्ष से बहुत महत्वपूर्ण था। इसमें जहां श्री हरिमंदर साहिब, श्री तरनतारन साहिब सहित अलग-अलग शहरों, कसबों का निर्माण हुआ वहीं श्री गुरु ग्रंथ साहिब की आदि बीड़ की संपादना और स्थापना का महान कार्य भी हुआ।

दूसरी ओर पांचवें सतिगुरु जी के गुरगद्दी पर बैठते समय ही कई कठिनाइयां पैदा हो गईं। गुरु-परिवार में प्रिथीचंद की तरफ से प्रबल विरोध और साजिशें रचना, मसंदों का प्रिथीचंद से मिल जाना, कट्टरपंथी मुल्लां-मौलाणों और बीरबल, चंदू जैसे कट्टर हिंदुओं की ओर से विरोध का सामना उस समय सिक्ख पंथ को करना पड़ रहा था। इस मुश्किल भरे समय में प्रचार-प्रसार के कार्यों में भाई गुरदास जी और बाबा बुड्ढा जी प्रमुख गुरसिक्खों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पहली बीड़ का पहला लिखारी होने का सम्मान भी भाई गुरदास जी को प्राप्त है। यहां यह सब संक्षेप में बताने का भाव यह है कि भाई गुरदास जी ने श्री गुरु अरजन देव जी को बहुत नजदीक से देखा और सतिगुरु द्वारा किये कार्यों को उन्होंने अपने हाथों से संपूर्ण भी करवाया। श्री गुरु अरजन देव जी से संबंधित जीवन-इतिहास एवं शख्सियत का वर्णन वार १/४७, ३/१२, १३/२५, २०/१, २४/१८-१९-२०-२१-२२-२३, २६/३४, ३६/१-२-३-४-५-६-७-८, ३८/२०, ३९/२, २०/२३ आदि में मिलता है। श्री गुरु अरजन देव जी के जीवन-इतिहास एवं शख्सियत के जो पहलू इन वारों में मुख्य रूप में सामने आते हैं,

**उप सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर। मो: ९८१४८-९८२१२*

उनका विभाजन निम्नलिखित अनुसार किया जा सकता है:

गुरगद्दी की प्राप्ति : श्री गुरु नानक देव जी के घर की दात अर्थात् गुरगद्दी श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी से निरंतर चलती श्री गुरु अरजन देव जी को प्राप्त हुई। भाई गुरदास जी के अनुसार श्री गुरु रामदास जी ने गुरिआई का सम्मान योग्यता को मुख्य रखकर श्री गुरु अरजन देव जी को बख्शिश किया :

फिरि आई घरि अरजणे पुतु संसारी गुरू कहावै।
जाणि न देसां सीढीओं होरसि अजरु न जरिआ जावै।
घर ही की वथु घरे रहावै ॥ (वार १:४७)

क्योंकि गुरु अरजन साहिब के समय गुरगद्दी को प्राप्त करने के लिए प्रिथीचंद ने कई तरह की साजिशें रचीं, लेकिन वो असफल रहा। कुटिल चालों के कारण उसके लिए 'मीणा' (मक्कार) शब्द का प्रयोग होता है। दूसरा बेटा महादेव अहंकार में बेमुख हो गया था। इस बारे में भाई गुरदास जी उल्लेख करते हैं :

मीणा होआ पिरथीआ करि करि तोंढक बरलु चलाइआ।
महादेउ अहंमेउ करि करि बेमुखु पुतां भउकाइआ।
चंदन वासु न वास बोहाइआ ॥ (वार २६:३३)

गुरगद्दी चाहे पिता-पुरखी हो गई थी लेकिन इसकी प्राप्ति के लिए सेवा-भावना प्रमुख थी। गुरु अरजन साहिब पिता-गुरु की सेवा के कारण निरंकारी दात के पात्र बने और गुरगद्दी द्वारा सम्मानित किए गए :

सतिगुर नानक देउ गुरा गुरु होइआ।
अंगदु अलखु अभेउ सहजि समोइआ।
अमरहु अमर समेउ अलखु अलोइआ।
राम नाम अरिखेउ अंम्रितु चोइआ।
गुर अरजन करि सेउ ढोऐ ढोइआ।
(वार ३:१२)

गुरगद्दी-प्राप्ति का अन्य जिक्र भाई गुरदास जी ने २४वीं वार की १९वीं पउड़ी में करते हुए बताया है कि पिता श्री गुरु रामदास जी, दादा श्री गुरु अमरदास जी, पड़दादा श्री गुरु अंगद देव जी और श्री गुरु नानक देव जी की कुल के दीपक पांचवीं जगह श्री गुरु अरजन देव जी हुए हैं जिन्होंने गुरगद्दी उत्तम भाग्य से प्राप्ति की और शबद-सुरति वाला व्यापार किया:

पिउ दादा पड़दादिअहु कुल दीपकु अजरावर नता।
तखतु बखतु लै मलिआ सबद सुरति वापारि सपता। (वार २४:१९)

गुरु नानक-ज्योति की निरंतरता : श्री गुरु अरजन देव जी के गुरगद्दी पर बैठने से निराश हुआ प्रिथीचंद कुटिल चालें चल रहा था। वो भोले-भाले लोगों को अपने कुछ खुशामदी मसंदों के द्वारा बहला-फुसलाकर पूजा का धान इकट्ठा कर रहा था। दूसरी ओर कट्टर नक्शबंदी सूफियों का विरोध भी था और वे भी मौके की तालाश में थे कि किस तरह सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार को रोका जाए। प्रिथीचंद और अन्य विरोधियों की सरगर्मियों के कारण गुरु नानक-ज्योति के प्रति आशंके उठ सकते थे इसलिए गुरु नानक-ज्योति की स्थापित्ति और इस ज्योति के सच को बताना आवश्यक था। भाई गुरदास जी ने श्री गुरु अरजन देव जी में गुरु नानक-ज्योति की तिरंतरता के बारे में संकेत करते हुए कहा है कि गुरु अरजन पातशाह में निरंकार की ज्योति का प्रसार हो रहा है और वे जगत का जीवन हैं, इसलिए सारा संसार उनकी जै-जैकार कर रहा है :

जगमग जोति निरंतरी जगजीवन जग जै जैकारा।
(वार २४:१८)

गुरु नानक-ज्योति की सच्चाई को प्रकट करते हुए आगे लिखा है कि सतिगुर नानक साहिब निरंकार का स्वरूप थे और उनकी ज्योति गुरु अंगद साहिब में गई, आगे श्री गुरु अमरदास जी से श्री गुरु रामदास जी में और फिर श्री गुरु रामदास जी से गुरु के शबद को धारण करने वाले गुरु अरजन साहिब जी प्रकट हुए हैं :

--सतिगुरु नानक देउ है परमेसरु सोई।
गुरु अंगदु गुरु अंग ते जोती जोति समोई।
अमरा पदु गुरु अंगदहुं हुइ जाणु जणोई।
गुरु अमरहुं गुरु रामदास अंम्रित रसु भोई।
रामदासहुं अरजनु गुरू गुरु सबद सथोई।
(वार ३८:२०)

--बाबाणी पीड़ी चली गुर चेले परचा परचाइआ। . . .
रामदासहु अरजणु गुरू अंम्रित ब्रिखि अंम्रित फलु लाइआ। (वार २६:३४)

लोक-मानसिकता को बदलने के लिए भाई गुरदास जी ने ३९वीं वार की दूसरी पउड़ी में बताया है कि पांचों सतिगुरु साहिबान एक ज्योति हैं:

निरंकारु अकारु करि एकंकारु अपार सदाइआ।
ओअंकारु अकारु करि इकु कवाउ पसाउ कराइआ।
पंज तत परवाणु करि पंज मित्र पंज सत्रु मिलाइआ।
पंजे तिनि असाध साधि साधु सदाइ साधु बिरदाइआ। . . .
पंजे अखर परधान करि परमेसरु होइ नाउ धराइआ।
सतिगुरु नानक देउ है गुरु अंगदु अंगहुं उपजाइआ।
अंगद ते गुरु अमर पद अंम्रित राम नामु गुरु भाइआ।
रामदास गुरु अरजन छाइआ ॥ (वार ३९:२)

मीणों के बारे में : गुरु अरजन साहिब की गुरगद्दी के समय सबसे ज्यादा विरोध उनके बड़े भाई प्रिथीचंद ने किया। उसने गुरु-घर के लिए बहुत सारी मुश्किलें खड़ी कर दीं इसलिए उसके लिए मीणा शब्द प्रयोग किया। उसने अपनी अलग से गद्दी भी लगाई। इससे संगत को सुचेत करने के लिए भाई गुरदास जी की ३६वीं वार में बड़े विस्तार से वर्णन किया है। ३६वीं वार की १, २, ३, ४, ५, ६ व ८वीं पउड़ी में 'मीणे' का मुंह काला, 'मीणा' नरकों में जाता है, 'मीणे' की संगत दुखदायी होती है, 'मीणे' को दरगह में मार पड़ती है आदि से विस्तार दिया है। यह वर्णन गुरु अरजन साहिब के गुरगद्दी के प्रारंभिक काल को समझने के लिए सहाई हो सकता है।

आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की स्थापना: आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना पंचम पिता गुरु अरजन साहिब ने करवाई। इस कार्य के लिए भाई गुरदास जी ने सेवा की। भाई गुरदास जी को आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का लिखारी होने का सम्मान प्राप्त है। इस कार्य संबंधी बहुत ज्यादा व्याख्या तो नहीं हुई लेकिन संपादन-कार्य के बारे में भाई गुरदास जी की वारों में से संकेत अवश्य प्राप्त होते हैं। भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में गुरसिक्खों द्वारा गुरबाणी की पोथियां लिखने की सेवा के बारे में इस तरह वर्णन किया है:

गुरमुखि हथि सकथ हनि साधसंगति गुर कार कमावै।
पाणी पखा पीहणा पैर धोइ चरणामतु पावै।
गुरबाणी लिखि पोथीआ ताल म्रिदंग रबाब वजावै।
नमसकार डंडउत करि गुरभाई गलि मिलि गलि लावै। (वार ६:१२)

सतिगुरु पंचम पातशाह के आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना के बारे में संकेत करते हुए भाई गुरदास जी लिखते हैं कि सतिगुरु पंचम

पिता ने गुरबाणी एकत्र करके जीवों के लिए खजाने भरे। उनके दरबार में कथा, कीर्तन का रंग सदा बना रहता था :

गुरबाणी भंडारु भरि कीरतनु कथा रहै रंग रता।
धुनि अनहदि निझरु झरै पूरन प्रेमि अमिओ रस मता। (वार २४:१९)

शहादत : गुरु अरजन साहिब शहीदों के सिरताज हैं। जुल्म और अन्याय के विरुद्ध सिक्ख धर्म में कुर्बान हो जाने की परंपरा का आरंभ सतिगुरु जी द्वारा ही हुआ। गुरु अरजन साहिब की शहादत जहांगीर के हुक्म से हुई। मुगल बादशाह जहांगीर ने गुरु-घर के विरोधियों, जिनमें नक्शबंदी का आगू शेख अहमद सरहंदी और मुरतजा खां, प्रिथीचंद व अन्य विरोधी लोगों की बातों में आकर गुरु अरजन साहिब की शहीदी करवाई। इस शहादत के कारणों और इसके लिए जिम्मेदार लोगों के बारे में भाई गुरदास जी बिलकुल चुप हैं। इस रहस्य के बारे में कुछ नहीं कहा जा रहा। फिर उनकी शहीदी के बारे में सांकेतिक भाषा में *"रहिदे गुरु दरीआउ"* और *"भीड़ पई"* से ऐसे संकेत मिल जाते हैं। *"भीड़ पई"* से गुरु जी को यातनाएं देने का अनुमान लगाया जा सकता है और *"रहिदे गुरु दरीआउ"* से जैसे इतिहास में जिक्र आता है कि यातनाएं देने के पश्चात अंतिम समय गुरु पातशाह जी को रावी दरिया में बहा दिया गया आदि बातों से इतिहास की कड़ी जोड़ी जा सकती है। भाई गुरदास जी ने अपने शब्दों में यह दृश्य इस प्रकार पेश किया है :

रहिदे गुरु दरीआउ विचि मीन कुलीन हेतु निरबाणी।
दरसनु देखि पतंग जिउ जोती अंदरि जोति समाणी।
सबदु सुरति लिव मिरग जिउ भीड़ पई चिति अवरु न आणी।
चरण कवल मिलि भवर जिउ सुख संपट विचि रैणि विहाणी।
गुरु उपदेसु न विसरै बाबीहे जिउ आख वखाणी।
गुरमुखि सुख फलु पिरम रसु सहज समाधि साधसंगि जाणी।
गुर अरजन विटहु कुरबाणी ॥ (वार २४:२३)

इस पउड़ी का समूचा भावार्थ यह है कि सतिगुरु प्रभु की ज्योति में इस तरह लीन हो गए जैसे मछली दरिया में लीन रहती है। पातशाह जी पतंग की तरह ज्योति स्वरूप निरंकार का दर्शन करके उसकी ज्योति में समा गए। बड़ी भारी मुसीबत पड़ने पर सतिगुरु जी की सुरति अकाल पुरख के चरणों में लगी रही। आपने अपने गुरु का उपदेश नहीं भुलाया और अंत में बबीहे की तरह शबद-जाप करते रहे। आखिर में भाई साहिब कहते हैं कि ऐसी अनोखी करनी के मालिक गुरु अरजन साहिब पर मैं बहिलार जाता हूं, कुर्बान जाता हूं।

सतिगुरु का प्रताप : गुरु अरजन साहिब के गुरु-काल के समय प्रिथीचंद तथा उसके सहयोगी कुछ मसंदों की तरफ से गुरु-घर के लिए कई तरह की मुश्किलें और परेशानियां पैदा की गईं। नतीजे के तौर पर सीधे-सादे सिक्खों को बहला-फुसलाकर धन प्रिथीचंद ले लेता और लंगर छकने के लिए सतिगुरु जी के लंगर में भेज देता। भाई गुरदास जी लिखते हैं कि श्री गुरु अरजन देव जी का ऐसा प्रताप है कि सतिगुरु जी ने चारों दिशायें अपने अधीन कर लीं, बेअंत संगत सतिगुरु जी के दर्शन को आती है और रहमत प्राप्त करती है। गुरु के हुक्म से निरंतर लंगर चलता है, कोई कमी नहीं, क्योंकि यह सब पूर्ण गुरु की बदौलत है। गुरमुखों का छत्र अकाल पुरख का दिया हुआ है और गुरु साहिब परिपूर्ण परमात्मा के पद पर मस्त रहते

हैं। आप जी की महिमा वेदों, कतेबों से अगोचर है। सतिगुरु जी ने गुरसिक्खों को उपदेश देकर उनकी माया में ही उदास कर दिया है और अनेक गुरसिक्खों को राजा जनक जैसा भक्त बना दिया है। सतिगुरु जी की समरथा और कीमत नहीं पाई जा सकती:

चारे चक निवाइओनु सिख संगति आवै अगणता।
लंगरु चलै गुर सबदि पूरे पूरी बणी बणता।
गुरमुखि छत्रु निरंजनी पूरन ब्रहम परम पद पता।
वेद कतेब अगोचरा गुरमुखि सबदु साधसंगु सता।
माइआ विचि उदासु करि गुरु सिख जनक असंख भगता।
कुदरति कीम न जाणीऐ अकथ कथा अबिगत अबिगता।
गुरमुखि सुख फलु सहज जुगता ॥ (वार २४:२०)

सतिगुरु की महिमा : भाई गुरदास जी ने गुरु साहिब की महिमा का गुण गायन करते हुए कहा है कि सतिगुरु जी ऐसे परमहंस की तरह हैं जो ज्ञान-उपदेश के द्वारा सच और झूठ (दूध और पानी) को स्पष्ट कर देते हैं। गुरु साहिब अपने सिक्खों को विकारों की लहरों से बचाते हैं। कूंज की तरह सतिगुरु जी कहीं भी हों अपने सिक्खों को याद रखते हैं। सिक्ख को भी चाहिए कि वो सतिगुरु के साथ प्रीति करे और सतिगुरु की बाणी द्वारा ज्ञान, ध्यान और निरंकार का सिमरन कर सतिगुर की शिक्षा लेकर गुरसिक्ख बने तथा संसार में गुरमुख जहां भी जाएं वहीं सतसंग करें और गुरसिक्खी वचन कमाएं :

हंसहु हंस गिआनु करि दुधै विचहु कढै पाणी।
कच्छहु कछु धिआनि धरि लहरि न विआपै घुंमणवाणी।
कूंजहु कूंजु वखाणीऐ सिमरणु करि उडै असमाणी।
गुर परचै गुर जाणीऐ गिआनि धिआनि सिमरणि गुरबाणी।
गुर सिख लै गुरसिख होणि साधसंगति जग अंदरि जाणी।
पैरी पै पा खाक होइ गरबु निवारि गरीबी आणी।
पी चरणोदकु अंम्रित वाणी ॥ (वार २४:२२)

गुरु साहिब की महिमा का और वर्णन करते हुए भाई गुरदास जी पातशाह को 'सच के सृजनहार' बताते हैं। वे इसकी व्याख्या करते हुए उल्लेख करते हैं कि गुरु साहिब की गति को कोई नहीं जान सकता। सतिगुरु जी माया, कल्पना, योनियों और काल से रहित एवं अपार हैं। सूर्य और चंद्रमा के प्रकाश से ऊपर परम परमात्मा की ज्योति का प्रकाश है। सतिगुरु जी को सारा जगत नमस्कार करता है और जो भी नमस्कार करता है उसका उद्धार हो जाता है। गुरमुख सतिगुरु जी के नाम-दान और स्नान में दृढ़ रहते हैं :

अलख निरंजनु आखीऐ अकल अजोनि अकाल अपारा।
रवि ससि जोति अदोत लंघि परम जोति परमेसरु पिआरा।
जगमग जोति निरंतरी जगजीवन जग जै जैकारा।
(वार २४:१८)

सार-तत्व : भाई गुरदास जी की वारों में प्रस्तुत गुरु अरजन साहिब के जीवन-इतिहास एवं शख्सियत के बारे में सार-तत्व के तौर पर कहा जा सकता है कि गुरु अरजन साहिब गुरु नानक साहिब की पांचवीं ज्योति थे। आप जी की महिमा सारे संसार में फैली हुई थी। पातशाह ने जहां समय की हकूमतों के कष्ट झेले वहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना की। श्री गुरु अरजन देव जी की शरण आने वाले को अमरता प्राप्त होती है।



सलतनते-पंजम : पातशाही पांचवीं श्री गुरु अरजन देव जी

*-जनाब हुसन-उल-चराग**

भाई नंद लाल जी ने गुरु-महिमा को बयान करते हुए सिक्खों द्वारा गुरु साहिबान को पातशाही पहिली, दूसरी . . . इत्यादि नाम दिया है और श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उन्हें महला १,२,३ आदि। भाई साहिब ने 'पातशाही' की जगह 'सलतनत' का नाम दिया है। 'पातशाही' और 'सलतनत' शब्दों का मैं आरंभ में ही विवेचन कर चुका हूं। 'सलतनते-चहारम', जो पहले छप चुकी है, के पश्चात् अब तरतीबवार 'सलतनते-पंजम' यानी कि पातशाही पांचवीं की भाई जी द्वारा की गई उपमा व उनकी फारसी भाषा में कही गई महिमा का हिंदी में तरजुमा यहां पेश है। सबसे पहले जोति-विगास में से आरंभ करता हूं :

हमू नानक असतो हमू अंगद असत
हमू अमरदास अफजलो अमजद असत।२३।
हमू रामदासो हमू अरजुन असत
हमू हरिगोबिंद अकरमो अहिसन असत।२४।

जो ज्योति (प्रकाश) श्री गुरु नानक देव जी को धुर से प्राप्त हुई वही ज्योति श्री गुरु अंगद देव जी भये और जो ज्योति श्री गुरु अंगद देव जी हुए वही ज्योति श्री गुरु अमरदास हो गये . . . और उसके आगे वही प्रकाश श्री गुरु रामदास जी में पहुंचा और उसके उपरांत वही ज्योति पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी को प्राप्त हुई।

इसके आगे भाई साहिब ने जो गुरु-महिमा 'गंज (खजाना-जखीरा-भंडार) नामा' में की वह इस प्रकार है:-

सलतनते पंजमश हुलीआ आराए शवारके आं हर चहार मशउले हक्क अनवार।

भाव पातशाही पांचवीं उनसे पहले उन चारों मशालों (रौशन-ज्योति) के प्रकाश को सजाने वाली है यानी कि उन्होंने सिक्ख मार्ग को और आगे बढ़ाया है।

व अज रुतबह हर पंज कुदसी वाला मनजल व बुलंद इकतदार।

भाव रुतबे (दर्जे) के मुताबिक पांचों गुरु अलाही और बुलंदी (ऊंचाई) की कदर-ओ-कीमत वाले हैं।

हक्क शकोह व हकीकत परवर अअ्ला अजमत फैज गुसतर।

भाव गुरु साहिबान हक्को-हकूमत और हकीकत (असलीयत) को निभाने वाले सबसे अच्छे (आअ्ला-अव्वल दर्जे) तथा बख्शिशों से निहाल करने वाले हैं।

मकबूले हजरते किबरीया व मतलूबे बार गाहे बे हमता।

भाव मकबूले (मनजूर), हजरते (महापुरुष), अकाल पुरख के घर प्रवान तथा उसकी दरगाह में पसंद कर लिये गये हैं।

ओ दर हक्क व हक्क दर जातश व अफजूंतर अज बिआं हर जुबां सिफातश।

भाव गुरु जी की सिफत-सलाह को बयान करने में हमारी जुबां (जीभा) असमर्थ है।

खासान खाके राहश व कुदसीआं दर जिल्ले पनाहश।

भाव खासान (खास लोक), बड़े लोग भी 'खाके राहश', उसके रास्ते की धूल के बराबर हैं और पवित्र (अच्छे) लोग भी उनकी छत्र-

**१४-सी, रेस कोर्स रोड, श्री अमृतसर। मोः ९८१५१-८८८१०*

छाया में शरण (पनाह) हासिल किए हुए हैं।
अलफे नामे अहदीयत इनतजामश इआनत बखशे हर ना-उंमीद व रांदह।
व राए राहत अफजाइश रफीके हर जलीले व दरमांदह।

भाव अलफ-नामे, . . . अलफ, अल्ला . . इक्क-ओअंकार (ੴ), भिन्न-भिन्न तथा भांति-भांति के लोक-संसार को एक वाहिगुरु की एको-एक लड़ी (एक मार्ग), एक अकाल पुरख के रास्ते पर लाने के लिये श्री गुरु अरजन देव जी के नाम में आया फारसी का लफ्ज 'अलफ' जिसे हम हिंदी-पंजाबी में 'अ' कहते हैं, काफी है, जो बे-उम्मीद और बेसहारों का सहारा है।

. . . और गुरु जी के नाम का अगला अक्षर 'रे', जिसे हम हिंदी-पंजाबी में 'र' लिखते हैं, यह अक्षर आजिज और बेघर लोगों को 'व राए राहत' यानी कि राहत देने वाला है।
जीमे हक्क नसीमश जां फजाईदहए इरादत गुजीनां व नूने फैज मकरुनश नवा जिंदहए अकीदत आईना।

भाव स्वर्ग-की-सी सुगंधी 'जीमे हक्क' जीम, जिसे हम हिंदी-पंजाबी में 'ज' लिखते हैं, पक्के विश्वास वाले लोगों की आत्मा को सुखद-ताजगी प्रदान करने वाली है और 'नून' हिंदी अक्षर 'न' बख्शिशों से भरपूर श्रद्धा रखने वालों को संवारने वाला है।
गुरू अरजन जुमला जूदो फजाल हकीकत पजोहिंदाइ हक्क जमाल।७५।

भाव श्री गुरु अरजन देव जी बख्शिशों और बढ़प्पन (उपमाओं) का रूप हैं और हकीकत यानी कि अकाल पुरख की असलियत को पा लेने वाले हैं।
वजूदश हमा रहिमति ईजदी सआदत फजाइंदइ सरमदी।७६।

भाव गुरु जी का सारा वजूद (शरीर) जिसमें से अकाल पुरख की झलक दिखाई देती है और जो सदा-सदा के लिये अच्छाई (नेकी) को बढ़ाने वाला है।
मुरीदश दो आलम चिह बल सद हजार हमा करमहाइ ऊ जुर्राअ ख्वार।७७।

भाव 'दो आलम', दो जहां (लोक-परलोक) तो क्या सद (सौ=१००), हजार, लाखों और भी उसके मानने वाले मुरीद (मुरीदश) हैं और वे सभी उसकी मिहर (बख्शिश) के अमृत के घूंट पी रहे हैं यानी कि उसकी नेहमतों का भोग कर रहे हैं।
अजो नजम कालि हक्क अंदेशा रा बदो नसक इलइ यकीं-पेशा रा।७८।

भाव अकाल पुरख की आई धुर की बाणी (अजो नजम कालि हक्क) की रोशनी भी उसी से यानी कि गुरु जी से (अंदेशा रा) रौशन होकर आ रही है और यकीं-पेशा के साथ विश्वास तथा स्वीकार कर ली गई (बदो नसक इलइ) रौशनी के भरपूर लेखन भी उसी से आ रहे हैं।
जलाइ मकालि हक्क आमद अजो फरोगि जमालि हक्क आमद अजो।७९।

भाव रब्बी कलाम धुर की बाणी (जलाइ मकालि हक्क) का प्रकाश भी उसी द्वारा प्राप्त हुआ है यानी कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना भी उन्हीं (श्री गुरु अरजन देव जी) द्वारा हुई है और फरोगि जमालि हक्क यानी कि गुरबाणी द्वारा ही अकाल पुरख के अलाही हुस्न को निखारने और संवारने से सब कुछ खिल उठा है। इसका तात्पर्य यूं होगा कि पहले धुर की बाणी श्री गुरु नानक देव जी और उनकी ज्योति जो आगे चली, में प्राप्त हुई। इससे बाणी की खूबियों वाला सिक्ख-मार्ग आरंभ हुआ और इस बाणी से ही हमें एको-एक अकाल पुरख वाहिगुरु 'ੴ' का ज्ञान प्राप्त हुआ।



"श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" कृत भाई संतोख सिंघ के अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी का चरित्र-चित्रण

*-स. कुलदीप सिंघ**

"श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" में श्री गुरु अरजन देव जी का जीवन एक शांत एवं सत्याग्रह करने वाले दैवीय पुरुष के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उनके जीवन के तीन पहलू हैं--"श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण, श्री आदि ग्रंथ साहिब का संकलन तथा पारिवारिक कलह।" इन तीन पहलुओं के बीच (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के जन्म और विवाह के मनोरम वर्णन को भी स्थान दिया गया है। रास तीन की प्रस्तावना में कथा-विस्तार को स्पष्ट किया गया है :

गुर जस उज्जल जल भरपूरा।
प्रेम प्रवाह बिमल वहु रूरा ॥१७॥ . . .
गुर जस जल ते सभि सुख पावहिं।
बिशियन त्रिखा तुरत बिनसावहिं ॥२०॥
(अध्याय १)

श्री गुरु अरजन देव जी के जन्म का उल्लेख रास एक में श्री गुरु रामदास के जीवन की रूप-रेखा के अध्याय ४१ में किया गया है जो संवत् १६१० (१५५३ ई) की बजाय संवत् १६२० (१५६३ ई) होना चाहिए। गुरु जी के लाहौर निवास एवं श्री गुरु रामदास जी को भेजे पत्रों का विवरण रास दो में श्री गुरु रामदास जी के जीवन संदर्भ में है। रास दो का समापन श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण पर होता है।

श्री गुरु रामदास जी के परलोक गमन के बाद श्री गुरु अरजन देव जी श्री अमृतसर आये। उन्होंने बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरदास जी तथा श्रद्धावान सिक्ख भाई कलिआण जी की सहायता से आरंभिक कठिनाइयों को दूर किया तथा श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण की ओर पूरा ध्यान दिया। रास १ के उत्तरार्द्ध (अध्याय ३४ से ५७) में सरोवर-खुदाई और श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण के विविध प्रसंग हैं। गुरु जी सरोवर की खुदाई में निकले योगी को एकेश्वरवाद के उपनिषद के श्लोक की पंक्ति "अणोरणीयान, महतो महीयान की व्याख्या के द्वारा विद्वता से चकित कर देते हैं :

सभिनि अधार भूत इक अहै।
नाना नसहि नीक जे लहै।
सूखम ते अति सूखम जान।
कहियति महां महद महीआन ॥१५॥
सूरज आदि प्रकाशक जेई।
तिस की जोति प्रकाशहि एई।
कारण भूत सकल को एक।
हुइ प्रापति उर करति बिबेक ॥१६॥ (अध्याय ३६)

श्री अमृतसर की सेवा में कार्यरत भाई भगतू जी और भाई मंझ जी के प्रसंग विस्तार से दिये गये हैं। भाई मंझ जी एक बार लंगर के लिए लकड़ी लाते समय कुएं में गिर पड़े। उन्होंने लकड़ी का गट्ठर सिर पर ही रखा। श्री गुरु अरजन देव जी भाई मंझ जी की सहायता के लिए अस्त-व्यस्त वस्त्र पहने ही दौड़ पड़े।

श्री गुरु अरजन देव जी ने सरोवर की कार-सेवा में स्वयं भाग लिया। सरोवर के बाद श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण हुआ। श्री

**सी-१२७, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-२११०१६, फोन : ०५३२-२६५७९६९*

अमृतसर नगर बसाया गया। गुरु जी ने नगरवासियों को दोनों समय श्री हरिमंदर साहिब में प्रार्थना करने का सुझाव दिया। कर्त्ता के अभिमान से दूर रहने की शिक्षा श्री गुरु अंगद देव जी के समर्पण-भाव से मिलती है। जगत में सिक्खी के विस्तार के आशीर्वाद से रास दो का समापन होता है :

सुनि कै हाथु जोरि कहि सोइ।
इहु सभि कारज तुम ते होइ।
आपि सकल बिधि हो समरत्थ।
चहो सु करो तुमारे हत्थ ॥४९॥ (अध्याय ५७)

श्री गुरु अरजन देव जी के शांत और सहनशील पक्ष को उजागर करने वाली रास तीन का आरंभ श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के जन्म से वीरता के बीज वपन से होता है। सभी श्रोतागण श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के जन्म की कथा सुनने का आग्रह करते हैं। माता गंगा जी की पुत्र-याचना, गुरु जी द्वारा सेवा-विधि, बाबा बुड्ढा जी के वरदान की गाथा मनोहारी है। भाई संतोख सिंघ संस्कृत की रामायण का अनुवाद कर चुके थे। श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के बाल-रूप का वर्णन करते समय वे तुलसीदास रचित कवितावली के प्रथम सवैये के अनुरूप शैली अपनाते हैं :

श्री हरिगोबिंद सुंदर रूप अनूपम बैठने लागि तबै।
सोच बिमोचति लोचन ते अविलोकति तेज समेत जबै।
लेति उछंग पिता गुर पूरन संगति पंगति देखि सबै।
जयों अज नंदन कै रघुनंदन बालक बैस महिं बैठि फबै ॥२३॥ (अध्याय ८)

श्री गुरु अरजन देव जी के सपूत ने पूतना के समान भेजी धाइ की मन की पवित्रता रहित इच्छा का मर्दन किया। *(अध्याय ८)* उन्होंने दो वर्ष की आयु में सांप का मर्दन किया तथा ब्राह्मण का नाश किया :

धाइ हती, पंनग हन्यो, दिज को कीनि बिनाश।
उलट परति है तिनहुं पर, बुरा जु चहिं करि आस ॥२९॥ (अध्याय १७)

रास ३ के पूरवार्द्ध के प्रथम भाग में श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के बचपन तथा प्रिथीचंद के षड़यंत्र का विवरण है। *(१-१७)* श्री गुरु अरजन देव जी तीन वर्ष वडाली में रहकर लौटते हैं। लौटने पर प्रिथीचंद के पारिवारिक वैमनस्य के प्रसंग हैं। प्रिथीचंद सुलही खां से मिलकर लाहौर के समीप एक गांव का पट्टा प्राप्त करता है और वहां श्री अमृतसर की भांति तालाब खुदवा कर नगर बसाना चाहता है। भाई गुरदास जी के पहुंचने पर वह गाली-गलौच करता है। वैर-भाव से पूर्ण प्रिथीए ने बिना किसी संकोच के कई कदम उठाये। अब हितकारी प्रभाव की गुरु जी के जीवन की प्रभु-प्रेम की कथा आरंभ करते हैं :

इम प्रसंग रिस ढंग को प्रिथीए कियो निसंग।
रंग रंग की कथा अब गुर की सुनि हित संग ॥१॥
(अध्याय २८)

श्री गुरु अरजन देव जी के श्री आदि ग्रंथ साहिब के संकलन से सम्बंधित प्रसंग को रास ३ के मध्य भाग में (अध्याय ३३-५० तक) दिया गया है तथा अंत में सिक्खों को उपदेश-चर्चा का वर्णन है। रंग-रंग की कथा के संदर्भ में श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के ज्वर से पीड़ित होने तथा प्रार्थना से निरोग्य होने का वर्णन है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के विद्याध्ययन का आरंभ बाबा बुड्ढा जी से कराया गया।

बाणी एकत्रीकरण के लिए श्री गुरु अरजन देव जी को स्वत: गोइंदवाल श्री गुरु अमरदास

जी के पुत्र बाबा मोहन जी के पास जाना पड़ा। बाबा मोहन ने प्रथमत: श्री गुरु अरजन देव जी को फटकार लगाई। बाबा मोहन जी ने गुरु जी को बताया कि उसका आचरण श्री गुरु अमरदास जी के द्वारा परलोक गमन के समय वचनों के अनुरूप था। उन्होंने कहा था कि श्री गुरु अरजन देव जी उसे वर देंगे। श्री गुरु अरजन देव जी ने उसे वर दिया:

मोहन तूं सुफलु फलिआ सणु परवारे ॥
मोहन पुत्र मीत भाई कुटंब सभि तारे ॥
(पन्ना २४८)

बाबा मोहन के वरदान के बाद बाबा मोहरी तथा उसकी पत्नी के पारिवारिक रिश्तों का मोहक दृश्य प्रस्तुत किया गया है। बाबा मोहरी से कहकर पोथियों के लिए एक पालकी मंगाई गई। पालकी पर पोथियों को रखा गया। श्री गुरु ग्रंथ का यह पहला (खासा) उत्साहजनक उत्सव था। इसका वर्णन आल्हा छंद में लयबद्ध किया गया है:

पद अरबिंद नगन ही गमने स्री अरजन खासे पिछवाइ।
आदि मोहरी अपर सकल ही कहे चढहु सिवका सुख पाइ।
भनयो गुरु इन रूप चतुर गुन इनको आदर जितो कराइ।
लोक परलोक अनंद तितक लहि विघन विनासन है समुदाइ ॥१३॥ (अध्याय ५०)

श्री अमृतसर पहुंच कर गुरु जी ने रामसर नामक स्थान पर रहकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन का कार्य संभाला। गुरु जी ने भाई गुरदास जी को बुलाकर गुरमुखी लिपि में श्री आदि ग्रंथ साहिब की बीड़ लिखे जाने का आदेश दिया। गुरमति के अनुकूल जो भी 'बाणी' होगी बिना भेदभाव के दर्ज की जाएगी।

श्री आदि ग्रंथ साहिब सम्पूर्ण होने का शुभ अवसर आया। श्री आदि ग्रंथ साहिब को बाबा बुड्ढा जी ने सिर पर रखा। श्री गुरु अरजन देव जी के हाथ में चवर था। चंद्रमा के समान सुंदर (गुरु) हरिगोबिंद साहिब साथ चलकर शोभा बढ़ा रहे थे :

हरि मंदिर महिं जाइ पहूंचे।
रागी राग करति सुर ऊचे।
मंजी सहत ग्रिंथ तहिं थापि।
बैठे निकट गुरू तब आपि ॥३१॥ (अध्याय ५०)

श्री गुरु अरजन देव जी ने पारायण की नैतिक दिनचर्चा निर्धारित की जो आज तक अपनाई जा रही है :

स्री गुर कहयो प्रभू दरबारा।
ग्रिंथ प्रमेसुर को अवतारा।
डेढ जाम जामनि जब जाइ।
पठहि सोहिला किरतन गाइ ॥४३॥
बहुरो ले जावहु असवारा।
जिसी कोठरी रहनि हमारा।
तहां निवास करहु जुत मान।
जाम डेढ जामनि रहि आन ॥४४॥ . . .
रागी आसा वार सु गावहिं।
अनिक राग के सबद सुनावहिं।
द्वै घटिका जामनि रहि जबै।
आनहु स्री ग्रिंथ साहिब तबै ॥४६॥ (अध्याय ५०)

रास ३ में श्री आदि ग्रंथ साहिब की स्थापना के बाद के अध्यायों में सिक्खों को दी गई शिक्षाओं के अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण प्रसंग तरनतारन में ताल और रोगी सेवा केंद्र की स्थापना से सम्बंधित है।

श्री गुरु अरजन देव जी ने जनसम्पर्क के लिए सुगमता हेतु लाहौर-दिल्ली मुख्य मार्ग पर १५९० ई में परगना पट्टी में (तरनतारन में) भूमि प्राप्त की। तालाब के निर्माण के लिए

भट्ठे में ईंट तैयार की गई, किन्तु उन ईंटों को नूरदीन नामक स्थानीय अधिकारी ने अपने बल से बिना गुरु जी की अनुमति से अपनी सराय में लगा लिया। गुरु जी ने इसे अपने स्वाभिमान पर आघात माना। यह घटना शासकों के विरुद्ध सत्याग्रह का पहला उद्घोष था।

"जब इस सराय का विशाल भवन चारों ओर से गिरा दिया जावेगा तब मेरे भाग्यशाली सिक्ख इस ताल को पक्का करावेंगे। जब त्रस्त हिंदुओं का मनोबल बढ़ेगा वे तुर्कों को सामने लड़कर मारेंगे, उनके शासन की जड़ उखाड़ेंगे, तब इस ताल की परिक्रमा बनेगी।"

"जिस बल के जोर पर तुमने हमसे ईंट ली है उसी बल के द्वारा हम अपना स्वत्व प्राप्त करेंगे, तभी हमारा तीर्थ निर्मित होगा।"

जिउ बल मोल तुमहु ने दीनि।
ईंट पजावनि की सभि लीनि।
सो बल मोल देहिंगे तुम को।
तबै त्यार तीरथ हुइ हम को ॥३८॥

(अध्याय ६८/३)

इस प्रकार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के जन्म से वीरता के संदेश से आरंभ रास तीन के समापन में अन्याय के प्रति आक्रोश और विरोध का दृढ़ संकल्प है। रास के अंतिम अध्याय में प्रभु के सच्चे सेवक को प्रभु के दर का 'भिखारी' बताया है जो गुरमुख को उज्जवल भविष्य का संदेश देता है :

सिक्खनि प्रिय नित बनहिं सहाई।
लोक प्रलोकहि लेहिं बचाई।
कवि संतोख सिंघ करि गुर बंदन।
क्रिपा धारि गन बिघन निकंदन ॥४१॥

(अध्याय ६९)

रास तीन का आरंभ श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के जन्म १५९५ से किया गया था। रास चार का आरंभ ९ वर्ष बाद प्राप्त श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के विवाह के सम्बंध में चंदू की लड़की के प्रस्ताव से होता है। गुरु जी ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया जिससे रास चार में चंदू एक नये खलनायक के रूप में उभरता है। श्री गुरु अरजन देव जी ने डल्ला निवासी नाराइण दास की पुत्री दामोदरी से श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब का रिश्ता स्वीकार किया। श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के विवाह का वर्णन दस अध्यायों में किया गया है। बारात की श्री अमृतसर वापसी पर श्री हरिमंदर साहिब की ओर मुड़ना और माथा टेकने के प्रसंग से गुरमति परंपरा के आरंभ का संकेत मिलता है।

शादी के बाद पारिवारिक उलझनों का सिलसिला पुन: आरंभ हुआ। प्रिथीए ने फौजदार सुलही खां को श्री गुरु अरजन देव जी से संघर्ष हेतु बुलाया। वह जब उत्साहपूर्वक अपने हेहर नगर बसाने की योजना सुलही को दिखा रहा था तभी सुलही का घोड़ा ईंटों के पकाने के लिए बनाए गए आग के लावे में कूद पड़ा और सुलही की मौत हो गई। अब चंदू और प्रिथीए का गठजोड़ सक्रिय हुआ। चंदू दीवान ने जहांगीर की कश्मीर यात्रा की योजना बनवाई। उसने सुलही खां के भतीजे सुलबी से भी सम्पर्क किया और श्री गुरु अरजन देव जी के विरुद्ध भड़काया। सुलबी जहांगीर के साथ ही आ रहा था। रास्ते में एक सैयद ने उससे वेतन मांगा। सुलबी ने उसे गाली दी। तब सैयद ने सुलबी को मार दिया। जहांगीर के लाहौर पहुंचने की अवधि में ही प्रिथीए के गांव में हैजा फैला तथा प्रिथीए की मौत हो गयी। इस प्रकार प्रिथीआ भी अपने पुत्र को वैर का संदेश देकर संसार से विदा हुआ।

श्री गुरु अरजन देव जी शादी प्रस्ताव के दिनों में ही चंदू को विरोध का त्याग करने के विषय में समझा चुके थे :

सभि को पति परमेसर अहै।
सुख दुख की सुधि जग की लहै।
भला बुरा जो करम करंते।
तिन ते सुख दुख जीव धरंते ॥५०॥
चितवति बुरा, बुरा फल पावै।
इही नेम प्रभु ते बनि आवै।
पर को खनहि कूप हित बुरे।
झेरे गिरै सु बहु दुख भरै ॥५१॥

(अध्याय ८/४)

परमेश्वर की दैवीय शक्ति की आस्था में श्री गुरु अरजन देव जी का जीवन बीत रहा था। श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब शस्त्र-विद्या सीख रहे थे। गुरु की अगुआई में संगत विकारों से रहित समरसता से निवास कर रही थी। भक्ति की सरिता बह रही थी। उसके श्रद्धा के श्रेष्ठ जल को सिक्ख ग्रहण कर रहे थे। सभी जन प्रसन्न थे, सद्गुण कमल के समान खिल रहे थे। भक्ति-सरिता के दोनों किनारों पर भ्रम और संशय का नाश हो रहा था :

सलिता सुंदर भगति की सभि देश बिथारी।
सिक्ख मीन नहिं तज सकहिं शरधा बर बारी।
सद्गुन कमल प्रफुलयते, जन गन जलजंता।
भ्रम बेमुखता कूल द्वै संसे तुर हंता ॥३०॥

(अध्याय २३/४)

कथा के इस प्रवाह में प्रभु के नए चोज (लीला) का समावेश हुआ। श्री गुरु अरजन देव जी तरनतारन में रुके थे। वहां जहांगीर के पुत्र खुसरो का आगमन हुआ। सहज भावना से गुरु जी से वह मिला। गुरु जी ने विदाई के समय सहायतार्थ उसे ५००० मुद्रायें दीं। चंदू ने इसकी शिकायत जहांगीर से की तथा जहांगीर ने गुरु जी पर दो लाख का जुर्माना किया। कर संग्रह करने वाला (अहिदी) गुरु जी के द्वार पर पहुंचा। गुरु जी की चेतना पर आघात हुआ। उन्होंने कर न देने का संकल्प सत्याग्रह के रूप में किया। मुगल शासन की स्थापना के समय सिक्ख गुरुओं का समर्थन इस आधार पर था कि शासक न्यायपूर्ण व्यवहार करेंगे। गुरु जी ने अपने प्राणों की आहुति देकर मुगल शासन के अन्याय को समाप्त करने का निश्चय किया :

स्री नानक की बखशिश भारी।
सिर दे करि छीनहिं हम सारी ॥३५॥

(अध्याय ३०)

गुरु जी ने बाबा बुड्ढा जी से श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब को गुरगद्दी बख्शिश करने का विचार प्रकट किया। बाबा बुड्ढा जी ने सहमति व्यक्त की। जब धर्म की ग्लानि (विपर्यय-उलटी गति) होती है तब सतिगुरु प्रकट होकर प्रजा का उत्थान करते हैं।

श्री गुरु अरजन देव जी के सत्य के आग्रह पर शहादत के आठ अध्याय हैं। वे लाहौर जाकर एक श्रद्धावान सिक्ख के पास रुके। वहां उनसे मिलने बाबा मोहरी का पुत्र अरथमल पहुंचा। गुरु जी ने अपने आशय को स्पष्ट किया। वही कार्य श्रेयस्कर हैं जो कर्ता पुरख की रजा से हो रहे हैं :

जो करते ने कारन करने।
सो सभि ते कारज हैं सरने ॥३६॥

(अध्याय ३२/४)

गुरु जी ने जहांगीर से भेंट की और गुरबाणी के धर्म-समन्वय के संदेश को स्पष्ट किया। चंदू जहांगीर से प्रार्थना करके गुरु जी को अपने घर ले आया तथा गुरु जी को कष्ट देने लगा। गुरु जी ने शिष्यों को आत्मिक शक्ति का प्रयोग करने से मना कर दिया। यदि तपती

रेत से हमारे प्राण निकलें तब हम सच्ची प्रशंसा के पात्र होंगे। चंदू के सिपाहियों ने लाठियों से प्रहार किया। गुरु जी ने उसे प्रभु की इच्छा बताया।

गुरु जी को तप्त लोह पर बिठाया गया। गुरु जी के परलोक गमन करने पर आकाश लाल हो गया। इस पर लोगों को आश्चर्य हुआ। चंदू की पुत्र-वधू श्रद्धावान सिक्ख पुत्री थी। उसने पिता से छिपकर गुरु जी को आहार पहुंचाने का कार्य किया। उसे गुरु जी के शहीद होने का आभास हुआ, तब तृण के समान प्राण त्याग कर वह भी परलोक सिधार गई :

भयो अकाश अरण ही बरणा।
पिखति लोक अचरज उर करणा।
सिख की सुता जानि तब गई।
त्रिण सम तन परहरि संग भई ॥४३॥

(अध्याय ३७/४)

जीवन भर प्रिथीए का साथ देने वाली पत्नी (करमो) ने अपने निर्मल विचार प्रिथीए की मृत्यु के बाद प्रकट किये:

जिम उलूक कहि सूर को--किम उदयति नीता।
क्यों न हिमाले महिं गरहि दुखदे हम चीता।
जिमि बिरहनि को चांदनी दीरघ दुखदाई।
तथा अनुज की कीरती कबहु न मन भाई।

(अध्याय २७/४/३,५)

श्री गुरु अरजन देव जी प्रकाश के सूर्य थे। उनके नित्य उदय होने पर उल्लू यह कह सकता है कि हमें क्यों दुख देते हो। उनकी कीर्ति चंद्रमा के समान शीतल थी जो प्रिथीचंद को विरहणी की तरह नापसंद थी। गुरु जी को सिक्खों से लगाव था। बुद्धू कुम्हार के द्वारा लक्खू सिक्ख को लंगर न छकाने पर गुरु जी ने लक्खू के कथन का संशोधन नहीं किया कि उसका आवा कच्चा रहेगा।

श्री गुरु अरजन देव जी का शांतिमय जीवन आत्मिक ऊर्जा से पूर्ण था। गुरु जी की अभिलाषा थी कि वे अपना छीना गया स्वत्व और संपदा बल से प्राप्त करें : *"सो बल मोल देहि तुम को।"* गुरु जी की अभिलाषा उनके पुत्र (श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब) और पड़पौत्र (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) ने पूरी की।



कविता

दीया

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

अपने तले अंधेरा छुपाकर, एक दीया रौशनी देता है।
अपना नन्हा बदन तपाकर, हमको लौ दमकती देता है।
लौ से अपने होंठ जलाकर, हमारे होठों को हंसी देता है।
उजाला प्यार का फैलाकर, नफरतों को चुनौती देता है।
अंधेरों के खिलाफ तनकर, यह पैगामे-जिंदगी देता है।
अंधेरी राहों पर बिछाने को, पीली-पीली चांदनी देता है।
जलाओ आंखों में आस के दीये, दीया रौशन रहनुमाई देता है।
जलाओ खुशी के लिए एक दीया, दीया जलकर खुशी देता है।



**बी-एक्स, ९२५, संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो : ०९८७२२-५४९९०*

"तवारीख गुरू खालसा" कृत ज्ञानी गिआन सिंघ में श्री गुरु अरजन देव जी का जीवन व उनके कार्य

*-डॉ. परमवीर सिंघ**

श्री गुरु अरजन देव जी का जीवन नम्रता, सेवा, परोपकार तथा आज्ञाकारी शख्सियत का प्रकटावा करता है। उनके इन गुणों के कारण ही श्री गुरु रामदास जी ने उन्हें गुरगद्दी पर स्थापित किया था। श्री गुरु रामदास जी के तीन सपुत्र थे--प्रिथीचंद, महांदेव तथा (गुरु) अरजन देव जी। घर में सबसे छोटे सपुत्र होने के बावजूद भी श्री गुरु रामदास जी द्वारा गुरगद्दी श्री (गुरु) अरजन देव जी को सौंपना इस बात का प्रतीक था कि श्री गुरु नानक देव जी की गद्दी विरासती अधिकार रूप में नहीं बल्कि गुरमति भावना ग्रहण करने पर आधारित है।

ज्ञानी गिआन सिंघ श्री गुरु अरजन देव जी के दो विवाह मानते हैं। वे कहते हैं कि श्री गुरु रामदास जी के घर १६१० वि. को जन्मे श्री गुरु अरजन देव जी का पहला विवाह १२ वर्ष की आयु में सं. १६२२ को मौड़ गांव के चंदन दास सूड़ी खत्री (क्षत्रिय) की बेटी के साथ हुआ जो कि नि:संतान ही सं. १६४१ को परलोक गमन कर गईं। फिर २६ वर्ष की आयु में ३ आषाढ़ सं. १६४६ को गुरु जी का दूसरा विवाह मऊ गांव के निवासी किशन चंद खत्री की सपुत्री माता गंगा जी के साथ हुआ, जिनसे (गुरु) हरिगोबिंद साहिब पैदा हुए। (अधिकतर इतिहासकार श्री गुरु अरजन देव जी का एक ही विवाह माता गंगा जी के साथ होना मानते हैं जो कि उचित प्रतीत होता है।)

श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरमति प्रचार तथा प्रसार को एक नई दिशा प्रदान की। उन्होंने गुरमति के विकास के लिए जो प्रमुख कार्य किए वे इस प्रकार हैं :

१. श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना
२. श्री तरनतारन साहिब की स्थापना
३. श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना

१. श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना : श्री गुरु अमरदास जी ने श्री अमृतसर की स्थापना का आगाज किया था। यहां पर एक सरोवर की खुदाई श्री गुरु रामदास जी ने आरंभ करवाई थी, जिसे अभी तक पक्का करना शेष था। श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरगद्दी की सेवा संभाली तो प्रिथीचंद ने उनका विरोध आरंभ कर दिया। रुपए-पैसे की कमी के कारण वो कार्य बीच में ही रुक गया था। प्रिथीचंद घर में बड़ा पुत्र था। गुरगद्दी पर वो अपना हक समझता था। श्री गुरु रामदास जी ने गुरगद्दी श्री (गुरु) अरजन देव जी को सौंपी तो वो ईर्ष्या करने लगा। श्री गुरु रामदास जी के समय गुरु-दर्शन को आई संगत की देखभाल तथा उनके सम्मान का कार्य प्रिथीचंद के पास था। दूर-नजदीक से आने वाली संगत के साथ उसका अच्छा सम्बंध था। गुरु-पुत्र होने के कारण संगत उसका सत्कार भी बहुत करती थी। गुरगद्दी न मिलने पर ईर्ष्यावश होकर उसने श्री गुरु अरजन देव जी को परेशान करना आरंभ कर दिया। संगत में वो खुद को

**सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो: ९८७२०-७४३२२*

'गुरु' बताकर उनसे चढ़ावा खुद ले लेता और लंगर छकने के समय वो संगत को लेकर श्री गुरु अरजन देव जी के पास आ जाता। नम्रता के पुंज तथा बड़े भाई के सत्कार रूप में श्री गुरु अरजन देव जी कुछ न बोलते और घर का सामान आदि बेच-बेचकर उन्होंने लंगर की प्रथा कायम रखी। गुरमति प्रचार करते हुए भाई गुरदास जी आगरा से वापिस आए तो लंगर में परशादा छकने चले गए। लंगर में परशादे-पानी की व्यवस्था देखकर उन्हें बड़ी हैरानी हुई क्योंकि वे श्री गुरु अमरदास जी तथा श्री गुरु रामदास जी के समय लंगर में पकते तरह-तरह के मिष्ठान देख चुके थे। लंगर में मिली चने की रोटी छकने के बाद वे बीबी भानी जी के पास गए और इसका कारण पूछा। सब कुछ जानकर भाई गुरदास जी को बहुत क्रोध आया और उन्होंने संगत के सामने प्रिथीचंद का पर्दाफाश कर संगत को सही दिशा में प्रेरित करने का मन बना लिया। उन्होंने गुरमति प्रचार के लिए बाहर गए भाई सालो, भाई पहिलू, भाई जेठा, भाई पैड़ा, भाई गुरीए आदि मुख्य सिक्खों को वापिस बुला लिया तथा बाबा बुड्ढा जी को लेने के लिए वे खुद चले गए। सभी ने आकर श्री अमृतसर को आते मार्गों पर पहरा देना आरंभ कर दिया और गुरु-दर्शन को आने वाली संगत को श्री गुरु अरजन देव जी के वास्तविक 'गुरु' होने के बारे में बताना शुरू कर दिया। संगत श्री गुरु अरजन देव जी के दर्शन को आने लगी तथा भेंटा आदि 'सच्चे गुरु' के आगे अर्पित करने लगी। गुरु-घर आने वाला धन परोपकार के लिए खर्च होना आरंभ हो गया। जहां लंगर-व्यवस्था में सुधार आया वहां श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु रामदास जी के समय से शेष रुके हुए सरोवर की खुदाई के काम को भी आगे चलाया। लेखक बताता है कि "अमृतसर ताल की सेवा करने के लिए जब गुरु साहिब के हुकमनामे सारे देशों में मसंदों के पास पहुंचे तो वे अपने-अपने परगने की संगत लेकर आने लगे। कोई दस दिन, कोई बीस दिन ताल की सेवा तथा गुरु जी के दर्शन कर, शबद-साखी-उपदेश सुनकर व मनन करते हुए यथायोग्य पूजा देकर चले जाते। . . . सैंकड़े सिक्ख प्रतिदिन आते-जाते रहते।" इसी सरोवर के मध्य गुरु साहिब ने श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना की जिसके चार दरवाजे चारों दिशाओं से आने वाले यात्रियों के लिए हमेशा खुले रहते हैं।

२. श्री तरनतारन साहिब की स्थापना : गुरमति प्रचार के लिए श्री गुरु अरजन देव जी आस-पास के गांवों में चले जाया करते थे। एक बार गुरु जी भाई हिंदाल की विनती मानकर जंडियाला गांव आए। वहां से आगे गांव खासा चले गए। सिक्खों ने यहां सदीवी रूप से सतिसंग कायम करने की विनती की तो गुरु जी ने आसपास की जमीन खरीद कर वहां एक नगर तरनतारन बसाया। गुरु जी ने सरोवर बनाने के लिए वहां एक ताल खुदवाया और उसे पक्का करने हेतु आवे पकाए अर्थात् ईंटें पकाईं। लेखक बताता है कि जब ईंटें पककर तैयार हो गईं तो नूरदीन के बेटे अमीरदीन ने जबरदस्ती ईंटें उठाकर अपनी हवेली में लगा लीं। सिक्खों ने गुरु जी के पास विनती की तो वचन हुआ कि आप दिलगीर (उदास) न हों, यही ईंटें उठाकर हमारे सिक्ख इस ताल को लगा लेंगे। समय आने पर सरदार बुद्ध सिंघ फैजलपुरीए ने गुरु जी का वचन सत्य कर दिखाया। आस्था है कि यहां कुष्ट रोगी तंदरुस्त होते हैं। गुरु जी द्वारा बसाया यह नगर बहुत आबाद है।

३. श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना : श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना श्री गुरु अरजन देव जी के जीवन का एक प्रमुख कार्य है। श्री गुरु नानक देव जी के समय से ही **'शबद'** को **'गुरु'** का रूप माना जाता रहा है। इस भावना के अनुसार **'शबद'** जड़ है जिससे सिक्खी का पौधा प्रफुल्लित होता है। धर्म-ग्रंथ किसी भी धर्म का मूल होते हैं जिससे उस धर्म के पैरोकार शिक्षा प्राप्त करते हैं। धर्म की शिक्षाओं को सुचारू रूप में श्रद्धालुओं तक ले जाने और लंबे समय तक कायम रखने के लिए उनका कलमबद्ध होना आवश्यक है। सीना-ब-सीना चली धार्मिक शिक्षाएं भी आखिर लिखित रूप में ही कायम रह सकती थीं, नहीं तो वर्तमान तक उनका क्या रूप होता, कोई नहीं बता सकता। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना करके श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरबाणी को किंतु-मुक्त किया है। कोई भी मनुष्य इस महान कार्य की इस विलक्षणता को आंखों से ओझल नहीं कर सकता। गुरु जी ने गुरु-परंपरा के माध्यम से प्राप्त बाणी के साथ-साथ गुरु साहिबान की उस बाणी को भी देखा था जो प्रतिलिपि के रूप में सिक्खों के पास मौजूद थी। श्री गुरु अमरदास जी के पुत्र बाबा मोहन जी से प्राप्त की पोथियां इस बात का प्रमाण हैं। बाणी-रचना की योजनाबंदी के बारे में लेखक बताता है कि "बाणी प्रत्येक राग में पहले श्री गुरु नानक देव जी की लिखाते, फिर दूसरे, तीसरे तथा चौथे गुरु की बाणी लिखाकर बाद में अपनी बाणी लिखाते रहे। 'नानक' नाम तो सब गुरु साहिबान की बाणी में है मगर महला १, महला २, महला ३, महला ४ तथा महला ५, यह भेद गुरु साहिबान की बाणी की पहचान के लिए रखा है। प्रत्येक राग के अंत में भक्त साहिबान की बाणी लिखाते रहे।" सम्पूर्ण होने पर इस धर्म-ग्रंथ का प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब में किया गया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की आदि बीड़ के संपादित होने से जहां सिक्खों को सदीवी रूप से जीवन-उद्देश्य की अगुआई वाला एक ग्रंथ प्राप्त हुआ वहीं सिक्खों को गुरमुखी पढ़ने का बड़ा शौक हो गया।

श्री गुरु अरजन देव जी उपरोक्त कार्यों के साथ-साथ लाहौर में संगत में गुरमति-उपदेश, जात-पात का खात्मा, बाउली की स्थापना, बादशाह अकबर के नायब वजीर खान का जलोधर का रोग हटाना आदि परोपकार के महत्वपूर्ण कार्य भी करते थे। उन्होंने गुरु-घर के प्रति ईर्ष्या रखने के बावजूद भी प्रिथीचंद को कभी कुछ नहीं कहा, बल्कि यथायोग्य उसकी सहायता करते रहे। प्रिथीचंद अपने आप को गुरगद्दी का हकदार समझता था और वो इससे कम किसी बात पर राजी नहीं हो रहा था। वो अपने परिवार सहित हेहर गांव आकर रहने लगा। यहीं उसे पता चला कि गुरु जी ने दिल्ली दरबार के दीवान चंदू शाह के कुबोल के कारण उसके साथ अपने पुत्र श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब का रिश्ता तोड़ दिया है। चंदू की गुरु जी के साथ नाराजगी का फायदा उठाते हुए प्रिथीचंद ने उसे गुरु जी के विरुद्ध बहुत भड़काया। लेखक बताता है कि पहले से भड़के हुए चंदू ने प्रिथीचंद के पुत्र मिहरबान द्वारा गुरु जी के विरुद्ध शिकायत दर्ज करवाई कि "गुरु अरजन साहिब ने, जब उनके घर बेटा नहीं हुआ था, तब मुझे गोदी में लेकर मुतबंना बनाया था। अब (गुरु) हरिगोबिंद साहिब उनका पुत्र हो गया है, अतः वे उसे गुरिआई देना चाहते हैं, तभी तो आधी सिक्खी-सेवकी मुझे भी मिलनी चाहिए।" चंदू ने मिहरबान की इस शिकायत का जल्दी निपटारा करने और गुरु

जी को मारने की नीयत से दिल्ली दरबार के हुक्मानुसार सुलही खां को फौज देकर गुरु जी के विरुद्ध श्री अमृतसर भेजा। समय की नजाकत को पहचानते हुए सिक्खों ने गुरु जी को मशवरा दिया :

प्रथमे मता जि पत्री चलावउ ॥
दूतीए मता दुइ मानुख पहुचावउ ॥
त्रितीए मता किछु करउ उपाइआ ॥
मै सभु किछु छोडि प्रभ तुही धिआइआ ॥
(पन्ना ३७१)

गुरु जी ने परमात्मा पर विश्वास प्रकट करते हुए सुलही खान के साथ किसी भी तरह की बात से साफ इंकार कर दिया। वह गुरु जी के विरुद्ध आक्रमणकारी बनकर आया। सुलही खान की राह में ही मृत्यु हो गई। गुरु जी स्पष्ट करते हैं कि परमात्मा ही सबको रखने वाला है और उसी ने सुलही खान को आक्रमण करने से रोक दिया :

सुलही ते नाराइण राखु ॥
सुलही का हाथु कही न पहुचै सुलही होइ मूआ नापाकु ॥ *(पन्ना ८२५)*

समकालीन इतिहासकार भी श्री गुरु अरजन देव जी के समय हुए सिक्खी के विकास का वर्णन करते हुए कहते हैं कि शायद ही कोई नगर ऐसा हो जहां सिक्ख न हों। भले ही पहले तो केवल प्रिथीचंद ही गुरु जी से घृणा करता था लेकिन सिक्खी के हो रहे निरंतर विकास से मौलाणा भी ईर्ष्या करने लगे थे। उन्होंने बादशाह के पास शिकायत की कि श्री गुरु अरजन देव जी ने जो 'ग्रंथ' तैयार किया है उसमें इसलाम के पैगंबरों की निंदा लिखी है। बादशाह ने गुरु साहिब को श्री गुरु ग्रंथ साहिब लेकर बटाला आने के लिए हुक्म भेजा। गुरु जी खुद तो न गए मगर बाबा बुड्ढा जी तथा भाई गुरदास जी सहित कुछ सिक्खों को बादशाह की तसल्ली कराने के लिए बटाला भेज दिया। जब श्री गुरु ग्रंथ साहिब में से उन्हें पढ़ने के लिए कहा गया तो भाई गुरदास जी ने जो शबद पढ़ा वो था :

खाक नूर करदं आलम दुनीआइ ॥
असमान जिमी दरखत आब पैदाइसि खुदाइ ॥
(पन्ना ७२३)

बादशाह को कहा गया कि यह शबद तो केवल आपको सुनाने के लिए ही निकाला गया। बादशाह ने कुछ पन्ने पलटा कर फिर पढ़ने के लिए कहा तो शबद आया :

अलह अगम खुदाई बंदे ॥
छोडि खिआल दुनीआ के धंधे ॥
होइ पै खाक फकीर मुसाफरु इहु दरवेसु कबूलु दरा ॥ *(पन्ना १०८३)*

इससे बादशाह की संतुष्टि हो गई कि इस धर्म-ग्रंथ में परमात्मा की महिमा के अलावा और कुछ भी नहीं है। बादशाह ने खुश होकर ५१ मोहरें श्री गुरु ग्रंथ साहिब को भेंट करके सिक्खों को सम्मान सहित वापिस भेजा जिससे विरोधियों को बेहद शर्मिंदा होना पड़ा।

बादशाह अकबर के देहांत के बाद उसका पुत्र जहांगीर दिल्ली के तख्त पर बैठा। जहांगीर का पुत्र खुसरो भी दिल्ली के तख्त पर बैठना चाहता था, इसलिए उसने बगावत कर दी। खुसरो को पकड़कर मार दिया गया। चुगलखोरों ने जहांगीर को गुरु जी के विरुद्ध भड़काया कि उन्होंने खुसरो की मदद की है। जहांगीर पहले से ही कट्टरपंथियों के प्रभाव अधीन गुरु-घर को इसलाम के घेरे में लाने का इच्छुक था। लेखक जहांगीर की लिखत "तुजके-जहांगीरी" में दर्ज बयान के अनुसार बताता है :

"गोइंदवाल, जो कि दरिया ब्यास के किनारे

पर है, में अरजन नामक हिंदू पीरी तथा शेखी के भेस में रहता था। चुनांचि सीधे-सादे हिंदुओं में से बहुत को, बल्कि मूर्ख व नासमझ मुसलमानों को भी अपनी बनाई रहित-बहित (मर्यादा) का धारक बनाकर उसने अपनी पीरी तथा गुरुपने का ढोल बड़े जोर-शोर से बजाया हुआ था। उसे गुरु कहते थे। सब तरफ से पुजारियों के झुंड उसकी तरफ आते और उस पर पूरा भरोसा प्रकट करते थे। तीन-चार पीढ़ियों से उन्होंने इस दुकान को गर्म कर रखा था। बड़ी देर से मेरे दिल में आता था कि इस झूठ की दुकान को दूर कर दिया जाए या उसे (गुरु अरजन देव जी) को दीन की जमात में लाया जाए।"

इस झूठे इल्ज़ाम में श्री गुरु अरजन देव जी को लाहौर में यातनाएं देकर शहीद कर दिया गया। गुरु जी बादशाह की नीयत जान गए थे और इसी लिए लाहौर जाने से पहले ही वे गुरगद्दी अपने सपुत्र श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब को सौंप गए थे। अपने गुरिआई के समय में श्री गुरु अरजन देव जी सिक्खी के प्रचार तथा प्रसार के बहुत बड़े कार्य आरंभ कर गए थे और श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब ने पूर्ण दृढ़ा से उन्हें पूरा कर दिखाया था। गुरु साहिब का जीवन सिक्खी के विकास में एक अहम मोड़ साबित हुआ।



कविता

चाह

वह नहीं जानती स्वयं को अभिव्यक्त करना
व्यक्तिगत स्वतंत्रता का महत्व
समाज के सापेक्ष अपना स्थान।
वह कुछ नहीं जानती।
उसने कर दी है व्यतीत
अपने बचपन से अधेड़ होने तक की उम्र
घर का चूल्हा फूंकने
आंगन बुहारने, पोंछने में।
मगर वह चाहती है
अपनी बिटिया को पढ़ाना
बहुत-बहुत पढ़ाना
ताकि वह घर से बाहर हो सके मुखर
अभिव्यक्त हो सके उसका व्यक्तित्व सम्पूर्णत:।
वह जान सके स्वतंत्रता का महत्व।
कर सके समाज में अपना स्थान सुनिश्चित।
बना सके अपनी अलग पहचान।
खड़ी हो सके अपने पांवों पर
इस नारी-शोषक पुरुष-प्रधान समाज के
विरुद्ध खम ठोक कर।



-श्री हेमंत गुप्ता, KRW-२३, जलदाय विभाग कॉलोनी, प्रताप नगर, दादाबाड़ी, कोटा (राजस्थान)-३२४००९

"पंथ प्रकाश" कृत ज्ञानी गिआन सिंघ में
श्री गुरु अरजन देव जी का नूरानी जीवन-वृत्तांत

*-डॉ. मनजीत कौर**

ज्ञानी गिआन सिंघ द्वारा "पंथ प्रकाश" में पृष्ठ १०८ से ११७ तक पंचम पातशाह का जीवन-वृत्तांत सुंदर शब्दावली में काव्यबद्ध किया है।

जन्म : १६१० वि. वैसाख की सप्तमी को श्री गुरु रामदास जी के गृह में माता भानी जी की पावन कोख से श्री (गुरु) अरजन देव जी का जन्म हुआ। (अधिकतर स्रोतों में १६२० वि. दिया गया है।)

सोला सै दस बिक्रमां सपतम बदी बसाख।
रामदास के घर भए भानी जै सैं लाख।
(पृष्ठ १०८)

विवाह : ज्ञानी जी के काव्यानुसार गुरु जी का पहला विवाह सं. १६२२ में हुआ जिनसे कोई संतान नहीं हुई और उनकी पत्नी सं. १६४१ में अकाल चलाणा कर गई। यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि अन्य कहीं उनके इस विवाह का जिक्र नहीं मिलता। आगे ज्ञानी जी लिखते हैं कि मउ गांव में माता गंगा जी के साथ श्री (गुरु) अरजन देव जी का दूसरा विवाह हुआ तथा १६५२ वि. में उनके गृह में एक सपुत्र का जन्म हुआ, यथा :

मऊ पिंड शादी दुती गंगा जी सै कीन।
बावंजा मै जाहि तै सुत उपजयो इक चीन।
(पृष्ठ १०८)

इसी के साथ श्री अमृतसर सरोवर का जिक्र भी ज्ञानी जी ने किया है जिसकी खुदाई एवं उसे पक्का करवाने का पुनीत कार्य श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा संपन्न हुआ, यथा:

तीरथ अंमृतसर गुरू पंचम ने खुदवाइ।
पका करने हेत पुन आवे दए चडाइ।
(पृष्ठ १०८)

गुरु-घर की शोभा : ज्ञानी गिआन सिंघ पंचम पातशाह के दर्शनार्थ आई संगत एवं गुरु के दीदार कर मनवांछित फलों की प्राप्ति कर निहाल हुए श्रद्धालुओं का वर्णन करते हुए अपने हृदयोदगारों को निम्न काव्य रूप में वर्णित करते हैं कि जिस दिन से गुरगद्दी प्राप्त कर श्री गुरु अरजन देव जी 'गुरु' कहलाए तब से ही देश-देशांतरों से संगत प्रतिदिन हर्षोल्लास गुरु-दर्शनार्थ को आती और मनवांछित फलों की प्राप्ति करती। गुरु साहिब के पावन उपदेशों से समस्त विकार एवं चिंताएं मिट जातीं। गुरु साहिब दीवान लगाते, चारों ओर संगत विराजती। स्वर्णिम सिंघासन के सौंदर्य को देख कर मानो चंद्रमा भी लज्जा जाता। उस सिंघासन पर श्री गुरु अरजन देव जी विराजमान होते, सिक्ख-सेवक चंवर झुलाते। रबाबी साज मिलाकर मनोहर राग अलापते अर्थात् गुरबाणी गायन करते। पावन बाणी सुनकर चित्त से बुरे ख्याल दूर हो जाते। दर्शनार्थ आने वालों की भीड़ लगी रहती। माघ महीने के बाद जैसे दिन में खिली धूप मनभावन प्रतीत होती है वैसे ही रामदासपुर में संगत के आगमन से वातावरण सरस मन को पुलकित करने वाला प्रतीत होता। दिनों-दिन नगर में बाजारों की रौणक बढ़ने लगी। हजारों नर-नारियां प्रतिदिन गुरु-दर्शन हेतु आते और सप्रेम भेंटें समर्पित करते। जो भी वहां आते

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

गुरु-घर में लंगर-प्रशाद ग्रहण करते, दर्शन कर प्रफुल्लित होते, गुरु-उपदेश लेकर खुशियों से झोलियां भरकर अपने-अपने घर जाते। उपरोक्त उद्‌गारों को काव्य रूप में ज्ञानी जी ने इस प्रकार अभिव्यक्त किया है :

सवैया।

जां दिन तै गुरु पंचम जू गुरयाई को पाइ गुरू कहिलाए।
तां दिन तै सुन कै बहु संगत देस बदेसन तै नित आए।
रूप अनूपम हेर सभै गुरु पंचम तै फल बांछत पाए।
पाइन पास उपाइन दै बहुलै उपदेस कलेस मिटाए।७। . . .
राग अलापत खापत सो कहि साजि मिलाइ मिलाइ रबाबी।
गुरु चारन की बर बानि उचारत जो सुन तयागत चित्त खराबी। . . .
सोधन लै गुरु लंगर लावत पावत भोजन जोजन ऐहै।
गुरु को दरसैं परसैं हरसैं गहिकै उपदेस सुदेस सिधैहै।१०। (पृष्ठ १०८-१०९)

अमृतसर सरोवर की कार-सेवा : आगे ज्ञानी गिआन सिंघ ने अमृत सरोवर की खुदाई में कार-सेवा करने वालों का हवाला देते हुए अपने भावों को काव्यबद्ध किया है, यथा : अत्यंत पावन सरोवर की खुदाई का दृढ़ निश्चय कर गुरु साहिब ने अनेक राज मजदूर लगा दिए और साथ ही बहुत सिक्ख संगत 'कार सेवा' (बिना मेहनताना लिए तन-मन से सेवा करना) में लग गई। यही नहीं साधसंगत के साथ गुरु-घर के अनन्य गुरसिक्खों ने, यथा: भाई उदम, भाई बहलो, भाई साहलो, भाई बूला, भाई बिधीआ, भाई गुरदास जी, बाबा बुड्‌ढा जी, भाई करमा आदि सिक्खों ने अत्यंत निर्मल भाव से कार-सेवा की एवं ईंटें पकाईं। ऐसे सुंदर सरोवर का निर्माण किया जिसकी मिसाल कहीं नहीं मिलती, यथा:

राज मजूर लगाइ रखे बहु संगत कार कढाइ अपारे।
तिआर पजावे करे गुरु सिक्खन छोड गिलान करी अतिकारे।
ताल बिसाल सुपांन रची जिस के सम और नही जग सारे।११। (पृष्ठ १०९)

श्री हरिमंदर साहिब की विलक्षणता एवं मनोहारी दृश्य : आगे ज्ञानी जी ने श्री हरिमंदर साहिब के विलक्षण मनोमुग्धकारी दृश्यों का वर्णन किया है कि किस प्रकार तीर्थ के अंदर सुंदर हरिमंदर सुशोभित है, इंद्र के सिंघासन से भी अति सुंदर, मानो स्वयं परमेश्वर गुरु-रूप धारण कर लोगों के उद्धार हेतु यहां आ विराजे हों और साथ ही अपना (निवास-स्थान) सचखंड भी इस स्थान पर ले आए हों। पारजात वृक्ष सदृश्य सब सुख फलदायक है। सफेद संगमरमर मक्खन सदृश्य सफेद और मुलायम बिछोने बिछे हैं। स्वर्णिम दीवारों पर नीलम, हीरे, पन्नों, अनमोल रत्नों से सुंदर चित्रकारी-नक्काशी मन को मोहने वाली है। अभिभूत करने वाले विचित्र डिजाइन स्वाभाविक ही नर-नारियों के मन को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। कहीं-कहीं शिकार करते हुए सिंघ और कहीं पूरी ताकत से भिड़ते हुए गज (हाथी) दृष्टिगत होते हैं, अनेकों फल-फूलों के बेल-बूटे, चित्रकारी, कहीं पक्षियों के समूह सहज-स्वभाव मन को मोह लेते हैं। वहां बाग-बगीचों में वैरागी पुरुष प्रेमपूर्वक संत-जन विचरण करते हैं। अनेक कीमती नगीनों से जड़ित समस्त चित्रकारी अति आकर्षक है। संगीतकारों का संगीत सबको मनभावन प्रतीत होता है। समस्त-जन हरि का यश श्रवण करते हैं। देवताओं सदृश्य नर-नारियों की भीड़

सदैव गुरुद्वारे में लगी रहती है। सबको मन-इच्छित पदार्थों एवं लोक-परलोक के समस्त सुखों की प्राप्ति होती है, यथा:

तीरथ अंदर मंदर सुंदर नाहि पुरंदर के सम जाहै।
आप हरी गुर रूप भए जब तारन को निज दास महां है।
मंदर भी अपनो सच खंड हितै निज संग लिआइ रखा है।
भोग भंडार कि मोख अगार कि रूख मदार सदा सुखदा है।१२।
सेत सिला सम सीर सफाइ मलाइम मक्खण के समसारी। . . .
चित्रत भूर बचित्तर सोहित मोहित जाहि पिखै नर नारी।१३।
खेलत सिंघ सिकार कितै भिर है गंज ऐण भगै बल लाए। . . .
ता बन बाग विखे अनुराग विराग भरे बहु संत बिराए।१४।
कुदड़ संग मनी नग पूंज सुरंग जड़ाऊ जड़े बहु भारे। . . .
पावत है मन भावत सो परमारथ और पदारथ चारे।१५। *(पृष्ठ १०९-११०)*

श्री हरिमंदर साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पावन प्रकाश : ज्ञानी गिआन सिंघ ने आगे पावन ग्रंथ के प्रकाश एवं सतसंग के प्रवाह का जिक्र करते हुए गुरु-घर की शोभा की सुंदर शैली में अभिव्यंजना की है, यथा: "तब हरिमंदर में श्री गुरु अरजन देव जी ने ज्ञान के खजाने परमेश्वर रूप श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पावन प्रकाश किया।"

आगे ज्ञानी जी वर्णन करते हैं कि गुरु साहिब लोक-कल्याण हेतु सदैव उपदेश करते। सरोवर के मध्य श्री हरिमंदर साहिब सुशोभित हैं जो अटल हिमालय सदृश्य हैं। श्री हरिमंदर साहिब के अंदर जाने हेतु एक सुंदर पुल का निर्माण किया गया है। देशों-विदेशों से इस पावन स्थान पर लोग आते-जाते हैं। रात-दिन सतसंग के प्रवाह चलते हैं और गुरु-घर की महिमा दिन दुगुनी रात चौगुनी बढ़ती ही जा रही है अर्थात् निरंतर बढ़ रही है। भवसागर से पार उतारने हेतु जितने भी तीर्थ हैं मानो इसी (श्री हरिमंदर साहिब) में ही समाहित हो गए हैं। इस पावन तीर्थ में स्नान करके समस्त पापों-विकारों का नाश हो जाता है। श्रद्धालु-जन पवित्र होकर अमृत सरोवर से अमृत-जल का पान करते हैं। काव्य रूप में अभिव्यक्ति इस प्रकार की गई है :

तां हरिमंदर में गुर ग्रंथ प्रकासत बोध सरूप मुरारे।
जीवन की कलिआन नमित सदा उपदेस उचारे। . . .
तीरथ और जिते भव के सभ सब आइ बसे इस मै है।
नावन ते अघ ओघ नसावन पावन हवै जल पान करैहै।१७। *(पृष्ठ ११०)*

आगे अमृतसर तीर्थ के प्रकट होने का वर्णन इस प्रकार किया है :

अंमृतसर की कथा सुन पुन सरोतथ हित साथ।
बूझिओ कबतै भइओ किम तीरथ तीरन नाथ।१५।

संतोखसर का निर्माण : अंतरयामी गुरु जी ने जिस उद्देश्य से संतोखसर की रचना की, श्रोताओं को ध्यानपूर्वक सुनने की हिदायत देते हुए ज्ञानी जी काव्य रूप में अपने हृदयोद्गारों को इस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं। टाहली (शीशम) के पेड़ के नीचे संगत नित्य एकत्र होती। सिक्ख समुदाय में इसे 'टाहली साहिब' कहा जाता है। पेशावर का एक सिक्ख, जिसका नाम 'संतोखा' था, उसने पांच सौ मोहरें अर्पित कर इस प्रकार (गुरु जी के समक्ष) विनती की,

"हे प्रभु! मेरे घर में दौलत अपार है पर पुत्र नहीं है, मेरा नाम (वंश) रहे मुझ पर उपकार करो।" उसकी विनती सुनकर उसका नाम हमेशा जगत में रहे यह विचार कर उस सिक्ख द्वारा लाई गई मोहरें उसके नाम पर खर्च कर राज मजदूर लगा दिए। सरोवर खुदवाने पर 'संतोखा' नाम से ही 'संतोखसर' नाम प्रख्यात किया।

विविध नगर बसाना : आगे कबित्त में ज्ञानी गिआन सिंघ ने गुरु साहिब द्वारा बसाए नगरों, सरोवरों का वर्णन किया है। १६४७-१६४८ में खारा गांव वाले किसान मिलकर आये और विनयपूर्वक गुरु जी से वचन किए। ईश्वर-रूप गुरु जी ने उनके वचनों पर विचार कर एक नगर का निर्माण करवा दिया। उसका नाम 'तरनतारन' रखा। १६५१ में दोआबा क्षेत्र में करतारपुर नगर बसाया। वहां प्रिथीचंद ने अज्ञानतावश बहुत क्रोध और विरोध किया। गुरु जी से कलेश करने वाले की कोई पेश न गई, फलस्वरूप उसे अपयश ही मिला, यथा :

सोला सै सैताली माहि सिखन की देखचा हि सैल
माझे देस आहि कीनो गति दाइकै।
खारे पिंड वारे जट मिले आइ सारे तिने बिनेके
उचारे बैन ऐनमन लाइकै।
गुरु करतार सान बात उनोकी विचार तरनतारन
पुर बाधिओ हुलसाइकै। . . .
सोलां सै अकावन मै दुवाबे देस जावन तै
पावन नग्र करतार पुर बसिओ है। . . .
गुरू पैन पेश लेस तांहि की चली बसेस आपही
कलेस पाइ अपजस ग्रसिओ है। (पृष्ठ ११२-११३)

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का आगमन : श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब ने संवत् १६५२ में जन्म लिया।

पंचम पातशाह ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संवत् १६६१ में रचना की जो कि पंथ की बुनियाद है। श्री हरिमंदर साहिब में इसे स्थापित किया गया। फिर दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने विधिपूर्वक इस महान ग्रंथ को ही गुरगद्दी समर्पित कर इसे 'गुरु' मानने का आदेश दिया। काव्य रूप में ज्ञानी जी ने इसे इस प्रकार कलमबद्ध किया है :

सोला सत बावन मै भावन प्रगट भए
स्री हरिगोबिंद जू सोढवंस ससिओ है।३७।
स्री गुरु ग्रंथ रचिओ पंथ की बुनिआद
हित सोला सै इकाहठे मैं मोख भोग दाइकै। . . .
फेर गुरु दसम रसम कर गए एही गुरु ग्रंथ
मानो कहयो सिक्खन सुनाइकै।३८। (पृष्ठ ११३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की अपार महिमा का वर्णन : ज्ञानी जी के अनुसार उपरोक्त कारण से श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु-रूप पहचान समस्त सिक्ख इसे सम्पूर्ण सुखों वाला एवं मोक्षदायक मानते हैं। जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी पढ़ता-सुनता है एवं इसके दर्शन करता है, वह चारों फलों की प्राप्ति कर जन्म-मरण के दुखों से मुक्त हो जाता है। ऐसे अनेक उपकार कर पंचम पातशाह फिर लाहौर में जाकर तृणवत इस शरीर को त्याग गए। यह सुनकर श्रोताओं ने पुन: प्रश्न किया कि उस गाथा का वर्णन करो जिसके कारण गुरु जी ने लाहौर में जाकर देह त्यागी, यथा :

जाही तै गुरु ग्रंथ को सतगुरु रूप पछान।
मानत है गुरु सिख सब भोग मोख दा जान।३९।
पड़े सुनै द्रसन करै गुरु ग्रंथ को जोइ।
पावत है चार फल जनम मरन दुख खोइ।४०। . . .
फेर जाइ लाहौर में त्रिन जयों तन गए तिआग।४१। . . .
कहो गाथ किउ जाइ गुरु तिआगी देह लहौर।४२।
(पृष्ठ ११३)

अद्वितीय शहादत के कारण : उपरोक्त प्रश्न

का उत्तर ज्ञानी गिआन सिंघ ने इस प्रकार काव्यबद्ध किया है। यह प्रश्न सुनकर कवि ने उत्तर इस प्रकार दिया कि संवत् १६६२ में जहांगीर को बादशाही मिली। उसका एक दीवान था जिसका नाम चंदू खत्री था। चंदू की एक पुत्री थी। उसकी शादी के लिए योग्य वर ढूंढने के लिए नाई को भेजा गया। उसने अनेक लड़के देखे लेकिन उसे (गुरु) हरिगोबिंद साहिब पसंद आए। घर-परिवार सब तरह से योग्य समझकर चंदू के पास जाकर इस रिश्ते की बात की। चंदू ने यह सुनकर चौबारे की ईंट मोरी को लगाने की बात की। साथ ही बोला कि "बात इस रिश्ते में मुझे अच्छी यह लगी है कि मेरी पुत्री माता कहलाएगी।" इस तरह की अहंकार भरी कटु वाणी चंदू की सुनकर सिक्खों के मन में ग्लानि हुई और उन्होंने यह रिश्ता लेने से गुरु जी को मना करने को कहा। रिश्ते से इंकार सुनकर चंदू आग-बबूला हो गया। अपना अपमान समझकर वह गुरु जी का विरोधी बन गया, यथा :

चौपई।

इहु प्रशन सुन कवी उचारा।
सुनो सजन अब एहु विचारा।
सोलां सै बाहट के माही।
जहांगीर पाई पतशाही।
तांका हुतो दिवान कुनेक।
चंदू नाम खत्री एक। . . .
हरि गुबिंद इक आइओ पसिंद।
बर घर सरब भांति भलहेरा। . . .
ईट चुबारे की है जोई।
लावत तुम मोरी की सोई। . . .
हंकार भरी चंदू की बानी।
सुन गुरु सिक्खन कीन गिलानी। . . .
निंदी जिन या बिधि गुरु गादी।
करी न चहीए इनके शादी। . . .
जब टिका लै लागी आए।
तब सतगुरु इम कहयो सुनाए। . . .
सुन चंदू मन अधक रिसाना।
अपना हतक अधक अतिमाना।
इस कारन तैदुशट विकारी।
बनिओ बिरोधी गुरु का भारी।४३।

(पृष्ठ ११३-११५)

आगे दोहिरा में प्रिथीचंद का चंदू से जा मिलने का वर्णन मिलता है, जिसमें 'चोर-चोर मौसेरे भाई' लोकोक्ति चरितार्थ हुई है, यथा:

प्रिथीआ गुरु का भ्रात बढ मिलिओ पुना तिसु जाइ।
जैसे को तैसा मिलत फेर कोस सौ पाइ।४४।

(पृष्ठ ११५)

प्रिथीचंद का विरोधियों से मिलकर स्वयं 'गुरु' बनने का प्रयास : "पंथ प्रकाश" में आगे तोटक छंद में प्रिथीचंद की विरोधता को जाहिर करते हुए उसके कारनामों को ज्ञानी गिआन सिंघ ने काव्यबद्ध करते हुए लिखा है कि उसने दिल्ली जाकर फरियाद की जो सुनी नहीं गई तो चंदू से जाकर मिला और वहीं जाकर बस गया। वहां अमृत सरोवर बनाया। मसंदों को बहुत सारा पैसा देकर वहां संगत एकत्र करने का प्रयास किया। फिर प्रिथीचंद चंदू के पास गया, जिसका दुष्ट मित्र सुलही खां था। उसके साथ मिलकर उसे गुरु जी के खिलाफ भड़काया कि गुरु अरजन देव जी के पास अनेक चोर और डाकू हैं। खुसरो बागी के साथ उन्होंने स्नेह किया। उसको लाख रुपये देकर मदद की, साथ ही गद्दी प्राप्त करने का आशीर्वाद दिया। यह जब बादशाह ने सुना तो सुलही खां को फौज देकर भेजा। प्रिथीचंद भी साथ गया जो रास्ते में ही मृत्यु को प्राप्त हो गया और फिर सुलही खां की भी मार्ग में ही मृत्यु हो गई:

तोटक छंद

उन दिल्ली जाइ फरिआद करी।

नहि सुनी साहि लख कूरखरी। . . .
तब जाइ प्रिथी ससि बसयो तही। . . .
सर अंमृत ताल रचयो सू तहां। . . .
जब पंचम गुर इह बात सुनी। . . .
इह वाक गुरू का ठीक भयो।
अब लौ सर सो जल हीन पयो।
जब इह उदम तिह निफल भयो।
तब प्रिथीआ चंदू पास गयो।
सुलही सुलबी खां मीत तिसो।
कर दुशट चौकड़ी मता इसो। . . .
पन खिसरो बागी थे जु बने।
तिसको दमड़ा इक लाख दयो। . . .
फिर खां सुलभी पठ दीन तहां।
वहि भी मग ही मध मौत लहां।

(पृष्ठ ११५-११६)

चंदू दुष्ट का पुन: बादशाह को भड़काना : दुष्ट चंदू की मौकाप्रस्ती का वर्णन करते हुए ज्ञानी गिआन सिंघ ने "पंथ प्रकाश" में उस तथ्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि चंदू ने समय की नजाकत को समझते हुए जहांगीर के पुन: कान भरने शुरू किए कि शहजादा खुसरो, जो कि आपका दुश्मन था, श्री गुरु अरजन देव जी ने लाख रुपये देकर उसकी मदद की। यही नहीं, उसे बादशाही प्राप्त होने का वरदान भी दिया। यह सुनकर बादशाह अत्यधिक क्रोधित हुआ (वैसे भी बादशाह आदि कान के कच्चे होते हैं)। तत्पश्चात वह श्री गुरु अरजन देव जी के पास पहुंचा। गुरु साहिब का निर्मल हृदय और पवित्र रहन-सहन देखकर उसका क्रोध काफूर हो गया। फिर बादशाह बोला, "आपने खुसरो की एक लाख रुपये देकर मदद की है हमें दो लाख रुपये दीजिए।" गुरु साहिब ने वचन किया, "फकीरों के पास जमा पूंजी नहीं होती। जो सिक्ख-सेवक खुशी से भेंट करते हैं वो लंगर में लगा दिया जाता है और जो भी आता है सबको भोजन मिलता है।" बादशाह बोला, मुझे भी एक दिन खाने को दो।

दोहिरा

फिर जब शाहि लहौर मै पहुंचयो परबत हेर।
चंदू समा पछान कै कहिओ शाहि डिग फेर।
शाहजादा खिसरो हुतो सतुर आप का जोइ।
गुर अरजन मदद दई लख रुपया ढोइ। . . .
बादशाह सुन कोप धर तलब करे गुर धीर। . . .
खिसरो को दियो लाख इक हम को दो लख देहु। . . .
भोजन मिल है सरब को हिंदू तुरक जु आइ।
शाहि कहयो दिहु मुझै भी इक दिन खाने हेत।

(पृष्ठ ११६)

श्री गुरु अरजन देव जी की अद्वितीय शहादत : इसके पश्चात चंदू के रिश्ता मनवाने के नापाक इरादे और गुरु जी का अपने वचन पर अडिग रहने का वर्णन करते हुए चंदू द्वारा किए जुल्मों का मार्मिक शैली में ज्ञानी जी ने वर्णन किया है। ज्ञानी जी लिखते हैं कि श्री गुरु अरजन देव जी एक दिन और रात पहरे में रहे। फिर चंदू उन्हें अपने घर ले गया और रिश्ता मानने के लिए बाध्य किया। जब गुरु जी ने साफ इंकार कर दिया तो दुष्ट चंदू ने गुरु जी की पावन देह पर गर्म रेत डाली, लेकिन गुरु पातशाह ब्रह्म-रूप होकर शांत रहे। ब्रह्मज्ञानी का जो स्वरूप सुखमनी साहिब में बयान किया गुरु साहिब ने प्रत्यक्ष रूप से उस चरित्र को व्यवहारिक रूप में जी कर दिखाया है।

जुल्मी जहांगीर के अत्याचारी कारिंदों ने कई तरह से गुरु जी को घोर यातनाएं देकर प्रताड़ित किया, मगर सहनशीलता के पुंज गुरु जी धैर्यपूर्वक सब सहते गए। अंतत: गुरु जी ने शहीदी प्राप्त कर सिक्ख पंथ में "शहीदों के सिरताज" होने का सम्मान प्राप्त किया।



"दस गुर कथा" में श्री गुरु अरजन देव जी का व्यक्तित्व

*-बीबी रविंदर कौर**

"दस गुर कथा" में कवि कंकण ने दस गुरु साहिबान के जीवन-इतिहास को उपमामयी ढंग से चित्रित किया है। कवि की इस कृति में श्री गुरु अरजन देव जी के बारे में कुल १४ पद्य हैं। कर्त्ता ने इन पद्यों में गुरु जी की उपमा करते हुए उनके द्वारा किये महान कार्यों को मूर्तिमान किया है। संबंधित १४ पद्यों में मुख्यत: निम्नलिखित पक्ष उभर कर सामने आते हैं :

१. श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रथम पावन प्रारंभिक स्वरूप की स्थापना
२. श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना
३. श्री गुरु अरजन देव जी की महिमा

कवि कंकण लिखते हैं कि श्री गुरु अरजन देव जी चौथे गुरु श्री गुरु रामदास जी के गृह में प्रकट हुए। आप जी ने इस संसार में जनसाधारण के कल्याण हेतु अवतार धारण किया:

दोहरा

तांके ग्रिह परगट भए अरजनु अवतार
तीन लोक तारन नमित आइओ आप मुरार ॥३०॥

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रथम पावन स्वरूप की स्थापना : किसी भी धर्म की स्थाप्ति के लिए और अनुयायियों को दिशा देने के लिए धर्म-ग्रंथ का बहुत महत्व होता है। संसार में प्रत्येक धर्म का अपना धर्म-ग्रंथ होता है जैसे कि हिंदू धर्म के वेद, शास्त्र, इसलाम का कुरान, ईसाई मत की 'बाईबल' और बौद्ध धर्म का 'धमपद' नामक धर्म-ग्रंथ हैं। श्री गुरु अरजन देव जी के समय सिक्ख धर्म का प्रचार व प्रसार दूर-दराज के क्षेत्रों तक फैल चुका था। गुरु नानक साहिब और उनके बाद गुरु साहिबान की बाणी, जो पोथी रूप में एक के बाद दूसरे गुरु साहिब को प्राप्त होती थी, अत: पंचम पातशाह गुरु अरजन साहिब को जो पावन पोथी अथवा पोथियां प्राप्त हुईं, उनको आपने एक बड़े आकार के ग्रंथ आदि श्री (गुरु) ग्रंथ साहिब के रूप में संपादन करने का महान कृत्य किया। इसमें पातशाह ने अपने से पूर्बले चारों गुरु साहिबान की बाणी और फिर अपने मुखारबिंद से उच्चारण की बाणी को विभिन्न ३० रागों के अनुसार क्रम में अंकित करने का महान कार्य किया। "दस गुर कथा" के कर्त्ता के अनुसार गुरु अरजन साहिब ने अथाह बाणी की रचना की और संसार के लोगों के कल्याण के लिए यह व्यापक प्रयत्न किया। इस ग्रंथ में आपने भक्त साहिबान, भट्ट साहिबान और कुछ गुरु-घर के निकटवर्ती गुरसिक्खों की बाणी अंकित की। 'दस गुर कथा' के लेखक के अनुसार जब गुरु जी ने आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में महान ग्रंथ तैयार किया तो इसको पढ़-सुनकर प्राणी-मात्र के *"इहलोक सुखीए परलोक सुहेले"* हो गए।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आदि पावन स्वरूप के संपादन का जिक्र करते हुए कवि कंकण लिखते हैं कि गुरु अरजन साहिब ने नाम का खजाना खोलकर दिखाया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब सुमेर पर्वत की भांति शिरोमणि ग्रंथ हैं जिनकी बाणी रागों में है। यह समूह जन-साधारण के लिए महान सहारा है। गुरु-शबद

**२३, क्राऊन इन्कलेव, जी. टी. रोड, श्री अमृतसर-१४३००५, मो : ९७८११-६२१११*

ऐसी ढाल की भांति है जो यमों की फांसी से हमारी रक्षा करती है। साधारण मनुष्य-मात्र को समझाते हुए लिखा है कि "हे मूर्ख मनुष्य! तू इस सहारे का परित्याग क्यों करता है जिसने तुझे काल के तीरों से बचाना है?" कवि कंकण के कहने का तात्पर्य है कि प्रत्येक जीव को श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सहारा लेना चाहिए चूंकि यह प्राणी की रक्षा करने में सक्षम हैं:

अति अथाह बाणी रची, मानहु किया जहाज।
या भवजल संसार ते जगत उधारन कारज।३१।
बाणी सभ इकठी करी, कीना शुभ स्री ग्रंथ।
जांको पढि जम फास ते, मुकति होइ सभ पंथ।३२।
शबद-गुरू को है ढाल तहां, जहां काल का बान अचानक आवै।
किउं मन मूरख ढाल तिआगत, काल के बान ते कौन बचावै?
बार ही बार पुकारत है तुहि, कंचन देहि अकारथ जावै।४४।

अमृत सरोवर की स्थापना : "दस गुर कथा" में कवि ने अमृत सरोवर की स्थापना का उल्लेख करते हुए एक स्त्री (बीबी रजनी) की प्रचलित कथा को बयान किया है। चाहे कवि ने बीबी अथवा महिला का नाम नहीं लिया, परंतु संकेत उसी की ओर प्रतीत होता है। कवि के अनुसार एक पिंगला यहां अपनी स्त्री के साथ खारी (टोकरी) में बैठ कर आया। उसने इस जगह पर काले कौओं को नहाकर सफेद होकर उड़ते हुए देखा तो उसके मन में भी स्नान करने की इच्छा प्रबल हुई। उसने स्नान किया। स्नान करने के उपरांत उसका शरीर सोने जैसा बन गया। पिंगले को देखकर उसकी पत्नी के मन में ख्याल आया कि वह भी स्नान करे और उसने भी स्नान किया। स्नान करने के उपरांत उसके मन में आत्मिक आनंद की अनुभूति हुई।

सवैया ॥ खारी में बैठ तिया निज सीस मै पिंगल एक तहां चलिआया।
न्हावत काग भया तहिं स्वेत सु देखिकै पिंगुल तांहि लुभाया।
'मैं इसनान करौं इस नीर मैं', यौ अपने मन में ठहिराया।
बूडन काज परा जल में तिन न्हाइकै कंचन सो तन पाया।३४।
अड़िल ॥ नारी रही लुभाइ देख निज कंत को।
यह मन में ठहिराइ परी तब नीर में।
हो न्हावत ही तिन भया अनंद सरीर में।३५।

कवि कंकण के संकेतानुसार गुरु अरजन साहिब ने यहां एक अद्‌भुत सरोवर बनाया। इस सरोवर के तुल्य अन्य कोई तीर्थ दुनिया पर नहीं है। कवि के अनुसार यह सरोवर देवताओं और दैंत्यों को भी सुंदर लगा। कवि लिखता है कि जो भी प्राणी एक बार इस सरोवर में स्नान करता है वह जहां स्वयं पार होता है वहां अपनी सब कुल का कल्याण यकीनी बना लेता है:

वाहिगुरू करिके इशनान तहा इह ताल अनूप बनाया।
जांके समान न दूसर है कोऊ तीन ही लोक में आख सुनाया।
ताल अजायब सुंदर देखिकै देव औ दैंतन के मन भाया।
आप तरै सगली कुल तारहै एक ही बारि जु याही मे न्हाया।३७।

श्री गुरु अरजन देव जी की महिमा : कवि कंकण के अनुसार गुरु साहिब ऐसे सक्षम गुरु हैं जो मनुष्य को काल की आंधी से बचाकर बार-बार के जन्म-मरण के चक्रों से बचा सकते हैं। यह जन्म जो एक योगी की एक फेरी की तरह है, वह केवल परमात्मा का नाम दृढ़ करने से ही अर्थपूर्ण हो जाएगा:

जो हरि नाम द्रिड़ावत है गुर सोई है जान तूं बात चंगेरी।

ओट तहां हरि नाम की होइगी, झुले जो आइकै काल अंधेरी।
आवन बार न बार ही होइगो, एक ही बारि है जोगी की फेरी।
किउं अगयान का पीवत है मच, जावैगी नाहि खीवत्तव तेरी।४३।

कवि ने गुरु अरजन साहिब की महिमा का वर्णन करते हुए लिखा है कि जैसे कोई रस से आनंदित होता है, छः रसों के भोजन का स्वाद लेता है, गुलाब आदि कई प्रकार की सुगंधियों के साथ सुगंधित होता है, परंतु ये सभी क्षणभंगुर हैं, क्योंकि जो सुख परमात्मा का नाम स्मरण करने से प्राप्त होता है उसके तुल्य कोई दूसरा सुख नहीं है :

सवैया ॥

पीय के मेल में, कामनी केल में, कंचन मंदर मांहि बसाए।
अंबर और पटंबर में नहीं, हीरे औ मानक अंग लगाए।
छे रस बिंजन मांहि नहीं सुख, और रवेल गुलाब हंढाए।
ऐसो न सूख है दूसर ठौर मैं जो गुर अरजुन नाम धिआए।३९।

जैसे कोई राजा सोने का रथ बनाकर, जिसमें अमूल्य मोती लगे हों, उस पर सवारी करके देश-देश में घूमकर बड़ा भूप कहलाये, जगह-जगह पर सीढ़ी वाले कुएं, बाउलियां तथा तलाब, सरोवर आदि बनवाये, रंग-बिरंगे के बाग-बगीचे व पौथे लगाकर अपने आप में हर्ष प्रतीत करता हुआ अपने पर गर्व करता है, परंतु ये सब दुनियावी सुख ऐसे सुख नहीं हैं जो गुरु अरजन साहिब के हुक्मानुसार नाम-स्मरण करने के समान मनुष्य को सुख प्रदान करने के सक्षम हों :

साज के हेम बिवान बडो तिह माहि अमोलक मोती जड़ाए।
होइ सवार फिरै तिस ऊपर देसन देस का भूप कहाए।
बापी कै कूप तड़ाग बनावत रंग बरंग के बाग लवाए।
ऐसो न सूख है दूसर ठौर मै जो गुर अरजन नाम धिआए।४०।

कवि कंकण के अनुसार कोई धनवान व्यक्ति हाथी के हौद में बैठा फिरे, घोड़ों को नचाये, ढोलक, रबाब तथा तबला आदि संगीत के साज का आनंद ले, मिरासी और भट्ट आदि गवैये उसके आगे गाते फिरें, मोह लेने वाली रंभा (अप्सरा देवी) रूप-शृंगार करके नाच करे, परंतु ये सब गुरु अरजन साहिब के अनुसार 'नाम' के तुल्य नहीं बल्कि सब अधूरे हैं, नाशवान हैं :

हाथी अंबारी मैं बैठि फिरै अरु होइ सवार तुरंग नचाए।
ताल म्रिदंग रबाब पखावज डूंम कलावत आइ सुनाए।
मोहनी रंभ समान बनायकै रूप शिंगार औ न्रितय दिखाए।
ऐसो न सूख है दूसर ठौर में जो गुर अरजुन नाम धिआए।४१।

श्री गुरु अरजन देव जी की महिमा का वर्णन करते हुए कवि अंत में लिखता है कि "हे जीव! मैं तुझे बार-बार पुकार कर यह कह रहा हूं कि तू यह सोने जैसी देही को अर्थहीन् ही गंवा रहा है। जो मनुष्य गुरु साहिब की शरण में जाता है वही सुखी रहता है :

बार ही बार पुकारत है तहि कंचन देहि अकारथ जावे।
आवत जावत होत सुखी नर, जो गुर अरजुन नाम धिआवै।४४।



डॉ. इंदू भूषण बैनर्जी के विचारानुसार शहीद शिरोमणि श्री गुरु अरजन देव जी

-डॉ. जगजीत कौर*

शिरोमणि शहीद, असीम ज्ञान, भक्ति एवं रूहानियत के पुंज, शांति और सहन-शक्ति की चरम अवस्था को प्राप्त, बाणी के प्रदाता, श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संकलकर्त्ता, अद्वितीय निर्माणकर्त्ता, अपूर्व बलिदानी, उत्साही एवं सफल दिशा-निर्देशक, बलिदानी धर्म-प्रणेता श्री गुरु अरजन देव जी का जीवन-चरित अपने आप में बेमिसाल है। उनके बहु-आयामी व्यक्तित्व का वर्णन कमलबद्ध कर पाना नितांत कठिन है। यद्यपि इस दिशा में अनेकों देशी-विदेशी और उनके समकालीन इतिहासकारों ने अरबी, फारसी, अंग्रेजी, पंजाबी और हिंदी आदि अन्य भी अनेक भाषाओं में लिखकर इनके महान जीवन को चित्रित करने का प्रयास किया है किंतु महान गुरदेव का असाधारण जीवन शब्दबद्ध कर पाना कठिन हो रहा है।

इसी प्रकार का प्रयास डॉ. इंदू भूषण बैनर्जी ने दो भागों में रचित अपनी पुस्तक "Evolution of Khalsa" (खालसा पंथ का उद्भव) में किया है। वह एक उच्च कोटि का सहृदय विद्वान है। गहन स्वाध्याय, अध्ययन और सिक्ख इतिहास में गहन रुचि के कारण उसे समय-समय पर अनेक प्रतिष्ठित उपाधियों और पुरस्कारों से पुरस्कृत किया जाता रहा है। सिक्ख इतिहास में गहरे अध्ययन तथा अनुसंधान-कार्यों के लिए उसे कलकत्ता विश्वविद्यालय की ओर से डॉक्टर ऑफ फिलासफी की डिग्री से सम्मानित किया गया। १९१० से ही लगातार वह सिक्ख इतिहास का अध्ययन और अध्यापन कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग में करता रहा है। व्यक्तिगत रूप से वह एक अत्यंत सौम्य, धार्मिक एवं दार्शनिक विचारों का था, इसलिए सिक्ख इतिहास के अध्ययन में उसकी विशेष रुचि रही, उसके निर्णय निष्पक्ष एवं निर्विवाद हैं। वह अत्यंत सहृदयता और स्वाध्याय के आधार पर उन विद्वानों के भ्रमित और विवादग्रस्त विचारों को काटता चला जाता है जो उसे तर्क की कसौटी पर खरे उतरते प्रतीत नहीं होते। वह परंपरा से चली आ रही सिक्ख मर्यादायों के अनुसार प्रचलित मान्यताओं और विचारधारओं को सम्मानित भी करता है। इसी लिए वह कहता है कि "Reveals a deep and abinding sympathy with the Sikhs." (सिक्ख इतिहास के भावनातिरेक तथ्यों के साथ उसे पूर्ण सहानुभूति है।)

ग्रंथ के प्रथम भाग में वह आदि श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश-आगमन, उनके समय की परिस्थितियों और उनके उन पावन उपदेशों का वर्णन करता है जो सिद्धांत रूप से आगे चलकर पंथ की मौलिक विचारधारा निश्चित हुए। अपनी उदासियों के दौरान अपनी मधुर रससिक्त बाणी और उपदेशों के द्वारा जनसाधारण को जो मार्ग दिखाया, उनमें कुछ ऐसी कशिश थी कि जनसाधारण सहज ही उनकी ओर खिंचता चला गया। केवल हिंदू ही नहीं अनेकों अन्य मतावलंबी भी उनके मुरीद बने और पंथ एक संस्था बन गया। उस समय के रामानंद, चैतन्य आदि भक्ति-प्रचारक वो काम नहीं कर सके जो आश्चर्यजनक परिवर्तन श्री गुरु नानक

*1801-C, Mission Compound, Near St. Mary's Academy, Saharanpur (U.P.)-247001, Mob. : 92197-87756

देव जी ने कर दिखाया। अन्य भक्ति प्रवण पारंपरिक रास्ते पर ही चलते रहे "Sikhism went off at a tangent and ultimately evolved what has been called a church-nation" और आज यह सर्वोत्तम अनुशासित अल्पसंख्यक कौम है। "best disciplined of the minority communities of India."

श्री गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन काल में ही श्री गुरु अंगद देव जी को गुरु-पद दिया और उन्होंने तृतीय गुरु श्री गुरु अमरदास जी को और पुन: चतुर्थ गुरु श्री गुरु रामदास जी स्वरचित बाणी सहित श्री गुरु नानक देव जी की बाणी तथा पावन उपदेशों का ही प्रचार-प्रसार करते रहे। यहां तक कि समय की राजसी सत्ताधारी भी गुरु साहिबान के अमृत उपदेशों से प्रभावित रहे, यद्यपि कुछ ईर्ष्याग्रस्त कट्टरपंथी बादशाहों के कान भरते रहे। मुगल सत्ता में विशेषत: अकबर बादशाह गुरु साहिबान के संत-स्वभाव, सद्भावपूर्ण मानव सेवा एवं आध्यात्मिक शक्ति का विशेष रूप से कायल रहा।

श्री गुरु रामदास जी ने सन् १५८१ ई में ज्योति-जोत समाहित होने से पूर्व अपने सबसे छोटे सपुत्र, जो सन् १५६३ में जन्मे थे और उस समय १८ वर्ष की अवस्था के थे, को गुरु-पद पर प्रतिष्ठित किया। उनका सबसे बड़ा पुत्र प्रिथीचंद बहुत नाराज हुआ क्योंकि वह गुरगद्दी पर अपना अधिकार समझता था और उसे पाने का इच्छुक था। दूसरा बेटा महादेव संसार से विरक्त रहता था। वह इन बातों से उदासीन था। यहां लेखक संहारी मल के लड़के के विवाह में जाने से प्रिथिए द्वारा इंकार, (गुरु) अरजन देव जी द्वारा जाना, उनके द्वारा पिता को पत्र भेजने, प्रिथिए द्वारा पत्रों को छुपाया जाना आदि का भी जिक्र करता है। श्री गुरु अरजन देव जी को गुरगद्दी दिए जाने पर उसका पिता से रोष प्रकट करना और गुरु साहिब का उपदेश कि पिता से झगड़ना पाप है और तब श्री गुरु रामदास जी का उसे 'मीणा' कहना तथा कोई गुरु का सिक्ख 'मीणों' से व्यवहार नहीं रखेगा, इसका भी जिक्र करता है।

यद्यपि श्री गुरु अरजन देव जी का बड़ा भाई अंत तक गुरु साहिब का विरोध करता रहा, परंतु गुरगद्दी पर बैठते ही गुरु साहिब ने अपनी संपूर्ण चेतना निर्माण-कार्यों में लगा दी। उनके जीवन का मिशन ही गुरु नानक साहिब द्वारा स्थापित सिद्धांतों और गुरबाणी का प्रचार-प्रसार कर सिक्ख मत को अधिक से अधिक विकसित करना था। वे पूर्व गुरु साहिबान द्वारा अधूरे रह गए कार्यों को पूर्ण करने में लग गए। श्री गुरु रामदास जी ने श्री अमृतसर (रामदासपुर) नगर को बसाया और नगर के मध्य में अमृत-सरोवर की खुदाई आरंभ की थी, एक अन्य सरोवर संतोखसर को भी पूरा करना था। इस कार्य को पूरा कर उन्होंने अमृत सरोवर के मध्य में श्री हरिमंदर साहिब प्रभु-परमात्मा का निवास-स्थल बनवाया। लेखक बताता है कि श्री गुरु अरजन देव जी अपने प्रत्येक कार्य की पूर्ति के लिए प्रभु-परमात्मा की कृपा और दयालुता को ही सहारा मानते थे। गुरु साहिब का विश्वास था :

जिस का कारजु तिन ही कीआ माणसु किआ वेचारा राम ॥ *(पन्ना ७८४)*

("God Himself came and stood up to do the work of saints. He did it whose work it was; what is wretched man?")

श्री हरिमंदर साहिब के पूर्ण होने पर उन्होंने प्रभु का शुक्राना किया और ऐसा अनुभव किया कि प्रभु ने आप साक्षात खड़े होकर अपने इस निवास-स्थल को बनवाया है, इसी लिए

किसी का एक बाल भी बांका नहीं हुआ है :
विचि करता पुरखु खलोआ ॥
वालु न विंगा होआ ॥ *(पन्ना ६२३)*

अमृत-सरोवर की महानता से नगर को 'अमृतसर' नाम दिया गया। श्री गुरु अरजन देव जी स्वयं इसी नगर में आकर रहने लगे। गुरु साहिब के निवास से श्री हरिमंदर साहिब और अमृत-सरोवर सिक्ख श्रद्धालुओं के लिए एक पुन्य तीर्थ-स्थान बन गया। दिन-प्रतिदिन सिक्ख श्रद्धालु गुरु साहिब के दर्शन करने और अमृत-सरोवर में स्नान करने हेतु एकत्रित होने लगे। यह एक प्रकार से सिक्ख धर्म का केंद्रीय स्थान बन गया। हजारों की संख्या में श्रद्धालु यहां एकत्रित होते, गुरु साहिब के भक्ति-प्रवचन सुनते, श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन करते, अमृत-सरोवर के शांत, शीतल जल में स्नान कर असीम आनंद-लाभ लेते। सिक्ख श्रद्धालुओं की संख्या निरंतर बढ़ रही थी। पंजाब में तो दूर-दूर के इलाकों में सिक्ख फैल ही रहे थे यहां तक कि दिल्ली से लेकर पेशावर तक भी श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ रही थी। यहां लेखक मुहसिन फानी के 'दबिस्तान' (भाग २, पृ २७०) का उल्लेख करता है, जिसके अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी के समय में किसी भी देश का कोई भी ऐसा स्थान नहीं जहां सिक्ख श्रद्धालु न रहे हों। सिक्ख धर्म के सिद्धांतों के और अधिक प्रचार-प्रसार हेतु गुरु साहिब अब श्री अमृतसर से बाहर स्थानों की यात्रा को निकले। सबसे पहले वे खडूर साहिब और गोइंदवाल साहिब आए और तब भैणी और खानपुर से गुजरते हुए खारा पहुंचे, जहां के हरियालीपूर्ण वातावरण और शीतल जल-स्रोतों ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि उन्होंने वहां की भूमि लेकर तरनतारन नगर की नींव रखी और सरोवर की भी, जो आगे चलकर प्रसिद्ध तीर्थ-स्थल बना। माझा का यह पावन स्थल सिक्खी का मजबूत केंद्र बना। तब ब्यास नदी को पार कर गुरु साहिब दोआबा क्षेत्र पहुंचे और जिला जलंधर में करतारपुर नगर की नींव रख इस प्रमुख आध्यात्मिक केंद्र का निर्माण किया। धर्म प्रचार करते हुए वे लाहौर पहुंचे जहां के डब्बी बाजार में 'गुरु की बाउली' का निर्माण किया। गुरदासपुर होते हुए वे डेरा बाबा नानक पहुंचे और बाबा श्रीचंद से मिलकर श्री अमृतसर वापिस आए। लगभग पांच वर्ष प्रचार-यात्रा करते हुए वे १५९४ ई के आसपास श्री अमृतसर पहुंचे। इसी समय सन् १५९५ में वडाली स्थान पर श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब जी का प्रकाश हुआ।

श्री गुरु अरजन देव जी लगभग पांच-छ: वर्ष श्री अमृतसर से बाहर रहे। उस समय सिक्ख मत खूब प्रफुल्लित हुआ किंतु प्रिथीचंद के व्यवहार में कोई अंतर नहीं पड़ा, उसकी ईर्ष्या बढ़ती ही गई। यहां लेखक यह भी बताता है कि काफी समय तक श्री गुरु अरजन देव जी के कोई संतान नहीं हुई। प्रिथीचंद और उसकी पत्नी करमो प्रसन्न थे कि गुरगद्दी उनके पुत्र मिहरबान को ही प्राप्त होगी। इसी बीच माता गंगा जी को श्री गुरु अरजन देव जी ने बाबा बुड्ढा जी के पास संतान-प्राप्ति के आशीर्वाद हेतु भेजा। पहले तो वे निराश आईं। बाबा जी ने विनम्रता से कहा कि वे एक साधारण किसान हैं।उनमें ऐसी वरदान देने की क्षमता कहां है? माता जी के दोबारा आने पर उन्होंने प्रसन्न होकर कहा कि उनकी कोख से एक अति सौंदर्यवान शूरवीर योद्धा जन्म लेगा जो धन-दौलत-सम्पदा के साथ आत्मिक गुणों से सम्पन्न आध्यात्मिक पुरुष होगा, दो तलवारें पहनेगा, शाही घोड़े की सवारी करेगा, धर्म-युद्धों में संलग्न हो मुगल सत्ता का नाश करेगा। श्री

गुरु हरिगोबिंद साहिब के प्रकाश पर गुरु साहिब ने प्रभु-परमात्मा का धन्यवाद किया :

सतिगुर साचै दीआ भेजि ॥
चिरु जीवनु उपजिआ संजोगि ॥ (पन्ना ३९६)

परंतु प्रिथीचंद श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब से ईर्ष्या करता रहा और समय-समय पर एक दाई द्वारा, एक सपेरे, एक घरेलू ब्राह्मण द्वारा श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब को नुकसान पहुंचाने का प्रयास करता रहा, परंतु प्रभु की अपार कृपा श्री (गुरु) हरिगोबिंद जी पर बनी रही। यहां तक कि श्री अमृतसर आने पर उन्हें बहुत तेज बुखार के साथ सीतला (चिकन पाक्स) भी हुआ। उससे भी वे स्वस्थ हो गए। श्री गुरु अरजन साहिब ने प्रभु का धन्यवाद किया। प्रिथीचंद अब दिल्ली दरबार की ओर सहायता के लिए गुहार करने लगा और अपने एक मित्र सुलही खान को श्री अमृतसर पर हमला करने को बुला लाया, परंतु उससे भी प्रभु-परमात्मा ने रक्षा की :

सुलही ते नाराइण राखु ॥
सुलही का हाथु कही न पहुचै सुलही होइ मूआ नापाकु ॥ (पन्ना ८२५)

अब सिक्ख पंथ उन्नति के उस शिखर पर पहुंच गया था जहां यह जरूरत महसूस की गई कि सिक्ख मत के सिद्धांतों को, जो बाणी के माध्यम से गुरु साहिबान ने व्यक्त किए थे, उन्हें लिखित रूप में संकलन तैयार कर आने वाली पीढ़ियों के लिए भी और वर्तमान में भी सुरक्षित कर दिया जाये, जैसा कि श्री गुरु अमरदास जी ने भी वचन किए थे :

आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥
बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥ (पन्ना ९२०)

सिक्खों को सच्ची बाणी, अकाल पुरख वाहिगुरु जी द्वारा बख्शी सच्ची बाणी गायन करने के ही आदेश थे। कच्ची बाणी के साथ इस महान अमृतमय सच्ची बाणी का मिलगोभा न हो इसलिए भी बाणी का संकलन तैयार करना आवश्यक था। श्री गुरु अरजन देव जी ने पूर्व गुरु साहिबान द्वारा रचित बाणी, भक्तों की बाणी, जो उन्हें परंपरा से प्राप्त हुई थी और जो उनके पास थी, उसमें अपनी रचित बाणी, कुछ अन्य प्रेमी सिक्ख महापुरुषों और भट्टों की बाणी का भाई गुरदास जी से लेखन करवाकर सन् १६०४ ई में विशाल ग्रंथ साहिब का संकलन तैयार किया। बाबा बुड्ढा जी को ग्रंथी स्थापित कर श्री हरिमंदर साहिब में इसका प्रथम प्रकाश किया गया।

जाहिर है कि श्री हरिमंदर साहिब के रूप में गुरु-प्रेमियों को मिल बैठने के लिए एक केंद्रीय स्थान प्राप्त हो गया था। श्री अमृतसर नगर और अमृत-सरोवर उनके लिए विशेष आकर्षण-केंद्र था और सच्ची बाणी का विशाल बोहिथ उनका आध्यात्मिक निर्देशन करता था। प्रतिदिन के जीवन की प्रत्येक छोटी-बड़ी समस्याओं का समाधान उन्हें बाणी के प्रकाश से प्राप्त होता था। जीवन को चिंताओं से मुक्त करने, असीम आनंद लाभ प्राप्त करने का एक साधन उन्हें प्राप्त हो गया था। दिन-प्रतिदिन श्रद्धालुओं की संख्या भी बढ़ रही थी और श्री गुरु अरजन देव जी की उपलब्धियों के कारण सिक्ख पंथ की लोकप्रियता में विकास हो रहा था, परंतु यह लोकप्रियता प्रिथीचंद के पंथ-दोखियों और ईर्ष्यालुओं को फूटी आंख नहीं सुहा रही थी। इसी बीच एक और घटना घट गई।

लाहौर में राज दरबार का दीवान चंदूशाह था, जो अपनी लड़की की शादी के लिए वर तलाश कर रहा था। तलाश में लगे पंडित को श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब जी का तेजस्वी

व्यक्तित्व बहुत पसंद आया और उसने चंदूशाह को यह प्रस्ताव दिया, परंतु चंदूशाह अपनी राजसी शान के सामने गुरु-घर को नीचा और अपने अयोग्य समझता था। उसने घमंड में आकर गुरु-घर के प्रति अपमानजनक शब्द कहे, परंतु पंडित के चयन को वह नकार भी नहीं सकता था और श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब का शूरवीर रूप भी वह छोड़ना नहीं चाहता था, अत: वह रिश्ते के लिए तैयार हो गया। लाहौर की संगत ने गुरु साहिब को कहलवा भेजा कि गुरु-घर के प्रति अपमानजनक शब्द बोलने वाले घमंडी दीवान से कदापि सम्बंध न जोड़ें। संगत के आदेश को शिरोधार्य करते हुए गुरु साहिब ने रिश्ते से इंकार कर दिया। चंदूशाह इससे बौखला उठा और वह गुरु-घर का कट्टर शत्रु बन गया। प्रिथिए की कुटिल नीति ने इसका लाभ उठाया और उसने अन्य काजी-मुल्लाओं को साथ मिलकर चंदू के प्रभाव के जरिए बादशाह अकबर तक यह बात पहुंचाई कि श्री गुरु अरजन देव जी ने जो आदि ग्रंथ साहिब रचा है उसमें हिंदू और मुसलमान दोनों के विरुद्ध बातें लिखी गई हैं। यद्यपि अकबर को ऐसा विश्वास नहीं था फिर भी उसने श्री आदि ग्रंथ साहिब देखने की इच्छा प्रकट की। भाई गुरदास जी और बाबा बुड्ढा जी श्री आदि ग्रंथ साहिब लेकर लाहौर बादशाह के पास पहुंचे। कुछ हुकमनामे सुनकर, अर्थ समझकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने केवल श्री आदि ग्रंथ साहिब का उचित सत्कार ही नहीं किया बल्कि बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी को भी आदर सहित सम्मानित कर विदा किया। कुछ समय पश्चात अकबर बादशाह गुरु अरजन साहिब के दर्शन करने भी पहुंचा।

यहां डॉ. बैनर्जी मैकालिफ और सुजानराय की गवाही भरते हैं। मैकालिफ कहता है कि "एक अन्य अवसर पर अपनी भारी शाही सेना के साथ अकबर ने ब्यास नदी पार की और गोइंदवाल गुरु अरजन साहिब के दर्शन करने गया, जिनके चरित्र से वह बहुत प्रभावित था और जिनका वह प्रशंसक था।" (भाग ३, पृ ८४) सुजानराय बताता है कि अकबर लाहौर से बटाला होते हुए ब्यास नदी पार कर श्री गुरु नानक देव जी की गद्दी पर आसीन श्री गुरु अरजन देव जी के दर्शन को गया। श्री गुरु नानक देव जी व गुरु जी की बाणी सुनकर वह बहुत प्रसन्न हुआ जो एक अकाल पुरख और मानवीय एकता का संदेश देती है। विदा होते समय श्री गुरु अरजन देव जी ने बादशाह से उस वर्ष अनाज कम होने से किसानों द्वारा भरे जाने वाले लगान में छूट देने को कहा बादशाह ने लगान का दसवां हिस्सा कम कर दिया। (Khulasatu-t-Tawarikh, Page 425) श्री गुरु अरजन देव जी और अकबर बादशाह के सम्बंध मित्रतापूर्ण थे, परंतु विरोधी इससे और अधिक ईर्ष्यालु हो उठे।

इसी बीच अकबर बादशाह का निधन हो गया। उसका बेटा जहांगीर बादशाह बना। उसके पुत्र खुसरो ने बगावत की। आगरा से वह बगावत का झंडा लेकर पंजाब तक पहुंचा और श्री गुरु अरजन देव जी से भी मिला। गुरु अरजन साहिब ने उसके पितृ-पितामहों के प्रेम, गुरु-घर की श्रद्धा के अनुरूप उसे ठहराया और लंगर से प्रसाद छकाया किसी विशेष राजनीतिक मकसद से नहीं। जब खुसरो पकड़ा गया और जहां-जहां उसके सहायक रहे उनका नाम लिखा गया। ईर्ष्यालुओं ने श्री गुरु अरजन देव जी का भी नाम दिया। चंदूशाह, प्रिथीआ, मुल्ला-काजियों ने खूब रंग लगाकर गुरु साहिब की निंदा की। जहांगीर बादशाह स्वभाव से ही कट्टरपंथी था। वह सिक्ख धर्म के विकास-

कार्यों को सहन नहीं कर सकता था। यहां लेखक 'तुजके-जहांगीरी' (पृष्ठ ७२) का हवाला देते हुए कहता है कि "गोइंदवाल, जो ब्यास नदी के किनारे है, वहां एक हिंदू रहता था, जिसका नाम अरजन था। वह फकीरी बाणे (पहरावे) में था और अपनी रुहानियत का ढोंग रच कर अनेक भोले-भाले हिंदुओं को अपने जाल में फंसा रखा था। तीन-चार पीढ़ियों से उसकी दुकान गर्म थी, यहां तक कि अनेकों मुसलमान भी उसके अनुयायी हो रहे थे। बहुत दिन से मैं सोच रहा था कि इस फरेब को बंद करना चाहिए और उसे इसलाम में शामिल करना चाहिए। इसी बीच जब खुसरो और गुरु अरजन साहिब के सम्बंधों का मुझे पता चला तो मैंने फौरन आदेश दिया कि उसे लाहौर बुलाया जाये, उसके घर-जायदाद और परिवार व बच्चों को मुर्तजा खां को सौंप कर उसे मौत के घाट उतार दिया जाये।"

यहां लेखक उन इतिहासकारों के विचारों को नकारता है जो इतना स्पष्ट प्रमाण सामने होते हुए भी यह कहते हैं कि खुसरो की सहायता करके उन्होंने बादशाह को नाराज कर दिया था, जैसा कि जादुनाथ सरकार (औरंगजेब का इतिहास, भाग ३, पृ. ३०८ पर) कहता है, "श्री गुरु अरजन देव जी को साधारणत: वही दंड दिया गया जो राजनीतिक मुजरिमों को दिया जाता है। (Guru Arjun merely suffered the customary punishment of a political offender.)

मुहसिन फानी की इस बात को स्वीकार करते हुए कि बादशाह ने गुरु अरजन साहिब पर दो लाख रुपए का दंड लगाया और कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिज में से बाणी के उस अंश को हटा दिया जाये जो मुस्लिम विचारों के अनुकूल नहीं बैठते और ये दोनों शर्तें गुरु साहिब ने पूरी नहीं कीं। गर्मी की ऋतु में असीम ताप और कठोर दंड को सहन करते हुए वे शहीद हो गए। सरकार भी कहता है, "These were the usual punishment of revenue defaulters of those days." (उन दिनों दंड की राशि का भुगतान न करने वालों के साथ ऐसा ही व्यवहार किया जाता था।)

डॉ. बैनर्जी अत्यंत कठोर शब्दों में इन इतिहासकारों के शब्दों को काटता है और कहता है कि "एक चैतन्य इतिहासकार का निर्णय निष्पक्ष होना चाहिए और ऐसा एकांकी निर्णय कदापि क्षमा करने के योग्य नहीं है।" (It shows a perversity of judgement which can hardly be excused in a historian. p. 6, vol. 2)

डॉ. बैनर्जी के विचार से श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत का कारण जहांगीर बादशाह की कट्टर तुअस्सब नीति व धार्मिक कट्टरता थी। एक ऐसे महान पवित्र आध्यात्मिक गुरदेव, जिन्होंने हिंदू-मुसलमान सबके कल्याण हेतु पावन श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पवित्र बाणी का संकलन तैयार किया था, जिनका हिंदू-मुसलमान समान रूप से आदर करते थे, जिनके पावन उपदेश समग्र मानवता को रूहानी आनंद, संतोष, सुख व तृप्ति प्रदान करते थे, जिनका जीवन सदाचार मानवता के लिए आदर्श था। उनके साथ मुगल बादशाह जहांगीर का ऐसा अमानवीय व्यवहार कदापि न्याय-संगत नहीं था। बादशाह के क्रूर कर्मचारियों ने उन्हें तीन दिन तक अति कठोर असहनीय कष्ट दिए, उन्हें गर्म लौह पर बैठाया गया, उनके शरीर पर तेज गर्म रेत डाली गई और उन्हें उबलते गर्म पानी में बैठाया गया। इस प्रकार परम शांति के पुंज अपने कोमल शरीर पर असहनीय यातनाएं सहते हुए परम ज्योति में विलीन हो गए।



"हिस्टरी ऑफ दी सिक्खस" कृत डॉ. हरीराम गुप्ता में श्री गुरु अरजन देव जी

*-डॉ. नवरत्न कपूर**

श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म १५ अप्रैल, १५६३ को गोइंदवाल में हुआ था। उनकी माता का नाम माता भानी जी और पिता श्री गुरु रामदास जी थे। वे उनके सबसे छोटे सपुत्र थे। उनके बड़े भाइयों के नाम--प्रिथीचंद और महादेव थे। श्री गुरु अरजन देव जी १ सितंबर, १५८१ को गुरगद्दी पर सुशोभित हुए। उस समय उनकी आयु १८ वर्ष थी। उनकी महान देन श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन के अतिरिक्त उनका आत्म-बलिदान है।

मसंद : गुरगद्दी पर विराजमान होते ही श्री गुरु अरजन देव जी ने दोनों सरोवरों (अमृत सर, संतोखसर) के निर्माण-कार्य को पूरा करने, रामदासपुरा नामक नगर को बढ़ाने और सरोवर के आस-पास गुरुद्वारा साहिब बनवाने का काम पूरा किया। इन कार्यों की पूर्ति के लिए उन्होंने सिक्खों को अपनी आय का दसवां भाग भेंट करने का सुझाव दिया, जिसे पंजाबी भाषा में 'दसवंध' कहा जाता है।

श्री गुरु अरजन देव जी के नाना तीसरे सिक्ख गुरु श्री गुरु अमरदास जी ने प्रत्येक मंजी में एक संगतिया नियुक्त किया था। उसी को 'दसवंध' एकत्र करने का आदेश दिया गया। उन्हें इस कार्य हेतु प्रेरित करने के लिए 'संगतियों' की पदोन्नति करके उन्हें 'मसंद' पुकारा जाने लगा। वस्तुत: 'मसंद' शब्द फारसी के 'मुसन्नद' शब्द का पंजाबी रूप है, जिसका अर्थ है 'सुप्रतिष्ठित' या 'सामंत'। 'मसंद' सिक्ख धर्म के प्रचार के अतिरिक्त लोगों के आपसी लड़ाई-झगड़े निपटाते थे और सिक्खों को प्रशासनिक व्यवस्था प्रदान करते थे। मसंदों को कोई वेतन नहीं मिलता था, किन्तु दान के रूप में प्राप्त वस्तुओं का कुछ भाग वे गुरु साहिब की आज्ञा से अपने गुजारे के लिए रख लेते थे। ये वर्ष भर में प्राप्त सामग्री का प्राय: तीसरा भाग होता था। मुगल सरकार के लगान की अपेक्षा 'दसवंध' (दशमांश) लोगों द्वारा स्वेच्छा और बिना व्यवधान के भेंट किया जाता था। मसंद लोग 'दसवंध' वाली सामग्री गुरु साहिब को प्रत्येक छ: मास पश्चात् आने वाले वैसाखी तथा दीवाली के शुभ त्योहारों पर भेंट कर देते थे। मसंदों की विदायगी के समय उन्हें पगड़ी और चादर सम्मान-चिन्ह के रूप में भेंट किए जाते थे। दसवंध की सामग्री गुरु साहिब द्वारा प्रायोजित निर्माण-कार्यों के भारी खर्चे चलाने में काम आती थी और सिक्ख इसे अनुशासित ढंग से निरंतर चुकाते थे। 'मंजी' को 'बड़ी संगत' और 'पीढ़ी' को 'छोटी संगत' पुकारा जाता था। गुरु साहिब के निवास-स्थान को 'दरबार' कहा जाता था।

गुरु साहिब के समय संपन्न निर्माण-कार्य :

१. सरोवर : श्री अमृत सर नाम का कच्चा सरोवर पक्का किया गया और उसकी लंबाई-चौड़ाई भी बढ़ाई गई। गुरु साहिब ने कई एक सरोवर खुदवाए जो धार्मिक यात्रा-स्थल बन

**९०१, टावर डी-३, सागर दर्शन टावर्स सोसाइटी, पाम बीच रोड, सेक्टर-१८, नेरूल (नवी मुंबई)-४००७०६*

गए। 'संतोखसर' का निर्माण-कार्य सन् १५८८ में संपन्न हुआ। इतिहासकार श्री कन्हैया लाल का कथन है कि इसके निर्माण-कार्य के लिए 'मंडी' (हिमाचल प्रदेश) के राजा ने गुरु साहिब को चार हजार रुपए भेंट किए थे।

२. *श्री हरिमंदर साहिब :* श्री गुरु अरजन देव जी ने 'अमृतसर' नामक सरोवर के मध्य में श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण-कार्य शुरू करवाया। इसकी नींव संवत् १६४५ वि. के माघ महीने की पहली तारीख (२८ दिसंबर, सन् १५८८) को लाहौर के विख्यात सूफी संत साईं मियां मीर जी से रखवाई गई। वे सिक्ख गुरु साहिबान के महान समर्थक थे। ऐसा कहा जाता है कि साईं जी ने नींव में जो पत्थर धरा था, मिस्त्री ने उसकी स्थिति बदल दी ताकि चिनाई के लिए ईंटें ठीक से रखी जा सकें। इस पर साईं मियां मीर जी ने टिप्पणी की कि यह 'मंदिर' कुछ समय बाद गिरा दिया जाएगा और इसे दोबारा बनाना पड़ेगा। (The saint remarked that the temple would have to be pulled down in due course and would be built a new.)

श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण-कार्य बाबा बुड्ढा जी की देखरेख में हुआ। इसके आस-पास के (हिंदू) मंदिर और मस्जिदें ऊंचे चबूतरे पर बनी हुई थीं, किन्तु श्री गुरु अरजन देव जी ने इसे उनसे नीची जगह पर बनवाया, क्योंकि उनका विचार था कि भगवद-प्राप्ति विनम्र भाव से झुकने तथा समर्पण से ही होती है। (God could be attained by bending low in submission and humility.) इसके स्वरूप में एक और विविधता थी। हिंदुओं के मंदिर और मुसलमानों की मस्जिदों में तीन ओर दीवार होती है, केवल एक ओर दरवाजा होता है। हिंदुओं के मंदिर का द्वार पूर्व दिशा में रखा जाता है, जबकि मस्जिद का पश्चिम दिशा में रखने की प्रथा है। श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री हरिमंदर साहिब के बाहर प्रत्येक दिशा में एक-एक द्वार रखवाया। इस प्रकार इस पावन स्थल के चार दरवाजे रखवाए गए। इससे यही अभिप्राय था कि परमात्मा सभी दिशाओं में विद्यमान है और यह पावन स्थान ब्राह्मण, क्षत्रिय, बौद्ध, इसलाम तथा सिक्ख धर्मावलंबी सभी श्रद्धालुओं के लिए एवं उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम दिशा के निवासी प्रत्येक व्यक्ति के लिए खुला है। श्री हरिमंदर साहिब का स्वरूप पानी में खिले हुए कमल के समान है। उसमें कोई मूर्ति, छाया-चित्र अथवा पूजा के लिए तसवीरें नहीं हैं। यह ऐसा 'हरि मंदर' है जिसमें ईश्वर का शोभा-गान होता है। श्री हरिमंदर साहिब हर समुदाय के लिए आध्यात्मिक और सांस्कृतिक केंद्र बन गया। यह 'गुरु' के 'शिष्यों' के लिए सर्वोत्तम तीर्थ-स्थल बन गया। गुरु साहिब ने इसे अपना स्थायी स्थल बना लिया। तब से सिक्खों की एकत्रताएं अब तक श्री अमृतसर में ही होती हैं। गुरु साहिब और उनकी धर्मपत्नी माता गंगा जी व्यक्तिगत रूप से यात्रियों की देखभाल करते थे।

३. *तरनतारन :* श्री गुरु अरजन देव जी माझा क्षेत्र में श्री गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं का प्रचार करने के लिए प्राय: भ्रमण करते रहते थे। सन् १५९० में श्री अमृतसर के दक्षिण में बीस किलोमीटर की दूरी पर उन्हें एक आकर्षक स्थल भा गया। वहां पर उन्होंने एक अन्य सरोवर बनवाया, जिसका नाम 'तरनतारन' रखा गया। 'तरनतारन' शब्द का अर्थ है : "संसार समुद्र से लोगों को पार लगाने वाला लट्ठों का बेड़ा।" (A raft to take men across world's ocean.) यह भी एक अन्य महत्वपूर्ण

तीर्थ-स्थान बन गया। तरनतारन से बारह किलोमीटर की दूरी पर स्थित मुसलमानों के 'सखी सरवर' नामक प्रचार-केंद्र के प्रभाव में मुसलमान बनने वाले हिंदू नए तीर्थ-स्थल के निर्माण के कारण धर्म-परिवर्तन से बचाए जाने लगे।

४. *करतारपुर :* श्री अमृतसर की पूर्वी दिशा में ६६ किलोमीटर की दूरी पर श्री गुरु अरजन देव जी ने 'गंगा सागर' नामक सरोवर खुदवाया। इसके आस-पास उभरने वाली बस्ती का नाम उन्होंने 'करतारपुर' (निकट जलंधर) रखा, जिसका अर्थ है 'भगवान का घर'।

५. *बाउली :* श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने पूज्य पिता श्री गुरु रामदास जी के जन्म-स्थान लाहौर नामक नगर में एक बाउली (आयताकार कुआं) खुदवाई।

६. *छेहरटा :* बटाला के एक मुगल माल अधिकारी सुलही खां ने अपने साथियों के साथ श्री गुरु अरजन देव जी पर सशस्त्र धावा बोल दिया। गुरु साहिब चुपचाप वडाली नामक एक समीपस्थ गांव की ओर प्रस्थान कर गए। वहां पर पानी की कमी देखकर गुरु साहिब ने एक कुआं खुदवाया और उस पर छ: डोलों वाला एक रहट जल खींचने के लिए लगवा दिया। इसी कारण इस कसबे का नाम 'छेहरटा' पड़ा। यहीं पर छठे गुरु साहिब श्री हरिगोबिंद साहिब का जन्म हुआ। पुत्र-प्राप्ति पर श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरबाणी का गायन करके अपनी खुशी प्रकट की कि "सच्चे पातशाह ने मेरे मन की मुराद पूरी कर दी है।" पवित्र स्थानों के निर्माण से प्रभावित होकर माझा के लोग बड़ी संख्या में सिक्ख धर्म में प्रवेश करने लगे।

गुरु साहिब की शान-ओ-शौकत : श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री अमृतसर में आलीशान इमारतें बनवाईं। वे सुंदर कपड़े पहनते थे। मध्य एशिया से घोड़े मंगवाए गए। उनके पास कुछ हाथी भी थे और अंगरक्षक सदा उनकी हजूरी में रहते थे। उनकी इसी शोभा को देखकर सिक्ख अपने गुरु साहिब को आदर सहित "सच्चा पातशाह" पुकारने लगे, जिसका अर्थ है मनुष्य की आत्मा को मुक्ति की ओर ले जाने वाला, जबकि सांसारिक बादशाह केवल मनुष्यों की सांसारिक आवश्यकताओं को नियंत्रित करता है। इससे यह भी सूचित होता है कि गुरु साहिब प्रेम और न्याय के नियमों का पालन करते थे, जबकि सांसारिक राजा अपने हथियारों की शक्ति तथा अधिकार के भय से लोगों पर शासन करते थे।

घोड़ों का व्यापार : श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने पैरोकारों को कृषि के अतिरिक्त व्यापार-कार्यों के लिए भी प्रेरित किया, क्योंकि वे लोग केंद्रीय और पश्चिमी एशिया से घोड़े मंगवाते थे, जिन्हें बेचकर वे खुशहाल होने लगे तथा साहसिक, निडरतापूर्वक जात-पात के भेदभाव से मुक्त होने लगे। अपने बढ़ते हुए खर्चों के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि गुरु साहिब ने भी घोड़ों के व्यापार का निष्पादन किया, क्योंकि वे अपने शिष्यों द्वारा भेंट की गई दान-राशि का एक पैसा भी निजी कार्यों में नहीं लगाते थे। उनके समकालीन मुस्लिम इतिहासकार मोहसिन फानी कृषि-कार्य से तथा कुछेक व्यापार द्वारा अपने परिवार का लालन-पालन करते थे। इसके फलस्वरूप सिक्ख अच्छे घुड़सवार बन गए और गुरु साहिब की सैन्य-शक्ति के मुख्य आधार के रूप में प्रकट हुए। इस प्रकार सिक्ख समुदाय ने मुगल साम्राज्य के अंतर्गत रहते हुए एक पृथक राज्य का गौरव प्राप्त कर लिया।

इसके फलस्वरूप उनके राजनैतिक विकास का रास्ता खुल गया।

श्री आदि ग्रंथ साहिब का संपादन : इसके बारे में डॉ हरीराम गुप्ता का मत उद्धृत है, जिसमें गुरबाणी के संकलन एवं संपादन पर प्रकाश डाला गया है:

"श्री गुरु अरजन देव जी की सबसे मूल्यवान उपलब्धि सिक्खों के लिए एक पावन ग्रंथ का संकलन करवाना था, जिसका नाम **'आदि ग्रंथ'** रखा गया और (अब वह) **'ग्रंथ साहिब'** अथवा **'श्री गुरु ग्रंथ साहिब'** के नाम से लोकप्रिय है। गुरु साहिब चाहते थे कि (गुरबाणी) के **'शबदों'** का सही उच्चारण हो और सिक्ख सही ढंग से धार्मिक संस्कार निभाएं। इसकी आवश्यकता इसलिए पड़ी कि गुरु-पद से वंचित उनका बड़ा भाई प्रिथीचंद अपनी कविताएं रच रहा था। वह श्री गुरु नानक देव जी तथा अन्य गुरु साहिबान की बाणी के समान अपनी कविता का प्रचार सिक्खों में कर रहा था। श्री गुरु अरजन देव जी भी सिक्ख संप्रदाय को एक धर्म का ऊंचा पद दिलवाने के इच्छुक थे। इस उद्देश्य की पूर्ति तभी हो सकती थी जब वेदों, बाईबल तथा कुरान (शरीफ) की भांति सिक्खों के पास भी अपना पवित्र ग्रंथ होता। एतद्‌र्थ उन्होंने अपने समेत सभी (पूर्ववर्ती) गुरु साहिबान की बाणी को गुरमुखी लिपि द्वारा एक **'ग्रंथ'** के रूप में संकलित करने का निश्चय किया। इस कार्य का सूत्रपात सन् १५९९ के आरंभ में हुआ।" (पृष्ठ १५३)

श्री आदि ग्रंथ साहिब में गुरु साहिबान के जीवन-विवरण संबंधी एक भी शबद नहीं है। इसमें केवल प्रार्थनाएं और भक्ति-परक बाणी ही सम्मिलित है। श्री गुरु अरजन देव जी ने इसका नाम **'पोथी साहिब'** रखा : *"पोथी परमेसर का थानु ॥"*

श्री आदि ग्रंथ साहिब संवत् १६६१ में संपूर्ण हुआ और इसकी जिल्दबंदी लाहौर से करवाने का उत्तरदायित्व भाई बंनो को सौंपा गया। भाई बंनो गुजरात जिले के मांगट नामक ग्राम का निवासी था, जो १९४७ से पाकिस्तान के अंतर्गत आ गया है।

जिल्दबंदी के लिए लाहौर नगर में ले जाने से पूर्व भाई बंनो ने गुरु साहिब से आज्ञा लेकर श्री आदि ग्रंथ साहिब की प्रति मांगट निवासियों को दिखाई और उसकी एक अन्य प्रतिलिपि तैयार करने के लिए लिपिकर्ताओं को यह कार्य सौंपा। कुछ ही दिनों में दूसरी प्रतिलिपि तैयार हो जाने पर भाई बंनो ने लाहौर से जिल्दबंदी करवाने के पश्चात् श्री अमृतसर में आकर गुरु साहिब को दोनों प्रतियां भेंट कीं। गुरु साहिब इन्हें देखकर बहुत खुश हुए और उन्होंने दूसरी प्रति पर हस्ताक्षर करके उसकी प्रमाणिकता स्थापित कर दी। भाई बंनो उसे मांगट में ले गए और संगत के लाभ के लिए उसका प्रतिदिन गायन करने लगे।

श्री आदि ग्रंथ साहिब की मूल हस्तलिखित प्रति को शानदार धार्मिक अनुष्ठान के पश्चात् भादों शुक्ल प्रतिपदा, संवत् १६६१ (१६ अगस्त, सन् १६०४) को विशाल जनसमूह की उपस्थिति में श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर में स्थापित कर दिया गया और बाबा बुड्‌ढा जी को पहला मुख्य ग्रंथी नियुक्त किया गया। श्री हरिमंदर साहिब में प्रभु-आराधना गुरबाणी-कीर्तन केवल संगीत-यंत्रों को बजाकर और मधुर स्वर में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पदों का गायन करके की जाती है। इस दौरान किसी भी प्रकार के प्रचार अथवा तर्क-वितर्क करने की आज्ञा नहीं दी गई। श्री गुरु अरजन देव जी वाले श्री आदि

ग्रंथ साहिब की मूल प्रति जलंधर (पंजाब) के समीप करतारपुर नामक नगर के गुरुद्वारा साहिब में विद्यमान है। (Vol. I, page 140)

मुगल सम्राट अकबर का श्रद्धा-भाव : मुगल बादशाह अकबर के समय में बटाला के मुसलमान फकीरों और हिंदू सन्यासियों में झगड़ा हो गया। फलत: मुसलमान फकीरों ने हिंदुओं के आस-पास के मंदिर ढहा दिए। बादशाह अकबर उन दिनों लाहौर से लौट रहा था। उसने बटाला पहुंचकर दोषी मुस्लिम फकीरों को कैद में डलवा दिया और हिंदुओं के ध्वस्त मंदिरों के पुनर्निर्माण का आदेश जारी कर दिया। वहां से चलकर वह श्री गुरु अरजन देव जी के डेरे में पहुंचा, जो कि ईश्वरीय प्रेम के लिए विख्यात था। बादशाह अकबर गुरु साहिब से मिलकर और उनके मुख से श्री गुरु नानक देव जी के पदों का मधुर गायन सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। गुरु साहिब ने भी उसे सम्मानार्थ उपर्युक्त सौगात भेंट की। गुरु साहिब ने बादशाह को बताया कि पंजाब में (मुगलों की) शाही सेना की रिहायश के दौरान अनाज की कीमतें बढ़ जाने से परगनों की मालगुजारी में वृद्धि हो जाती है, अत: वहां की जनता के लिए भारी राजस्व चुकाना मुश्किल हो जाता है। गुरु साहिब के इस कथन पर बादशाह अकबर ने मुख्य दीवान को बुलाकर लगान लगभग १६ फीसदी कम कर दिया और उसे हिदायत की कि उसने जो छूट दी है वही बरकरार रहे और उसके अतिरिक्त कुछ न मांगा जाए। इसके फलस्वरूप गुरु साहिब की प्रतिष्ठा और भी बढ़ गई। फलत: माझा क्षेत्र के बहुत-से ग्रामीण व्यापारी-किसान सिक्ख बन गए। अकबर के प्रधानमंत्री और दरबार के इतिहासकार अबुज फ़ज़ल ने 'अकबरनामा' में गुरु साहिब से मुगल सम्राट की भेंट की तारीख २४ नवंबर, १५९८ दी है। (Vol. I, page 134)

सन् १६०५ में बादशाह अकबर पंजाब के दौरे पर आया तो सिक्ख-विरोधी किसी धर्मांध व्यक्ति ने उसके पास शिकायत की कि श्री आदि ग्रंथ साहिब में इसलाम धर्म संबंधी कुछ निंदामूलक पद संकलित हैं। बादशाह ने गुरु साहिब के पास संदेश भेजा कि वे श्री आदि ग्रंथ साहिब की प्रति उसके पास भिजवाएं। गुरु साहिब ने भाई गुरदास जी और बाबा बुड्ढा जी के संरक्षण में उसे भिजवा दिया। भाई गुरदास जी ने बादशाह को समझाया कि श्री आदि ग्रंथ साहिब में इसलाम धर्म के विरुद्ध एक भी शब्द नहीं है, बल्कि इसमें तो मुस्लिम संतों के पद भी संकलित हैं। अकबर ने सरसरी निगाह से श्री आदि ग्रंथ साहिब के पन्ने पलटे। उस समय कई काजी और पंडित भी उपस्थित थे। पहली बार खोलने पर ही बादशाह को जो पद नजर आया, उसका भाव यह था: "हम सब परम पिता परमात्मा के बालक हैं।" बादशाह ने दूसरी बार पन्ने पलटे तो उसे यह पद नजर आया: "परमात्मा सब जीवों में व्याप्त है और सारी सृष्टि उसमें विद्यमान है। जब भगवान के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है तो दोष किसे देना चाहिए?" इसी तरह अन्य पन्नों पर भगवद्-प्रशंसा के पद थे।

गुरबाणी की इन पंक्तियों से संतुष्ट और प्रभावित होकर बादशाह ने श्री आदि ग्रंथ साहिब को सोने की ५१ मोहरें भेंट कीं। यही नहीं, उसने श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री आदि ग्रंथ साहिब की प्रति के दोनों संरक्षकों--भाई गुरदास जी तथा बाबा बुड्ढा जी को सम्मान-सूचक वस्त्र भेंट किए और उनके हाथ गुरु साहिब के लिए भी भिजवाए।

गुरु साहिब की शहादत : श्री गुरु अरजन देव जी के आत्म-बलिदान के पीछे डॉ. हरीराम गुप्ता

ने पांच विरोधियों का हाथ बताया है। उनमें से पहला था उनका बड़ा भाई प्रिथीचंद; जो गुरगद्दी से वंचित हो जाने के कारण अपने छोटे भाई श्री गुरु अरजन देव जी से ईर्ष्या करता था। प्रिथीचंद और उसका बेटा मेहरबान स्वरचित पदों को श्री गुरु नानक देव जी की कृतियां कहकर स्वार्थ हेतु कूड़-प्रचार कर रहे थे। मेहरबान ने तो अपने चाचा श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी "सुखमनी साहिब" के समानांतर "सुखमनी (सहस्रनामा)" ग्रंथ भी लिख डाला था। दूसरा था, बटाला का मुगल अधिकारी सुलही खां। तीसरा था, चंदू शाह; जो कि लाहौर का निवासी था और दिल्ली के वित्त मंत्रालय में एक महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त था। वह अपनी बेटी का विवाह गुरु साहिब के पुत्र श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब (जो बाद में छठे गुरु बने) के साथ करने को आतुर था। गुरु साहिब ने उसकी लाखों रुपए की भेंट के बावजूद यह रिश्ता ठुकरा दिया।

धार्मिक विरोधी : गुरु साहिब का तीसरा कट्टर विरोधी था शेख अहमद फारूकी सरहिंदी (सन् १५६३-१६२५)। वह अपने आप को 'क्यूम' कहलाता था, जिसका अर्थ है 'उप-खुदा'। इसके अतिरिक्त उसने अपना खिताब 'मजद्दीद-अलिफ शानी' रख लिया था, जिसका अर्थ है दूसरे सहस्राबद में सृष्टि का नियंत्रणकर्त्ता। सिक्ख गुरु साहिबान को उनके फारसी-अरबी भाषाओं के ज्ञाता शिष्य 'इंसान-उल-कामिल' पुकारा करते थे। शेख हमेशा यही कहा करता था कि 'क्यूम' सिक्ख गुरु साहिबान से उच्च पदवी है, किंतु श्री गुरु अरजन देव जी ने उसके कथन को स्वीकार न किया। वह गुरु साहिब की लोकप्रियता और शक्ति से ईर्ष्या करता था। उसने ऐलान कर दिया कि श्री गुरु अरजन देव जी 'कुलाह-ए-शरीक' और 'इमाम-ए-कुफर' (नास्तिकों के गुरु) हैं।

शेख अहमद फारूकी तथा उसके समकालीन मुल्ला लोग बादशाह अकबर की उदार नीतियों से चिढ़े हुए थे। अकबर के राज-सिंहासन का अपने को दावेदार समझने वाला अमीर खुसरो भी अपने दादा की तरह श्री गुरु अरजन देव जी के दर्शनों के लिए आया था। इन सभी कारणों से उन्होंने जहांगीर बादशाह को भड़काया, जिस पर उसने अपने लाहौर के निवास के दौरान श्री गुरु अरजन देव जी को वहां पर बुलाया। यद्यपि गुरु साहिब जानते थे कि चारों ओर से मुगल सेना से घिरे होने के कारण वे असुरक्षित हैं, फिर भी वे निडरतापूर्वक लाहौर पहुंचे और शहजादा खुसरो की सहायता संबंधी जहांगीर के भ्रामक प्रश्नों का धड़ल्ले से उत्तर दिया।

राजलोलुप जहांगीर ने अपने पिता अकबर बादशाह को ही कैद में डाल दिया था और अकबर के महान समर्थक प्रधानमंत्री अबुल फजल को मरवा डाला था। भला गुरु साहिब के इस पांचवें विरोधी को उनके प्रति क्या दया होती! अतः उसने गुरु साहिब को दो लाख रुपए दंड-राशि भरने और श्री आदि ग्रंथ साहिब में विद्यमान कुछ पदों को निकालने का आदेश दे दिया। यद्यपि लाहौर के सिक्खों ने चंदा इकट्ठा करके जुर्माना भरने का मन बना लिया, किन्तु गुरु साहिब ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया और गुरबाणी की तुकें हटाने के बारे में जहांगीर को साफ तौर पर मना कर दिया। तद्नंतर जहांगीर ने गुरु साहिब को कठोरतम यातनाएं दीं, जिनके कारण वे परलोक सिधारे। इसका वर्णन लेखक ने इस प्रकार किया है:

"गुरु (साहिब) को लाहौर के किले में कैद कर लिया गया। मई-जून वहां पर बहुत गर्म महीने होते हैं। उन्हें जंजीरों में जकड़ कर एक ऐसे खंभे से बांधा गया जिस पर सुबह से शाम तक धूप चमकती रहती थी। गुरु साहिब के नंगे पैरों के तले गर्म रेत डाली जाती थी, जो धूप की तपिश के कारण सारा दिन गर्म बनी रहती थी और भट्टी की तरह जलती रहती थी। थोड़ी-थोड़ी देर के बाद उनके नग्न शरीर पर खौलता हुआ पानी डाला जाता था। इसके फलस्वरूप उनका शरीर छालों से भर गया। दुखद स्वर में भी गुरु साहिब यही कहते रहे :

तेरा कीआ मीठा लागै ॥
हरि नामु पदारथु नानकु मांगै ॥ (पन्ना ३९४)

गुरु साहिब गर्मी भरे मौसम में यातनाओं के कारण मूर्छित होने लगे। राजनैतिक कैदियों को पशुओं की ताजा खाल में सीने का रिवाज उन दिनों आम तौर पर प्रचलित था। एक महीने पहले ही खुसरो के दो हिमायतियों के साथ ऐसा ही व्यवहार हुआ था। हुसैन बेग को बैल की ताजा खाल में और अब्दुल रहीम को एक गधे की कच्ची चमड़ी में सिलवाया गया था। वही दंड गुरु साहिब के लिए निर्धारित किया गया। इस प्रकार अनेक यातनाएं सहते हुए गुरु जी ३० मई, सन् १६०६ को शहीदी प्राप्त कर गए।

कविता

सच्चाई पर रखो भरोसा

**श्री प्रशांत अग्रवाल*

जग हंसता है हंसने दो!
जो कहता है कहने दो!
सच्चाई पर रखो भरोसा,
कदम कभी न डिगने दो!
आना-जाना लगा रहेगा।
खोना-पाना लगा रहेगा।
सत्यमार्ग है चिरस्थायी,
सदा रहा है, सदा रहेगा।
दुनिया देगी तर्क सुहाने।
मन लायेगा कई बहाने।
मत फंसना झूठे झांसों में,
तुमको ऊंचे लक्ष्य हैं पाने।
तन की भूख मिटाते हो।
मन की प्यास बुझाते हो।
भूखी-प्यासी रहे आत्मा,
क्यों न उसको ध्याते हो?
वक्त कीमती बहुत गंवाया।
यहीं रहेगा जो भी पाया।
कुछ तो ऐसा करके जाओ,
रहे साथ में ठंडी छाया।
दुर्गुण बाहर करते रहना।
सद्गुण अंदर भरते रहना।
सार भरा इन दो बातों में,
सदा इन्हीं पर चलते रहना।

**४० बजरिया मोतीलाल, बरेली (उ. प्र.)*

"सिक्ख रिलीजन" कृत मैकालिफ में श्री गुरु अरजन देव जी का जीवन-वृत्तांत

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

गुरमति एवं सिक्ख इतिहास के सूक्ष्म एवं गंभीर अध्येता मैक्म आर्थर मैकालिफ ने अपने महान ग्रंथ "सिक्ख रिलीजन" के तीसरे भाग में पंचम पातशाह साहिब श्री गुरु अरजन देव जी का जीवन-वृत्तांत एवं उनकी चयनित बाणी को प्रस्तुत किया है।

जन्म, बाल्यावस्था एवं अनंद कारज : मैकालिफ ने श्री गुरु अरजन देव जी के प्रारंभिक जीवन का विवरण श्री गुरु रामदास जी के जीवन-वृत्तांत के अंतर्गत दिया है। मैकालिफ के अनुसार पंचम पातशाह ने चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी एवं बीबी भानी जी के वैसाख वदी सप्तमी, दिन मंगलवार संवत् १६२० वि. अनुसार सन् १५६३ ई. को गोइंदवाल साहिब में जन्म लिया।

इसके बाद मैकालिफ ने पंचम पातशाह के बालपन की बड़ी साखी का वर्णन किया है। तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी अपने दोहते (नाती) श्री गुरु अरजन देव जी से बहुत लगाव रखते थे। एक दिन श्री गुरु अमरदास जी पलंग पर लेटकर विश्राम कर रहे थे। बाल (गुरु) अरजन देव जी कमरे के अंदर गये और पलंग को हिला कर गुरु जी को जगा दिया। बीबी भानी जी बाल द्वारा ऐसा करने पर बाल के साथ नाराज हुए तो तीसरे पातशाह ने फरमाया कि इसे यहीं रहने दो. . मेरा यह "दोहता-बाणी का बोहिथा" होगा अर्थात् यह बाणी का जहाज होगा जो मनुष्यों को संसार-सागर से पार उतारेगा।

बड़े होने पर श्री (गुरु) अरजन देव जी का अनंद कारज मऊ गांव के वासी क्रिशन चंद की सपुत्री गंगा जी से हुआ।

गुरगद्दी-प्राप्ति : श्री (गुरु) अरजन देव जी गुरु-पिता श्री गुरु रामदास जी के प्रति पूर्ण समर्पित एवं उनके आज्ञाकारी पुत्र थे। मैकालिफ ने श्री गुरु रामदास जी के जीवन-वृत्तांत में एक प्रसंग का वर्णन किया है। चौथे पातशाह के ताऊ के पुत्र सहारी मल के पुत्र का विवाह था। गुरु जी ने पहले प्रिथीए और फिर महादेव को विवाह हेतु लाहौर जाने की आज्ञा दी, परंतु दोनों बहाने लगा कर टाल गये। चौथे पातशाह ने श्री (गुरु) अरजन देव जी को कहा तो वे तुरंत पिता की आज्ञा सिर-माथे धारण करके लाहौर चले गये। लम्बे समय तक लाहौर में रहकर श्री (गुरु) अरजन देव जी गुरु-पिता के वियोग में तड़पने लगे, परंतु गुरु-आज्ञा के बिना वे वापस भी नहीं आ सकते थे। गुरु-पिता से वापसी की आज्ञा लेने के लिए (गुरु) अरजन देव जी ने बार-बार पत्र लिखे। इधर प्रिथीआ नहीं चाहता था कि वे वापस आयें। सो, वह पत्रों को चौथे पातशाह तक पहुंचने ही नहीं देता था। अंततः गुरु जी को प्रिथीए की मक्कारी का पता चला तो उन्होंने तुरंत श्री (गुरु) अरजन देव जी को बुलावा भेजा।

गुरु चौथे पातशाह जी ने सभी प्रकार से योग्य जानकर सबसे छोटे पुत्र श्री (गुरु)

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना)-१४११०१, मो: ०९४१७२-७६२७१

अरजन देव जी को गुरगद्दी सौंप दी।

प्रिथिए का विरोध : श्री गुरु अरजन देव जी को गुरगद्दी मिल जाने पर प्रिथिए के गुस्से का ठिकाना न रहा। उसने गुरु-पिता को अपशब्द कहे। चौथे पातशाह ने प्रिथिए की दुष्टता से आहत होकर कहा कि "तू 'मीणा' है, मेरे सिक्ख तुझसे कोई मेल-मिलाप नहीं रखेंगे।"

चौथे पातशाह ने ज्योति-जोत समाने के बाद बाबा (मामा) मोहरी जी ने पिता की गद्दी का वारिस जानकर पुरातन रीति के अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी को 'पगड़ी' दी तो प्रिथिया उनसे झगड़ पड़ा कि बड़ा बेटा मैं हूं . . . पगड़ी मुझे मिलनी चाहिए। गुरु पंचम पातशाह ने विनम्रतापूर्वक पगड़ी प्रिथिए को दे दी।

इसके बाद प्रिथिया लाहौर के मालगुजार सुलही खान के पास जा फरियादी हुआ कि पिता ने सब-कुछ छोटे पुत्र को देकर मेरा हक छीन लिया है। मैं और महादेव बिना गुजारे के हैं। गुरु जी ने जब सुना तो उन्होंने गुरु-घर को होने वाली जागीरों आदि की आय भाइयों को बख्श दी और स्वयं अमृत सरोवर के निर्माण में जुट गये।

अमृत सरोवर की संपूर्णता एवं श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना : गुरु पंचम पातशाह ने बाबा बुड्ढा जी, भाई सालो, भाई भगतू, भाई पैड़ा, भाई बहिलो व भाई कलिआण आदि सिक्खों को शीघ्र से शीघ्र अमृत सरोवर की पूर्णता का कार्य सौंपा। सरोवर में से मिट्टी आदि निकालने का काम श्री गुरु रामदास जी के समय में ही पूरा हो चुका था। किनारों को पक्का करवाने और फर्श बनवाने का काम पंचम पातशाह के हिस्से आया। मैकालिफ लिखता है कि गुरु जी ने सिक्खों को चूना, ईंटें और आवश्यक मसाले का बंदोबस्त करने के लिए कहा। कार्य के बीच में धन की जरूरत पड़ी तो भाई कलिआणा पहाड़ी राज्य मंडी में गये और वहां के राजा को भ्रम-भ्रांतियों से मुक्त करके गुरु का सिक्ख बना दिया।

अमृत सरोवर की पूर्णता के बाद उसमें श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना का कार्य आरंभ हुआ। यहां मैकालिफ ने एक अत्यंत सुंदर प्रसंग का वर्णन किया है जो पंचम पातशाह की अनुपम विनम्रता को दर्शाता है। हुआ यूं कि सिक्खों ने कहा कि श्री हरिमंदर साहिब को सबसे ऊंचा करके बनाना चाहिए, परंतु गुरु जी ने फरमाया कि वृक्ष जितना फलों से लदा होता है उसकी टहनियां उतनी ही धरती की ओर झुकी रहती हैं, इसलिए श्री हरिमंदर साहिब जाने के लिए नीचे उतरना जरूरी है, अत: इसे आठ-दस सीढ़ियां नीचे बनाया जाये।

पहली माघ वि. संवत् १६४५ को पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री हरिमंदर साहिब की पहली ईंट रखी। बहुत बड़ी गिनती में सिक्खों ने आकर श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण में सेवा की। अमृत सरोवर एवं श्री हरिमंदर साहिब की संपूर्णता के पश्चात सिक्खों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। अब तक सरोवर के आस-पास बहुत-सी इमारतें बन चुकी थीं। एक सिक्ख भाई साहलो ने गुरु जी से कहा कि नगर का व्यापार अभी कम है तो गुरु जी ने श्री अमृतसर को एक बड़ा नगर बनने का वर दिया।

प्रिथीए की ईर्ष्या : श्री अमृतसर की उन्नति को देखकर प्रिथीचंद को बड़ी ईर्ष्या हुई। वह किसी न किसी प्रकार से गुरु जी को कष्ट पहुंचाने का प्रयास करता रहा। संघर्ष टालने के उद्देश्य से पंचम पातशाह माझा क्षेत्र के भ्रमण पर निकल पड़े। गुरु जी गोइंदवाल, सरहाली

होते हुए भैणी नामक गांव पहुंचे। गांव के सिक्खों ने गुरु जी को स्वादिष्ट भोजन कराया। गुरु जी ने प्रसन्न होकर फरमाया कि आज से इस गांव का नाम 'चोहला' होगा।

इसके बाद पंचम पातशाह खानपुर पहुंचे। यहां के लोग बड़े दुष्ट थे। सिर्फ एक सिक्ख भाई हेमे ने किसी तरह अपनी झोंपड़ी आदि में ठहरा कर गुरु जी की सेवा की। गुरु जी ने खानपुर से चले जाने के बाद वहां के निवासियों को शीघ्र ही अपनी करनी का फल मिल गया। बादशाह के सूबेदार ने किसी बात पर नाराज होकर खानपुर को उजाड़ दिया।

तरनतारन नगर की स्थापना : भ्रमण करते-करते पंचम पातशाह 'खाहरा' (खारा) नामक गांव में आये। यहां की सुंदर धरती को देखकर गुरु जी बेहद प्रसन्न हुए। गांव के चौधरियों ने बड़े प्रेम से गुरु जी की आवभगत की। गुरु जी ने चौधरियों से भूमि खरीद कर सन् १५९० ई में यहां 'तरनतारन' नगर की नींव रखी और एक विशाल सरोवर का निर्माण आरंभ करवाया। मैकालिफ लिखता है कि पंचम पातशाह ने चूने की भट्ठियां बनवा कर ईंटें पकवाईं, किन्तु यहां का हाकिम दुष्ट नूरदीन जबरन सारी ईंटें उठाकर ले गया और अपनी सराय में लगवा दीं। गुरु जी ने तो उसे क्षमा कर दिया लेकिन बाद में सन् १७७५ ई में सरदार खुशहाल सिंघ फैजलपुरिया और सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ने नूरदीन सराय को ढहा कर उसकी ईंटें तरनतारन के सरोवर को पक्का करने में प्रयोग कीं।

गंगसर एवं करतारपुर की स्थापना : इसके उपरांत पंचम पातशाह जालंधर गये और वहां एक नया नगर करतारपुर बसाने के लिए भूमि खरीदी। नगर वासियों की जल की आवश्यकता पूरी करने के लिए 'गंगसर' नामक कुएं का निर्माण करवाया। मैकालिफ के अनुसार इस कुएं का पहला टक गुरु जी ने स्वयं अपने पवित्र करों से लगाया।

लाहौर में बाउली साहिब का निर्माण : लाहौर के सिक्खों के आग्रह पर श्री गुरु अरजन देव जी फिर लाहौर गये और समानता के प्रतीक के रूप में डब्बी बाजार में 'बाउली' का निर्माण कराया। यहां अनेक भक्त और संत तो गुरु जी के दर्शन करने आये ही, लाहौर का नवाब भी गुरु जी के दर्शन करने आया।

डेरा बाबा नानक में श्रीचंद से भेंट : इसके बाद गुरु जी डेरा बाबा नानक गये जहां बारठ गांव में गुरु जी की भेंट प्रथम पातशाह गुरु नानक साहिब के सपुत्र श्रीचंद से हुई। श्रीचंद अपने पिता की गद्दी के वारिस से मिलकर अत्यंत प्रसन्न हुए। जब उन्हें पता चला कि प्रिथीए के द्वेष के कारण पंचम पातशाह श्री अमृतसर त्याग आये हैं तो श्रीचंद ने प्रिथीए को धिक्कारा और गुरु जी को वापिस श्री अमृतसर जाने की इच्छा प्रकट की। गुरु जी श्रीचंद की अभिलाषा के अनुसार वापिस श्री अमृतसर आ गये।

विभिन्न साखियां : मैकालिफ ने श्री गुरु अरजन देव जी के जीवन-वृत्तांत में अनेक साखियों का वर्णन भी किया है। इनमें भाई मंझ का 'सखी सरवर' को त्याग सिक्ख बनना, मालवे के भाई बहिलो द्वारा ईंटें बनाने की सेवा लेना, बठिंडे के ब्राह्मण सौदागर गंगाराम की श्रद्धा, मंत्री वजीर खान का गुरु जी का श्रद्धालु बनना आदि प्रमुख हैं। इन साखियों में सबसे रोचक साखी 'बीरबल की धृष्टता' है।

बीरबल की धृष्टता : बीरबल बादशाह अकबर के नवरत्नों में से एक था और उसे बड़ा

सियाना समझा जाता था। मैकालिफ लिखता है कि जब बीरबल यूसुफजइयों के विरुद्ध लड़ रहे जैन खान की मदद करने के लिए श्री अमृतसर के निकट से गुजरा तो उसने गुरु जी से जबरन कर वसूलने की कोशिश की। सिक्खों के इंकार करने पर वह आग बबूला हो उठा और उसने सिक्खों पर हमला करने की योजना बनाई, परंतु उसे तुरंत जैन खान की मदद को जाना पड़ा और वहां यूसुफजइयों से लड़ते हुए बीरबल मारा गया और उसे अपनी धृष्टता का फल मिला।

माता गंगा जी को पुत्र-प्राप्ति का वर : मैकालिफ ने इस प्रसंग का बड़े विस्तार के साथ वर्णन किया है। वह लिखता है कि पंचम पातशाह के श्री अमृतसर वापिस आ जाने के बाद ईर्ष्यालु प्रिथिए ने फिर षड़यंत्र रचने शुरू कर दिये। उसकी पत्नी करमो हर समय उसे भड़काती-कोसती रहती कि वह पिता से गुरगद्दी हासिल नहीं कर सका। एक दिन भड़क कर प्रिथिए ने कहा कि "तू फिक्र मत कर। उनके कोई पुत्र नहीं है। कुछ दिन का खेल है। उनके बाद गुरगद्दी हमारे बेटे मिहरबान को ही मिलेगी।"

जब बात माता गंगा जी ने सुनी तो उन्होंने पंचम पातशाह के चरणों में प्रार्थना की। गुरु जी ने उन्हें पुत्र-प्राप्ति के लिए आशीर्वाद लेने के लिए बाबा बुड्ढा जी के पास जाने को कहा। मैकालिफ लिखता है कि माता गंगा जी बड़ी शानो-शौकत के साथ अनेक प्रकार के भोजन, भेंट, उपहार आदि लेकर बाबा बुड्ढा जी के पास गये। बाबा बुड्ढा जी ने बड़ी विनम्रता के साथ माता जी को लौटाते हुए कहा कि "मैं क्या कर सकता हूं? मैं तो गुरु का एक अदना-सा सिक्ख-मात्र हूं।"

जब गुरु जी को यह बात पता चली तो उन्होंने माता गंगा जी को समझाया कि महापुरुष दिखावे से प्रसन्न नहीं होते। आप पूरी विनम्रता के साथ उनके पास जायें।

अगले दिन माता गंगा जी पुन: बाबा बुड्ढा जी के पास गये। साथ में स्वयं पका कर 'मिस्से परसादे' और ऊपर प्याज रखकर बाबा जी के पास ले गये। बाबा बुड्ढा जी ने बड़े प्रेम और सत्कार के साथ परसादा छका और बोले, "गुरु जी स्वयं 'भंडार के मालिक' हैं, परंतु उसे खोलने का आदेश मुझे मिला है। आपके घर आपका मनभावक सुंदर और योद्धा पुत्र जन्म लेगा!"

छेहरटा की रचना : इधर प्रिथिए ने अपने दोस्त सुलही खान को श्री अमृतसर लूटने की दावत दी। गुरु जी बड़े भाई के द्वेष से ग्रस्त हो शहर से छह मील दूर वडाली गांव में जा बिराजे। जब गुरु जी को पता चला कि यहां पानी की किल्लत है तो वहां एक बड़ा कुआं खुदवाया और उस पर छ: हरटें लगवाईं। बाद में इस स्थान का नाम ही 'छेहरटा' प्रसिद्ध हो गया।

श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब का जन्म और प्रिथिए के षड़यंत्र : आषाढ़ महीने की २१ तारीख, संवत् १६५२ वि. मुताबिक सन् १५९५ ई. को वडाली में माता गंगा जी की कोख से श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब का जन्म हुआ।

यह सुनकर प्रिथिए और करमो की ईर्ष्या का अंत न रहा। उन्होंने श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब को मारने के षड़यंत्र रचने शुरू कर दिये। पहले एक कपटी दाई के द्वारा श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब को जहर देने का प्रयास किया गया। फिर एक सपेरे को भेजकर सांप से डंसवाने की कोशिश की गई, अनेक जादू-टोने

किये गये, परंतु सारे षड़यंत्र असफल हो गये। इसके बाद प्रिथीआ सुलही खान की मदद से अकबर बादशाह के दरबार में जा फरियादी हुआ, परंतु अकबर ने उसकी एक न सुनी। उसने कहा, यह झूठा है। गुरु जी बड़े धार्मिक व्यक्ति हैं। इस असफलता से प्रिथीआ बीमार पड़ गया।

इधर पंचम पातशाह ने अपने बड़े भाई महादेव के पास श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब की शिक्षा का प्रबंध कर दिया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना : इसके पश्चात गुरु जी ने निर्णय लिया कि मानवता का मार्गदर्शन करने के लिए समस्त गुरु साहिबान एवं अन्य महापुरुषों की बाणी को एक 'ग्रंथ' में एकत्र किया जाये। इस संदर्भ में मैकालिफ ने उस प्रचलित विचार का जिक्र किया है जिसके अंतर्गत माना जाता है कि पंचम पातशाह बाणी की 'सैंचियां' (पोथियां) बाबा मोहन से लेकर आये थे।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की रचना के लिए पंचम पातशाह ने एक बहुत ही सुंदर एवं एकांत स्थान 'रामसर' चुना, जहां विराजमान होकर गुरु जी ने भाई गुरदास जी से बीड़ तैयार करवाई। मैकालिफ ने इस स्थान पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बाणी की तरतीब एवं रागमाला का वर्णन भी किया है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपूर्णता के पश्चात् प्रथम बीड़ का श्री हरिमंदर साहिब में प्रकाश किया गया। बाबा बुड्ढा जी पहले ग्रंथी नियुक्त हुए। मैकालिफ लिखता है कि जब बाबा जी ने पहला वाक् लिया तो वह निकला *: "संता के कारजि आपि खलोइआ . . . ॥"*

इसके बाद मैकालिफ ने भाई बंनो, भाई माधो, भाई तिलोका, भाई चूहड़, भाई कटारू, भाई लालू, भाई बालू, भाई हरिदास, भाई नानू, भाई कालू, भाई पैड़ा और भाई जेठा जी की साखियां देकर गुरु साहिब के महान आध्यात्मिक व्यक्तित्व की सुंदर झलकियां पेश की हैं।

चंदू का प्रसंग व श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब का अनंद कारज : मैकालिफ ने इस प्रसंग का वर्णन बड़े विस्तार से किया है। चंदू मुगल बादशाह का दीवान था। उसकी एक बेटी थी--सदा कौर। लंबे समय तक चंदू के पुरोहित ने कन्या के लिए वर ढूंढने का प्रयास किया, परंतु अहंकारी चंदू ने किसी रिश्ते को स्वीकार न किया। अंततः पुरोहित पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के सपुत्र श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के विषय में चंदू से बात करने पहुंचा। चंदू ने इस संबंध को भी नहीं माना और गुरु साहिब तथा गुरु-परिवार के बारे में बड़े अपशब्द कहे, परंतु पत्नी की जिद के कारण चंदू रिश्ते का शगुन भेजने को तैयार हो गया।

उधर सिक्खों को जब चंदू द्वारा गुरु-घर के प्रति बोले गये अपशब्दों का पता चला तो उन्होंने गुरु जी को चंदू की दुष्टता और अहंकार से अवगत कराया। गुरु जी ने चंदू से रिश्ता तोड़ कर माघ सुदी सप्तमी संवत् १६६१ वि. को श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब का अनंद कारज एक सिक्ख नारायणदास की कन्या से कर दिया।

इससे चंदू बहुत गुस्से में आ गया। उसने गुरु जी को अपनी अमीरी का रौब दिखाना चाहा तो गुरु जी ने उसे पूरी तरह से खारिज कर दिया।

चंदू-प्रिथिए-मिहरबान का गठजोड़ और अकबर को शिकायत : अब चंदू, प्रिथिए और मिहरबान ने गुरु जी के विरुद्ध एक गुट बना लिया और पंडितों-काजियों को भड़काया कि वे बादशाह के पास जाकर शिकायत करें कि श्री गुरु अरजन देव जी ने एक ऐसा 'ग्रंथ' बनाया है जिसमें हिंदू

और मुसलमानों के धर्म की निंदा की गई है। बादशाह अकबर उन दिनों पंजाब में आया हुआ था। शिकायत की गई तो बादशाह अकबर ने श्री गुरु अरजन देव जी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब लेकर आने का बुलावा भेजा। बाबा बुड्ढा जी एवं भाई गुरदास जी बादशाह के दरबार में गये और उसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब पढ़ कर सुनाया। बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने शिकायत करने वालों की एक न सुनी। अकबर ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को माथा टेका और सोने की ५१ मुहरें चढ़ाईं।

जहांगीर की गद्दीनशीनी और खुसरो को सहायता : अकबर की मौत के बाद जहांगीर बादशाह बना। जहांगीर का बेटा खुसरो विद्रोही हो गया। अफगानिस्तान जाते हुए खुसरो गुरु जी के पास आया और सहायता के लिए प्रार्थना की। मैकालिफ लिखता है कि गुरु जी ने खुसरो को दीन-हीन शरण में आया जान पांच हजार रुपये की सहायता दी।

चंदू-मिहरबान द्वारा गुरु जी के विरुद्ध शिकायतें : मौके की ताड़ में बैठे चंदू-मिहरबान ने जहांगीर से गुरु जी के विरुद्ध शिकायतें कीं। जहांगीर उनकी बातों में आ गया और उसने पुराने आरोपों को फिर से खोलकर गुरु जी को गिरफ्तार करके लाहौर लाने का हुक्म दिया।

श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब को गुरगद्दी : गुरु जी को भविष्य का पता था, इसलिए उन्होंने परंपरा के अनुसार श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब को गुरगद्दी सौंपी और भाई बिधीचंद, भाई लंगाह, भाई पैड़ा, भाई जेठा और भाई पिराणा के साथ लाहौर आ गये।

पंचम पातशाह की शहादत : मैकालिफ ने गुरु जी की शहादत का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। वह लिखता है कि जहांगीर ने गुरु जी पर खुसरो की सहायता करने का आरोप लगाया और श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कुछ बदलाव करने के लिए कहा। गुरु जी ने शरण में आये खुसरो को मानवीय सहायता देना स्वीकारा और श्री गुरु ग्रंथ साहिब में किसी भी तरह का परिवर्तन करने से इंकार कर दिया।

इसके बाद गुरु जी को जुर्माना भरने को कहा गया। लाहौर के सिक्ख जुर्माने की रकम देने को तैयार भी हो गये परंतु गुरु जी ने जुर्माना देने से मना कर दिया।

चंदू आदि वैरियों को लगा कि गुरु जी ऐसे नहीं मानेंगे, अत: उन्होंने गुरु जी को यातनाएं देनी शुरू कर दीं। गुरु जी पर गर्म रेत डाली गई, गर्म देग में उबाला गया, गर्म तवी पर बैठाया गया, परंतु पातशाह अडोल रहकर सारे कष्ट झेलते रहे।

गुरु जी की दशा देखकर उनके परम मित्र साईं मियां मीर जी को बड़ा आघात लगा। वे गुरु जी को बचाना चाहते थे, लेकिन गुरु जी ने उन्हें अकाल पुरख का 'भाणा' मानने को कहा।

इसके बाद गुरु जी को फिर यातनाएं दी गईं। चंदू उन्हें पांच दिन तक यातनाएं देता रहा। छठे दिन पंचम पातशाह ने रावी में स्नान करने की इच्छा जताई। गुरु जी और साथी सिक्खों को सख्त पहरे में रावी नदी पर भेजा गया।

मैकालिफ लिखता है कि गुरु जी ने रावी में स्नान किया, सिक्खों को अंतिम उपदेश दिया और जेठ सुदी चौथ संवत् १६६३ वि. मुताबिक जून १६०६ ई. को ज्योति-जोत समा गये।

इस प्रकार मैकालिफ ने बड़े ही विस्तृत तथा सुंदर ढंग से पंचम पातशाह के जीवन-वृत्तांत का वर्णन किया है।



"हिस्टरी ऑफ दि सिक्खस" कृत कनिंघम में श्री गुरु अरजन देव जी का जीवन-वृत्तांत

*-प्रो सुरिंदर कौर**

सिक्ख इतिहास अपने सृजन-काल से ही समय की प्रवाहित धारा को प्रभावित और परिवर्तित करता रहा है। यह सत्य है कि सिक्खों ने जितना इतिहास बनाया उतना लिखा नहीं या लिख नहीं पाए, परंतु यह भी सत्य है कि इस इतिहास ने विश्व को इतना आकर्षित किया कि बड़े से बड़े विद्वान और इतिहासकार इसे कलमबद्ध करने को विवश हो गए। सिक्खों के अतिरिक्त मुसलमान, अंग्रेज व भारतीय विद्वानों, इतिहासकारों, दरबारी व सरकारी अधिकारियों, साहित्यकारों, दार्शनिकों और धर्मवित्ताओं ने भी सिक्ख इतिहास को लिखा, जिनमें से कुछेक मुसलमान कातिब व अंग्रेज अफसरों ने इस इतिहास को उसी काल में लिखा जब यह घटित हो रहा था। अत: ऐसे दस्तावेजों का ऐतिहासिक महत्व सहज ही अधिक है। गुरु साहिबान के विशेषांकों की इस लड़ी में उनके समकालीन और परवर्ती सभी लेखकों का अध्ययन किया जा रहा है जिनमें से अंग्रेज इतिहासकारों को भी उचित स्थान दिया गया है। इन्हीं अंग्रेज इतिहासकारों में जो नाम सबसे अग्रणी है, सबसे महत्वपूर्ण है, वो है कनिंघम का। अत: कनिंघम द्वारा सिक्ख इतिहास में वर्णित तथ्यों के आधार पर इस लेख में श्री गुरु अरजन देव जी के जीवन को अंकित करने का प्रयास किया जा रहा है, परंतु इससे पहले संक्षेप में कनिंघम के जीवन और लिखित इतिहास का परिचय भी आवश्यक है क्योंकि इसके बिना किसी भी लेखक का दृष्टिकोण पूरी तरह समझना कठिन है।

कनिंघम का परिचय : इनका पूरा नाम है 'जोसेफ डेवी कनिंघम'। इनका जन्म सन् १८१२ में इंगलैड के प्रसिद्ध कवि ऐलन कनिंघम के घर हुआ था। बचपन से एक मेधावी छात्र होने के नाते सभी चाहते थे कि वे कैंब्रिज में उच्च शिक्षा प्राप्त करें पर उन्होंने देश-सेवा के लिए सेना में भर्ती होना ज्यादा अच्छा समझा। सन् १८३४ में २२ वर्ष की आयु में वे बंगाल प्रांत में मुख्य इंजीनियर के पद पर नियुक्त होकर भारत आए। सन् १८३७ में २५ वर्ष की आयु में उनकी पदोन्नति होकर वे कर्नल के सलाहकार के रूप में चुने गए जिनका काम सिक्खों के विरुद्ध चल रही अंग्रेजी मुहिम में कर्नल के साथ रहना था। यहीं से पहली बार कनिंघम सिक्खों के संपर्क में आए। वे एक कर्मठ, ईमानदार व सच्चे व्यक्ति थे। उन्होंने अपने काम को आम अफसरों की भांति सतही तौर पर नहीं किया। उन्होंने जी-जान से सिक्खों के वर्तमान, उनके इतिहास, गुरु साहिबान का जीवन और संघर्ष, सिक्खों की अनथक शहादतों और संघर्ष का गहराई से अध्ययन किया जिसके लिए उन्होंने श्री आदि ग्रंथ साहिब, दबिस्ताने-मजाहिब, मलकम के स्फुट लेखों, फॉरेस्टर के सफरनामों जैसे कई महत्वपूर्ण स्रोत-ग्रंथों का अध्ययन किया। सन् १८४५ में पहले सिक्ख-अंग्रेज संग्राम (First Anglo Sikh War) तक उन्होंने कई ऊंचे ओहदों पर काम किया पर साथ ही अपने ऐतिहासिक

**R No. 2, Banta Singh Chawl, Opp. Manish Park, Jija Mata Marg, Pump House, Andheri (E), Mumbai-400093, Mob. 8097310773*

अध्ययन को भी जारी रखा। वे महाराजा रणजीत सिंघ के समकालीन थे। वे कई ऐतिहासिक सिक्ख जरनैलों से मिले थे और उन्होंने पहले सिक्ख-अंग्रेज युद्ध को अपनी आंखों से देखा था जिसकी विस्तृत रिपोर्ट उन्होंने अपनी पुस्तक में दी है। इस युद्ध में उन्होंने निष्पक्ष आलोचना लिखी जिसका सार इस प्रकार था। यह युद्ध लार्ड हार्डिंग व डलहाउजी की पक्षपाती नीतियों का परिणाम था। साथ ही उन्होंने अंग्रेजों की जीत को दो कारणों से संभव बताया, एक था भौगोलिक व आर्थिक, दूसरा था अंग्रेजों द्वारा प्रलोभन के कारण कई डोगरे व अन्य जरनैलों की गद्दारी। साथ ही उन्होंने न केवल सिक्खों द्वारा युद्ध को हारने के बावजूद उनकी सराहना की वरन् सिक्ख जजबे और युद्ध-नीति को अंग्रेज-नीति से उच्च माना।

उनकी पुस्तक "हिस्टरी ऑफ दि सिक्खस" सन् १८४९ में लंदन में प्रकाशित हुई। उनकी सत्यवादिता अंग्रेज अफसरों को नागवार गुजरी। परिणामस्वरूप उन्हें उनके राजनैतिक और सैनिक ओहदे से हटा दिया गया। कनिंघम को इस सच्चाई के बदले मिले इस क्रूर परिणाम का बहुत गहरा आघात लगा और सन् १८५१ में मात्र ३९ वर्ष की आयु में नागरिक सेवा में कार्यरत रहते हुए उन्होंने अंबाला में प्राण त्याग दिए। कनिंघम पहले यूरोपीयन हैं जिन्होंने सिक्ख इतिहास को विधिवत् और क्रमवार लिपिबद्ध किया, जिसका अनुसरण उनके परवर्ती लेखकों ने कालांतर में किया।

पुस्तक "हिस्टरी ऑफ दि सिक्खस" : यह पुस्तक सन् १८४९ में प्रकाशित हुई जो कनिंघम की त्रासदी का कारण बनी। यह कुल ४०० पन्नों की पुस्तक है। भाषा मध्यकालीन अंग्रेजी है। इस पुस्तक का मुख्य भाग महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य संभालने से लेकर १८४५ में सिक्ख-अंग्रेज युद्ध तक की प्रत्येक घटना का वर्णन है। एक प्रकार से यह सरकारी दस्तावेज ही है, परंतु कनिंघम ने निष्पक्ष होकर सिक्खों के सही परिचय के रूप में आरंभ से सिक्ख इतिहास की घटनाओं को प्रस्तुत किया है। इस परिचय के कारण ही १८४५ के युद्ध में सिक्खों की भूमिका यूरोपीय जगत के लिए स्पष्ट हो सकी। जिन घटनाओं के कनिंघम स्वयं साक्षी रहे हैं उन्हें लिखते समय कोई दो राय नहीं है कि उन्होंने सच ही दर्ज किया, परंतु पूर्वकालीन इतिहास को भी उन्होंने पूरी सच्चाई से लिखने का प्रयास किया है।

हो सकता है कि उनके द्वारा लिखे गए इतिहास के कुछ तथ्य आज के प्रमाणित इतिहास की कसौटी पर खरे न उतरें। इसका कारण एक तो यह है कि जिस समय उन्होंने इतिहास लिखा उस समय स्वयं सिक्ख पिछली दो शताब्दियों के संघर्ष और अत्याचार को झेल रहे थे। अत: सिक्खों द्वारा लिखित कोई ऐतिहासिक स्रोत-ग्रंथ मौजूद नहीं थे। फिर मुगल दरबारियों के दस्तावेजों और अंग्रेज अफसरों के यात्रा-वृत्तांत सिक्खों के दृष्टिकोण से नहीं लिखे गए थे। ऐसे में कनिंघम का प्रयास अति प्रशंसनीय है कि उन्होंने परस्पर विरोधी-स्रोतों से एक हंस की भांति सही सिक्ख इतिहास को अलग कर संजोया। हां, कुछ हद तक उन्होंने उस समय की प्रचलित लोक-कथाओं और जनश्रुतियों का आधार भी लिया है। यदि उनके द्वारा लिखित इतिहास में कहीं कोई त्रुटि रह गई है तो वह अपर्याप्त साधन और सामग्री के कारण है, उनकी नियत पर किसी प्रकार से संदेह या भ्रम उत्पन्न नहीं होना चाहिए। जिस व्यक्ति ने सिक्ख इतिहास की सच्चाई के लिए अपनी

प्रतिष्ठित नौकरी और अपनी जान तक दांव पर लगा दी हो उसकी दृष्टि गलत नहीं हो सकती। उन्होंने न केवल सिक्ख धर्म को एक शक्तिशाली स्वतंत्र धर्म माना वरन् इस देश और देशवासियों के लिए सिक्खों के नि:स्वार्थ बलिदान का भी सही आंकलन किया। यह कनिंघम के ही अनथक प्रयास का परिणाम है कि पाश्चात्य जगत पहली बार सिक्खों की महानता के रूबरू हो सका।

उन्होंने गुरु नानक साहिब के पूर्व काल से इतिहास को आरंभ कर गुरु साहिबान के जीवन और उनके द्वारा सिक्ख धर्म के विकास को बड़ी सूक्ष्मता से वर्णित किया है, अत: इस लेख में कनिंघम द्वारा लिखित सिक्ख इतिहास के आधार पर श्री गुरु अरजन देव जी के महान व्यक्तित्व को उभारने का प्रयास किया जा रहा है।

कनिंघम ने अपने इतिहास का केंद्र गुरु साहिब के व्यक्तिगत जीवन को न बनाकर सिक्ख धर्म की स्थापना और विकास में उनके योगदान का क्रमवार अंकन किया है, इसलिए श्री गुरु अरजन देव जी के जन्म व बचपन पर कुछ न कहकर वे उनका उल्लेख गुरुतागद्दी मिलने के समय से आरंभ करते हैं। आगे का विवरण कनिंघम के इतिहास के आधार पर है:-

श्री गुरु अरजन देव जी का जीवन व व्यक्तित्व : सन् १५८१ में अपने पिता श्री गुरु रामदास जी के ज्योति-जोत समा जाने पर श्री गुरु अरजन देव जी उनकी आज्ञानुसार गुरुतागद्दी पर विराजमान हुए। उन्होंने गुरु नानक साहिब के महान सिद्धांतों को बहुत गहराई से समझा था और यह जान लिया था कि ये सिद्धांत जीवन के प्रत्येक अंग और समाज के हर घटक के लिए उपयोगी हैं। इनके प्रचार और प्रसार को उन्होंने अपना सबसे पहला कर्त्तव्य बनाया। गुरु साहिब ने श्री अमृतसर को सिक्ख-गतिविधियों का केंद्र बनाया और अमृत सरोवर के बीच श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण करवाकर इसे सदा के लिए सिक्ख-आध्यात्म के केंद्र के रूप में स्थापित किया। यह नगर धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक नगर के रूप में विख्यात होने लगा। यहां भौतिक और आध्यात्मिक दोनों धाराओं का संगम स्पष्ट दिखाई देता है। यह स्थान बहुत ही जल्द एक प्रसिद्ध सिक्ख तीर्थ-स्थान बन गया। लोग दूर-दूर से यहां गुरु साहिब के दर्शन करने आते और नगर की समृद्धि देखकर विस्मृत हो जाते एवं धीरे-धीरे सिक्खी की मुख्य धारा से जुड़ते जाते। ऐसा जान पड़ता कि सिक्ख लगातार श्री अमृतसर आते रहते थे, परंतु गुरु साहिब कुछ काल तक तरनतारन शहर में भी रहा करते थे जो ब्यास और सतलुज नदी के बीच स्थित है। इन दोनों नगरों से समाज-सुधार के कार्य चलते रहे। इसके बाद श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने पास संग्रहित समस्त बाणी को संपादित कर 'ग्रंथ' का आकार दिया। इसमें उन्होंने अपने पूर्ववर्ती गुरु साहिबान और श्री गुरु नानक साहिब द्वारा इकट्ठी की गई अन्य महापुरुषों की बाणी के साथ स्वयं अपनी, भाई सत्ता जी और भाई बलवंड जी व भट्ट साहिबान की बाणी को सम्मिलित किया। मैलकम की लिखतों के अनुसार यह कार्य श्री गुरु अरजन देव जी ने किया, परंतु बाणी के संग्रह का आरंभ तो स्वयं श्री गुरु नानक देव जी ने किया था और इन्हें पोथियों का रूप श्री गुरु अंगद देव जी ने दिया था। श्री गुरु अरजन देव जी ने इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए इस विशाल संग्रह को श्री (गुरु) आदि ग्रंथ साहिब के रूप में प्रस्तुत किया। गुरु साहिब ने सिक्खों को धार्मिक व नैतिक आचरण

का जीवन व्यतीत कराने की प्रेरणा हेतु निश्चित जीवनचर्या का निर्धारण किया, जिसमें नाम-बाणी का अभ्यास, सेवा और परिश्रम से जीवन-यापन के गुणों को आत्मसात करने पर जोर दिया गया। उन्होंने दसवंध की प्रथा को और अधिक सुचारू बनाते हुए देश भर में सिक्खों को एक सूत्र में बांध दिया। दसवंध की रकम से धार्मिक और समाज-सुधारक गतिविधियों को बल मिला जिसके कारण गुरु-घर की ख्याति और प्रभाव बहुत बढ़ गया।

श्री गरु अरजन देव जी के समय तक सिक्खों का आत्मिक बल बहुत ही सुदृढ़ हो चुका था। गुरबाणी का आधार उनके जीवन को ओत-प्रोत करने लगा था। शबद-गुरु का महत्व और प्रभाव सारे देश में दृष्टिगोचर हो रहा था। साथ ही जो मसंद देश भर में सिक्खों की भेंट को सालाना रूप से गुरु-घर पहुंचा रहे थे वे दूसरी ओर गुरु-घर द्वारा निर्धारित रहत-मर्यादा, सेवा प्रविधि और बाणी का संचार भी अपने क्षेत्र में कर रहे थे। यह केंद्रीयकरण और विकेकीकरण की द्विपक्षीय पद्धति एक ओर संगठनात्मक रूप से सिक्ख पंथ के विकास और दूसरी ओर केंद्र से दूर बसे हुए सिक्खों को धुरि के साथ जुड़े रहने तथा उनके व्यक्तिगत विकास में मील का पत्थर साहिब हुई। मुहसिन फानी के शब्दों में गुरु साहिब ने केवल भारत में ही नहीं वरन् विदेशों में भी इन प्रचारकों को भेजना आरंभ किया। वे प्रचार और दसवंध इकट्ठा करने के साथ-साथ व्यापार आदि पर भी ध्यान देते। गुरु साहिब के समय सिक्खों के तुर्किस्तान और काबुल तक घोड़े खरीदने और भारत लाने के प्रमाण इतिहास में स्पष्ट मिल जाते हैं। ये प्रचारक या मसंद गुरु-घर के अनन्य सेवक व उच्च कोटि के विद्वान हुआ करते थे।

गुरु साहिब की ख्याति चारों ओर मुखर हो उठी। उनके अनुयायियों की संख्या दिन दूनी, रात चौगुनी बढ़ने लगी। देश-विदेश से आम श्रद्धालुओं के साथ-साथ विद्वान और महात्मा-जन भी उनके दर्शन के लिए आते थे। (शायद कनिंघम का अभिप्राय भट्ट साहिबान से है।) गुरु साहिब को न तो धनवान लोग प्रभावित कर पाते थे, न ही सत्ताधारी। यही कारण है कि लाहौर के आर्थिक व्यवस्थापक चंदू शाह से उनके संबंध बिगड़ गए। गुरु साहिब ने साहिबजादा (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के लिए चंदू की बेटी से रिश्ते को अस्वीकार कर दिया था। उसने इस बात को लेकर दिल्ली दरबार में गुहार लगाई। जहांगीर को यह बताया गया कि गुरु साहिब ने खुसरो के लिए विशेष प्रार्थना की है जो कि सलतनत का बागी है। गुरु साहिब को बंदी बनाकर लाहौर की जेल में डाल दिया गया। चंदू शाह ने अपना निजी बदला लेने के लिए उन्हें बहुत यातनाएं दीं और सन् १६०६ में उन्होंने शहीदी प्राप्त की। (कनिंघम ने शहादत का पूरा ब्यौरा नहीं दिया और न ही जहांगीर की भूमिका को स्पष्ट किया है। शहादत के प्रसंग उन्हें सिक्खों के स्रोतों से प्राप्त न होकर मोहसिन फानी और मलकम के दस्तावेजों से मिले थे, इसलिए शायद विस्तृत वर्णन नहीं किया गया है।)

श्री गुरु अरजन देव जी के काल तक गुरु नानक साहिब के सिद्धांत सिक्खों के मन-मस्तिष्क की गहराई में अंकित हो चुके थे। इसमें बहुत बड़ा हाथ गुरु-घर के एक विद्वान भाई गुरदास जी का भी है। उन्होंने अपने गुरु साहिबान को निर्मल, पवित्र, सद्चरित्र और मसीहा के रूप में वर्णित किया है जो आम

मानव के दुर्गुणों को मिटा कर उसे ईश्वर की सत्ता का आभास कराने में सक्षम है। उन्होंने हिंदू बहुदेववाद और मूर्ति-पूजा का वर्जन करते हुए 'सतिनाम' के उपदेश से जुड़ने का संदेश दिया, जिसका आगाज गुरु नानक साहिब ने किया था। गुरु साहिब ने अपने संपादित ग्रंथ में किसी और (सांसारिक) रचना को सम्मिलित करना अस्वीकार कर दिया था जो बाद में उनकी शहादत के कारणों में से एक बना। भाई गुरदास जी ने गुरबाणी के तथ्यों को बहुत ही खोलकर उदाहरणों द्वारा सरल भाषा में समझाने का प्रयास किया। उन्होंने हिंदू और मुसलमान दोनों के धर्म-सिद्धांतों की विस्तारपूर्वक व्याख्या कर उनमें निहित त्रुटियों को उजागर किया और अपने गुरु द्वारा चलाए धर्म-सिद्धांतों को सर्वोपरि बनाया। उन्होंने अपने गुरु के भक्ति-मार्ग को मुक्तिदायी और सांसारिक कष्टों से मुक्त कराने वाला बताया जिसके द्वार हरेक प्राणी के लिए खुले हैं। भाई गुरदास जी की रचनाओं ने गुरु नानक साहिब के अति माननीय व्यक्तित्व को प्रथम बार उजागर किया। (कदाचित् कनिंघम ने स्वयं भाई साहिब की रचना नहीं पढ़ी थी, उन्होंने केवल सिक्खों पर उसके प्रभाव से अनुमान लगाया होगा। साथ ही जिस काल में उन्होंने इतिहास संग्रहित किया उस काल में हिंदू-सिक्ख सभ्यता में वास्तविक अंतर नहीं दिखाई पड़ता था।

गुरु साहिब की शहादत के बाद गुरदेव पिता की आज्ञा द्वारा गुरतागद्दी श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब को ही मिली थी, फिर भी प्रिथी चंद द्वारा विरोध होता रहा। कनिंघम की दृष्टि में यही विरोध आगे चलकर सिक्ख पंथ में फूट (सांप्रदायों मतों में विभाजन) का कारण बना। आम सिक्ख संगत पर इस मतभेद का खास प्रभाव नहीं पड़ा और उनके मन में गुरु-घर के प्रति श्रद्धा यथावत कायम रही। यही कारण है कि आयु में कम होने पर भी सिक्खों ने (गुरु) हरिगोबिंद साहिब को सहर्ष 'गुरु' स्वीकार कर लिया।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि कनिंघम ने पूरी ईमानदारी और मेहनत से सिक्ख इतिहास इकट्ठा किया और क्रमवार लिखा। डेढ़ सौ वर्ष पूर्व सिक्ख इतिहास के इतने स्रोत मौजूद नहीं थे जितने आज हैं। एक विदेशी के लिए हमारा धर्म, मर्यादा, रहन-सहन, भाषा, संस्कृति और हमारा संघर्ष सभी कुछ अपरिचित था फिर भी इतने कम समय में इतनी खोज बहुत है। यदि उन्हें कुछ समय और मिला होता और वे सिक्ख इतिहास का और अध्ययन कर पाते तो शायद गुरु साहिबान पर एक अलग पुस्तक भी लिख देते। फिर भी उन्होंने ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण किसी भी तथ्य की अवहेलना नहीं की है। कनिंघम ने अपने इतिहास में श्री गुरु अरजन देव जी की संगठनात्मक, दूरंदेशी, समाज-सेवी कर्त्तयपरायण और त्यागी छवि को उभारा है जिनके कारण सिक्ख पंथ एक प्रबल धार्मिक धारा में बदल सका। एक ऐसा व्यक्ति जिसने सत्य को सर्वोपरि माना और परमात्मा की आज्ञा का पालन करने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी, परंतु धर्म नहीं हारा। उनके व्यक्तित्व का समग्र चित्रण कनिंघम तो क्या किसी भी मानव के लिए संभव नहीं है। मानव-मात्र के लिए तो केवल एक ही संदेश है जो भट्ट मथरा जी ने दिया है :

धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि ॥
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ॥ (पन्ना १४०९)

'परतख्य हरि' में अंकित श्री गुरु अरजन देव जी की जीवनी का विवेचन

*-प्रिं. अमरजीत कौर**

प्रिं. सतिबीर सिंघ ने सिक्ख गुरु साहिबान की जीवन-लीलाओं पर विस्तारपूर्वक पुस्तकें लिखी हैं। "परतख्य हरि" शहीदों के सिरताज श्री गुरु अरजन देव जी के जीवन पर आधारित उनकी सिक्ख इतिहास शृंखला की पांचवीं पुस्तक है जिसमें हमें श्री गुरु अरजन देव जी के जन्म से लेकर सिक्ख धर्म पर शहीद होकर शहीदों के सिरताज कहलाने अर्थात् उनके शहीद होने तक की पूरी जानकारी मिलती है।

प्रिं. सतिबीर सिंघ ने पुस्तक के प्रथम खंड में श्री गुरु अरजन देव जी के जन्म से लेकर ग्यारह वर्ष की आयु तक के जीवन की प्रत्येक घटना का वृत्तांत बहुत ही खूबसूरती से बयान किया है। श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म १५ अप्रैल, १५६३ ई को श्री गुरु रामदास जी के घर माता भानी जी की कोख से गोइंदवाल में हुआ। उस समय गुरगद्दी पर उनके नाना श्री गुरु अमरदास जी विराजमान थे। जब श्री गुरु अमरदास जी ने माता भानी जी के घर तीसरे पुत्र के जन्म के बारे में सुना तो वे आशीष देने वहां पहुंचे और बच्चे को गोद में लेते ही तीसरे पातशाह ने फरमाया कि "इह भारी पुरखा होवेगा।" लेखक ने लिखा है कि आप जी का माथा चौड़ा तथा नूरानी नैन, चमकता चेहरा था। आप लंबे व शरीर के भारी थे। लेखक यहां एक साखी का हवाला देकर लिखता है कि जब श्री गुरु अरजन देव जी छोटे थे तो एक बार गेंद उछल कर उस कमरे में चली गई जहां श्री गुरु अमरदास जी आराम कर रहे थे। गेंद लेने जब वे उस कमरे में पहुंचे तो गेंद को कमरे में न देखकर सोचा कि गेंद पलंग के ऊपर होगी। पलंग ऊंचा और आप छोटे थे। आप पलंग के पाए को पकड़कर जोर से हिलाने लगे तो श्री गुरु अमरदास जी जाग गए और सहज भाव ही कहने लगे :

इह किहड़ा वडा पुरख है भारी।
जिस मंजी हिलाई साडी सारी।

गुरु जी उनको उठाकर कहने लगे, "दोहिता, बाणी का बोहिथा।"

लेखक ने गुरु साहिब की विद्या-प्राप्ति का भी जिक्र किया है। श्री गुरु अमरदास जी की निगरानी में श्री गुरु अरजन देव जी को प्रत्येक भाषा की विद्या दी गई। गुरमुखी तीसरे पातशाह ने स्वयं श्री (गुरु) अरजन देव जी को सिखाई। विद्या-प्राप्ति के साथ ही उनको घुड़सवारी, नेजाबाजी आदि की सिखलाई दी गई। ग्यारह साल गोइंदवाल में बिताने के बाद श्री गुरु रामदास जी गुरगद्दी की जिम्मेदारी संभाल श्री (गुरु) अरजन देव जी को लेकर श्री अमृतसर को बसाने आ गए।

लेखक ने दूसरे अध्याय में श्री (गुरु) अरजन देव जी के अगले सात वर्ष गुरु-पिता की ठंडी छांव में बिताने का जिक्र किया। श्री गुरु रामदास जी द्वारा नगर बसाने से वहां खूब रौणक बढ़ गई। श्री गुरु रामदास जी ने वहां एक सरोवर खुदवाया। श्री (गुरु) अरजन देव

**न्यू अमृतसर मॉडल स्कूल, गोबिंद नगर, भुल्लर रोड, बटाला (गुरदासपुर)-१४३५०५; मो: ९७८१६-०६९२२*

जी दिन-रात सेवा, सिमरन, कीर्तन और नाम-अभ्यास में जुड़े रहते।

श्री (गुरु) अरजन देव जी का बड़ा भाई प्रिथीचंद एक चतुर इंसान था। वो गुरगद्दी पर अपना हक समझने लगा था। श्री (गुरु) अरजन देव जी जान गए थे कि यह सेवा और बख्शिश की वस्तु है, हक जतलाने और हक लेने की नहीं। लगभग ग्यारह वर्ष की आयु में आपका विवाह माता गंगा जी के साथ हुआ। श्री गुरु रामदास जी भी सब कुछ देख रहे थे और अपने अगले उत्तराधिकारी को प्रत्येक पक्ष से विनम्र बनाना चाहते थे। लेखक ने यहां आखिरी परीक्षा के रूप में श्री गुरु रामदास जी के द्वारा हुक्म मानने का जिक्र किया है। श्री गुरु रामदास जी अपने कार्यों में व्यस्त थे और किसी रिश्तेदार की शादी में लाहौर जाने के लिए सबसे पहले उन्होंने अपने बड़े लड़के प्रिथीचंद को कहा, लेकिन वो हुक्म मानने की बजाय गुरु साहिब को उलटा-सीधा बोलने लगा। गुरु साहिब जान गए थे कि यह गुरगद्दी के लायक नहीं है। दूसरा लड़का महादेव वैसे भी दुनिया से संबंध तोड़ बैठा था। जब गुरु साहिब ने श्री (गुरु) अरजन देव जी को कहा तो वे हाथ जोड़ गुरु-आज्ञा सिर-माथे मान जाने की तैयारी करने लगे। गुरु-पिता ने कहा कि "जब तक हम न बुलाएं तब तक मत आना।"

लाहौर पहुंचकर श्री (गुरु) अरजन देव जी शादी निपटने के बाद वहां अपने पुशतैनी घर में दीवान लगाकर संगत में उपदेश-प्रचार करने लगे। गुरु साहिब को श्री (गुरु) अरजन देव जी की पल-पल की खबर मिलती और वे यह सुन रहे थे। उधर (गुरु) अरजन साहिब को जब गुरु-पिता से विछोड़ा असहनीय लगने लगा तो उन्होंने बारी-बारी तीन खत भेजे। पहले दो खत प्रिथीचंद के हाथ लग गए। फिर तीसरा खत गुरु-पिता को मिला और गुरु साहिब जान गए थे कि वे हुक्म मानने में परिपक्व हो गए हैं। गुरु जी ने अपना अंतिम समय नजदीक जान श्री (गुरु) अरजन देव जी को वापिस बुला गुरगद्दी का उत्तराधिकारी नियुक्त किया। श्री गुरु रामदास जी १ सितंबर, १५८१ को गोइंदवाल में ज्योति-जोत समा गए।

तीसरे अध्याय में लेखक ने श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा श्री अमृतसर में किए गए निर्माण-कार्यों का जिक्र किया है। श्री अमृतसर पहुंचते ही गुरु साहिब ने संगत को मसंदों द्वारा मंजी-बरदारों को हुकमनामे भेजे कि श्री अमृतसर का निर्माण पहले की तरह जारी रहेगा। संगत बहुतात में सेवा के लिए पहुंची और कार-भेंट लेकर आई। ताल को पक्का करने और शहर के निर्माण के विशेष प्रबंध किए गए। उधर प्रिथीचंद अपनी साजिशों द्वारा संगत से कार-भेंट वसूल करता रहा। लंगर में रसद का सामान न पहुंचने से लंगर की हालत भी नाजुक होने लगी। उधर प्रिथीचंद के उकसाने पर ढाडी भाई सत्ता जी और भाई बलवंड जी भी गुरु जी का साथ छोड़ गए। भाई गुरदास जी के आगरा से वापिस आने पर उन्होंने लंगर की हालत देखी तो उन्होंने सारी साजिशों का पता लगाया। भाई साहिब ने बाबा बुड्ढा जी और मुखी सिक्खों से मिलकर संगत को प्रिथीचंद की साजिशों से जागरूक किया और इस तरह संगत अपनी कार-भेंट सीधी गुरु साहिब को भेजने लगी जिससे निर्माण-कार्यों और लंगर की हालत पुन: ठीक हो गई। इसी अध्याय में लेखक ने संतोखसर सरोवर को पक्का करने तथा भाई आदम और भाई मंझ की सेवा का भी जिक्र किया है।

लेखक ने अध्याय चार के बाद पांच में *"हरिमंदर सतिगुर साजिआ"* शीर्षक तले गुरु साहिब द्वारा "अमृत सरोवर" के बिलकुल बीच में श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण का जिक्र किया है।

डॉ. गंडा सिंघ और प्रिं. तेजा सिंघ के विचारों से सहमत होते हुए लेखक ने लिखा है कि मुगल बादशाह खुद को जितने बड़े निर्माणकर्त्ता समझते थे गुरु साहिबान उससे भी बड़े निर्माणकर्त्ता थे। गुरु नानक साहिब ने श्री करतारपुर, गुरु अंगद साहिब ने खडूर साहिब, श्री गुरु अमरदास जी ने गोइंदवाल साहिब और श्री गुरु रामदास जी ने श्री अमृतसर शहर की स्थापना की। श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री तरनतारन, श्री कीरतपुर (जलंधर) आदि नगर बसाए। गुरु अरजन साहिब ने तो रामसर, तरनतारन आदि ताल भी खुदवाए। सबसे महत्वपूर्ण कार्य जो श्री गुरु अरजन देव जी ने किया वो है अमृत सरोवर के बीच परमात्मा के घर श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण। लेखक ने यहां प्रो. पूरन सिंघ की लिखत का हवाला देकर लिखा है कि "इसकी नींव प्रेम, श्रद्धा और संतोष पर खड़ी है।" लेखक ने ज्ञानी गिआन सिंघ के कथन का हवाला देते हुए लिखा है कि श्री हरिमंदर साहिब की नींव ३ जनवरी, १५९७ को गुरु साहिब ने साईं मियां मीर जी से रखवाई। फिर श्री हरिमंदर साहिब की महत्ता बताते हुए लिखा है कि यह ऐसा तीर्थ है जहां अनेकों को 'रोशनी' मिली। यह 'सचखंड' का टुकड़ा है। इसके दर्शन करके बुझी हुई आत्माएं भी जगमगा उठती हैं, नाम-सिमरन खुद ही चल पड़ता है और हृदय रसमयी हो जाता है। यह अदब का स्थान है।

माझा-दोआबा-फेरी तथा निर्माण के अन्य कार्यों का जिक्र करते हुए लेखक लिखता है कि पहले प्रिथीचंद की नाकाबंदी, फिर अमृत सरोवर को पक्का करना, संतोखसर का निर्माण, श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना के कारण गुरु साहिब दस साल श्री अमृतसर से बाहर न जा सके। फिर बाबा दातू, बाबा मोहन, संहारी मल और दूसरे अन्य मुखी सिक्खों के कहने पर आप माझा, दोआबा और निकट के इलाकों में गए और सिक्खी का प्रचार तथा नगर बसाने की तरकीबें बनाने लगे।

गुरु साहिब सबसे पहले जंडिआला गए। वहां भाई हिंदाल की सेवा देखकर खुश हुए और गुरु साहिब ने उन्हें मंजी की बख्शिश की। फिर खडूर साहिब, गोइंदवाल साहिब, सरहाली होते हुए खारा गांव पहुंचे। वहीं गुरु साहिब ने जमीन खरीद कर १५ अप्रैल, १५९० को तरनतारन सरोवर की नींव रखी। यहीं एक धर्मशाला और कुष्ठ रोगियों के लिए एक घर बनवाया। फिर गुरु साहिब रमदास गए। गुरु साहिब बाबा श्रीचंद से मिलने बारठ भी पहुंचे।

गुरु साहिब बाबा बकाला, गोइंदवाल साहिब से सुलतानपुर लोधी होते हुए डल्ला गांव गए। सिक्खों को उपदेश करते हुए जलंधर के इलाके में सैयद अजीम खान के कहने पर गए। वहां गुरु जी ने जमीन खरीदी और दिसंबर १५९४ को एक नगर बसाया जिसका नाम 'करतारपुर' रखा। वहां से गुरु साहिब वापिस श्री अमृतसर आ गए, क्योंकि गुरु साहिब को संदेश मिल रहे थे कि प्रिथीचंद ने फिर से साजिशें रचनी शुरू कर दी हैं और उसका पुत्र मिहरबान खुद को गुरगद्दी का वारिस कहकर खुद की पूजा करवा रहा है।

श्री अमृतसर पहुंचते ही गुरु साहिब ने माता गंगा जी को वडाली गांव भेज दिया और

वहीं पर उनके घर साहिबजादे श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब का जन्म हुआ।

श्री गुरु अरजन साहिब के घर पुत्र के जन्म की खबर सुन प्रिथीचंद बहुत दुखी हुआ। वो समझता था कि गुरु अरजन देव जी के घर कोई औलाद नहीं है, जिस कारण गुरगद्दी उसके लड़के मिहरबान को मिलेगी। श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के जन्म के साथ ही उसके मंसूबों पर पानी फिर गया। फिर उसने श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब को मारने के लिए कई यत्न किए। पहले तो उसने दाई फत्तो को भेजा, फिर जहरीला सांप छोड़ा, फिर दहीं में डालकर जहर देना तथा कुछ बड़े होने पर श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब पर भाड़े के गुंडों से वार करवाना। उसके ये सभी वार अकाल पुरख परमात्मा की कृपा से असफल रहे।

एक समय इलाके में चेचक बहुत बुरी तरह फैल गया। श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब को भी इस बीमारी ने अपनी चपेट में ले लिया। लोगों ने बहुत सलाह दी कि इसकी पूजा करें, किसी मंदिर में जाएं, लेकिन गुरु अरजन साहिब ने कहा कि हर रोग पर रक्षक खुद सृजनहार परमात्मा है। दवा-दारू करना गृहस्थी का फर्ज है। जब परमात्मा की मिहर होती है तभी दवा-दारू असर करती है। श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब कुछ दिनों बाद स्वस्थ हो गए। इस पर गुरु साहिब ने परमात्मा का धन्यवाद करते हुए शबद उच्चारण किया :

नेत्र प्रगासु कीआ गुरदेव ॥
भरम गए पूरन भई सेव ॥
सीतला ते रखिआ बिहारी ॥
पारब्रहम प्रभ किरपा धारी ॥ (पन्ना २००)

लेखक के अनुसार जब श्री हरिमंदर साहिब बनकर तैयार हो गया तो पुरोहितों ने जिद की कि लंगर का पहला थाल उनको मिलना चाहिए। गुरु साहिब ने कहा कि जिन्होंने सेवा की है, भार ढोया है, पहला हक उनका बनता है। इस पर पुरोहित श्रेणी बिगड़ गई। उन्होंने बीरबल को गुरु साहिब के विरुद्ध भड़काया और बीरबल भी पुरोहितों के कहने पर गुरु साहिब को नीचा दिखाने लगा लेकिन प्रभु की रजा से बीरबल काबुल की मुहिम में मारा गया। फिर प्रिथीचंद ने सुलही खान को भी गुरु साहिब के विरुद्ध हमलावर होकर आने को कहा। सुलही खां भी रास्ते में ही मारा गया। सुलही खां की मौत की खबर सुनकर सुलबी खां भी गुरु जी पर हमला करने आया लेकिन वो भी प्रिथीचंद के आवे (भट्टे) में गिर कर मारा गया। गुरु अरजन साहिब ने शबद उचारा :

सुलही ते नाराइण राखु ॥
सुलही का हाथु कही न पहुचै
सुलही होइ मूआ नापाकु ॥ (पन्ना ८२५)

अध्याय आठ और नौं में लेखक ने गुरु अरजन साहिब की लाहौर-यात्रा, ननकाणा साहिब के दर्शन और बादशाह अकबर का गुरु साहिब से मिलाप का जिक्र है। अध्याय नौं में गुरु साहिब का वापिस श्री अमृतसर आना, व्यापार को उत्साहित करना और लोगों को सिक्खी से जोड़ परमात्मा-भक्ति का उपदेश देने का खुलासा किया है।

अध्याय दस इस पुस्तक का एक महत्वपूर्ण भाग है। इसमें लेखक ने गुरु साहिब द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब की आदि बीड़ तैयार करने का जिक्र किया है। लेखक ने गुरु साहिब द्वारा पहले चार गुरु साहिबान और अपनी बाणी को एक 'ग्रंथ' का रूप देने के कारणों का जिक्र भी विस्तार से किया है। प्रिथीचंद ने गांव हेहर में श्री हरिमंदर साहिब की नकल का एक अन्य

'गुरुद्वारा' तथा 'ताल' बना लिया था और उसका लड़का मिहरबान अपने आप को 'गुरु' कहलाने लग पड़ा। वो अपनी कविताएं भी 'नानक' छाप की मोहर तले रचने लगा था।

श्री गुरु अरजन देव जी जान गए थे यदि "धुर की बाणी" को एक जगह एकत्र न किया गया तो इसमें पंथ के ईर्ष्यालु 'कच्ची बाणी' शामिल कर देंगे जिससे आम सिक्ख संगत को पहचानना मुश्किल हो जाएगा। गुरु साहिब ने भाई गुरदास जी को लिखारी बना, पूरी तरतीब समझा पहले गुरु साहिबान की बाणी और फिर पूर्व गुरु साहिबान द्वारा यात्राएं कर इकट्ठी की संतों, भक्तों, फकीरों की बाणी को एक 'ग्रंथ' का रूप दिया। गुरु साहिब ने इसके लिए 'रामसर' का रमणीक स्थान चुना। गुरु साहिब ने योजनाबद्ध ढंग से पहले रागमयी बाणी लिखवाई, फिर जो सलोक बच गए उनको "सलोक वारां ते वधीक" शीर्षक तले लिखवा दिया। गुरु जी ने ये सावधानियां बरतीं :

१. कोई भड़कीला या शोकमयी राग न डाला।
२. किसी राग को रागिनी के तौर पर नहीं लिया।
३. श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अहंकार, भेदभाव, वर्ण-आश्रम, इंसानी जीवन की बेकदरी और सन्यास या बेहरकत वाले ख्यालों को कोई जगह न दी।
४. बोली सुगम व सरल रखी।
५. शबदों की गिनती के आंकड़े अपने हाथों से लिखे ताकि कोई किसी जगह पर कभी भी मिलावट न कर सके।
६. भक्त-बाणी को पूरी छानबीन के बाद ही दर्ज किया।

सारा 'ग्रंथ' संपूर्ण कर ३० अगस्त, १६०४ को श्री हरिमंदर साहिब में प्रकाश किया और बाबा बुड्ढा जी को पहला ग्रंथी नियुक्त किया।

लेखक ने एक अलग अंदाज में लिखा है कि श्री गुरु अरजन साहिब ने एक ऐसा पावन ग्रंथ रूहानी थाल में परोसा है जिसमें जीवन-पदवी पाने की युक्ति है। इसमें धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, परमार्थक और हर इंसानी मसले का हल है। बाणी-विचार में नाम की समझ पैदा होती है। नाम प्रकट हो जाए तो जीवन रसमयी हो जाता है, फिर वो किसी कर्मकांड में नहीं फंसता।

अध्याय ग्यारह में, श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जिनकी 'बाणी' शामिल नहीं की गई, उनके द्वारा बादशाह अकबर के दरबार में गुरु जी के विरुद्ध शिकायतों का जिक्र है। पुरोहितों और भक्तों ने चंदू से मिलकर अकबर के दरबार में शिकायत की कि श्री गुरु अरजन देव जी एक 'ग्रंथ' तैयार कर रहे हैं जिसमें मुसलिम पीरों, पैगंबरों तथा हिंदू अवतारों और देवी-देवताओं की निंदा की गई है। बादशाह अकबर गुरु अरजन साहिब से पहले भी मिल चुका था। उसने शिकायतों पर कोई ध्यान न दिया, लेकिन फिर भी तसल्ली करने के लिए जब वो बटाला आया तो बाबा बुड्ढा जी व भाई गुरदास जी बीड़ लेकर हाजिर हुए और शिकायतों का निवारण किया। अकबर बहुत प्रसन्न हुआ। अकबर के मरने के बाद जहांगीर बादशाह बना। शिकायतकर्त्ताओं और चंदू (जो गुरु साहिब द्वारा उसकी लड़की का रिश्ता ठुकराने पर नाराज था) ने जहांगीर के कान भरे कि गुरु जी मुसलिम धर्म के विरुद्ध प्रचार कर मुसलमानों को अपने धर्म में शामिल कर रहे हैं।

अध्याय बारह में लेखक ने गुरु साहिब की शहादत का वर्णन किया है। लेखक ने शहादत के कारणों में चंदू और प्रिथीचंद की जातीय

रंजिशों को नकारते हुए जहांगीर की नीति, नक्शबंदियों की उकसाहट और जहांगीर का अपने आप को इसलाम का रखवाला प्रसिद्ध करना था। इस तरह लेखक ने कई इतिहासकारों की पुस्तकों के हवाले देकर शहादत के मूल कारणों को स्पष्ट किया है। गुरु नानक साहिब के दृढ़ कराए जा रहे आजादी के उपदेश, जो सिक्खों को निर्भय और निरवैर होने के लिए प्रेरित कर रहे थे, को जहांगीर सहार न सका। जहांगीर किसी मौके की तलाश में था और वो मौका उसे खुसरो की बगावत में मिला। नक्शबंदियों की चूक उसके मन को पक्का करने में सहायक हो रही थी।

गुरु साहिब भी जान गए थे कि आगे क्या होगा, इसलिए उन्होंने सब मुखी सिक्खों को बुलाया और गुरगद्दी की जिम्मेदारी १५ मई, १६०६ को (गुरु) हरिगोबिंद साहिब को सौंपी और कहा, "आगे समय बहुत सख्त आ रहा है कमरकस्से कर लो। आप शस्त्र पहनो और अपने सिक्खों को भी ऐसा करने की प्रेरणा करो। जालिमों से डट कर लड़ो और तब तक डटे रहना जब तक ये सुधर न जाएं या खत्म न हो जाएं।"

लेखक ने लिखा है कि गुरु साहिब को २२ मई, १६०६ ई. को श्री अमृतसर से ही मुरतजा खां ने गिरफ्तार कर लिया। चौधरी लंगाहा, भाई बिधीचंद, भाई पैड़ा, भाई जेठा और भाई पिराणा जी भी आपके साथ चल पड़े। इन सिक्खों को गुरु जी ने लाहौर से वापिस चले जाने का हुक्म दिया और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की शरण में जाने को कहा। गुरु जी को लाहौर में कैद किया गया जहां घोर यातनाएं दिए जाने के कारण ३० मई, १६०६ को वे शहीद हो गए।

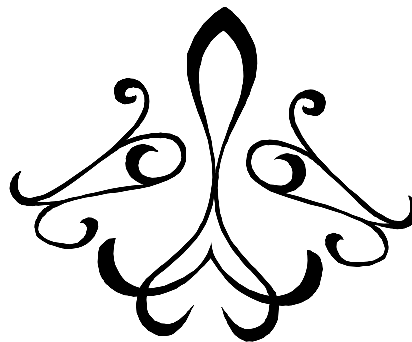
गुरु साहिब की शहादत पर लेखक ने लिखा है कि इस शहादत ने सिक्ख कौम में भाणा (हुक्म) मीठा कर मानने का जजबा भरा। इसी के फलस्वरूप सिक्ख संगत जुल्म के खिलाफ उठ खड़ी हुई और पंथ ने जुल्म करने वालों का डट कर सामना किया।

लेखक ने सार-तत्त्व के तौर पर अध्याय तेरह में श्री गुरु अरजन देव जी के समूचे जीवन पर एक बार फिर रोशनी डाली है कि गुरु साहिब अकाल पुरख का स्वरूप थे, बाणी के बोहिथ थे, कलयुग के जहाज थे, परोपकार की मूरत, दूरदृष्टि वाले, वहमों-भ्रमों से दूर, संसारी ख्वाहिशों पर काबू रखने वाले, 'सुखमनी साहिब' जैसी बाणी के रचयिता, रागों के ज्ञाता, आज्ञाकरी, भाइयों की किसी भी बात का बुरा न मानने वाले, आदर्श पति और पिता थे। गुरु साहिब ऐसी पावन शख्सियत थे कि उनमें और प्रभु में कोई अंतर नहीं था :

धरनि गगन नव खंड महि जोती स्वरूपी रहिओ भरि ॥

भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ॥ *(पन्ना १४०९)*





"सिक्ख इतिहास" कृत प्रिं तेजा सिंघ-डॉ गंडा सिंघ के अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी

*-बीबी रजवंत कौर**

श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म १५ अप्रैल, १५६३ ई को श्री गोइंदवाल साहिब में हुआ था। आपके पिता श्री गुरु रामदास जी थे। श्री गुरु रामदास जी के तीन पुत्र थे। सबसे बड़ा पुत्र प्रिथीचंद बेहद लालची स्वभाव का था और उससे छोटे महादेव वैरागी स्वभाव के थे। श्री गुरु रामदास जी ने सबसे छोटे सपुत्र श्री (गुरु) अरजन देव जी में योग्यता, श्रद्धा और विद्वता पूरी होने के कारण उन्हें गुरगद्दी के लिए चुना। श्री गुरु अरजन देव जी पहले गुरु साहिब थे जिनको जन्म से ही गुरमति की घुट्टी मिली थी। आपके नाना जी श्री गुरु अमरदास जी थे। वे उनकी गोद में ही पले-बड़े हुए थे। आपके नाना श्री गुरु अमरदास जी आपको बहुत प्यार करते थे और उन्होंने अपनी चयनकारी नजर से परख कर कहा कि यह *"दोहिता, बाणी का बोहिथा"* (जहाज) बनेगा।

श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने पिता के कार्यों में श्री अमृतसर नगर बसाने में नगर का निर्माण कर नगर में विभिन्न कार्य करने वाले लोगों को लाकर बसाने, सरोवर की खुदाई और अन्य सभी कार्यों में उनका पूरा साथ दिया। श्री गुरु रामदास जी ने अपने परलोक गमन करने का समय नजदीक आता देखकर संगत को इकट्ठी करके गुरगद्दी की जिम्मेदारी श्री (गुरु) अरजन देव जी को सौंप दी। गुरगद्दी पर बैठाकर उनके आगे सिर झुकाया और साथ ही पहले गुरु साहिबान तथा अपनी रची हुई बाणी का सारा खजाना श्री गुरु अरजन देव जी को दे दिया, जिसमें श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी और भक्त साहिबान की बाणी शामिल थी। गुरगद्दी मिलते समय आपकी आयु १८ साल ४ महीने थी।

श्री गुरु रामदास जी द्वारा गुरगद्दी श्री गुरु अरजन देव जी को देने के फैसले से प्रिथीचंद नाराज हो गया, क्योंकि वो समझता था कि मैं बड़ा पुत्र हूं, इसलिए गुरगद्दी पर बैठना मेरा हक बनता है। गुरु-घर में यह हक उसका माना जाता है जिसमें गुरगद्दी निभाने के लिए सभी गुण हों। नाराज होने के कारण प्रिथीचंद श्री गुरु अरजन देव जी के हर काम में रुकावट पैदा करने लगा। श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने घर की सारी सम्पत्ति अपने दोनों भाइयों के लिए छोड़ दी और गुरु-घर के लंगर तथा भवन-निर्माण का खर्च संगत की भेंटा से चलाने लगे। श्री गुरु अरजन देव जी गुरगद्दी की जिम्मेदारी संभाल कर गोइंदवाल से **'रामदासपुर'** आ गए और सरोवर पक्का करने तथा शहर बसाने का कार्य पूरा करने में जुट गए। श्री गुरु अरजन देव जी ने दूर बसे सिक्खों को अपनी आमदन में से दसवां हिस्सा (दसवंध) निकाल कर गुरु-घर भेजने के लिए संदेश भेजे, ताकि इमारतों का निर्माण-कार्य आसानी से पूरा हो सके। दूर बसे सिक्खों ने अपनी मेहनत की कमाई में से दसवंध निकालकर धन मसंदों के

**४५२, संधू कलोनी, ब्लाक-बी, जी टी रोड, छेहरटा, श्री अमृतसर-१४३००५, मो : ९८५५९-४४५४६*

हाथ रामदासपुर भेजना शुरू कर दिया। इसमें रुकावट डालने के लिए प्रिथीचंद ने शहर के बाहर से ही आती हुई रकम बटोरनी शुरू कर दी। जब इस बात की खबर गुरु-घर के अनन्य सिक्ख भाई गुरदास जी को मिली तो भाई गुरदास जी और बाबा बुड्ढा जी ने शहर के बाहर बैठकर बाहर से आने वाली संगत और मसंदों को सारी हकीकत बताई। इस प्रकार दसवंध की रकम गुरु-घर में पहुंचने लगी। श्री गुरु अरजन देव जी ने अमृत सरोवर के बीच में श्री हरिमंदर साहिब की नींव रखी। इसमें चार दरवाजे रखे गए ताकि सभी धर्मों के लोग श्री हरिमंदर साहिब में खुलेआम आ-जा सकें।

श्री गुरु अरजन देव जी धर्म का प्रचार करने के लिए आसपास के इलाकों में गए और लोगों को एक परमात्मा की पूजा करने के लिए उपदेश किया तथा बहुत सारे सामाजिक सुधार किए। गुरु जी ने सिक्खों को अपने कारोबार करने के लिए प्रेरित किया। व्यापार करने के लिए घोड़े खरीदने की रुचि पैदा की। गुरु जी ने १५९० ई में तरनतारन नगर की नींव रखी और लोगों की पानी की कमी को दूर करने के लिए बड़ा सरोवर भी बनाया। तरनतारन का नगर बसने से सखी सरवरों के बढ़ते प्रभाव पर भारी चोट लगी, क्योंकि तरनतारन नगर के पूर्व की ओर ४-५ किलोमीटर की दूरी पर शेख फत्ते के नाम से सखी सरवरों की गद्दी चली आ रही थी। हिंदू लोगों की नजर में शेख फत्ता एक महान शख्सियत थी। सखी सरवर उसकी मन्नत में वृहस्पतिवार की रात को जमीन पर बिस्तर लगा कर सोता था। ताजा ब्याही गाय और भैस के दूध की खीर बना कर शेख फत्ते के स्थान पर लेकर जाते थे। हिंदू धर्म से इस्लाम धर्म की ओर जाने के लिए यह पहला काम था। हिंदू लोगों को सखी सरवर के असर से बाहर निकालने के लिए श्री गुरु अरजन देव जी ने तरनतारन नगर की स्थापना की। तरनतारन नगर में आपने कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों के लिए एक आश्रम बनाया और यहां उनका इलाज किया जाने लगा। १५९४ ई में आपने जलंधर के पास 'करतारपुर' नगर बसाया और यह नगर भी व्यापार का केंद्र बन गया। श्री गुरु अरजन देव जी ने लाहौर शहर के डब्बी बाजार में पानी की सुविधा के लिए एक पानी का कुआं (बाउली) बनवाया।

श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने सपुत्र श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के जन्म की खुशी में ब्यास नदी के किनारे श्री हरिगोबिंदपुर नगर बसाया और श्री अमृतसर नगर के पास वडाली गांव के बाहर एक छेहरटा कुआं बनाया, ताकि लोगों की पानी की कमी दूर हो सके। श्री गुरु अरजन देव जी अपने बड़े भाई प्रिथीचंद की ईर्ष्या के कारण गांव वडाली में बस गए और वहां जब आपके पुत्र श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जन्म हुआ तो प्रिथीचंद की ईर्ष्या और भी बढ़ गई। प्रिथीचंद ने गुरु जी के सपुत्र को जान से मारने के लिए बहुत कोशिश की पर ईश्वर की दया से वे हर किए गए वार से बच गए। इसके बाद प्रिथीचंद ने एक सरकारी मुलाजिम सुलही खान से गठजोड़ किया और गुरु जी को परेशान करने लगा। आखिर सुलही खां अपने घोड़े समेत तपते हुए ईंटों के भट्ठे में गिर जलकर मर गया। इस दुर्घटना से प्रिथीचंद को बहुत धक्का लगा।

श्री गुरु अरजन देव जी के जीवन का महान कार्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना करना था। यह महान कार्य अत्यंत जरूरी था, क्योंकि प्रिथीचंद के बेटे मिहरबान ने अपनी

'कविता' रचकर गुरु साहिब की बाणी में मिलावट करनी शुरू कर दी थी। इस धोखे से संगत को बचाने के लिए गुरुओं और भक्तों की असली बाणी को एक जगह इकट्ठी करके एक महान ग्रंथ तैयार करने का काम किया गया ताकि गुरु जी के सिक्ख इस बाणी के आधार पर अपना जीवन सफल बना सकें। गुरु साहिब ने गुरुद्वारा रामसर साहिब के किनारे एकांत और रमणीक जगह को चुना और बाणी-रचना एवं संपादना का काम किया।

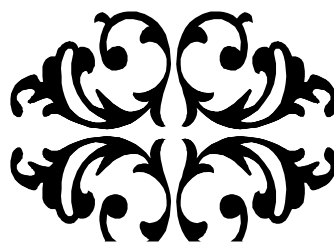
श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सबसे ज्यादा बाणी श्री गुरु अरजन देव जी की है। उनकी "सुखमनी साहिब" बाणी एक उत्तम बाणी है, जिसको सिक्ख और गैर-सिक्ख बहुत श्रद्धा के साथ पढ़ते हैं। श्री गुरु अरजन देव जी में एक अच्छे लिखारी के सभी गुण मौजूद थे। उनकी बाणी में मनुष्य जाति का एक उदास संगीत है, एक सरोदी पुकार है, जो दिल के अंदर से निकलती है। उनकी बाणी से पता चलता है कि उनको मिले सुख के पीछे दुख से एक बड़ा संघर्ष हुआ प्रकट होता है और जो अंत में विजय में बदलता है, जैसे मिट्टी को तूफान आने के बाद में हुई वर्षा पूरी तरह से शांति देती है। उन्होंने गुरु साहिबान और अपनी बाणी के अलावा पंद्रह भक्त साहिबान की बाणी भी इस महान ग्रंथ में दर्ज की जो भिन्न-भिन्न जातियों से संबंध रखते थे, जिससे पता चलता है कि आप सभी धर्मों का आदर करते थे। गुरु जी ने कान्हा, छज्जू शाह हुसैन और पीलू जैसे बहुत सारे व्यक्तियों की लिखतों को प्रार्थना करने पर भी ग्रंथ में शामिल नहीं किया, क्योंकि उनकी रचनाओं में कुछ तो वेदांत की झलक मिलती थी और कुछ नारी वर्ग के प्रति नफरत की झलक दिखाई देती थी। इस तरह से सारी बाणी को एक जगह इकट्ठा कर लिखने का काम भाई गुरदास जी को सौंपा गया। इस बाणी को ३१ रागों में लिखा गया। सबसे पहले तरतीब से गुरु साहिबान की बाणी लिखी गई। सारी बाणी 'नानक' के नाम पर लिखी गई। इसके बाद संतों की बाणी ली गई, जो भक्त कबीर जी से शुरू होकर भक्त फरीद जी की बाणी पर समाप्त होती है। इसके बाद ११ भट्ट साहिबान के सवैये लिखे गए, जिसमें भट्ट साहिबान ने गुरु साहिबान की स्तुति की है। अंत में 'मुंदावणी' लिखकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की समाप्ति की गई। श्री गुरु ग्रंथ साहिब सुशोभित करके इसका प्रकाश किया गया। पहले ग्रंथी बाबा बुड्ढा जी को बनाया गया। जब श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का निर्माण किया जा रहा था तो गुरु जी का विरोध करने वाले कई लोगों ने बादशाह अकबर के पास जाकर यह शिकायत की कि गुरु साहिब जो ग्रंथ तैयार कर रहे हैं उसमें मुसलमानों के पैगंबरों और हिंदू अवतारों की निंदा की गई है। अकबर जब श्री गुरु अरजन देव जी को मिलने आया तो 'ग्रंथ साहिब' की बाणी सुनकर बहुत खुश हुआ। उसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कोई भी एतराजयोग्य शब्द नहीं मिला। गुरु जी ने किसानों की कई मुश्किलों से अकबर को अवगत करवाया जिसके फलस्वरूप बादशाह ने किसानों की जमीन का लगान माफ कर दिया।

१६०५ ई में बादशाह अकबर परलोक सिधार गया तो उसके बाद उसका पुत्र जहांगीर राजगद्दी पर बैठा। वो अपने पिता की तरह विशाल हृदय वाला नहीं था। वो अपने धर्म को फैलाने के लिए बहुत बड़े इरादे बनाए बैठा था। जब वो राजगद्दी पर बैठा तो उसने अपने पैरोकारों से इकरार किया था कि वो इसलाम

धर्म की पूरी रक्षा करेगा। वो यह कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता था कि कोई भी मुसलमान अपने धर्म को बदल कर किसी अन्य धर्म में प्रवेश करे। वो अपनी पुस्तक 'तुजके-जहांगीरी' में श्री गुरु अरजन देव जी के बारे में लिखता है कि "उसके तौर-तरीकों और शिक्षाओं से कई सीधे-सादे हिंदू और मूर्ख, बेसमझ मुसलमान उसके जाल में फंस चुके हैं। भोले-भाले और अनजान लोग उसके पास आकर अपनी पूरी श्रद्धा प्रकट करते हैं। तीन-चार पुश्तों से उसने यह दुकान गर्म कर रखी है। बहुत समय से मेरे मन में यह विचार आ रहा है कि उसकी इस झूठ की दुकान को बंद कर देना चाहिए या उस गुरु को मुसलमान बना लेना चाहिए।" (पृष्ठ ३५)

अत: जहांगीर बहुत समय से इस मौके की तलाश में था। यह समय उसके हाथ आया जब जहांगीर के पुत्र खुसरो ने अपने पिता के खिलाफ बगावत कर दी। श्री गुरु अरजन देव जी के विरोधियों ने मौका देखकर गुरु जी के खिलाफ जहांगीर को भड़का दिया कि श्री गुरु अरजन देव जी ने खुसरो को आशीर्वाद दिया है। कानों के कच्चे जहांगीर ने इस मामले की पूछताछ किए बिना ही गुरु जी को बंदी बनाकर लाने का हुक्म कर दिया। जहांगीर इसके बारे में कहता है कि "मैं उसके इस फरेब को अच्छी तरह जानता था, इसलिए मैंने हुक्म किया कि उसको मेरे आगे पेश किया जाए और उसके घर और बच्चों को मुरतजा खां को सौंप दिया जाए। उसकी सारी संपत्ति जब्त कर ली जाए और उसे यातनाएं देकर मार दिया जाए।"

यह झूठी कहानी गुरु जी को फंसाने के लिए रची गई थी कि गुरु जी ने खुसरो की सफलता के लिए प्रार्थना की थी और उसकी सफलता के लिए बहुत सारे पैसों से मदद की थी। इस बात का जिक्र जहांगीर ने अपनी पुस्तक "तुजके-जहागिरी" में नहीं किया। गुरु साहिब को चंदू शाह के हवाले कर दिया गया। उसने अपनी निजी दुश्मनी निकालने के लिए गुरु साहिब को अनेक प्रकार के कष्ट देकर शहीद कर दिया। चंदू जिला गुरदासपुर के गांव रुहेले का रहने वाला था और उसकी बेटी का रिश्ता गुरु साहिब के सपुत्र (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के साथ नियत किया गया था। सिक्ख इतिहास के अनुसार कहा जाता है कि जब चंदू की बेटी का रिश्ता गुरु जी के सपुत्र श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब से हुआ तो वह अहंकार में कहने लगा कि "चुबारे के ईंट मोरी को लगा आया है।" उसने अपने आप को 'चुबारा' और गुरु-घर को 'मोरी' कहा। श्री गुरु अरजन देव जी ने इसे गुरु-घर का अपमान समझते हुए रिश्ते के लिए मना कर दिया। चंदू गुरु जी का दुश्मन बन गया। वो अपनी इस कड़वाहट को निकालने के लिए कोई मौका ढूंढ रहा था। सरकारी कर्मचारियों के साथ मिल-मिला के चंदू ने गुरु जी को अपने सपुर्द करवा लिया और अनेक यातनाएं देते हुए ज्यादा दुख देने के लिए गुरु जी को रावी नदी के ठंडे पानी में नहलाया। इस प्रकार आप घोर यातनाएं सहते हुए ३० मई, १६०६ को शहीद हो गए।



"सिक्ख इतिहास" कृत प्रो. करतार सिंघ में श्री गुरु अरजन देव जी का जीवन-परिचय

*-स. ऊधम सिंघ**

"सिक्ख इतिहास" (भाग-१) पुस्तक में प्रो. करतार सिंघ ने बड़ी खूबसूरती से सिक्खों के दसों गुरु साहिबान के जीवन को संक्षेप में पेश करके एक बहुत ही महान कार्य किया है। उन्होंने प्रत्येक घटना को सन् एवं संवत् सहित लिखा है। लेखक ने पांचवें गुरु साहिब के जीवन-परिचय में भी उनके जन्म से लेकर उनके शहीद होने तक की प्रत्येक घटना और गुरु साहिब द्वारा किये गए महान कार्यों को बड़े विस्तार से प्रकट किया है।

लेखक ने पहले कांड में श्री गुरु अरजन देव जी के गुरिआई के पहले वर्षों के बारे में जिक्र किया है। गुरु साहिब का जन्म श्री गुरु रामदास जी के घर १५ अप्रैल, १५६३ (१९ वैसाख, संवत् १६२०) को गोइंदवाल में हुआ। आपके नाना श्री गुरु अमरदास जी आपको बहुत प्यार करते थे और उन्होंने जान लिया था कि वे ही आगे जाकर इस जिम्मेदारी को निभाएंगे। श्री गुरु अमरदास जी ने उनको "बाणी का बोहिथा" होने का भी वर दिया। यही कारण था कि गुरु साहिब बचपन से ही होनहार और संत-स्वरूप थे तथा प्रत्येक कार्य को अपने पिता श्री गुरु रामदास जी की आज्ञा समझकर सेवा करते थे। आप बचपन से ही प्रेम से गुरबाणी का पाठ करते और छोटी उम्र से ही धार्मिक कविताएं रचने लग पड़े। लेखक ने बड़ी सूबसूरती से गुरु साहिब के स्वभाव को उजागर किया है।

लेखक के अनुसार आपका विवाह १६ वर्ष की आयु में संवत् १६३६ को मौ गांव के निवासी श्री किशन चंद की सपुत्री गंगा जी के साथ हुआ और उनके घर २१ आषाढ़ संवत् १६५२ को श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जन्म हुआ। लेखक ने इसी अध्याय में श्री गुरु अरजन देव जी की परीक्षा और गुरिआई मिलने का भी जिक्र किया है। लेखक के अनुसार श्री गुरु रामदास जी ने अपने तीनों सपुत्रों से स्वभाव और उनकी समझ को अच्छी तरह परख लिया था।

श्री गुरु रामदास जी ने अपनी सचखंड वापसी निकट जान गोइंदवाल में सब संगत को इकट्ठा कर १ सितंबर, १५८१ (२ आश्विन, संवत् १६३८) को बाबा बुड्ढा जी से सारी रस्में पूरी करवाकर श्री गुरु अरजन देव जी को गुरगद्दी पर बिठाया।

दूसरे अध्याय में लेखक ने 'प्रिथीए की विरोधता' को प्रकट किया है। प्रिथीचंद श्री गुरु रामदास जी के तीनों पुत्रों में सबसे बड़ा था। दूसरे पुत्र श्री महादेव थे जो मस्त स्वभाव के थे। सबसे छोटे श्री गुरु अरजन देव जी थे। बड़ा होने के नाते प्रिथीचंद गुरगद्दी पर अपना हक समझता था, लेकिन जब उसे गुरगद्दी नहीं मिली तो वो तिलमिला उठा और उसने अपने पिता श्री गुरु रामदास जी से झगड़ा किया, उन्हें अपशब्द भी कहे। उसने कहा कि "मेरा हक मारा गया है। मैं अपना हक लेने के लिये पूरा जोर लगाऊंगा। जिसने मेरा हक छीना है मैं उसे चैन से नहीं बैठने दूंगा।" श्री गुरु रामदास जी के समझाने पर भी वो नहीं समझा तो गुरु

**VPO : चविंडा देवी, श्री अमृतसर। मो. : ९८५५५-९६९२२*

साहिब ने उसे 'मीणा' (मक्कार) कहा और हुक्म किया कि वो हमारे माथे न लगे। जब श्री गुरु रामदास जी ज्योति-जोत समा गए तो श्री गुरु अरजन देव जी गोइंदवाल से श्री अमृतसर आ गए। उन्होंने गुरु-पिता के सभी कार्यों को अपने हाथों में लिया जो वे शुरू कर गए थे।

उधर प्रिथीचंद ने अपनी चालें शुरू कर दीं और वो लोगों तथा इलाके के चौधरियों को कहने लगा कि मेरे पिता ने सारी जायदाद छोटे भाई को दे दी, मुझे और महादेव को कुछ नहीं मिला। चौधरियों के श्री गुरु अरजन देव जी से मिलने से गुरु साहिब ने सारी जायदाद और आमदनी के साधन प्रिथीचंद को दे दिए और खुद लंगर तथा दूसरे कार्यों के लिए संगत से आने वाली कार-भेंट पर ही निर्भर हो गए। प्रिथीचंद फिर भी नहीं टला और उसने कुछ मसंदों को अपनी ओर कर लिया और अपने आप को 'गुरु' कहलाने लग पड़ा। श्री गुरु अरजन देव जी अपने बड़े भाई की प्रत्येक बात को सहारते रहे और शांति से लंगर चलाते रहे व संगत में 'सतिनाम' का उपदेश देते रहे। जब आमदनी न होने से लंगर और दूसरे कार्यों में बाधा पड़ने लगी तो बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरदास जी, भाई साहलो जी, भाई जेठा जी आदि मुखी सिक्खों ने प्रिथीचंद की चालों के बारे में संगत को बताया और कार-भेंट (सेवा) सीधा गुरु-घर में भेजने को कहा।

प्रिथीचंद अपने बुरे बरताव से बाज न आया व गुरु साहिब से और ज्यादा ईर्ष्या करने लगा। गुरु साहिब ने श्री अमृतसर छोड़कर पश्चिम की ओर गांव वडाली में डेरा लगा लिया और वहीं उनके घर २१ आषाढ़, संवत् १६५२ को श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब का जन्म हुआ।

फिर प्रिथीचंद गुरु साहिब के घर पुत्र के जन्म से और भी दुखी हो गया। वो उसको मारने की चालें चलने लगा। उसने तो सोच रखा था कि गुरु जी के घर कोई संतान नहीं है जिससे उनके बाद गुरगद्दी मेरे बेटे मिहरबान को ही मिलेगी, परंतु परमात्मा के भाणे से हुआ इसके उलट। गुरु साहिब इन सब हरकतों को भी शांति से सहारते रहे।

लेखक ने यहां जिक्र किया है कि प्रिथीचंद बादशाह अकबर तक जा पहुंचा और वहां से मुंह की खाने पर भी उसके फौजदार सुलही खां को अपने साथ कर लिया। सुलही खां के भट्ठे में गिर कर मरने से भी वो न सुधरा। लेखक ने यहां इस घटना के घटने पर गुरु साहिब द्वारा उचारे शबद का जिक्र किया है :

सुलही ते नाराइण राखु ॥
सुलही का हाथु कही न पहुचै सुलही होइ मूआ नापाकु ॥ (पन्ना ८२५)

फिर प्रिथीचंद ने सुलही खां के भतीजे सुलबी खां से समझौता किया और वो भी दरिया ब्यास के पास तनखाह के कारण एक सराद से हुए झगड़े में मारा गया। लेखक ने यहां श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा निर्मित श्री हरिमंदर साहिब के मुकाबले गांव हेहर में एक ताल और दूसरा 'श्री हरिमंदर साहिब' बनाने का जिक्र किया। प्रिथीचंद गुरु साहिब की बराबरी न कर सका और मुंह की खाकर रह गया।

तीसरे कांड में लेखक ने सांझे सार्थक कार्यों और निर्मित स्थानों का जिक्र किया है कि किस तरह प्रिथीचंद की ईर्ष्या और आमदनी का कोई साधन न होने के बावजूद श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने पिता-गुरु द्वारा आरंभ किये कार्यों को कितने अडोलचित्त, शांति और भरोसे से परमात्मा का सहारा लेकर चालू रखा और समय रहते ये सब परेशानियां दूर हो गईं। इस कांड में लेखक ने 'दसवंध' की प्रथा का हवाला दिया और जिक्र किया है कि श्री गुरु रामदास

जी द्वारा चालू की गई दसवंध की प्रथा लोगों पर ठोसा गया कोई 'टैक्स' नहीं था। दसवंध केवल एक भेंटा या चढ़ावा है जिससे गुरु का लंगर और दूसरे कार्य संगत के सहयोग से चलते हैं। कई गैर-सिक्ख लेखकों ने इसको 'टैक्स' बताकर इसके गलत अर्थ निकाले हैं। लेखक ने इसका खंडन करते हुए दसवंध को गुरु-घर की मर्यादा का एक हिस्सा बताया और इससे गुरु-घर के कार्यों में सहयोग मिलता है।

श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा निर्मित स्थानों का लेखक ने आरंभ करने के संवत् से संपूर्ण होने तक की तिथि देते हुए लिखा है। श्री गुरु रामदास जी ने अपने शुभ हाथों से संवत् १६३४ को अमृत सरोवर का शिलान्यास किया और फिर श्री गुरु अरजन देव जी ने चौथे गुरु साहिब के ज्योति-जोत समाने के बाद इसे संपूर्ण करवाया। इस कार्य की कार-सेवा के मुख्य प्रबंधक बाबा बुड्ढा जी थे। फिर श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु रामदास जी के निवास-स्थान को पक्का करवाया और 'गुरु बाजार' के पास ही श्री गुरु रामदास जी के नाम से ड्योढ़ी बनवाई। इसके बाद श्री गुरु अरजन देव जी ने संतोखसर का ताल संवत् १६४५ में पक्का करवाया जिसकी खुदाई श्री गुरु रामदास जी ने संवत् १६२७ में करवाई थी। फिर गुरु अरजन साहिब ने अमृत सरोवर के बीच में श्री हरिमंदर साहिब की नींव संवत् १६४५ में रखवाई। यहां लेखक ने श्री हरिमंदर साहिब की नींव गुरु अरजन साहिब द्वारा उनके मुसलमान श्रद्धालु साईं मियां मीर जी से रखवाने का जिक्र किया है। गुरु अरजन साहिब ने श्री हरिमंदर साहिब के चार दरवाजे रखे जिसका उद्देश्य यह था कि ये चारों वर्णों के लिये खुले हैं और चारों दिशाओं से लोग इस परमात्मा के घर के दर्शन कर सकते हैं।

फिर श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री अमृतसर से १३-१४ मील दक्षिण की ओर १७ वैसाख, संवत् १६४७ को एक अन्य नगर बसाया और उसमें एक सरोवर की खुदवाई आरंभ की। गुरु जी ने इसका नाम 'तरनतारन' रखा। यहां गुरु साहिब ने कुष्ठ रोगियों के लिए रहने और उनकी दवा-दारू का भी प्रबंध किया। सरोवर के किनारे गुरु साहिब ने धर्म-स्थान की स्थापना की जहां रोगियों के दवा-दारू, सेवा-संभाल और सरोवर में स्नान करने, कीर्तन श्रवण करने से उनके तन और मन के रोग दूर होते। यहां लेखक ने अफसोस जताते हुए लिखा है कि बाद में सिक्खों ने इस आश्रम का ठीक प्रबंध न किया और यह ईसाई पादरियों के हाथों में चला गया। यह अब तक चालू है।

श्री गुरु अरजन देव जी अपने प्रचार-दौरे के दौरान दोआबा क्षेत्र के एक गांव डल्ला में पहुंचे। वहां पर जलंधर का सूबेदार अजीम खां गुरु जी के दर्शन को आया। वो गुरु जी का उपदेश, बाणी-कीर्तन सुन कर और प्रत्येक मनुष्य-मात्र के लिए अटूट लंगर बंटता देख बहुत खुश हुआ और उसने विनती की, "पातशाह! दोआबे में भी कोई नगर बसाओ, धर्म-स्थान बनाओ और इलाके के भाग्य जगाओ।" गुरु साहिब ने विनती स्वीकार कर २१ मार्गशीर्ष, संवत् १६५० को करतारपुर (जलंधर) की नींव रखकर नगर बसाया।

जब गुरु साहिब अपने भाई प्रिथीचंद की ईर्ष्या के कारण श्री अमृतसर छोड़कर वडाली जा पहुंचे तो वहां पर पानी की कमी को दूर करने के लिए इलाके की संगत की विनती करने पर गुरु साहिब ने संवत् १६५४ को एक ऐसा कुआं बनवाया जिस पर छः हरट चल सकते थे। इसी कारण इस नगर का नाम 'छेहरटा' पड़ गया।

श्री गुरु अरजन देव जी ने संवत् १६५४ में अपने पुत्र के जन्म की खुशी में जिला गुरदासपुर में ब्यास दरिया के उत्तरी किनारे पर एक नगर बसाया जिसका नाम 'श्री गोबिंदपुर' रखा। बाद में इसका नाम 'श्री हरिगोबिंदपुर' प्रसिद्ध हुआ।

संवत् १६५६ में गुरु साहिब ने लाहौर के डब्बी बाजार में एक बालउी तैयार करवाई और धर्मशाला बनवाई। बाद में शाहजहां के हुक्म से बाउली पाट दी गई। धर्मशाला की जगह मस्जिद बना दी गई। महाराजा रणजीत सिंघ के समय दोबारा बाउली की सेवा की गई और गुरुद्वारे की पहले जैसी इमारत बनाई गई।

माझा क्षेत्र में गुरसिक्खी के प्रचार और जीवों का उद्धार करते हुए गुरु जी सहिंसरा गांव पहुंचे। जहां गुरु जी ठहरे उसे 'गुरु की रौड़' कहते थे। बाद में श्री गुरु तेग बहादर जी ने वहां एक बाग लगवाया और इसका नाम 'गुरु का बाग' रखा।

संवत् १६५९-६० में गुरु साहिब ने 'रामसर' नाम का एक छोटा-सा सरोवर बनवाया। इसी सरोवर के किनारे बैठकर आपजी ने 'सुखमनी साहिब' की बाणी रची और इसी स्थान पर गुरु साहिब ने भाई गुरदास जी से श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ लिखवाई।

अध्याय चार सबसे महत्वपूर्ण है। इस अध्याय में लेखक ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ की तैयारी का जिक्र किया है। लेखक श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन के निम्नलिखित कारण बताता है :

१. श्री गुरु अरजन देव जी जानते थे कि उनका बड़ा भाई प्रिथीचंद उनसे ईर्ष्या करता है और वह अपने आदमियों द्वारा सिक्ख धर्म और पहले गुरु साहिबान द्वारा रची गई पवित्र बाणी में कोई मिलावट न कर दे, इसी कारण गुरु साहिब ने मिलावट रोकने और गुरु साहिबान की सच्ची बाणी को साफ-शुद्ध रखने के लिए बीड़ तैयार करने का मन बनाया।

२. गुरु साहिब जानते थे कि अगर यह मिलावट हो गई तो पूर्व गुरु साहिबान के उपदेशों, उसूलों, सिद्धांतों और विश्वासों के उलट बातें भी बाणी में घुसपैठ कर जाएंगी।

३. अगर ऐसा होता तो सिक्ख मर्यादा को बिगाड़ कर पता नहीं कैसा रूप दे दिया जाता!

४. सिक्खी को शुद्ध, तंदरुस्त राहों पर जत्थेबंद करना गुरु साहिब का परम उद्देश्य था।

५. गुरबाणी को असली और शुद्ध रूप में इकट्ठा किया जाए ताकि सिक्ख इसके पाठ से गुर-उपदेश व्यवहारिक रूप में ग्रहण कर सकें।

६. गुरु साहिब सिक्ख जगत के निश्चय-विश्वास को एक केंद्र से जोड़ना चाहते थे ताकि कौम एकता में बंधी रहे और इस संबंध में किसी प्रकार के मतभेद, झगड़े और जात-पात की गुंजाइश न रहे।

७. सिक्ख पंथ की जत्थेबंदी, एकता, कौमी जीवन और गुरसिक्खी के प्रचार व उन्नति के लिए यह कार्य अति जरूरी था।

लेखक लिखता है कि यह काम बहुत बड़ा था। गुरु साहिब ने सबसे पहला काम यह किया कि जहां कहीं से भी हो सके गुरबाणी इकट्ठी की जाए। उसके बाद सारी बाणी को तरतीब देकर, उसको ठीक तरह सोधकर लिखना-लिखवाना था। लेखक ने यहां गुरु साहिब के श्री गुरु ग्रंथ साहिब की रचना करने की खबर प्रिथीचंद द्वारा बादशाह अकबर तक पहुंचाने के बारे में लिखा है कि इसमें इसलाम धर्म, हजरत मुहम्मद साहिब और हिंदू अवतारों के विरुद्ध बातें लिखी हैं। फिर बादशाह अकबर के संवत् १६५५ को गोइंदवाल आने और बाणी सुनकर खुश होकर गुरु-घर के लिए जागीर देने का भी

लेखक ने जिक्र किया है। गुरु साहिब ने उसी समय उस वर्ष फसल अच्छी न होने के कारण जमींदारों का मामला माफ करने के लिए कहा। बादशाह ने इसी तरह से किया। गुरु साहिब का यश और भी बढ़ा।

फिर गुरु साहिब ने बाबा मोहन जी से सैंचियां लाने के लिए बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी को भेजा लेकिन उन्होंने सैंचियां देने से इंकार कर दिया। फिर गुरु जी खुद नंगे पांव गोइंदवाल गए और बाबा मोहन जी के चौबारे के पास जा खड़े हुए। उस समय बाबा जी समाधिलीन थे। गुरु जी ऊंची और मीठी सुर में सारंदे के साथ यह शबद उचारा :

मोहन तेरे ऊचे मंदर महल अपारा ॥
मोहन तेरे सोहनि दुआर जीउ संत धरम साला ॥ *(पन्ना २४८)*

(कई विद्वानों का मत है कि उक्त शबद का उच्चारण गुरु जी ने परमात्मा की स्तुति में किया है, क्योंकि गुरबाणी में मात्र परमात्मा की ही स्तुति की गई है न कि किसी व्यक्ति विशेष की। वे 'मोहन' शब्द से 'बाबा मोहन' को संबोधन होना नहीं बल्कि गुरु जी द्वारा परमात्मा को 'मोहन' शब्द से याद किया बताते हैं।)

बाबा जी की समाधि खुल गई। पहले तो वे नाराज हुए, मगर फिर उन्होंने गुरु जी को सैंचियां दे दीं और गुरु जी बड़े सत्कार से उन्हें श्री अमृतसर लेकर आए। गुरु साहिब ने गुरु साहिबान की बाणी एकत्र करने के साथ भक्तों की बाणी भी इकट्ठी की। गुरु जी ने पंजाब और बाहर से भी जो भक्तों की बाणी मिल सकी उसे उनके भक्तों से सुना व प्राप्त किया। इस प्रकार पंद्रह भक्त साहिबान की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल करने के लिए प्रवान की, जिनमें से ज्यादातर कथित नीच और अछूत जाति से संबंध रखते थे। गुरु साहिब ने कुछ गुरसिक्खों की बाणी भी प्रवान की। फिर गुरु साहिब ने सारी एकत्र की हुई बाणी को 'रामसर' के स्थान पर श्री (गुरु) आदि ग्रंथ साहिब के रूप में अंकित किया और श्री आदि ग्रंथ साहिब का पहला प्रकाश संवत् १६६१ में श्री हरिमंदर साहिब में किया तथा बाबा बुड्ढा जी को प्रथम ग्रंथी नियुक्त किया।

यहां पर लेखक ने श्री गुरु अरजन देव जी की उपमा करते हुए जिक्र किया है कि गुरु साहिब ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ तैयार कर अपने नाना श्री गुरु अमरदास जी द्वारा मिले वर 'बाणी का बोहिथा' फरमान को सच साबित कर दिया। श्री गुरु अरजन देव जी की प्रमुख बाणियां--"बारह माहा, बावन अखरी, गउड़ी थिती, सुखमनी साहिब और गाथा" हैं।

लेखक के विचारों के अनुसार इस तरह गुरु साहिब ने इस बात का सबूत दिया कि आत्मिक ज्ञान केवल खास जातियों के लिए नहीं है बल्कि यह सभी इंसानों के हृदयों में प्रकाश कर सकता है।

श्री गुरु अरजन देव जी सिक्ख धर्म के पहले शहीद हैं और इन्हीं के नक्शेकदम पर चल कर सिक्खों ने कुर्बानियां देते हुए सिक्ख धर्म को जीवित रखा। अध्याय ५ में लेखक ने श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी का वर्णन किया है। लेखक ने गुरु साहिब की शहीदी के तीन कारणों का जिक्र किया है। पहला कारण है हिंदुओं और मुसलमानों का सिक्ख धर्म धारण करना। श्री गुरु नानक साहिब द्वारा स्थापित किए सिक्ख धर्म के पौधे को दूसरे, तीसरे और चौथे गुरु साहिब ने उसकी रखवाली करते व बड़ा करते हुए उसे प्रफुल्लित किया। पांचवें गुरु साहिब ने इस धर्म को एक ऐसा 'ग्रंथ' प्रदान किया जिसकी रहनुमाई में यह धर्म विशाल रूप धारण कर गया। इसकी छांव में दूसरे धर्मों के लोग भी

आकर ठंडक लेने लगे। यही एक पहला कारण है जो गुरु साहिब की शहीदी का कारण बना। मुसलमानों का सिक्ख हो जाना एक ऐसा मामला था जिससे शरई कट्टर मुसलमान आक्रोश में आ गए। उधर ब्राह्मण और दूसरे उच्च जाति के कहलवाने वाले हिंदू गुरु साहिब के चारों वर्णों को एक करने, छूत-छात और धार्मिक भ्रमों को त्यागने को अपना धर्म भ्रष्ट होना मानते थे। उन सभी ने बादशाह अकबर के समय भी गुरु साहिब के विरुद्ध शिकायतें कीं लेकिन उस बादशाह ने सिक्खी उसूलों, सिक्खी की रहित मर्यादा, रहने-सहने के ढंग और सिक्खी प्रचार के विरुद्ध कोई भी बुरी बात नहीं की बल्कि श्रद्धा प्रकट की और सहायता भी की। बादशाह अकबर का सन् १६०५ में निधन हो जाने से उसका लड़का जहांगीर बादशाह बना। वो कट्टर और मजहबी ईर्ष्या से भरा हुआ था। उसके बादशाह बनने से गुरु साहिब के विरोधी सोच वालों को मौका मिल गया और उन्होंने गुरु साहिब के विरुद्ध जहांगीर के कान भरने शुरू कर दिए कि या तो सिक्खों को मुसलमान बनाया जाए या उनको शहीद किया जाए। लेखक ने यहां जहांगीर की आत्मकथा 'तुज़के-जहांगीरी' में लिखित गुरु साहिब के विरुद्ध बयान का भी जिक्र किया और फुटनोट देते हुए उसका बड़ी खूबसूरती से उत्तर दिया है कि बादशाह सुनी-सुनाई बातों को सच मान बैठा था और पूछ-पड़ताल किए बगैर फैसले कर चुका था।

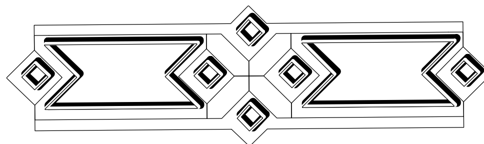
लेखक बताता है कि दूसरा कारण जहांगीर से बागी हुए उसके पुत्र खुसरो की गुरु जी द्वारा मदद करना था। खुसरो की मदद करने का इलजाम लगाकर भी जहांगीर ने गुरु जी को दोषी साबित करने की कोशिश की।

तीसरा कारण चंदू की बेटी के रिश्ता से इंकार करना था। चंदू अपनी बेटी का रिश्ता गुरु जी के साहिबजादे (गुरु) हरिगोबिंद साहिब से करना चाहता था, लेकिन गुरु जी ने उसके गुरु-घर विरोधी कामों को देखकर उससे किसी प्रकार का नाता न जोड़ने की ठानी।

लेखक के अनुसार जब गुरु साहिब को बादशाह का संदेशा मिला तो वे जान गए थे कि हमारा ज्योति-जोत समाने का समय आ गया है, इसलिए जब वे लाहौर की ओर रवाना होने लगे तो हुक्म कर गए कि हमारे जाने के बाद श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब को गुरगद्दी की जिम्मेदारी दी जाए। यह रस्म २५ मई, १६०६ को पूरी की गई।

लेखक ने यहां एक और बात का जिक्र किया कि चंदू लाहौर का निवासी था और उसने हकूमत को एक लाख रुपये देकर गुरु जी को अपने कब्जे में ले लिया। उसने गुरु जी को कष्ट देने शुरू कर दिए। आषाढ़ का महीना था। गर्मी बहुत पड़ रही थी। पहले गुरु साहिब को भोजन न दिया गया और न ही सोने दिया गया। गुरु साहिब हरदम परमात्मा की बंदगी में लीन रहते। अगले दिन गुरु जी को उबलते पानी में बिठाया गया। तीसरे दिन गुरु जी को गर्म लोह पर बिठाकर नीचे आग जलाए रखी और ऊपर से गर्म रेत शरीर पर डाली गई। गुरु साहिब का शरीर छालों अथवा फफोलों से भर गया। छालों के साथ भरे शरीर पर रावी के ठंडे पानी का पड़ना अति कष्टदायक था। इस प्रकार गुरु साहिब १ आषाढ़, संवत् १६६३ (३० मई, १६०६) को शहीद हो गए।





श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी का संक्षिप्त अवलोकन

*-डॉ. परमवीर सिंघ**

अंजुलीआ : यह शब्द 'अंजुली' का बहुवचन है, जिसका तात्पर्य है हाथ जोड़कर प्रार्थना करना। गुरबाणी में 'अंजुली' का अर्थ 'विनती' है। विनती प्रभु के आगे की जाती है क्योंकि वो सर्वशक्तिमान तथा सबसे बड़ा है--*"करि साधू अंजुली पुनु वडा हे ॥"* श्री गुरु अरजन देव जी ने इस काव्य रूप का इस्तेमाल 'मारू' राग में किया है। इसमें गुरु जी ने माया में खचित तथा माया से दूर भाग जाने वालों की मनोस्थिति का जिक्र करते हुए बताया है कि दोनों दशाओं में मनुष्य भटकता रहता है, मगर जो मनुष्य दोनों दशाओं में संतुलन कायम कर लेता है वही सुखी रहता है।

सलोक सहसक्रिती : यह बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में राग-मुक्त बाणियों में दर्ज है। श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा रचित सलोक इस भाषा में मिलते हैं। सहसक्रिती भाषा के बारे में 'शबदार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब' में बताया गया है कि प्राचीन समय में प्राकृत भाषाओं के मुकाबले में एक बनावटी-सी भाषा प्रचलित थी जिसे 'गाथा' या 'सहसक्रिती' कहते थे। यह साधु-संतों के डेरों पर सारे हिंदोस्तान में समझी जाती थी। यह अलग-अलग राज्यों की भाषाओं की व्याकरणक भिन्नताओं से आजाद होती थी। इस शीर्षक के अंतर्गत श्री गुरु अरजन देव जी के ६७ सलोक दर्ज हैं। गुरु जी इस बात पर जोर देते हैं कि धर्म के काम में देर नहीं करनी चाहिए। प्रभु-नाम को दृढ़ करते हुए लोभ से दूर रहना चाहिए। संतों की संगत में सब पापों का नाश हो जाता है।

सवैये : श्री गुरु ग्रंथ साहिब की रागमुक्त बाणी में श्री गुरु अरजन देव जी के दो बंदों में रचित २० सवैये मिलते हैं। इन सवैयों में गुरु जी बताते हैं कि नाशवान शरीर अज्ञानतावश मोह-माया में फंसा हुआ है। इससे बचने के लिए जीव को प्रभु का आश्रय लेना पड़ता है। प्रभु की प्राप्ति के लिए बहुत-से लोग शास्त्रों का ज्ञान हासिल करने, भस्म मलने, तीर्थों का भ्रमण करने आदि में लगे हुए हैं। गुरु जी समझाते हैं कि परमात्मा बख्शिश करे तभी जीव उसके साथ मिलाप कर सकता है। सतिसंगत तथा अरदास इस उद्देश्य की पूर्ति में महत्वपूर्ण योगदान डालते हैं :

प्रभ दातउ दातार पर्यिउ जाचकु इकु सरना ॥
मिलै दानु संत रेन जेह लगि भउजलु तरना ॥
बिनति करउ अरदासि सुनहु जे ठाकुर भावै ॥
देहु दरसु मनि चाउ भगति इहु मनु ठहरावै ॥
(पन्ना १३८६)

सुखमनी साहिब : श्री गुरु अरजन देव जी की यह प्रसिद्ध बाणी है। इसकी प्रसिद्धि इस बात से प्रमाणित होती है कि सिक्ख के रूप में बहुत-से गली-मोहल्लों में न केवल इसका साप्ताहिक पाठ होता है बल्कि इस शीर्षक के अंतर्गत सोसायटियां भी बनी हुई हैं।

इस बाणी में २४ असटपदियां हैं। प्रत्येक असटपदी की आठ-आठ पउड़ियां हैं और हर

**सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो: ९८७२०-७४३२२*

पउड़ी में १० पंक्तियां दर्ज हैं। प्रत्येक असटपदी के आरंभ में सलोक है। 'रहाउ' की दो पंक्तियां हैं जो सारी बाणी का केंद्रीय भाव प्रकट करती हैं : *"सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु ॥ भगत जना कै मनि बिस्राम ॥"* सिक्ख इतिहास के अनुसार इस बाणी की रचना श्री अमृतसर में 'रामसर सरोवर' के किनारे बैठ कर पंचम पातशाह द्वारा किए जाने का जिक्र मिलता है।

सोलहे : इस शीर्षक वाली बाणी में श्री गुरु अरजन देव जी के १४ शबद हैं। गुरु जी बताते हैं कि परमात्मा ने सृष्टि की सृजना की है और इस सृष्टि में जीवात्मा शरीर रूपी पिंजरे में फंसी हुई योगी की भांति भटक रही है। इसका असली ठिकाना परमात्मा है। परमात्मा के सोलहे (गीत) गाता हुआ जीव उसके साथ मिलाप कर सकता है।

गाथा : किसी ऐतिहासिक प्रकरण या रचना को 'गाथा' कहा जाता है। गाथा में समोए प्रकरण का उद्देश्य मनुष्य-मनुष्य के भीतर सदाचारक कीमतों का विकास करना होता है। गुरबाणी में गाथा के इसी उद्देश्य पर जोर देते हुए कहा गया है :

गाथा गुंफ गोपाल कथं मथं मान मरदनह ॥
हतं पंच सत्रेण नानक हरि बाणे प्रहारणह ॥
(पन्ना १३६०)

इसका तात्पर्य यह है कि गाथा में हरि-यश की गाथा गुंथन की है। इसको विचारने से अहंकार का नाश होता है और परमात्मा की सिफत-सलाह व प्रशंसा के तीर चलाने से कामादिक शत्रुओं का नाश हो जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गाथा से संबंधित गुरु अरजन साहिब के २४ सलोक दर्ज हैं, जिनमें संस्कृत भाषा का प्रयोग किया गया है। गाथा को गुरु जी ने प्रभु की सिफत-सलाह के लिए इस्तेमाल किया है :

गाथा गूड़ अपारं समझणं बिरला जनह ॥
संसार काम तजणं नानक गोबिंद रमणं साध संगमह ॥ *(पन्ना १३६०)*

गुणवंती : गुणों से भरपूर जीव-स्त्री को 'गुणवंती' कहा गया है। गुरु अरजन साहिब की इस बाणी में गुणवंती जीव-स्त्री के गुणों का जिक्र किया गया है ताकि उससे प्रेरणा लेकर दूसरे जीव भी अपने मन में प्रभु-मुखी गुण धारण कर लें। प्रभु-प्रीति से दूर रह जाने वाले जीवों को आशावान किया गया है कि वे भी गुणवंती की भांति गुणों को धारण करके प्रभु-प्रीति प्राप्त कर सकते हैं :

हउ आइआ दूरहु चलि कै मै तकी तउ सरणाइ जीउ ॥
मै आसा रखी चिति महि मेरा सभो दुखु गवाइ जीउ ॥
इतु मारगि चले भाईअड़े गुरु कहै सु कार कमाइ जीउ ॥
तिआगें मन की मतड़ी विचारें दूजा भाउ जीउ ॥
इउ पावहि हरि दरसावड़ा नह लगै तती वाउ जीउ ॥ *(पन्ना ७६३)*

चउबोले : 'चउबोले' उस बाणी को कहा जाता है जिसमें चार किस्मों की भाषाओं का उल्लेख मिलता है। 'शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब' में बताया गया है कि संमन, मूसन, जमला तथा पतंग, चार आदमियों के प्रति उच्चारण हुए बोले या वचन को 'चउबोले' कहा जाता है। श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा इस बाणी के ग्यारह बंद हैं जिनमें प्रभु के प्रति प्रेम-भावना का प्रकटावा किया गया है।

थिती : यह बाणी थितों से संबंधित है। एक-एक थित के हिसाब से एक-एक काव्यबंद लिखा जाता है। चंद्रमा की गति के हिसाब से पूर्णमाशी

तथा अमावस आती है जिसे महीने का शुक्ल या सुदी तथा कृष्ण या वदी-अंधेरा पक्ष भी कहा जाता है। गुरु अरजन साहिब की इस बाणी की १७ पउड़ियां हैं और प्रत्येक पउड़ी से पहले एक सलोक है। 'रहाउ' की दो पंक्तियां इसके अलावा हैं। श्री गुरु अरजन देव जी ने १४ पउड़ियों में १४ थितों का वर्णन करने के बाद अमावस और चंद्रमा से संबंधित एक-एक पउड़ी और सलोक का उच्चारण किया है। आखिरी पउड़ी में थितों के वहमों-भ्रमों से दूर रहने का संदेश दिया गया है कि किसी भी दिन प्रभु का नाम-सिमरन करने से प्रभु-प्राप्ति संभव है :

कोई गावै को सुणै कोई करै बीचारु ॥
को उपदेसै को द्रिड़ै तिस का होइ उधारु ॥ . . .
जिनि जानिओ प्रभु आपना नानक तिसहि रवाल ॥ (पन्ना ३००)

दिन रैणि : चार बंद वाली इस बाणी में गुरु साहिब मनुष्य को शुभ कार्य करने का उपदेश करते हैं। प्रभु-भक्ति पर जोर देते हुए गुरु जी कहते हैं कि जैसे पानी के बिना वृक्ष सूख जाते हैं उसी तरह नाम-सिमरन के बगैर जीवन में गुणों का संचार नहीं हो सकता। प्रभु-भक्ति द्वारा मनुष्य दिन-रात दोनों समय हरा-भरा अर्थात् चढ़दी कला में रहता है, अवगुण उसके निकट नहीं आते :

दिनु रैणि जिसु न विसरै सो हरिआ हौवै जंतु ॥ (पन्ना १३७)

पहरे : मनुष्य के जीवन को चार पहरों में बांट कर प्रत्येक पहर में प्रभु-भक्ति पर जोर दिया गया है। गुरु नानक साहिब, श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन देव जी ने इस काव्य रूप का प्रयोग मनुष्य को प्रभु-भक्ति में लगाने के लिए किया है। सिरीरागु में दर्ज पांच पदों वाले एक शबद में गुरु अरजन साहिब बताते हैं कि "हे जीव! जीवन अंधेरा और प्रभु-मिलाप प्रकाश है। गुरु जी मनुष्य को समझाते हैं कि जीवन रूपी रात बीते जा रही है अर्थात् बुढ़ापा आ गया है, तू अभी भी प्रभु-प्रीति द्वारा अपने जीवन में प्रकाश ला सकता है।"

सगली रैणि गुदरी अंधिआरी सेवि सतिगुरु चानणु होइ ॥ (पन्ना ७८)

फुनहे : संस्कृत का शब्द है 'पुन:', जिसका अर्थ है फिर, दोबारा-दोबारा। 'पुन:' का तद्भव रूप 'फुनहा' गुरबाणी में प्रयोग किया गया है। 'फुनहा' का बहुवचन है 'फुनहे', जिसका प्रयोग श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी बाणी में किया है। 'फुनहे' शीर्षक के अंतर्गत बाणी के २३ पदे हैं जिनमें दुनियावी विचारों से दूर रहकर प्रभु-प्रशंसा पर जोर दिया गया है। दुनियावी पदार्थ नष्ट होने वाले हैं, केवल प्रभु ही स्थिर रहने वाला है। प्रभु-मिलाप के लिए दुनियावी विचारों, वहमों-भ्रमों आदि का नष्ट होना आवश्यक है जो कि सतिसंगत में आसानी से संभव हो सकता है। प्रभु के साथ जुड़े हुए जीवों में सब सुकर्म हो जाते हैं :

वैदा संदा संगु इकठा होइआ ॥
अउखद आए रासि विचि आपि खलोइआ ॥
जो जो ओना करम सुकरम होइ पसरिआ ॥
हरिहां दूख रोग सभि पाप तन ते खिसरिआ ॥ (पन्ना १३६३)

बारह माहा : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दो 'बारह माहा' हैं--एक गुरु नानक साहिब का 'तुखारी' राग में है और दूसरा गुरु अरजन साहिब द्वारा रचित राग 'माझ' में। इनमें बारह देसी महीनों का वर्णन है। ग्यारह महीनों में वियोग की दशा उत्पन्न कर बारहवें महीने में प्रभु-मिलाप का जिक्र किया जाता है। वियोग की दशा में विरह-अग्नि पैदा होती है जो प्रीतम पति के प्रति

आकर्षण पैदा करने का कार्य करती है। मिलाप सुखदाई जीवन का अंग माना जाता है।

श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा राग 'माझ' में रचित 'बारह माहा' में १४ पदे हैं। पहले पदे में जीवन-उद्देश्य बताते हुए कहा गया है कि जैसे पानी के बिना वृक्ष सूख जाता है उसी तरह प्रभु के नाम के बिना मनुष्य का जीवन किसी काम का नहीं। अगले बारह पदों में बारह महीनों का जिक्र करते हुए आखिरी पदे में नाम-सिमरन का महातम बताया गया है कि जो जीव प्रभु से जुड़े हुए हैं उनके लिए सभी माह और दिन शुभ हैं। दिनों और महीनों की विचार किए बगैर प्रभु के नाम-सिमरन से परमात्मा की कभी भी जीवों पर बख्शिश संभव है।

बावन अखरी : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दो 'बावन अखरिआं' हैं और दोनों ही 'गउड़ी' राग में दर्ज हैं। एक 'बावन अखरी' श्री गुरु अरजन देव जी और दूसरी भक्त कबीर जी की है। 'बावन अखरी' देवनागरी के ५२ अक्षरों पर आधारित है। गुरु साहिब की 'बावन अखरी' में ५५ पउड़ियां हैं। हर पउड़ी वर्णमाला के एक-एक अक्षर को लेकर आरंभ होती है। संस्कृत के पूरे अक्षरों का वर्णन इस बाणी में नहीं मिलता, क्योंकि संस्कृति वर्णमाला के सभी अक्षर गुरमुखी में नहीं आ सकते। गुरु जी ने अक्षरों का उच्चारण वही रखा है जो उस समय लोगों की जुबान पर चढ़ा हुआ था या जैसे पांधे (अध्यापक) विद्यार्थियों से उच्चारण करवाते थे।

इस बाणी में 'रहाउ' पद से इस बाणी का केंद्रीय भाव प्रकट होता है कि सिक्ख संत-जनों की चरण-धूल प्राप्त करने के लिए प्रभु के आगे प्रार्थना करता है :

करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥
तेरे संतन की मनु होइ रवाला ॥ (पन्ना २५०)

इस बाणी के आरंभ में नौ तुकों का एक सलोक दर्ज है जो कि ५५वीं पउड़ी के बाद फिर दोहराया गया है। इसमें गुरु के महत्व को उजागर किया गया है। इस बाणी में गुरु जी कहते हैं कि सृष्टि में पैदा हुई प्रत्येक वस्तु एवं हस्ती को अक्षरों द्वारा दर्शाया जा सकता है, लेकिन परमात्मा का वर्णन करने के लिए दुनियावी अक्षर नाकाफी हैं :

द्रिसटिमान अखर है जेता ॥
नानक पारब्रहम निरलेपा ॥ (पन्ना २६१)

बिरहड़ा : बिरहड़ा का अर्थ है 'विछोड़ा'। 'बिरहड़ा' शीर्षक के अंतर्गत गुरु साहिब की तीन शबदों की बाणी आसा राग में दर्ज है। इस बाणी में प्रभु-विछोड़े का वर्णन करते हुए उससे मिलन की तड़प का वर्णन किया गया है। इस बाणी में बताया गया है कि विकारों ने जीवों को जकड़ा हुआ है और जो जीव सतिगुरु की चरण-शरण में रहते हैं वे विकारों से मुक्त हो गए :

कामु क्रोधु लोभु तजि गए पिआरे सतिगुर चरनी पाइ ॥ (पन्ना ४३१)

वारां : श्री गुरु अरजन देव जी ने गउड़ी, गूजरी, जैतसरी, रामकली, मारू, बसंत रागों में छ: वारों की रचना की है। वारों के साथ सलोक भी दर्ज हैं जो वार की गति को प्रचंड करने में योगदान देते हैं। यहां गुरु साहिब द्वारा रचित वारों की संक्षेप में जान-पहचान दी जा रही है :-

१. गउड़ी की वार : श्री गुरु अरजन देव जी ने इस वार को *"राइ कमालदी मौजदी की वार की धुनि उपरि गावणी"* का आदेश किया है। 'शबदार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब' में बताया गया है कि बार देश का सरदार कामलुद्दीन था।

उसने अपने भाई सारंग को जहर देकर मार दिया। उसकी स्त्री अपने नाबालिग पुत्र मुअज्जुद्दीन को लेकर मायके चली गई। मुअज्जुद्दीन बड़ा हुआ तो ननिहाल की सेना को साथ लेकर उसने कमालुद्दीन के साथ जा लड़ाई की और उसको मार कर लड़ाई जीती। ढाढियों ने इस वार्ता को वार में गायन किया है। इस वार में गुरु जी द्वारा रचित २१ पउड़ियां और ४२ सलोक दर्ज हैं, जिनके द्वारा जीव की हालत उस चोर जैसी बताई गई है जिसको सूली पर चढ़ाया जाता है। मनमुख जीव हंस की नकल करते हैं लेकिन उनकी उड़ान मुर्गे जितनी होती है, वे ज्यादा दूर तक नहीं जा सकते। गुरु साहिब समझाते हैं कि प्रभु के साथ जुड़ने से प्रेत रूपी मन देवता जैसा हो जाता है। सतिसंगत में बेमुख भी प्रवान किए जाते हैं, साध-जनों की संगत में वे भी दुनियावी भवसागर को पार कर जाते हैं।

२. गूजरी की वार : श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा रचित इस वार की २१ पउड़ियां और ४२ सलोक हैं। हर पउड़ी में आठ-आठ पंक्तियां हैं, लेकिन २०वीं पउड़ी पांच पंक्तियों की है। इसी तरह सलोकों में ३७ सलोक एक समान दो-दो पंक्तियों के हैं और बाकी के पांच सलोकों की पंक्तियां दो से ज्यादा हैं। इस वार में गुरु जी कहते हैं कि मनुष्य का मन बुराई की ओर ज्यादा भागता है और अच्छे कार्यों के प्रति आलस्य करता है। मन को बुराई से मोड़ कर अच्छे कार्यों में लगाना चाहिए। यह कार्य आसानी से हो जाता है अगर उन गुरमुखों की संगत की जाए जिनके दर्शन करते ही मन में से दुरमति दूर हो। ऐसे व्यक्ति मिलते तो कम ही हैं लेकिन फिर भी यह नहीं कि ऐसी शख्सियतें मौजूद नहीं हैं। उनको ढूंढ कर, उनकी संगत करने से मन बुराई से दूर हो जाता है। गुरु साहिब ऐसे जीवों का वर्णन करते हैं जिनका मन सतिसंगत में आकर भी बुराई से दूर नहीं होता। गुरु जी ऐसे जीवों की तुलना उस कड़छी के साथ करते हैं जो कि स्वाद भरपूर सब्जी में रहती हुई भी उसका स्वाद नहीं ले सकती। गुरु जी गुरमति में प्रभु-प्राप्ति का सूत्र बयान करते हुए बताते हैं :

नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ *(पन्ना ५२२)*

३. जैतसरी की वार : श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा रचित इस वार की २० पउड़ियां हैं और हरेक पउड़ी के साथ दो-दो सलोक दर्ज हैं। गुरु साहिब बताते हैं कि जगत में बहुत सारे मीठे पदार्थ मौजूद हैं और दुनियावी जीव उनकी ओर खिंचे चले आते हैं। प्रभु-प्रेमियों को प्रभु-सिमरन के बिना बाकी सभी दुनियावी पदार्थ फीके लगते हैं। भक्तों की प्रभु के साथ प्रीति मछली और पानी, चात्रिक और बूंद, भंवरे और सुगंध की तरह होती है। आठों पहर प्रभु-प्रीति में जीवन बसर करने वाले ऐसे भक्तों के लिए सब घड़ियां, पल, मुहूर्त, दिन-महीने, थितें, वार आदि शुभ होते हैं।

४. बसंत की वार : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में २२ वारों में से सबसे छोटी वार है जिसकी केवल तीन पउड़ियां हैं। इस वार में कोई सलोक दर्ज नहीं है। 'शबदार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब' में इस वार के छोटी होने का कारण बताया गया है कि गुरु साहिब ने अभी तीन पउड़ियों की ही रचना की थी कि लांगरी (रसोइया) ने आकर विनती की कि लंगर तैयार है, पंगत आपकी प्रतीक्षा में बैठी है। इस तरह गुरु जी 'वार-रचना' को बीच में ही छोड़ लंगर में चले गए,

इस कारण यह वार छोटी ही रही। शबदार्थ के कर्त्ता द्वारा पेश की गई यह साखी गुरु साहिब की शबद-गुरु के साथ प्रेम वाली भावना के साथ मेल खाती नहीं लगती, इसलिए ऊपर पेश किए गए तर्क को सही नहीं माना जा सकता। कारण कुछ भी हो, गुरु साहिब द्वारा रचित इस छोटी वार में संपूर्ण और भावपूर्ण गुरमति संदेश पेश होता है। गुरु जी इस वार में बताते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार बहुत ही ताकतवर हैं। इनको वश में नहीं किया जा सकता और ये जीव की दिशा और दशा दोनों ही बदल देते हैं। इसका भावार्थ यह नहीं कि इनको बेकाबू ही समझ लिया जाए। गुरु जी की शिक्षा द्वारा परम सत्य के साथ जुड़कर मनुष्य इनको काबू में कर सकता है :

पंजे बधे महाबली करि सचा ढोआ ॥
आपणे चरण जपाइअनु विचि दयु खड़ोआ ॥
रोग सोग सभि मिटि गए नित नवा निरोआ ॥
(पन्ना ११९३)

५. *मारू की वार :* इस वार की २३ पउड़ियां हैं और प्रत्येक पउड़ी के साथ ३-३ सलोक दर्ज हैं। इस वार में गुरु साहिब बताते हैं कि मनुष्य के जीवन का उद्देश्य प्रभु-प्राप्ति है, लेकिन हउमै के कारण, सतिसंगत के बिना इस उद्देश्य की प्राप्ति संभव नहीं। गुरु जी कहते हैं कि प्रभु की प्राप्ति के लिए मनुष्य भेष बहुत धारण करता है, कर्मकांड करता है, धर्म-ग्रंथों को बहुत पढ़ता है, लेकिन हउमै के कायम रहने के साथ वो परम उद्देश्य की प्राप्ति से खाली रह जाता है। प्रभु-प्राप्ति का मूल सूत्र बताते हुए गुरु जी समझाते हैं:

पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥
होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥
मुआ जीवंदा पेखु जीवंदे मरि जानि ॥
जिन्हा मुहबति इक सिउ ते माणस परधान ॥
(पन्ना ११०२)

६. *रामकली की वार :* २२ पउड़ियों और ४४ सलोकों वाली गुरु अरजन साहिब की यह वार भी जीव को प्रभु-सिमरन की ओर प्रेरित करती है। गुरु साहिब बताते हैं कि बहुत सारे जीव अपने-अपने तरीके से प्रभु को पाने का यत्न करते हैं लेकिन इस कार्य के लिए उन्होंने जो मार्ग धारण किया हुआ है वो सही नहीं है। गुरु साहिब के समय प्रभु-प्रीति पैदा करने के जो तरीके प्रचलित थे उनका वर्णन करते हुए गुरु साहिब बताते हैं :

ना तू आवहि वसि बहुतु घिणावणे ॥
ना तू आवहि वसि बेद पड़ावणे ॥
ना तू आवहि वसि तीरथि नाईऐ ॥
ना तू आवहि वसि धरती धाईऐ ॥
ना तू आवहि वसि कितै सिआणपै ॥
ना तू आवहि वसि बहुता दान दे ॥
(पन्ना ९६२)

प्रभु को कैसे पाया जा सकता है? इस प्रश्न का निवारण करते हुए गुरु साहिब बताते हैं कि सतिसंगत प्रभु को पाने का उत्तम साधन है, लेकिन सतिसंगत में भी प्रभु को तब ही पाया जा सकता है जब गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना पैदा हो। यदि सतिसंगत में जाकर भी कोई बगुले की तरह मछली पकड़ने की ही इच्छा करता है तो मन में स्थिरता कैसे आ सकती है? हंसों में बैठा बगुला कभी हंस नहीं बन सकता।



श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी "सुखमनी साहिब" का विषय-वस्तु

*-डॉ. परमजीत कौर**

"सुखमनी साहिब" श्री गुरु अरजन देव जी की प्रमुख बाणी है। इस बाणी का पाठ प्रतिदिन घर-घर में किया जाता है। प्रत्येक गांव, शहर, नगर में कई-कई सोसायटियां हैं जो प्रचार में सहायता करती हैं। यह पवित्र बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना २६२ से २९६ पर अंकित है तथा इसमें चौबीस असटपदियां हैं। प्रत्येक असटपदी से पहले सलोक है, जिसमें पूरी असटपदी की व्याख्या है। पहली असटपदी की पहली पउड़ी के बाद 'रहाउ' की पंक्ति *"सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु ॥ भगत जना कै मनि बिस्राम ॥रहाउ॥"* में सारी बाणी का मुख्य भाव केंद्रित है। प्रभु का नाम सुखों का आधार है। यह गुरमुखों से मिलता है। इसका ठिकाना भक्तों के हृदय में है। सारी असटपदियां इस मुख्य भाव की पुष्टि करती हैं।

पहली असटपदियों में जीवन के आधार प्रभु के नाम-सिमरन के गुणों का वर्णन किया गया है तथा समझाया गया है कि अगम, अगाध, समस्त शक्तियों से भरपूर, रूप-रंग, चिंन्ह से रहित होते हुये भी सर्वव्यापक होने से नाना रूप-रंग वाले, सबके दिलों की जानने वाले, सभी जीवों के पालक, सर्वज्ञ, गहन, गंभीर हैं :

--रूपु न रेख न रंगु किछु त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन ॥ . . .

--आपे बीना आपे दाना ॥
गहिर गंभीरु गहीरु सुजाना ॥ . . .
नाना रूप नाना जा के रंग ॥
नाना भेख करहि इक रंग ॥ (पन्ना २८३-८४)

परमात्मा के नाम का सिमरन करने से सारे दुखों का नाश हो जाता है, कोई डर, कोई संताप, कोई विघ्न नहीं सताता, दुविधा दूर हो जाती है, सारी रिद्धियां-सिद्धियां तथा नौ निद्धियां प्राप्त हो जाती हैं :

प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥
प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥
प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥
सरब निधान नानक हरि रंगि ॥
प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥
प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥
(पन्ना २६२)

प्रभु का सिमरन करने वाले सदाचारी, परोपकारी तथा जितेंद्रिय होते हैं, सदा सहज अवस्था में लीन रहते हैं। यह भी समझाया गया है कि अकाल पुरख के नाम का सिमरन अन्य समस्त धार्मिक कार्यों से श्रेष्ठ है। नाम-सिमरन ही जप, तप तथा पूजा है :

प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥
प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥
प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥
प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥ (पन्ना २६२)

जो परमात्मा का सिमरन करते हैं वे धनाढ्य, इज्जत वाले तथा श्रेष्ठ हैं। जहां कोई सहायता नहीं करता वहां प्रभु का नाम सहायक बन जाता है। दुख दूर करने के लिये, शोभा प्राप्त करने के लिये, जन्म-मरण के चक्र से

House No. 620, Gali No. 1, Chhoti line, Santpura, Yamunanagar (Haryana)-135001, Ph. : 01732-224988

मुक्ति प्राप्त करने के लिये नाम-सिमरन ही एक मात्र उपाय है।

गुरु साहिब ने तो निर्णय कर दिया है कि जिसकी कृपा से मनुष्य धरती पर सुखी बसता है, पुत्र, स्त्री, मित्र आदि के साथ रहकर आनंदित होता है, भौतिक पदार्थों तथा विषय-रसों का भोग करता है; जिस परमात्मा ने हाथ, पैर, नाक, कान, आंख दिये हैं, यह सुंदर शरीर दिया है, उस प्रभु को विस्मृत कर अन्य में मग्न रहने वाला मनुष्य मूर्ख तथा गवार है :

आदि अंति जो राखनहारु ॥
तिस सीउ प्रीति न करै गवारु ॥
जा की सेवा नव निधि पावै ॥
ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥ (पन्ना २६७)

क्योंकि इंद्रियों की सार्थकता प्रभु का सिमरन करते हुये विषय-रसों से मन को हटाने में ही है। निंदा सुनने वाले कान, पर-रूप को देखने वाले नेत्र, दूसरों के धन को लेने के लिये आगे बढ़ने वाले हाथ, दूसरों का बुरा करने के लिये अग्रसर पैर आदि शरीर के सभी अंग निरर्थक हैं:

मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि ॥
मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ॥
मिथिआ नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद ॥
मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद ॥
मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ॥
मिथिआ मन पर लोग लुभावहि ॥
(पन्ना २६८-२६९)

शरीर, धन, सारा परिवार नाशवान है। राज्य, यौवन, महल सदा रहने वाले नहीं हैं। माया का स्वामित्व तथा मान-सम्मान का अहंकार झूठा है। गुरु की शरण में आकर की गई प्रभु-भक्ति ही सदा कायम रहने वाली है। नाम-सिमरन करने वाला जीव ही सफल जीवन वाला होता है :

बिनु बूझे मिथिआ सभ गए ॥
सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥
(पन्ना २६९)

इसलिये उठते-बैठते, सोते-जागते सदा ही एक प्रभु के जाप तथा गुण-कीर्तन का आदेश दिया गया है :

--ऊठत बैठत सोवत नाम ॥
कहु नानक जन कै सद काम ॥ (पन्ना २८६)
--एको जपि एको सालाहि ॥
एकु सिमरि एको मन आहि ॥ (पन्ना २८९)

गुरु साहिब ने परमात्मा की कृपा प्राप्त सत्य पुरख की संगत की महिमा का बखान करते हुये ऐसे साध (साधू) के संग को विकारों की मैल को दूर कर कुमार्ग से हटाने वाला, अहंकारनाशक तथा मन को स्थिर कर नाम-रत्न की प्राप्ति में सहायक बताया है :

साध कै संगि अगोचरु मिलै ॥
साध कै संगि सदा परफुलै ॥
साध कै संगि आवहि बसि पंचा ॥
साधसंगि अंम्रित रसु भुंचा ॥ (पन्ना २७१)

नाम जपते-जपते जिसका नाम-सिमरन किया जाता है वह प्रभु जब अंदर बस जाता है तो जीव ब्रह्मज्ञानी की अवस्था को प्राप्त कर लेता है :

मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥
नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥
(पन्ना २७२)

मुक्ति मन की अवस्था है। श्री गुरु अरजन देव जी सुखमनी साहिब में 'जीवन-मुक्त' के संकल्प को स्पष्ट करते हुये समझाते हैं कि जब नाम की बरकत से भौतिक पदार्थों की तृष्णा मिट जाती है, नाम अंदर बस जाने

से जब गुरमुख-जन अपने अंदर प्रभु के अस्तित्व को पहचान लेते हैं, प्रभु की रजा को मीठी करके मानते हैं। प्रभु के प्रेम-रंग में रंगे हुए होने के कारण अमृत-विष, सुख-दुख, सोना-मिट्टी, आदर-निरादर, लाभ-हानि एक जैसे प्रतीत होते हैं। गृहस्थ में रहते हुये भी विकारों से मुक्त रहते हैं, मन में साधारण जीवों वाले विचार पैदा नहीं होते, सदा निर्लिप्त रहते हैं, वे जीवन-मुक्त कहलाते हैं। ऐसे मनुष्य दूसरों को जिंदगी का सही रास्ता बताते हैं तथा उन्हें भी मुक्त होने में सहायता करते हैं :

--प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥
जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥
तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥
सदा अनंदु तह नही बिओगु ॥
तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥
तैसा अंम्रितु तैसी बिखु खाटी ॥
तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥
तैसा रंकु तैसा राजानु ॥
जो वरताए साई जुगति ॥
नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥
(पन्ना २७५)

--ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥
जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥
धंनु धंनु धंनु जनु आइआ ॥
जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥
(पन्ना २९४-९५)

परमात्मा की कृपा के बिना केवल अपनी इच्छा-मात्र से कोई मनुष्य उच्च आत्मिक-अवस्था प्राप्त नहीं कर सकता। इस संसार में कई करोड़ मनुष्य तीर्थ-वास, वन-भ्रमण, वेद-शास्त्रों का पाठ, व्रत-उपवास, जप, तप, योग, वैराग्य, संयम आदि के मार्ग पर चलकर प्रभु की भक्ति करने का प्रयास कर रहे हैं पर परमात्मा के भेद को नहीं जान पाये। परमात्मा ने जिस तरफ जीवों को लगाया है वे उसी तरफ लगे हुये हैं। जिस-जिस पर कृपा-दृष्टि होती है वह संसार-सागर को पार कर लेता है :

--जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥
नानक करते की जानै करता रचना ॥
(पन्ना २७५)

--सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥
नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ॥
(पन्ना २७६)

--जह जह भाणा तह तह राखे ॥
नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥ (वही)

गुरु साहिब ने सुखमनी साहिब में सुखी जीवन के नुकते बताये हैं-

परमात्मा पर पूरा विश्वास करना चाहिये। यदि कोई विघ्न आ जाये तो अकाल पुरख के समक्ष ही अरदास करनी चाहिए। बेशक नुकसान हो जाये, कोई इच्छा पूरी न हो, पर विश्वास डगमगाना नहीं चाहिए। यह समझ लेना चाहिये कि सारे संसार का मूल कारण एक परमात्मा ही सब कुछ करने-करवाने वाला है। वही कुछ होता है जो उसे अच्छा लगता है:

करन करावन करनै जोगु ॥
जो तिसु भावै सोई होगु ॥ (पन्ना २७६)

जब तक मनुष्य समझता है कि वह कुछ कर सकता है तब तक वह सुखी नहीं हो सकता। चाहे कोई सौ बार चाहे तो भी परमात्मा की कृपा के बिना केवल अपने यत्न से किया हुआ कार्य पूर्ण नहीं होता :

--जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥
तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥ (पन्ना २७८)

--आपन कीआ कछू न होइ ॥
जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥ (पन्ना २८२)

दुख-सुख देने वाला प्रभु स्वयं ही है।

मनुष्य का सहारा छोड़कर एक प्रभु का सिमरन करना ही सुख का आधार है :

दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥
अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥
जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥
भूला काहे फिरहि अजान ॥ (पन्ना २८३)

अहंकार चाहे राज्य, यौवन, धन, भूमि, सुंदरता किसी का भी हो, दुख का ही कारण बनता है :

सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले ॥
बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥
(पन्ना २७८)

नाम-सिमरन करने से जिस मनुष्य में विनम्रता आ गयी है, वही सुखी रहता है, वही उच्च आत्मिक अवस्था वाला है :

आपस कउ जो जाणै नीचा ॥
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥ (पन्ना २६६)

मन की तृष्णा दुख का बड़ा कारण है। नाम-सिमरन के फलस्वरूप पैदा हुआ संतोष सुखी बना देता है :

अनिक भोग बिखिआ के करै ॥
नह त्रिपतावै खपि खपि मरै ॥
बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥
सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै ॥
(पन्ना २७८-७९)

दसों दिशाओं में दौड़ते हुये मन को एकाग्र करने का तरीका बताते हुये गुरु साहिब समझाते हैं कि मन को प्रभु के नाम-सिमरन द्वारा जगाओ, इस तरह मन को टिकाया जा सकता है:

मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥
दह दिसि धावत आवै ठाइ ॥
ता कउ बिघनु न लागै कोइ ॥
जा कै रिदै बसै हरि सोइ ॥ (पन्ना २८८)

मन तथा शरीर से एकाग्र होकर नाम जपने से दुख-दर्द तथा मन का भय दूर हो जाता है:

मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥
दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥ (पन्ना २९३)

यदि अपने मन से बुराई मिटा ली जाये तो सारा संसार मित्र बन जाता है :

मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥
पेखै सगल स्रिसटि साजना ॥ (पन्ना २६६)

सतिगुरु का उपदेश सुनकर हृदय में बसाओ। इस तरह मन-मांगी मुरादें मिल जाती हैं:

सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥
मन इछे नानक फल पावहु ॥ (पन्ना २९३)

गुरु साहिब विस्तार से समझा रहे हैं कि जिस मनुष्य ने अटल नाम वाले पूर्ण प्रभु का सिमरन किया है उसको वह पूर्ण प्रभु मिल गया है। हे नानक! तू भी पूर्ण प्रभु के गुण गा:

पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ ॥
नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ ॥
(पन्ना २९५)

परमात्मा की शरण में आये हुये जीव की मनोदशा का वर्णन करते हुये गुरु जी कहते हैं कि हे प्रभु! यह सुनकर कि तू दर पर आये हुये जीवों की बांह पकड़ने योग्य है, हम तेरे दर पर आये थे, आपने कृपा करके हमें अपने से मिला लिया है। अब हमारे वैर-विरोध मिट गये हैं, हम विनम्र हो गये हैं तथा साधसंगति में अमर करने वाला नाम जप रहे हैं। गुरु जी ने कृपा की है, हम सेवकों की सेवा कबूल हो गई है:

सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥
करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥
मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥
अंम्रित नामु साधसंगि लैन ॥

सुप्रसंन भए गुरदेव ॥
पूरन होई सेवक की सेव ॥
आल जंजाल बिकार ते रहते ॥
राम नाम सुनि रसना कहते ॥
करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥
नानक निबही खेप हमारी ॥ (पन्ना २९५)

अंत में गुरु साहिब दृढ़ करवा रहे हैं कि प्रभु का गुण-कीर्तन तथा प्रभु का नाम अडोल अवस्था का कारण है, सुखों की मणी है। जिसके मन में यह बसता है, जो प्रेम से सुनता है, उसका जन्म-मरण का कष्ट कट जाता है तथा वह इस दुर्लभ मानव-शरीर को विकारों से बचा लेता है:

जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति ॥
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥
जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥
दुलभ देह ततकाल उधारै ॥ (पन्ना २९६)

इन्हीं गुणों के कारण प्रभु का नाम सुखों की मणी है :

सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥
नानक इह गुणि नामु सुखमनी ॥ (पन्ना २९६)

परमात्मा का नाम हमारे लिये सर्वोत्तम सुख बन जाये, इसके लिये जरूरी है कि "सुखमनी साहिब" की पावन बाणी को पढ़ने तथा कंठस्थ करने से विचार कर उसके अनुसार जीवन बनाया जाये, सतिगुरु के उपदेश की कमाई की जाये।



कविता

व्यंग्य-बाण

खुदा नहीं चाहता आदमी सिगरट पिए

घूमता हूं जब खेतों में, खलिहानों में।
सूर्य की तपती किरणों में, मैदानों में।
देखा नहीं कभी पीते हुए किसी पशु को, जानवर को।
भेड़ को, घोड़े को, भैंस को, गायावर को।
न किसी बंदर को, न लटके हुए लंगूर को।
न किसी अजगर को, न सुंदर वन के म्यूर को।
जब भी देखा है तो इस तथाकथित उच्च श्रेणी के जीव को।
कलब में, पब में, उच्च सोसाइटी की तींव को।
धुआं देखा तो गाड़ी के इंजन व साइलैंसर की नाली से।
जहाज की काक से, पर कभी नहीं वृक्ष की डाली से।
आदम के मुख से देखा तो इधर धुआं, उधर धुआं।
क्या यह नाक है या मिल की चिमनी का धुआं?
क्या यही था वो जिसे खुदा ने बनाया,
खोजा आसमान में और धरती पर पाया?
नहीं, नहीं, ऐसा नहीं सोचा था खुदा ने बना के।
ऐसा नहीं है, नक्शा अलग ही खींचा था जना के।
अगर ऐसा होता तो वो बनाता मिल की तरह चिमनी।
और लगा देता आदमी के सर पर एक छलनी।
जिससे यह निकाल सके धुआं दबा के।
अथवा अपनी गर्मी बाहर निकाले जोर लगा के।
नाक से, मुंह से, धुआं निकालना समझ नहीं आया।
खुदा नहीं चाहता आदमी सिगरट पिए मैं तो यही समझ पाया।



-स. अजीतपाल सिंघ (प्रचारक), आदि सच् प्रचार मिशन, फगवाड़ा, नई दिल्ली। मो: ९४६३१-७७८८५

"सुखमनी साहिब" में प्रस्तुत आध्यात्मवाद का दार्शनिक अनुशीलन

*-डॉ निर्मल कौशिक**

सुखमनी साहिब : सामान्य परिचय

"सुखमनी साहिब" श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा उच्चरित बाणी है। इसके नाम से ही स्पष्ट है कि यह 'सुखों की मणि' है। मानव जीवन का लक्ष्य है सुख (आनंद) की प्राप्ति। सुख दो प्रकार का है लौकिक और आलौकिक। 'सुखमनी' की विशेष महत्ता यही है कि यह दोनों प्रकार का सुख (आनंद) प्रदान करती है। भाई कान्ह सिंघ नाभा ने महान कोश (संशोधित) में इसका अर्थ आत्मिक आनंद देने वाली 'मणि' किया है।

जो भी हो सुखमनी साहिब गुरु अरजन साहिब की अद्वितीय बाणी है, जो उन्होंने रामसर सरोवर के किनारे बैठ कर रची थी। इस बाणी में २४ असटपदियां और २४ सलोक हैं। प्रत्येक असटपदी में १० तुकांत हैं। सलोक में समग्र रूप से असटपदी का भाव आ जाता है। सम्पूर्ण सुखमनी साहिब 'गउड़ी' राग में है जिससे यह संगीतात्मकता के गुणों से भरपूर है। सतिगुरु जी की सम्पूर्ण बाणी मन को शांति प्रदान करने वाली है, तपते दिलों को ठंडा करने व बेसहारों को सहारा देने वाली है। ऐसे विशेष गुणों के होते यह आपकी हरमनप्यारी बाणी भी है। वास्तव में यह बाणी अपने नाम के अनुकूल ही गुणों को धारण किए हुए है।

गुरु जी की सम्पूर्ण बाणी में सरल, स्वाभाविक, सहज भाषा में शबद-चयन, संयोजन, छंद, अलंकार व रस स्वत: सिद्ध हैं। संगीत तो मानो उनकी बाणी का अनुसरण करता है। सुखमनी साहिब में सुकर्मों को करने की प्रेरणा एवं निर्मल उपदेश विद्यमान हैं, हृदय स्वयं ही कुछ अच्छा करने व बुरा त्यागने को करता है, जिसका वर्णन गुरु जी कर रहे हैं।

सुखमनी साहिब : विषय-वस्तु

सुखमनी साहिब की सोद्देश्यता व सार्थकता उसके उत्तम एवं उपयोगी विषय-वस्तु के कारण है। यह बाणी मानव मन या आत्मा को सुख या आनंद प्रदान करने के उद्देश्य से रची गई है। स्मरण द्वारा सुख या आनंद की उपलब्धि संभव है, मगर स्मरण किसका? उत्तर है- ईश्वर का। माध्यम है- नाम।

--सुखमनी सुख अंम्रित प्रभु नामु ॥
भगत जना कै मनि बिस्राम ॥
--सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥ . . .
नामु जपत अगनत अनेकै ॥ *(पन्ना २६२)*

'नाम' जपने से मनुष्य 'साधु' की स्थिति को पा लेता है। साधु की संगति से साधारण मनुष्य भी परमपद, मोक्ष को पा लेता है और ईश्वर रूप हो जाता है। बस, यही मानव-जीवन का चरम लक्ष्य है, जिसकी पूर्ति हेतु सुखमनी साहिब हमारा मार्गदर्शन करती है। सुखमनी साहिब में नाम, साधू, असाध, ब्रह्मगिआनी, जीवन, जगत, मोक्ष, गुरु आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है। सुखमनी साहिब की आध्यात्मिकता को देखते हुए सारांश के तौर पर यह कहा जा सकता है कि सुखमनी साहिब पावन निर्मल बाणी भौतिक जगत के विचित्र, मनमोहक दृश्यों में विचरते हउमै-युक्त जीवन का खंडन करती

**१६३, आदर्श नगर, पुरानी छावनी रोड, फरीदकोट-१५१२०३ (पंजाब), फोन : ०१६३९-२६३०१७*

है और प्रभु-नाम-स्मरण के आत्मिक मंडल में से गुजरते हुए प्रभु की असीमता, आश्चर्यता और विस्मादकता का अनुभव करते हुए गुरमुख जीवन का मंडन है। जहां सुखमनी साहिब आत्मा-परमात्मा के संयोग की क्रमिक अवस्थाओं की चेष्टाओं का मार्गदर्शन करती पावन बाणी है वहां इसका दार्शनिक महत्व भी कम नहीं है। सुख-दुख, आशा-निराशा, पाप-पुन्य, साधु-असाधु आदि का विश्लेषण व निराकरण सहज ही किया गया है। आज मानव-जीवन इतना उलझन भरा, व्यस्त एवं संघर्ष-युक्त है कि उसके मन को शांत करने के लिए किसी महान सहारे की आवश्यकता है। ऐसा ही है एक मात्र आधार गुरु अरजन साहिब कृत बाणी 'सुखमनी साहिब'। उनकी बाणी सुखमनी साहिब आज के जीवन की समस्याओं का एक सफल सुलझाव पेश करती है, जो कि कर्मकांड तथा निष्प्राण शुष्क ज्ञान-चर्चा से रहित है। सुखमनी साहिब ही हमें मानव-धर्म तथा शांति की शिक्षा देती है। यह मानव जीवन का सही मार्गदर्शन करने वाली तथा धार्मिक एवं सांस्कृतिक एकता का सदुपदेश देने वाली अनन्य तथा अनुपम कृति है।

भाव पक्ष के साथ ही सुखमनी साहिब का कला पक्ष भी सशक्त एवं प्रौढ़ है। भाषा, छंद, अलंकार, शब्द-चयन, संयोजन, शैली, प्रतीक आदि के माध्यम से हर आशय को स्पष्ट किया है। संगीतात्मकता इसका अनन्य गुण है। सम्पूर्ण सुखमनी साहिब गउड़ी राग में है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि सुखमनी साहिब आध्यात्मिक, दार्शनिक तथा साहित्यिक दृष्टि से भावपक्ष एवं कलापक्ष की सर्वोच्चता को लिए हुए है।

सुखमनी साहिब : दार्शनिक-विवेचन

'दर्शन' का सामान्य अर्थ है देखना। मनुष्य अपने जीवन-काल में अपने चारों ओर के संसार को देखता है, अनुभव करता है और कालांतर में उन अनुभवों का निष्कर्ष निकाल कर सत्य, असत्य का निर्णय करता है। इसे ही पूर्वकालीन विद्वानों ने 'दर्शन' का नाम दिया है। फिलासफी न केवल प्रकृति का ज्ञान है बल्कि समाज की भी। यदि इस ज्ञान का आधार तत्व (फैक्ट्स) और प्रयोग (एक्सपैरीमेंटस) हो तो यह विज्ञान कहा जाता है, परंतु यदि प्रयोग की जगह केवल अनुभव हो तो इसे फिलासफी ही कहना उपयुक्त होगा। इस प्रकार दर्शन प्रत्येक व्यक्ति के जीवन, अवस्थाओं व सामाजिक वातावरण का अनुभव है। देखा जाए तो गुरु अरजन साहिब का जीवन संघर्षमयी, आध्यात्मिकता से परिपूर्ण गुरु-परंपरा से प्रेरित व सेवामयी भावना से ओत-प्रोत था। उन्होंने दुखी मनों की आत्मिक शांति हेतु अपने जीवन-तत्वों व अनुभवों को बाणी रूप दिया ताकि उसका अध्ययन कर वे तृप्त हो सकें। सुखमनी साहिब इसी मूल उद्देश्य से रची गई है। अनुभवाधारित होने के कारण इसे 'दर्शन' का नाम दिया जा सकता है। वैसे तो सुखमनी साहिब में वर्णित सभी बातें गुरमति अथवा सिक्ख-दर्शन से प्रभावित हैं। गुरमति-दर्शन में वर्णित दार्शनिकता को सुखमनी साहिब में विस्तृत रूप से समझाया गया है। पद्धति बिलकुल साधारण अपनाई गई है ताकि समझने में कठिनाई न हो। क्रमानुसार ईश्वर-प्राप्ति व सुख का विवरण सराहनीय है। मनुष्य को चाहिए कि वह 'नाम', 'स्मरण' कर 'गुरु' के सदुपदेश से 'हउमै' का त्याग कर अपने को 'साध' या 'ब्रह्मज्ञानी' की अवस्था तक ले जाए। यही सुन्न समाधी या मुक्तावस्था है।

सम्पूर्ण सुखमनी साहिब में मानव-जीवन को सुखमय, आनंदमय बनाने के लिए हउमै को दूर करने और ईश्वर की सच्ची भक्ति में जुड़ने के लिए प्रेरणा दी गई है। इसमें कुछ विशेष महत्वपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया गया है,

जिसका दार्शनिक विवेचन इस प्रकार है।

सुखमनी साहिब का मूल संदेश नाम-स्मरण है। नाम-स्मरण ही एक ऐसा मूल-मंत्र है, जो मनुष्य के मन को सुख या आनंद प्रदान करता है।

गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥
नानक पावहु सूख घनेरे ॥ (पन्ना २६४)

'नाम' को हृदय में बसाने के लिए उसका स्मरण करना अनिवार्य है। स्मरण द्वारा ही जीवन माया-जाल से निकल कर परमपद को पा लेता है। उसके सम्पूर्ण दुखों और कलेशों का नाश हो जाता है और वह सुख को प्राप्त होता है:

प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥
प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥ (पन्ना २६३)

गुरु अरजन साहिब के अनुसार 'गुरु' वह है जो अंधेरे में प्रकाश करके हमारा नेतृत्व करता है। सतिगुरु की कृपा से ही ईश्वर की प्राप्ति संभव है। सतिगुरु वही हो सकता है, जिसने सत्यपुरुष को पहचान लिया है और स्वयं भी ब्रह्म-रूप हो गया है: *"सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥"* सुखमनी साहिब में 'साध' शब्द का अत्यंत विस्तार से वर्णन किया गया है। सामान्य रूप से इसे 'सज्जन पुरुष' या 'महात्मा' के अर्थ में लिया जाता है। आध्यात्मिक दृष्टि से इसका अर्थ है, जिसने साधना द्वारा अपने को शुद्ध करके उस परम पद या ईश्वर को पा लिया है। ऐसे आदर्श महापुरुष की संगति को ही गुरु अरजन साहिब ने 'साधसंगति' का नाम दिया है।

साध की सोभा साध बनि आई ॥
नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥ (पन्ना २७२)

सुखमनी साहिब में 'ब्रहम गिआनी' शब्द को अत्यंत व्यापक रूप में लिया गया है। ब्रह्मज्ञानी वह है, जिसे ब्रह्म (प्रभु) का ज्ञान हो। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि ब्रह्म का ज्ञान होने से वह तद्‌रूप हो गया हो, मन, वचन और कर्म से एक हो। गुरु अरजन साहिब फरमान करते हैं:

मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥
नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥
(पन्ना २७२)

संत की निंदा को सबसे बड़ा अपराध माना गया है। संत की स्तुति सबसे बड़ा पुन्य तथा संत की निंदा एक प्रकार से व्यसन है। व्यसन तो व्यसन ही है चाहे वह किसी भी प्रकार का क्यों न हो . . . निंदा भी एक व्यसन है, परंतु संतों की निंदा तो महामंदी होती है। सुखमनी साहिब में गुरु अरजन साहिब ने संत के निंदक के स्वभाव और निंदा करने के कारण हुई उसकी दुर्दशा का बड़ा प्रभावशाली चित्र पेश किया है :

संत सरनि जो जनु परै सो जनु उधरनहार ॥
संत की निंदा नानका बहुरि बहुरि अवतार ॥
(पन्ना २७९)

सुखमनी साहिब में वर्णित है कि ईश्वर इस विश्व के कण-कण में विद्यमान है, अविनाशी है। उसी को 'इक ओअंकार' के नाम से अभिहित किया गया है। सारी सृष्टि उसी के हुक्म के अधीन है :

--रूपु न रेख न रंगु किछु त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन ॥ (पन्ना २८३)
--नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥
प्रभु अविनासी एक कार ॥ (पन्ना २८४)

सुखमनी दर्शन : मानव केंद्र संस्कृति

मानव-जीवन का चरम लक्ष्य सच्चे रूहानी आनंद की प्राप्ति है। इसके लिए सुखमनी साहिब में अवस्थाओं का क्रमिक निरूपण किया गया है। उस ब्रह्म से मेल कराने वाला केवल 'नाम' ही है, जिसके अंदर 'नाम' का एक कण (अंश) मात्र भी प्राप्त हो जाता है। 'नाम' का साधन

व विधि स्वयंमेव नहीं अपितु साध की संगत व संत पुरुषों की कृपा से ही संभव है और इनकी संगत ईश्वर की कृपा से ही होती है, इनकी सहायता से सच को जाना जा सकता है।

सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥ *(पन्ना २८६)*

सतिगुरु के उपदेश से हउमै का नाश होता है और जीव सहजावस्था को प्राप्त होता है, जिसे निर्वाण या मोक्ष कहा गया है। योग के अनुसार यह संकल्प-विकल्प से रहित अवस्था है। इसे सम्पूर्ण एकाग्रता की दशा भी कहा जाता है। यही दशा अनेक भक्तों व संतों द्वारा 'गूंगे का गुड़' कही गई है। इसमें शारीरिक अनुभव की अपेक्षा आत्मिक अनुभव का प्राधान्य रहता है। उसकी चेतना निरंकार से एकस्वर हुई होती है कि उसे उसका हुक्म मानते समय कोई बोझ महसूस नहीं होता। जब तक उसकी हउमै कायम थी वह हुक्म मानने में विघ्न डालती थी।

संक्षेप में सुखमनी साहिब के अनुसार सांसारिक दुखों में फंसा मनुष्य गुरु की शरण में आकर, साधुओं की संगत में प्रभु के नाम का स्मरण करके, घट-घट में व्याप्त परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करके, उसके हुक्म से एक रूप होकर क्रोध, लोभ, मोह, काम, अहंकार का नाश करके गुरमुख अथवा श्रेष्ठ मनुष्य बनता है तथा परमसुखात्मक अनुभव करता है। सुखमनी साहिब मानव की सुखात्मक अनुभूति को परिलक्षित करने में और मानवीय गुणों की श्रीवृद्धि करने में सहायक सिद्ध होती है। इसका दर्शन मानव-केंद्रित है।

सुखमनी साहिब अनुभूतियों का वो संग्रह है जिसके माध्यम से गुरु अरजन साहिब ने मानव-जीवन की सार्थकता हेतु सच्चे सदीवी सुख, रूहानी आनंद तक पहुंचने का सहज ढंग से निर्देशन किया है। मोटे तौर पर इसे आध्यात्मवाद की अनुभूति कहा जा सकता है, मगर कुछ लोग इसे दर्शन के अंतर्गत मानते हैं, क्योंकि आत्मा द्वारा परमात्मा का सम्पर्क या दर्शन ही दर्शन-शास्त्र का विषय है। अत: सुखमनी साहिब में आध्यात्मिक और दार्शनिक दोनों धाराओं का संयोजन अत्यंत सुचारू रूप से हुआ है। दोनों का उद्देश्य एक है सुखानुभूति व सच्चे रूहानी आनंद की प्राप्ति। वास्तव में गुरमति सिद्धांत गुरु नानक साहिब के आध्यात्मवाद व दार्शनिकता का सुमेल है और सुखमनी साहिब गुरमति सिद्धांत का प्रतिपादन करती है। गुरु अरजन साहिब ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया और दार्शनिक दृष्टि से जीव, जगत्-माया, ब्रह्म की सरल ढंग से व्याख्या की। सिक्ख दर्शन का प्रचार एवं प्रसार इनका मूल उद्देश्य था।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि सुखमनी साहिब गुरु अरजन साहिब की काव्य-दार्शनिक अनुपम उपलब्धि है। गुरमति चिंतनधारा का गुणात्मक पक्ष दर्शन के घटकों में ढल कर निर्गुण चेतना का वाहक बना है। यह पावन बाणी दार्शनिक अनुभूतिजन्य तो है ही इसके साथ ही अनुभव ज्ञान की भी गहन निधि है। अत: सुखमनी साहिब का दार्शनिक अनुशीलन मनोवैज्ञानिक अध्ययन की नई संभावनाओं को उद्भासित करता है।

सहायक पुस्तकें :

१. प्यारा सिंघ पदम, "बाणी गुरु अरजन देव", पटियाला, भाषा विभाग पंजाब, १९७१, पृष्ठ १९

२. भाई कान्ह सिंघ नाभा, "महान कोश"

३. ज्ञानी त्रिलोक सिंघ, "जीवन कथा गुरु अरजन देव जी"

४. स. लाल सिंघ, "गुरु अरजन देव : जीवन ते रचना"

५. डॉ. साहिब सिंघ अरशी, "सुखमनी साहिब दा आलोचनातमक अधिऐन"

६. स. राम सिंघ, "सुखमनी दी जीवन-जाच"



आदर्श सामाजिकता एवं कला-कृति का उत्तम नमूना "बावन अखरी"

*-बीबा सरबजीत कौर**

श्री गुरु अरजन देव जी अपने प्रभावशाली और बहुमुखी व्यक्तित्व सहित संसार में अपना उदाहरण स्वयं ही हैं। आप जी जहां प्रभु के सच्चे भक्त एवं साधक थे वहां एक महान गुरु, अमर कवि, उच्चतम संगीतकार, अद्भत संपादक एवं अनुपम शिल्पकार भी थे। वे मानवता के रक्षक थे। वे ऊंच-नीच का भेद मिटाकर सांझीवालता और भाईचारे की भावना पैदा करने वाले निरवैर सामाजिक मार्गदर्शक थे। वे एक सच्चे देश-भक्त थे, जिन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

आपका जीवन समाज के लिए एक आदर्श है, क्योंकि आप एक आज्ञाकारी एवं सर्वगुण-संपन्न पुत्र, उदारचित्त, क्षमाशील भाई, एक प्रेमी पति और प्रेरक व प्रेमपूर्ण पिता थे। आप संवेदनशीलता, सहनशीलता, क्षमाशीलता, नम्रता, सहृदयता और कोमलता की साक्षात मूरत थे।

श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी ने सिक्ख धर्म को एक नया क्रांतिकारी मोड़ दिया। अपने प्यारे गुरु की शहीदी के प्रतिकर्म के रूप में सिक्खों में जोश एवं वीरता की भावना उत्पन्न हुई। सिक्खी प्यार वालों को यह अहसास हुआ कि सिक्ख धर्म की प्रफुल्लता एवं देश की रक्षा के लिए सैनिक जत्थेबंदी की जरूरत है। फलस्वरूप अन्याय से टक्कर लेने के लिए सिक्खों ने तलवार उठानी जरूरी समझी। आगे चलकर सिक्खों के अगले गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने समय की नब्ज पहचानते हुए धार्मिक शिक्षा के साथ सैनिक जत्थेबंदी एवं शस्त्र-विद्या की सिखलाई शुरू करवाई। इसके अलावा श्री गुरु अरजन देव जी की जीवन-रचनाओं, सामाजिक सुधारों, कुर्बानियों का सिक्ख धर्म एवं समूची मानवता पर सर्वकालीन प्रभाव कबूल किया जा सकता है। उनकी पावन बाणियों में "सुखमनी साहिब, वारां, छंत, सलोक, पदे, शबद, असटपदे, पहिरे, बारह माहा, दिन रैणि" आदि शामिल हैं। श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी में एक विजयी एवं सम्पूर्ण मानसिक स्वस्थ मनुष्य का संकल्प विद्यमान है।

श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा उच्चरित गउड़ी राग में "बावन अखरी" बाणी संस्कृत वर्णमाला के ५२ अक्षरों पर आधारित लिखी गई कृति है। अक्षरों का उच्चारण गुरमुखी वर्णमाला से लिया गया है। विद्वानों ने इसे 'पैंती अक्खरी' की बड़ी बहन कहा है। गउड़ी राग में दर्ज श्री गुरु अरजन देव जी की यह बाणी और भक्त कबीर जी की "बावन अखरी" बाणी समानता में अभिलिखित है। इन बाणियों में बेशक संस्कृत अक्षरों का क्रम पूरा नहीं होता फिर भी ये सम्पूर्ण अर्थ-विश्लेषण वाली कला-कृत्तियां हैं:

बावन अखर सोधि कै हरि चरनी चितु लाइ ॥
(पन्ना १३७३)

"बावन अखरी" का स्वरूप एवं विषय

"बावन अखरी" की कुल ५५ पउड़ियां हैं। जैसे 'आसा की वार' में गुरु नानक साहिब और श्री गुरु अमरदास जी रचित पउड़ियों और सलोकों

D/o S. Mahenga Singh, V.P.O. Thaska Miran Ji, Teh. Ismailabad, Distt. Kurukshetra (HR.), Mob. : 94662-18081

के रूपों का इस्तेमाल नहीं किया, सलोकों और पउड़ियों का मिश्रित रूप श्री गुरु ग्रंथ साहिब में केवल २२ स्थानों में केवल वारों में इस्तेमाल हुआ मिलता है। इस प्रकार 'वारों' और 'बावन अखरी' का यही अंतर स्पष्ट करता है कि "बावन अखरी" में हर पउड़ी का आरंभ वर्णमाला के किसी अक्षर से होता है और हर पउड़ी में केवल सलोक है, जबकि वारों की पउड़ियों में एक से ज्यादा सलोक भी होते हैं।

पावन बाणी "बावन अखरी" में श्री गुरु अरजन साहिब ने विश्वव्यापी विषयों की अभिव्यक्ति की है। परमात्मा के स्वरूप, माया से ग्रस्त मनुष्य का मानसिक एवं नैतिक पतन और प्रभु-सिमरन से मानव-जीवन को सफल बनना इत्यादि "बावन अखरी" के विषय हैं। गुरु साहिब "बावन अखरी" में प्रभु के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वह अमर है, स्थिर है और कभी नाश नहीं होता और वह देश-काल की सीमाओं से मुक्त है, जन्म-मरण से रहित है। संसार में जीव जन्म लेता है और वह बूढ़ा होकर अपनी उम्र भोगकर मर जाता है। परमात्मा न जन्म लेता है और न मरता है। वह अमर, अजर और अनंत है :

धर जीअरे इक टेक तू लाहि बिडानी आस ॥
नानक नामु धिआईऐ कारजु आवै रासि ॥
(पन्ना २५७)

भावार्थ यह कि मनुष्य को धर्म के बाहरी आडंबरों एवं सभी प्रकार के कर्मकांडों को छोड़कर एक सर्वशक्तिमान परमात्मा की शरण में जाना चाहिए क्योंकि उसी के सच्चे सिमरन से जीव को सांसारिक एवं आत्मिक ज्ञान की सफलता मिलती है। गुरु जी का फरमान है।

पतित पावन प्रभ बिरदु तुम्हारो हमरे देख रिदै मत धारहु ॥ (पन्ना ८२९)

भावार्थ यह है कि वह दयालु प्रभु जो स्वयं पवित्र है उसकी अनंत कृपा से पतितों ने कल्याण को प्राप्त कर लिया है।

श्री गुरु अरजन देव जी की यह बाणी जहां हमें आत्मिक ज्ञान के लिए प्रभु-सिमरन की प्रेरणा देती है वहां समाज के निर्माण के लिए आपसी भाईचारे की प्रेरणा भी देती है, जैसे कि:

रोसु न काहू संग करहु आपन आपु बीचारि ॥
(पन्ना २५९)

मानसिक स्वास्थ्य को सामाजिक एवं आध्यात्मिक प्रगति का आधार बनाया गया है।

फाहे काटे मिटे गवन फतिह भई मनि जीत ॥
नानक गुर ते थित पाई फिरन मिटे नित नीत ॥ (पन्ना २५८)

अंत में मनुष्य की सामाजिक एवं आध्यात्मिक प्रगति के मार्ग में आने वाली सबसे बड़ी बाधा जन्म-मरण की चिंता को बताया गया है। गुरु साहिब के अनुसार मनुष्य की सबसे बड़ी दौलत प्रभु की शरण है, इसलिए सिक्ख का यह कर्त्तव्य है कि वह अपना तन, मन, धन सतिगुरु के चरणों में अर्पित कर दे। बिना आत्मिक समर्पण के सतिगुरु की बख्शिश के पात्र नहीं बना जा सकता :

तनु मनु धनु अरपउ तिसै प्रभू मिलावै मोहि ॥
नानक भ्रम भउ काटीऐ चूकै जम की जोह ॥
(पन्ना २५६)

इसी प्रकार परमात्मा के निरंकार स्वरूप से मनुष्य के मार्गदर्शन एवं आदर्श सामाज का निर्माण ही 'बावन अखरी' बाणी का उद्देश्य है, जिसे हमें मार्गदर्शन रूप में अपनाना चाहिए।



उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार

*-डॉ मधु बाला**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन करने वाले सिक्ख मत के पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म १५ अप्रैल, १५६३ ई को गोइंदवाल साहिब, जिला तरनतारन में हुआ। आपके पिता जी का नाम श्री गुरु रामदास जी और माता का नाम माता भानी जी था। आपको फारसी, संस्कृत, पंजाबी और ब्रज भाषा का ज्ञान था। आप में आध्यात्मिकता के साथ-साथ जनसाधारण को उचित एवं सुदृढ़ विचार प्रदान करने की भी क्षमता थी। सिक्ख मत के निर्माण में अपने पूर्ववर्ती गुरु साहिबान की बाणी को सुरक्षित रखने में इनका अहम् योगदान है। इन्होंने सिरीराग, माझ, गउड़ी, आसा, गूजरी, देवगंधारी, बिहागड़ा, वडहंस, सोरठि, धनासरी, जैतसरी, टोडी, बैराड़ी, तिलंग, सूही, बिलावल, गोंड, रामकली, नटनाराइन, माली गउड़ा, मारू, तुखारी, केदारा, भैरउ, बसंत, सारंग, मलार, कानड़ा, कलिआन और प्रभाती राग में बाणी की रचना की। आपकी कुछ विशेष बाणियां भी मिलती हैं--"पहरे, बारह माहा, दिन रैणि, बावन अखरी, सुखमनी, थिती, बिरहड़े, गुणवंती, रुती, अंजुलीआ, सोलहे, गाथा, फुनहे, चउबोले, सवैये और मुंदावणी।

श्री गुरु अरजन देव जी ने सन् १६०१ से लेकर १६०४ ई तक श्री आदि ग्रंथ साहिब की संपादना की। बाणी में निहित विचारों को उचित स्थान पर स्थापित करना प्रतिभाशाली व्यक्तित्व द्वारा ही संभव हो सकता था। श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी "सुखमनी साहिब" में उनकी विचारशीलता का बहुपक्षीय उद्घाटन हुआ है। अत: इसका पठन, पाठन, मनन, चिंतन, अधिकांशत: हमारे जीवन की दैनिकचर्या का अंग बन गया है। यह बाणी प्रात: स्मरणीय है, सुख देने वाली है। इसमें वर्णित विचार सुख-रूपी मणियां हैं, इसी लिए इसे "सुखमनी" कहा गया है।

"सुखमनी साहिब" के आरंभ में आदि पुरख को, युगों से जिसकी सत्ता विद्यमान है, उस 'जुगादि' पुरख को, सतिगुरु को और श्री गुरदेव को प्रणाम किया है :

आदि गुरए नमह ॥ जुगादि गुरए नमह ॥
सतिगुरए नमह ॥ स्री गुरदेवए नमह ॥ (पन्ना २६२)

प्रभु के नाम का ठिकाना भक्त का हृदय है। यहीं परमात्मा का विश्राम-स्थल है, यहीं परमात्मा को आनंद मिलता है। जीव के लिए सुखकारी है परमात्मा का नाम-स्मरण, क्योंकि सभी जीव इसका लाभ उठाते हैं। जिसके हृदय में परमात्मा के नाम का अंश बसता है उसकी महिमा का बखान नहीं किया जा सकता। जो मनुष्य आपके दर्शनों की अभिलाषा रखते हैं, उनकी संगत में आप मुझे अपने दर्शन देकर कृतार्थ करो। प्रभु के नाम का स्मरण क्यों आवश्यक है? क्योंकि यह अमरता प्रदान करने वाला है, सुखों की मणी है, जो भक्तों के हृदय में विराजमान है।

प्रभु के नाम-स्मरण से विषय, विकार,

**आई-१०९, गली नं: ५, मजीठीआ इन्कलेव, पटियाला-१४७००५, फोन : ०१७५-३२००९४६*

भ्रम, संताप, भय, ताप, दुख सब मिट जाते हैं। जीवन में किसी प्रकार की बाधा नहीं आती, यम का भय नहीं सताता, अकाल-मृत्यु का भय दूर हो जाता है, यहां तक कि जीव का गर्भ में वास नहीं होता अर्थात् प्रभु का स्मरण करने से जीव इस संसार में जन्म नहीं लेता।

प्रभु का स्मरण सबसे उच्च है। माया-मोह मनुष्य को स्पर्श नहीं कर पाते, आशा पूर्ण होती है, मन की मलिनता दूर होती है। गुरमुखों की जिह्वा पर भगवान का वास है। श्री गुरु अरजन देव जी की यही मनोकामना है कि मैं गुरमुखों के सेवकों का सेवक बनूं :

नानक जन का दासनि दसना ॥ (पन्ना २६३)

प्रभु का नाम रूपी धन धारण करने वाले ही धनवान हैं। उन्हीं को प्रसिद्धि प्राप्त होती है। उन्हें किसी के आश्रय की आवश्यकता नहीं पड़ती। प्रभु-नाम से परोपकार की भावना उपजती है, संयम की भावना पैदा होती है, जीवन-शैली पवित्र होती है। संत-कृपा से ही स्मरण की वृत्ति जागती है।

प्रभु का स्मरण करने से हृदय रूपी पुष्प खिला रहता है। यह स्मरण अनहद नाद उत्पन्न करता है। स्मरण से जुड़कर ही सच्चे ज्ञानी अध्यात्म-ज्ञान से भरपूर ग्रंथों की रचना करते हैं। सम्पूर्ण धरती को आश्रय देने वाला वही प्रभु है। जहां स्मरण है वहां परमात्मा स्वयं बसते हैं। जहां कोई भी सहारा नहीं बनता वहां प्रभु का नाम ही आश्रय देता है। प्रभु का नाम ही माया के आवरण को दूर करने वाला है। नाम-स्मरण से ही मनुष्य सिध, यती और दाता बन गया। प्रभु-स्मरण करोड़ों पापों का नाश करने वाला है।

प्रभु के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। सिमरन ही भक्त का धन है। प्रभु का नाम पारिजात वृक्ष है। उसका गुणगान ही कामधेनु है। अकाल पुरख के समान दूसरा कोई नहीं है। अहं भावना की जो मैल शरीर को थोड़ा-थोड़ा करके कटा देने से भी दूर नहीं होती वह केवल नाम-सिमरन से ही धुल जाती है। तृष्णा की आग और माया की प्यास भी मिट जाती है। चतुर्वग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गुरमुखों की सेवा करनी चाहिए। सतसंग से अहंकार मिट जाता है। गरीब का धन, निराश्रित का सहारा, आदर-सम्मान के दाता तुम ही हो। सर्वोपरि धर्म है प्रभु-नाम का जाप, पवित्र आचरण और भक्ति। उस प्रभु की कृपा से ही जीव धरती पर सुख-ऐश्वर्य का भोग करता है। मायाग्रस्त मूर्ख जीव रत्न-रूपी नाम-धन को छोड़कर कौडियों के पीछे भागता है। अहंकार, लोभ, मन का मैल उसे ज्ञान की बातें समझने नहीं देता। वैर, विरोध, काम, क्रोध, झूठ, मोह, कुकर्म, लालच, धोखा इसी मार्ग का अनुकरण करते हुए जन्म-जन्मांतर बीत गए हैं। हमारी सभी इंद्रियां जो स्वार्थवश कार्यरत हैं अथवा दूसरों की हानि में रुचि रखती हैं वे सब व्यर्थ हैं, क्योंकि यह शरीर परोपकार हेतु मिला है, इसी लिए मनुष्य को सदैव परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए।

प्रभु की कृपा से ही नाम-स्मरण संभव है। सतसंगति में रहकर विषय-विकारों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। ब्रह्मज्ञानी के गुणों का मूल्यांकन नहीं हो सकता क्योंकि वही कर्त्ता, कारण और मुक्ति का दाता है। प्रभु को स्वयं में खोजने वाला और अपने मन को शिक्षा देने वाला ही सही अर्थों में पंडित (ज्ञानी, विद्वान) है। प्रभु का नाम सारे रोगों की औषधि है। प्रभु की रजा में राजी रहने वाला ही जीवन-मुक्त कहलाता है। हमारी सभी इंद्रियां परमात्मा से

विरक्त हैं, निस्सार हैं। जिस परमात्मा की कृपा से मनुष्य को सुख, ऐश्वर्य मिला है उसका गुणगान करने से उसके सभी दोष ढके रहते हैं। प्रभु की कृपा-दृष्टि में सारे खजाने निहित हैं। सज्जनों की संगति से ही नाम रूपी अगोचर वस्तु प्राप्त होती है। ब्रह्मज्ञानी का स्वरूप कहना कठिन है। सब बुराइयों को छोड़ना ही प्रभु-भक्ति की ओर अग्रसर होना है। नौ खंडों और चारों दिशायों में करोड़ों की संख्या में जीव हैं, परंतु इस सारे जगत का मूल कारण एक अकाल पुरख है। संत-निंदक सदैव तिरस्कृत होता है। प्रभु तमाम शक्तियों से पूर्ण है। जिसके मन में प्रभु का विश्वास है उसके मन में सच्चा ज्ञान है। प्रभु के भजन के बिना कोई दूसरी वस्तु साथ नहीं जाती।

प्रभु के चरण-कमलों को हृदय में धारण करने पर जन्म-जन्मों के पाप कट जाते हैं। जिस मनुष्य ने पलक झपकने के बराबर भी प्रभु के गुण गाए हैं उसे मोक्ष की प्राप्ति हुई है। जिस मन में छलरहित अविनाशी परमात्मा का निवास है वहां माया किस प्रकार रह सकती है?

आठों पहर प्रभु का दर्शन करने से, उसे अपने साथ महसूस करने से अज्ञानता मिट जाएगी। वह अकाल पुरख घट-घट की जानने वाला है। वह अनंत सभी भुवनों में मौजूद है। नश्वर वस्तुओं रूपी आशाओं की लहरें छोड़कर प्रभु-भक्ति में मन लगाना चाहिए। प्रभु सदाचारी व्यक्ति के माथे पर प्रकट होते हैं। प्रभु के नाम-रूपी धन से स्थिर सुख, मन का टिकाव, रिद्धियां-सिद्धियां, नौ भंडार, बुद्धि, ज्ञान और कुशलता उस मनुष्य में आ जाती है तथा विद्या, तप, योग, अकाल पुरख का स्मरण, ज्ञान, स्नान, चतुर्वग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति), हृदय कमल में परमात्मा का प्रस्फुटन, सर्वत्र व्याप्त होने पर भी तटस्थता, सुंदरता, बुद्धिमता सबको समदृष्टि से देखना, ये सारे फल उस नाम-धन को प्राप्त करने वाले मनुष्य को अपने आप ही प्राप्त हो जाते हैं।

गुणों के खजाने को जपने से जीव यमों से भी बच जाता है। सभी मतों का निचोड़ प्रभु का नाम ही है। उसके मन से दुख, रोग, डर, भ्रम का नाश होता है। इन्हीं गुणों के कारण ही प्रभु का नाम सुखों की मणी है।

"सुखमनी साहिब" सुखों की मणियों को स्वयं में संजोए एक ऐसी बाणी है जो मनुष्य को प्रभु के नाम-स्मरण को प्रेरणा देती है। यह प्रभु से दूर रहने वालों के लिए आकर्षण-शक्ति उत्पन्न करने वाली है। तर्क के आधार पर श्री गुरु अरजन देव जी ने प्रभु-नाम रूपी "सुखमनी" की सार्थकता, उपलब्धि और मनुष्य-जीवन में इसकी उपयोगिता को भली-भांति सरल और सरस भाषा में जनसाधारण तक प्रेषित किया है।





खोया मुकाम हासिल कर सकूंगा!

'गुरमति ज्ञान' पत्रिका ने मुझे उत्तराखंड के श्री नानकमता साहिब क्षेत्र में एक अलग पहचान दी है। मैं बचपन से ही प्रभु को तहदिल से मानता था और अब भी मैं हरपल प्रभु का स्मरण करता हूं। इसे 'गुरमति ज्ञान' ने आसान बना दिया है। मुझसे एक असहनीय गलती हुई, पर अब मैं पश्चाताप कर रहा हैं। 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका से जुड़कर मुझे लगता है कि मैं अपना खोया मुकाम हासिल कर सकूंगा। *-अभिजीत कुमार, श्री नानकमता साहिब।*

ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान श्री गुरु अरजन देव जी

*-बीबा मनमोहन कौर**

श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर : श्री हरिमंदर साहिब श्री अमृतसर सिक्खों का मुख्य केन्द्रीय धर्म स्थान है। श्री गुरु अरजन देव जी ने न केवल श्री हरिमंदर साहिब की इमारत की आरंभता साईं मीयां मीर जी से नींव रखवा कर १५८८ ई: में करवाई बल्कि श्री गुरु रामदास जी से श्री अमृतसर में जिस पवित्र सरोवर की खुदाई आरंभ करवाई गई थी उसे भी श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी निगरानी में पक्का करने का काम करवाया। यहीं श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरु ग्रंथ साहिब जी के संपादित स्वरूप को पहली बार संवत १६६१ (१६ अगस्त, १६०४) को श्री हरिमंदर साहिब में प्रकाशित किया। महाराजा रणजीत सिंघ ने इसके सौंदर्य के लिए विशेष प्रयत्न किए और इसके लिए सोने तथा संगमरमर की सेवा करवाई। सोने से बने होने के कारण अधिकतर विदेशी यात्रियों द्वारा इसको गोलडन टैंपल भी कहा जाता है।

हरि की पउड़ी : हरि की पउड़ी श्री हरिमंदर साहिब कंपलेक्स में ही स्थित है। यह वह स्थान है जहां पर गुरु अरजन साहिब जी ने पावन शबद *"संता के कारजि आपि खलोइआ"* का उच्चारण किया था।

गुरुद्वारा साहिब दुख भंजनी बेरी साहिब : गुरुद्वारा दुख भंजनी बेरी साहिब श्री हरिमंदर साहिब की पूर्व दिशा में पवित्र सरोवर के किनारे सुशोभित है। ऐतिहासिक स्रोत के अनुसार इस बेरी से पट्टी के शाहूकार दुनी चंद की सबसे छोटी लड़की रजनी की साखी जुड़ी हुई है जिसका विवाह उसके पिता ने किसी कोहड़ी पुरुष के साथ कर दिया था जो सरोवर में स्नान करने के पश्चात् आरोग्य हो गया। श्री गुरु रामदास जी ने १५७७ ई में इस सरोवर की खुदाई आरंभ करवाई थी। स्रोत बताते हैं कि यहां बैठ कर श्री गुरु अरजन देव जी अपनी निगरानी में सरोवर को पक्का करने और श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण की सेवा की निगरानी किया करते थे।

गुरुद्वारा मंजी साहिब दीवान हाल : यह गुरुद्वारा श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर कंपलेक्स में ही स्थित है। यह वह अस्थान है जिसको पहले गुरु का बाग कहा जाता था। इस स्थान पर बैठ कर ही श्री गुरु अरजन साहिब रोजाना दीवान सजाते थे। इस स्थान पर अब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर ने बहुत भव्य हाल का निर्माण कर दिया है, जहां हर रोज हुक्मनामे की कथा की व्याख्या की जाती है।

गुरुद्वारा गुरु के महिल : गुरुद्वारा गुरु के महिल, श्री अमृतसर में उस स्थान पर सुशोभित है जहां पर अमृतसर में अपने ठहराव के समय श्री गुरु अरजन देव जी रहा करते थे। गुरुद्वारा गुरु का महिल चौक पासियां में है जो श्री हरिमंदर साहिब से कुछ दूरी पर गुरू बाजार में है। वास्तव में यहां

**८३६३, गली नं: २, गुरु रामदास नगर, सुलतानविंड रोड, श्री अमृतसर।*

एक छोटी-सी बांस की छपरी श्री गुरु रामदास जी ने १५७३ ई में बनाई थी जिसको बाद में श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने विशाल और खूबसूरत इमारत में तबदील कर दिया।

गुरुद्वारा रामसर साहिब : गुरुद्वारा रामसर साहिब श्री अमृतसर में स्थित चाटीविंड चौक के नजदीक गुरुद्वारा बाबा दीप सिंघ जी शहीद के निकट रामसर सरोवर के किनारे पर सुशोभित है। श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण के पश्चात् श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना का कार्य इस स्थान पर किया था और इस स्थान की सुंदरता को बढ़ाने के लिए यहां १६०२ ई में एक सरोवर की खुदाई करवाई जिसका नाम श्री गुरु रामदास साहिब जी के नाम पर रामसर रखा। सरोवर के किनारे बने गुरुद्वारा साहिब का नाम भी सरोवर के नाम पर गुरुद्वारा रामसर साहिब रख दिया गया। पहले इस स्थान पर बेरी, बरगद, पीपल, शीशम और आम के पांच वृक्ष हुआ करते थे। यहीं बेरी के वृक्ष के नीचे बैठ कर ही श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरुद्वारा मंजी साहिब वाले स्थान पर अपनी सुप्रसिद्ध पावन बाणी सुखमनी साहिब की रचना की थी। कार-सेवा वाले बाबा खड़क सिंघ ने इस स्थान पर छः-मंजिला सुंदर इमारत का निर्माण करवा दिया जिसे आजकल श्री गुरु ग्रंथ साहिब भवन के नाम से भी जाना जाता है। इसकी बेसमेंट में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा चलित गोल्डन आफसेट प्रेस स्थित है।

गुरुद्वारा टाहली साहिब (संतोखसर) : गुरुद्वारा टाहली साहिब (संतोखसर) श्री हरिमंदर साहिब के नजदीक कोतवाली के सम्मुख सुशोभित है। इस स्थान पर श्री गुरु रामदास जी ने सरोवर की खुदाई आरंभ करवाई थी जिसे बाद में श्री गुरु अरजन देव जी ने संपंन्न करवाया था। इस पवित्र स्थान पर एक प्राचीन टाहली (शीशम) का वृक्ष है, जिसकी छाया में बैठ कर श्री गुरु अरजन देव जी सरोवर की कार-सेवा की निगरानी किया करते थे। गुरु अरजन देव जी ने अपने परम सिक्ख भाई संतोखा जी के नाम पर इस स्थान पर गुरुद्वारा साहिब का निर्माण कर उसका नाम संतोखसर रखा।

गुरुद्वारा पिपली साहिब : गुरुद्वारा पिपली साहिब रेलवे स्टेशन श्री अमृतसर से छेहरटा-लाहौर जाते मार्ग पर पुतली घर चौक से आबादी इसलामाबाद के बाजार के बीच सुशोभित है। यहां एक कुआं भी है। यहां पर पहले पीपल के बहुत सारे वृक्ष हुआ करते थे। पीपल का एक बड़ा वृक्ष आज भी विद्यमान है जिस कारण गुरद्वारा साहिब का नाम गुरुद्वारा पिपली साहिब प्रसिद्ध हो गया। यह वह स्थान है यहां श्री गुरु अरजन देव जी अपने महिल माता गंगा जी के साथ संगतों की अपने हाथों से लंगर-प्रशादि और पंखे-पानी आदि की सेवा किया करते थे। जब श्री गुरु अरजन देव जी लाहौर में अपनी शहीदी देने के लिए जा रहे थे तो बहुत सारी संगत आप के साथ जाने के लिए चल पड़ी और इस स्थान पर ही गुरु साहिब की आज्ञा को मान वापिस हुई थीं।

दर्शनी डिओड़ी : गुरुद्वारा साहिब दर्शनी डिओड़ी श्री हरिमंदर साहिब के नजदीक पड़ते बाजार माई सेवां में सुशोभित है। अपने निवास स्थान गुरु के महिल से श्री हरिमंदर साहिब जाते समय यहीं श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन होने पर गुरु साहिब नत्मस्तक होते थे। यहां गुरु साहिब की यादगार सुंदर दरवाजा जिसको दर्शनी डिओड़ी कहा जाता है, दिखाई पड़ता है। इस

दरवाजे के ऊपर गुरुद्वारा साहिब सुशेभित है।

गुरुद्वारा तूत साहिब, सुलतानविंड : श्री अमृतसर के गांव सुलतानविंड में जिस स्थान पर एक तूत के वृक्ष के नीचे बैठ कर श्री गुरु अरजन देव जी विश्राम किया करते थे, उस स्थान पर गुरु साहिब की पवित्र स्मृति में गुरुद्वारा तूत साहिब सुशोभित है।

गुरुद्वारा साहिब गुरू का बाग, घुक्केवाली : गुरुद्वारा गुरू का बाग श्री अमृतसर की तहसील अजनाला के गांव घुक्केवाली में श्री गुरु अरजन देव जी की पवित्र आमद की स्मृति में सुशोभित है। महान कोश के अनुसार गांव सहिंसरे की संगत की बिनती पर गुरु साहिब यहां आए थे। गुरुद्वारा साहिब के नाम बहुत सारी जमीन है, जहां बाद में श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने बाग लगवाया था। बाग लगवाने से पहले यह स्थान गुरू की रोड़ के नाम से प्रसिद्ध था। अब यहां पर दो गुरुद्वारा साहिबान गुरुद्वारा पातिः ५वीं और गुरुद्वारा पातिः ९वीं सुशोभित हैं। यह वही ऐतिहासिक बाग है जहां अंगरेजों के राज्य-काल में लकड़ी काटने के झगड़े के पश्चात पंथ को गुरु के बाग का मोर्चा लगाना पड़ा था। गुरुद्वारा साहिब के साथ सरोवर भी है जिसके नजदीक गुरु के बाग के मोर्चे के शहीदों की यादगार का निर्माण किया गया है।

गुरुद्वारा छेहरटा साहिब : गुरुद्वारा छेहरटा साहिब जिला अमृतसर के गांव वडाली जिसको गुरु की वडाली कहा जाता हैं में सुशोभित है। यहां पर गुरु अरजन देव जी द्वारा निर्माण करवाया एक बड़ा छः हरटों वाला कुआं आज भी देखा जा सकता है। इसी कूएं के नाम पर ही गुरुद्वारा साहिब का नाम छेहरटा साहिब प्रसिद्ध हो गया।

गुरुद्वारा चुबच्चा साहिब : जिला अमृतसर के एक गांव थांदे में श्री गुरु अरजन देव जी की पवित्र आमद की स्मृति में गुरुद्वारा चुबच्चा साहिब सुशोभित है।

गुरुद्वारा साहिब मल्लू नंगल : जिला अमृतसर की तहसील अजनाला के नजदीक गांव मल्लू नंगल में श्री गुरु अरजन देव जी की पवित्र आमद की स्मृति में गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है।

गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, तरनतारन : गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब तरनतारन में श्री गुरु अरजन देव जी के आगमन की स्मृति में बहुत ही शानदार इमारत के रूप में सुशोभित है। गुरुद्वारा साहिब की इमारत के अंदर छत और दीवारों पर बहुत ही सुंदर चित्रकारी की गई है। गुरुद्वारा साहिब में प्रातःकाल से सायंकाल तक गुरबाणी कीर्तन होता रहता है। तरनतारन सिक्खों का प्रमुख नगर है। इसको श्री गुरु अरजन देव जी ने गांव खारा और पलास्वर की जमीन खरीद कर स्वयं बसाया था। यहां श्री गुरु अरजन देव जी ने एक विशाल सरोवर की खुदाई कराई और महाराजा रणजीत सिंघ ने सरोवर के दोनों ओर सीढ़ियां और परिक्रमा का निर्माण कराया। महाराजा ने श्री दरबार साहिब की इमारत के गुंबदों के लिए सोना भी भेट किया। श्री गुरु अरजन देव जी ने इस नगर में कुष्ट रोगियों के उपचार हेतु दवाखाना भी स्थापित किया था।

हरि की पउड़ी : हरि की पउड़ी वाली सीढ़ियां श्री दरबार साहिब से सरोवर तक जाती हैं। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी ने सरोवर की खुदाई के लिए प्रथम टक यहां ही लगाया था।

गुरुद्वारा मंजी साहिब : गुरुद्वारा मंजी साहिब श्री दरबार साहिब तरनतारन के कम्पलेक्स में सुशोभित है। यह वह स्थान है जहां विराजमान

होकर श्री गुरु अरजन देव जी सरोवर की खुदाई की देख-रेख किया करते थे। आजकल इसके साथ एक बहुत बड़े हाल का निर्माण हो चुका है।

गुरू का खूह : श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री दरबार साहिब के समीप एक कुएं का निर्माण भी कराया। इसके समीप ही उन्होंने विश्राम हेतु एक छोटी सी छपरी (चारदीवारी के बिना छत) भी बनवाई थी।

गुरुद्वारा साहिब जन्मस्थान श्री गुरु अरजन देव जी : गुरुद्वारा साहिब जन्मस्थान श्री गुरु अरजन देव जी गोइंदवाल साहिब के गुरुद्वारा चौबारा साहिब के आंगन में सुशोभित है। यहां श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म हुआ था।

गुरुद्वारा चौबारा साहिब बाबा मोहन जी : गुरुद्वारा चौबारा साहिब बाबा मोहन जी गोइंदवाल में वह स्थान है जहां गुरु अमरदास साहिब जी के सपुत्र बाबा मोहन जी रहा करते थे। यह वही अस्थान है यहां श्री गुरु अरजन देव जी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रथम पावन स्वरूप के संपादन के समय बाबा मोहन जी से पोथियां लेने के लिए आये थे। इस स्थान पर आज भी वह पालकी साहिब सुशोभित है जिसमें श्री गुरु अरजन देव जी गुरबाणी की पोथियां लेकर अमृतसर गये थे।

गुरुद्वारा चुबच्चा साहिब : गुरुद्वारा चुबच्चा साहिब तरनतारन के गांव सरहाली में श्री गुरु अरजन देव जी की पवित्र आमद की स्मृति में सुशोभित है। यहीं श्री गुरु अरजन देव जी अपने परिवार समेत ठहरे थे। गुरुद्वारा साहिब के तहखाने में पानी रखने के लिए एक चुबच्चा बना हुआ है, जिस कारण गुरुद्वारा साहिब का नाम गुरुद्वारा चुबच्चा साहिब प्रसिद्ध हो गया।

गुरुद्वारा चोहला साहिब : गुरुद्वारा चोहला साहिब तरनतारन के गांव सरहाली से ४-५ किलोमटीर की दूरी पर श्री गुरु अरजन देव जी की आमद की पवित्र स्मृति में सुशोभित है। यहीं गुरु साहिब ने *"हरि नामु भोजनु इहु नानक कीनो चोल्हा"* (धनासरी महला ५) शबद उचारा था। गुरु साहिब की पवित्र छोह प्राप्त एक कूआं आज भी यहां विद्यमान है। ऐतिहासिक स्रोत के अनुसार गुरु अरजन देव जी के अलावा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की पवित्र छोह भी इस स्थान को प्राप्त है।

गुरुद्वारा झाड़ साहिब (कैरों) : गुरुद्वारा झाड़ साहिब जिला तरनतारन के गांव कैरों में श्री गुरु अरजन देव जी की आमद की पवित्र स्मृति में सुशोभित है। गुरु साहिब यहां अपनी एक प्रचार यात्रा के समय आए थे। यहीं उन्होंने ने अपने घोड़े को करीर के एक वृक्ष के साथ बांधा था। नई इमारत की उसारी के समय वह करीर का वृक्ष अलोप हो गया। गुरुद्वारा साहिब के साथ सरोवर भी सुशोभित है।

गुरुद्वारा साहिब, खान छप्परी : खान छप्परी जिला तरनतारन का एक गांव है। यह गांव डाकघर फतिहाबाद से ५ किलोमीटर और रेलवे स्टेशन तरनतारन से १९ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह एक छोटा सा गांव है, जिस में श्री गुरु अरजन देव जी के अलावा श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी और गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने भी अपने पवित्र चरण डाले हैं। गुरु साहिबान की पवित्र आमद की स्मृति में यहां गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। ऐतिहासिक स्रोत के अनुसार सर्दियों की भारी बारिश के समय में श्री गुरु अरजन देव जी अपने सिक्खों समेत यहीं एक गरीब किसान भाई हेमा की बिनती पर उसकी छप्परी में विश्राम के लिए ठहरे थे। यहीं पर गुरु साहिब ने

"भली सुहावी छापरी जा महि गुन गाए" शबद का उच्चारण किया था।

गुरुद्वारा साहिब खारा : तरनतारन के गांव खारा जो अमृतसर-तरनतारन सड़क पर स्थित है में श्री गुरु अरजन देव जी की पवित्र आमद की स्मृति में दो गुरुद्वारा साहिबान सुशोभित है। एक गुरुद्वारा मंजी साहिब और दूसरा गुरुद्वारा दूख निवारन साहिब गांव खारा में सुशोभित हैं। गुरुद्वारा मंजी साहिब में गुरु साहिब की पवित्र छोह प्राप्त एक कूआं आज भी दिखाई पड़ता है जबकि गुरुद्वारा दूख निवारन साहिब के कंपलेक्स में एक सरोवर है। स्रोतों के अनुसार इस सरोवर को महाराजा रणजीत सिंघ ने पक्का करवाया था।

गुरुद्वारा साहिब गुरु की कोठड़ी : गुरुद्वारा साहिब गुरु की कोठड़ी जिला तरनतारन के गांव चोहला के भीतर सुशोभित है। यह वह स्थान है जहां श्री गुरु अरजन देव जी और उनके महिल माता गंगा जी निवास किया करते थे। इसी लिए इस गुरुद्वारा साहिब को माता गंगा जी का अस्थान भी कहा जाता है। यहां पर गुरु साहिब की पवित्र छोह प्राप्त प्राचीन कुआं आज भी देखा जा सकता है।

गुरुद्वारा झाड़ साहिब वां : गुरुद्वारा झाड़ साहिब पातशाही पांचवीं जिला तरनतारन के गांव वां के समीप श्री गुरु अरजन देव जी के पवित्र आगमन की स्मृति में सुशोभित हैं। यहां जिस करीर के वृक्ष के साथ गुरु साहिब ने अपना घोड़ा बांधा था वह आज भी विद्यमान है।

गुरुद्वारा थम्मह साहिब करतारपुर (जालंधर): गुरुद्वारा थम्मह साहिब जिला जालंधर के नगर करतारपुर में श्री गुरु अरजन देव जी के स्मृति स्थल के रूप में सुशोभित है। करतारपुर को श्री गुरु अरजन देव जी ने बादशाह अकबर के समय बसाया था। इस अस्थान पर श्री गुरु अरजन देव जी ने एक दीवानखाना बनवाया था जिसके बीच पक्के थम्मह की जगह टाहली का थम्मह था, जिस कारण इस गुरुद्वारा साहिब का नाम थम्मह जी साहिब प्रसिद्ध हो गया। इस धरती को श्री गुरु अरजन देव जी के अतिरिक्त श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब और श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी का पवित्र स्पर्श भी प्राप्त है।

गुरुद्वारा गंगसर साहिब पातशाही पांचवीं : गुरुद्वारा गंगसर साहिब पातशाही पांचवीं करतारपुर साहिब से थोड़ी दूरी पर सुशोभित है। इस अस्थान पर श्री गुरु अरजन देव जी ने एक कुआं खुदवाया था। गुरुद्वारा साहिब के प्रकाश स्थान के समीप वह थड़ा आज भी विद्यमान है जिसके बारे में स्रोत बताते हैं कि यहां श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब बैठ कर संगतों को उपदेश देते थे।

गुरुद्वारा साहिब शीश महिल (जालंधर) : गुरुद्वारा साहिब शीश महल वास्तव में श्री गुरु अरजन देव जी के निवास स्थल पर सुशोभित गुरुद्वारा साहिब है जो कि जिला जालंधर के नगर करतारपुर में है। इस गुरुद्वारा साहिब में श्री गुरु अरजन देव जी की ओर से तैयार करवाई गई आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की प्रथम बीड़ और श्री गुरु अरजन देव जी का गुटका भी विद्यमान है। इसके अतिरिक्त यहां गुरु साहिबान के साथ संबंधित बहुत से पवित्र स्मुति-चिन्ह जैसे कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का खड़ग जिसके साथ पैंदा खान मारा गया था, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का खंडा, सेली टोपी बाबा श्री चंद, गुरु हरिगोबिंद साहिब का निशान (झंडा), बाबा गुरदित्ता जी की दस्तार, एक

शाल और गोदड़ी विद्यमान है। इस स्थान को श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का पवित्र स्पर्श भी प्राप्त है।

गुरुद्वारा पातशाही पांचवीं बिलगा : गुरुद्वारा पातशाही पांचवीं जिला जालंधर की तहसील नवांशहर के थाना फिलौर के गांव बिलगा में श्री गुरु अरजन देव जी के पवित्र आगमन की स्मृति में सुशोभित है। महान कोश अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी अपने विवाह के समय गांव मउ जाते समय रास्ते में यहां विश्राम करने के लिए रुके थे। यहां ही आप जी ने विश्राम करने उपरांत नये वस्त्र पहने थे और अपना पुराना चोला यहां के एक निर्धन निवासी को दे दिया था जो अभी तक वंशजों ने संभाल कर रखा हुआ है।

गुरुद्वारा मउ साहिब पातशाही पांचवीं : गुरुद्वारा मउ साहिब पातशाही पांचवीं जिला जालंधर के नगर फिलौर के गांव मउ में उस स्थान पर सुशोभित है, जहां श्री गुरु अरजन देव का विवाह श्री किशन चंद की सपुत्री (माता) गंगा जी के साथ हुआ।

गुरुद्वारा साहिब पातशाही पांचवीं, होठियां : गुरुद्वारा साहिब पातशाही पांचवीं जिला गुरदासपुर की तहसील बटाला के एक गांव होठियां में श्री गुरु अरजन देव जी की पवित्र स्मृति में सुशोभित है। महान कोश के अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी बारठ से घुक्केवाली जाते समय इस स्थान पर रुके थे।

गुरुद्वारा थम्मह जी साहिब पातशाही पांचवीं: गुरुद्वारा थम्मह जी साहिब पातशाही पांचवीं जिला गुरदासपुर के गांव बारठ में श्री गुरु अरजन देव जी की स्मृति में गुरद्वारा तप अस्थान बाबा श्री चंद जी के सामने सुशोभित है। इस स्थान को श्री गुरु अरजन देव जी के अतिरिक्त श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी का भी पवित्र स्पर्श प्राप्त है। यहां पर बाबा श्री चंद जी भी रहा करते थे। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी बाबा श्री चंद जी का, गुरु-पुत्र होने के नाते सत्कार सहित यहां उनसे भेंट-वार्ता करने पधारे थे।

गुरुद्वारा बुर्ज साहिब : गुरुद्वारा बुर्ज साहिब जिला गुरदासपुर के गांव फतिहनंगल में श्री गुरु अरजन देव जी के आगमन की स्मृति में सुशोभित है। यहां पहले श्रद्धालुओं की ओर से मिट्टी का एक बुर्ज बना दिया गया था परंतु आजकल गुरुद्वारा साहिब की इमारत दृश्टव्य होती है। गुरुद्वारा साहिब के साथ एक छोटा सा सरोवर भी है।

गुरुद्वारा झंगड़ साहिब : गुरुद्वारा झंगड़ साहिब पंजाब के जिला कपूरथला के गांव डल्ला में श्री गुरु अरजन देव जी के पवित्र आगमन की स्मृति में सुशोभित है। यह नगर गुरु-घर के दो प्रमुख सिक्खों- भाई लालो और भाई पारो के साथ भी संबंधित है जिसका ज़िक्र भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में भी किया है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी अपने सपुत्र (गुरु) हरिगोबिंद साहिब जी के विवाह के समय यहां आये थे।

गुरुद्वारा बाउली साहिब डल्ला : गुरुद्वारा बाउली साहिब श्री गुरु अरजन देव जी की स्मृति में सुशोभित है। महान कोश अनुसार यह वह बाउली है जो श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने सपुत्र (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के विवाह की स्मृति में डल्ला नगर में बनवाई थी।

गुरुद्वारा सेहरा साहिब सुलतानपुर लोधी : सुलतानपुर लोधी जिला कपूरथला की एक तहसील है। यह प्रसिद्ध शहर फिरोजपुर, जलंधर रेलवे स्टेशन से ४६ किलोमीटर, कपूरथला से

२५ किलोमीटर, मखू से ३० किलोमीटर और लोहीआं खास से ६ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां गुरुद्वारा सेहरा साहिब श्री गुरु अरजन देव जी की पवित्र आमद की स्मृति में सुशोभित है। यह वह अस्थान है जहां गुरु साहिब डल्ला में अपने बेटे (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के विवाह के समय रास्ते में विश्राम के लिए रुके थे। यह गुरुद्वारा कोठड़ी साहिब के नजदीक है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार जहां गुरु अरजन देव जी के सपुत्र (गुरु) हरिगोबिंद साहिब की जंञ एक रात के विश्राम के लिए रुकी थी और इसी स्थान पर (गुरु) हरिगोबिंद साहिब को सेहरा बांधने की रस्म निभाई गई थी।

गुरुद्वारा साहिब कंगमाई : गुरुद्वारा साहिब कंगमाई श्री गुरु अरजन देव जी के पवित्र आगमन की स्मृति में सुशोभित है। यहां श्री गुरु अरजन देव जी का प्रमुख सिक्ख भाई मंझ भी रहता था जिसको गुरु साहिब ने दुआबे का प्रचारक स्थापित किया था।

गुरुद्वारा साहिब पातशाही पांचवीं हंजरा : गुरुद्वारा साहिब पातशाही पांचवीं पाकिस्तान के एक कसबे पत्तोकी जो लाहौर-मुलतान मार्ग पर है, के गांव हंजरा में श्री गुरु अरजन देव जी की पवित्र आमद की स्मृति में सुशोभित है। यहां गुरु साहिब ने जातरी और हंजरा नामक दो भाइयों में चलते आ रहे जमीन के झगड़े को निपटाया था। गुरुद्वारा साहिब के साथ सरोवर वी सुशोभित है।

गुरुद्वारा साहिब खादरी : महान कोश के कर्ता भाई कान्ह सिंघ नाभा अनुसार पाकिस्तान की तहसील ननकाणा साहिब के जिला शेखूपुरा में श्री गुरु अरजन देव जी की पवित्र आमद की स्मृति में गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है।

गुरुद्वारा साहिब पातशाही पांचवीं जातरी : गुरुद्वारा साहिब पातशाही पांचवीं पाकिस्तान के जिला शेखूपुरा एक गांव जातरी में श्री गुरु अरजन देव जी की पवित्र आमद की स्मृति में सुशोभित था, जो आजकल अलोप हो चुका है। इस गुरद्वारे का अंतिम चिन्ह केवल सराए ही बाकी बची है। यहां श्री गुरु अरजन देव जी अपने सिक्ख भाई जातरी की विनती पर आए थे। भाई जातरी की यादगार आज भी गांव के बाहर दरिया रावी के पास वृक्षों के एक झुंड में दृश्टव्य है।

गुरुद्वारा पातशाही पांचवीं, बहिड़वाल : गुरुद्वारा पातशाही पांचवीं पाकिस्तान के जिला कसूर में लाहौर-मुलतान सड़क पर बसे गांव बहिड़वाल में श्री गुरु अरजन देव जी के पवित्र आगमन की स्मृति में सुशोभित है। श्री गुरु अरजन देव जी गांव जंबर से चल कर यहां पहुंचे थे। गुरुद्वारा साहिब में गुरु साहिब के पवित्र स्पर्श प्राप्त एक कुआं और एक वृक्ष आज भी विद्यमान हैं। यहां विराजमान होकर गुरु साहिब ने ठंडा जल छका था। हल्ला राम मार्ग पर स्थित गांव शेखम में श्री गुरु अरजन देव जी के पवित्र आगमन की स्मृति में गुरुद्वारा पातशाही पांचवीं सुशोभित है। स्रोत बताते हैं कि गुरु साहिब बहिड़वाल से चलकर यहां पहुंचे थे।

गुरुद्वारा थम्मह साहिब जंबर कला : गुरुद्वारा थम्मह साहिब जंबर कला पाकिस्तान के जिला कसूर में लाहौर-मुलतान सड़क पर भाई फेरू से आगे छांगा-मांगा मोड़ पर बसे गांव जंबर कलां में सुशोभित है। यहां श्री गुरु अरजन देव जी के पवित्र स्पर्श प्राप्त दो पावन थम्मह विद्यमान हैं, जिन्हें लोग दूख निवारन कहते हैं और विश्वास करते हैं कि इनके स्पर्श से रोग दूर होते हैं। श्री गुरु अरजन देव जी बहिड़वाल

से होते हुए यहां पधारे थे।

गुरुद्वारा साहिब बुच्चेकी : महानकोश कृत भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार पाकिस्तान के जिला शेखूपुरा की तहसील ननकाणा साहिब में श्री गुरु अरजन देव जी के पवित्र आगमन की स्मृति में सुशोभित है। स्रोत अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी ननकाणा साहिब से आते समय यहां रुके थे। यहां वे अपने एक सिक्ख भाई हरनाम सिंघ की प्यार भरी विनती पर पहुंचे थे।

गुरुद्वारा डेहरा साहिब (लाहौर) : पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) की राजधानी लाहौर का सिक्ख इतिहास के साथ बहुत घनिष्ट संबंध है। लाहौर में श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी तथा अन्य अनेकों सिक्ख शहीदों के पवित्र अस्थान विद्यमान हैं। पाकिस्तान में स्थित गुरुद्वारा डेहरा साहिब लाहौर श्री गुरु अरजन देव जी के ज्योति-जोति समाने के नाम पर प्रसिद्ध है। सब से पहले यहां श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने आकर शहीदी अस्थान का निर्माण कराया। बाद में महाराजा रणजीत सिंघ की तरफ से गुरुद्वारा साहिब का निर्माण कराया गया।

गुरुद्वारा सच्ची मंजी, हफ़्तमदर : गुरुद्वारा सच्ची मंजी पाकिस्तान के जिला शेखूपुरा की तहसील ननकाणा साहिब के गांव हफ़्तमदर में स्थित है। यहां श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने प्रेमी सिक्खों को अपना डण्डा देकर बख्शिश की थी। इस धरती को श्री गुरु अरजन देव जी के अतिरिक्त श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अमरदास जी ने भी अपने मुबारक चरणों से पवित्र किया है। गुरुद्वारा साहिब की इमारत अलोप हो चुकी है। केवल कुछ दीवारें ही बच पाई हैं।

गुरुद्वारा साहिब दीवानखाना, लाहौर : गुरुद्वारा साहिब दीवानखाना लाहौर बाजार चूना मंडी में श्री गुरु अरजन देव जी की पवित्र स्मृति में सुशोभित है। इसके समीप ही श्री गुरु रामदास जी का प्रकाश स्थान भी सुशोभित है। गुरु रामदास जी के पूर्वज लाहौर के रहने वाले थे। गुरु रामदास जी अपने भतीजे के विवाह पर न जा सके अत: आप ने (गुरु) अरजन साहिब को लाहौर भेजा था। यहां से ही श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने पिता को *"मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई"* पंक्ति से पहला पत्र आरंभ करते हुए तीन पत्र लिखे थे। इस अस्थान को धर्मशाला गुरु रामदास साहिब भी कहा जाता है। इस धर्मशाला के आंगन में ही दीवानखाना गुरु अरजन देव जी सुशोभित है।

गुरुद्वारा पंचम पातशाही, चक्क रामदास : पाकिस्तान के जिला गुजरांवाला में ऐमनाबाद से मीयांवाली जाने वाले मार्ग पर स्थित चक्क रामदास कसबे में श्री गुरु अरजन देव जी की पवित्र आमद की स्मृति में गुरुद्वारा साहिब पंचम पातशाही सुशोभित है। जनाब एकबाल केसर अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी अपने प्रेमी भाई पिराणा के प्यार का सदका उसकी विनती पर इस नगर में पधारे थे। गुरुद्वारा साहिब की सुंदर इमारत के सामने एक चुबारा है जिसको गुरु के महिल पुकारा जाता है।

गुरुद्वारा बाउली साहिब, रंग महिल : गुरुद्वारा बाउली साहिब श्री गुरु अरजन देव जी की यादगार का पवित्र स्थान लाहौर के रंग महिल बाजार के भीतर सुशोभित है। गुरु अरजन देव जी ने डब्बी बाजार के भीतर रहने वाले लोगों के लिए एक बाउली का निर्माण करवाया था।

१६८५ में यह बाउली विरोधियों ने पाट दी थी पर १८९१ में महाराजा रण्जीत सिंघ ने इसका दोबारा निर्माण करवा दिया। आजकल यह बाउली अलोप हो चुकी है। इस के नजदीक एक छोटा सा बाग भी है।

गुरुद्वारा साहिब बुद्धू का आवा : गुरुद्वारा साहिब बुद्धू का आवा लाहौर-अमृतसर मार्ग पर सुशोभित है। इस अस्थान पर ही भाई सुद्धू के पुत्र बुद्धू ने श्री गुरु अरजन देव जी के हजूर आपने आवे के पक्के होने की अरदास विनती की थी। जनाब इकबाल केसर के अनुसार गुलाबी बाग के समीप इंजीनियरिंग यूनीवर्सिटी के ज़ीरो गेट के सामने ही भाई बुद्धू का मकबरा है। इसके पीछे गुरुद्वारा साहिब था। अब यहां कबरिस्तान बना दिया गया है। बुद्धू का मकबरा पाकिस्तान आरकवाईवज़ विभाग ने संभाला हुआ है।

गुरुद्वारा साहिब लाल खूह, मोची दरवाजा : गुरुद्वारा साहिब लाल खूह लाहौर के मोची दरवाज़े के भीतर बाज़ार में सुशोभित है। जनाब इकबाल केसर के अनुसार यह खूह चंदू की हवेली में था। इसके समीप ही छोटी सी कोठड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी को गिरफतार करके कैद किया गया था। इस कैद के समय के दौरान गुरु साहिब इसी कुएं का जल स्नान आदि के लिए उपयोग में लाते रहे हैं।



कविता

अमृतसर सिफ्ती का घर

अमृतसर है सिफ्ती का घर है।
प्रभु-नाम बांटे सदैव ही यह दर है।
बाणी का प्रवाह आनंद का निर्झर है।
चारों वर्णों हेतु कुदरत का उपहार है।
साईं मियां मीर जी ने रखी इसकी नींव है।
प्रभु उस्तत का पावन उजास है।
रूह को मिलती यहां हर पल खुराक है।
इसकी आभा सारे जग से निराली है।
लगता यहां तो हर रोज ही दीवाली है।
एकता-अखंडता-समता का प्रतीक है।
मानवतावादी दृष्टिकोण कितना सटीक है!
अमृत-सरोवर पावन कौऐ हंस करता।
पिंगलों के तन को जो कंचन है करता।
श्री गुरु ग्रंथ साहिब का हुआ पहला जहां प्रकाश है।
पंचम पातशाह की अनमोल यह दात है।
ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा जी पहले मुख्य ग्रंथी।
परमेश्वर के सम्मुख हुई शुक्राने की अरदास है।
"संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥"
आया पहला 'हुक्मनामा' जिसे कहते पावन 'मुखवाक' है।
कैसे हर काम में अपने भक्तों के सहाई होता प्रभु आप है।
सामने ही श्री अकाल तख्त साहिब सुशोभित है
राजसी वैभव के जहां झूलते दो केसरी निशान हैं।
छठे पातशाह ने पहनीं मीरी-पीरी की दो तलवारें हैं।
सामजस्य का यह कैसा अद्भुत खेल है!
धर्म व प्रभु-प्यार का सुंदर सुमेल है।
समन्वय सद्भाव का अलौकिक नजारा है।
वाह-वाह करता दर्शन कर जग सारा है।
प्रभु-नाम बांटे सदैव ही यह दर है।
वाहिगुरु रहमत करे प्रत्येक पे
सबको नसीब हो दर्शन अमृतसर सिफ्ती के घर के!

-डॉ मनजीत कौर, २/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३ 

पोथी परमेसर का थानु

*-डॉ. अमृत कौर**

जीवन में शिक्षा के महत्व को प्रकट करते हुए श्री गुरु अरजन देव जी कहते हैं *"पोथी परमेसर का थानु ॥"* (पन्ना १२२६) अर्थात् पोथी परमेसर का निवास-स्थल है और इसका अध्ययन, अध्यापन, मनन और चिंतन प्रभु-प्राप्ति का साधान है। साधारण जनता को शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित करता है : *"पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥"* (पन्ना १८६) इस खजाने के रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रथम पावन सरूप को सम्पादित कर समाज को समर्पित करना समाज को आध्यात्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक, कलात्मक, भावनात्मक रूप से शिक्षित करने का बहुमूल्य प्रयास है। डॉ. लैटिनेर कृत 'हिस्टरी ऑफ इनडीजिनस ऐजूकेशन इन पंजाब' (प. १२३-१२५) के अनुसार श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन के बाद श्री गुरु ग्रंथ साहिब का अध्ययन-अध्यापन गुरुद्वारों के साथ संलग्न प्रारंभिक स्कूलों के पाठयक्रम का अविभाव्य अंग बन गया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब पंजाबी भाषा के साहित्य का प्रमुख खजाना है जो मातृभाषा पंजाबी के अध्ययन-अध्यापन की प्रेरणा देता है और जिसने हमें अपने धर्म और संस्कृति से जोड़ा हुआ है, क्योंकि :

बिनु बिदिआ कहा कोई पंडित ॥ (पन्ना ११४०)

शिक्षा के महत्व को प्रकट करते हुए श्री गुरु अरजन देव जी कहते हैं:

बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥
गिआनु स्रेसट ऊतम इसनानु ॥ (पन्ना २९५-९६)

जब ज्ञान के निर्मल प्रवाह में आत्मा स्नान करती है, शिक्षा का प्रकाश फैलता है तो चारों ओर उजाला ही उजाला हो जाता है। शिक्षा प्रकाश है और यह प्रकाश ज्ञान-प्राप्ति द्वारा संभव है। विद्या-अर्जन में ज्ञान-प्राप्ति का विशेष महत्व है। ज्ञान का प्रकाश शिष्य की आत्मिक, मानसिक और नैतिक शक्तियों को विकसित करता हुआ अज्ञान के अंधेरे का विनाश करता है: *"अगिआन अंधेरा मिटि गइआ गुर गिआनु दीपाइओ ॥"* (पन्ना २४१) इसलिए ज्ञान की श्रेष्ठता प्रकट करते हुए गुरु जी कहते हैं: *"सगल तत महि ततु गिआनु ॥"* (पन्ना ११८२) यह तत-ज्ञान, यह ज्ञान का दीपक, अज्ञान के अंधेरे को दूर कर शिष्य की बुद्धि, विवेक को विकसित कर उसे सही रूप में धनवान बनाता है। *"सो धनवंता जिसु बुधि बिबेक ॥"* (पन्ना ११५०)

श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार सुरति, मति, बुधि ये मानसिक शक्तियां शिक्षा के द्वारा प्रकाशित होती हैं : *"सुरति मति बुधि परगासु ॥"* (पन्ना ८८९) हमारे मन में रतन जवाहर, माणिक के रूप में अनगिनत मानसिक, आध्यात्मिक शक्तियां छिपी हैं। आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों के अनुसार इन छिपी हुई शक्तियों, ताकतों को विकसित करना शिक्षा है। केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना शिक्षा नहीं है। यह तो केवल मन पर बोझ है: *"कथनी बदनी पड़ि पड़ि भारु ॥"* (पन्ना ४१२) अत: वास्तविक शिक्षा आत्मानुभव और आत्मप्रकाशन में सहायक सिद्ध होती है। यह दैवी ज्ञान के द्वारा मन को

**१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०३ (पंजाब)*

प्रकाशित करती है। प्रभु-नाम के सिमरन, मनन, चिंतन के द्वारा प्रभु के साथ एकात्मिकता प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होती है। ज्ञान क्रियात्मक रूप धारण कर उसे ब्रह्मज्ञानी बना देता है। इस ब्रह्मज्ञानी की सम्पूर्ण आध्यात्मिक मानसिक, नैतिक, सामाजिक शक्तियां विकसित होती हैं जो पुष्प की भांति विकसित और प्रफुल्लित होकर सम्पूर्ण संसार को सुगंधित कर देता है। अत: जीवन का सर्वांगीण विकास करना ही शिक्षा है, ऐसा गुरु जी का मत है:

फूटो आंडा भरम का मनहि भइओ परगासु ॥
काटी बेरी पगह ते गुरि कीनी बंदि खलासु ॥
(पन्ना १००२)

शिक्षा-प्राप्ति ज्ञान का प्रकाश जीवन का चतुर्मुखी विकास गुरु के निर्देशन, पथ-प्रदर्शन और मार्ग-दर्शन द्वारा ही संभव है। गुरु जी अपनी शैक्षणिक प्रक्रिया में 'गुरु' को विशेष स्थान देते हैं। गुरु ज्ञान के प्रकाश द्वारा अज्ञानता के अंधेरे को दूर करता है: *"गुरि काटी अगिआनता . . . ॥"* (पन्ना ४००) गुरु बिन ज्ञान-प्राप्ति संभव नहीं: *"बिनु गुर दीखिआ कैसे गिआनु ॥"* (पन्ना ११४०)

गुरु हमारी सुप्त शक्तियों को जागृत कर आध्यात्मिक, मानसिक, नैतिक और सदाचारिक शक्तियों और गुणों के विकास में सहायता करता है और यह गुरु कोई साधारण व्यक्ति नहीं होता। इसकी अपनी भी आध्यात्मिक, मानसिक, नैतिक शक्तियां विकसित होती हैं: *"सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥"* (पन्ना २८६) सिक्ख गुरु साहिबान के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य आत्म-विकास और आत्म-प्रकाशन है, प्रभु से एकात्म होना है। अत: वास्तविक गुरु वह है जो शिष्य की आध्यात्मिक शक्तियों को जागृत करता है :

सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥
राम नामु आतम महि सोधै ॥
राम नाम सारु रसु पीवै ॥
उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥
(पन्ना २७४)

गुरु अरजन साहिब ने परमात्मा, अन्तरात्मा, शबद, बाणी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब और सतसंगति को भी गुरु माना है। वह परमात्मा को गुरु मानते हुए कहते हैं: *"सतिगुरु परमेसरु मेरा"* (पन्ना ८८४) परमात्मा ज्ञान और प्रकाश का स्रोत है और नाम-सिमरन द्वारा उससे "गिआनु धिआनु ततु बुधि" प्राप्त होती है। *"जैसा सेवै तैसो होइ ॥"* (पन्ना २२३) के अनुसार उच्च गुणों का विकास मनुष्य के जीवन में सहज रूप से होने लगता है और यह ज्ञान का प्रकाश नैतिक उच्च गुणों के विकास, अन्तरात्मा, महापुरुषों की संगत, शबद-बाणी और महान ग्रंथों के अध्ययन एवं मनन द्वारा प्राप्त होता है।

अन्तरात्मा की आवाज हमें सदमार्ग का अनुगामी बनाती है। हम यदि अन्तरात्मा की आवाज को सुनें तो यह ज्योति सरूप बन पग-पग पर हमारा पथ-प्रदर्शन करती है। सिक्ख चिंतन में 'शबद' को गुरु माना गया है। गुरु अरजन साहिब 'शबद' को गुरु मानते हुए कहते हैं : *"अंधकारु मिटिओ तिह जन ते गुरि सबदि दीपकु परगासा ॥"* (पन्ना २०८)

गुरु का शबद दीपक है। वह प्रभु की जीती-जागती आवाज है। गुरु-शबद नाद है, ज्ञान और सत्य का भंडार है। 'शबद' प्रकाश है और यह 'शबद प्रकाश' *"पोथी परमेसर का थानु"* (पन्ना १२२६) बनकर सदियों से हमारा पथ-प्रदर्शन कर रहा है। सिक्ख गुरु साहिबान की ओर से श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु की पदवी प्रदान की गई है। गुरु अरजन साहिब ने साधसंगत को गुरु माना है। साधसंगत अपने-पराये का भेदभाव मिटाकर मानवतावाद का

संदेश देती है :

बिसरि गई सभ ताति पराई ॥
जब ते साधसंगति मोहि पाई ॥१॥रहाउ॥
ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ *(पन्ना १२९९)*

गुरु जी ने भाई गुरदास जी की सेवायें लेते हुए श्री गुरु ग्रंथ साहिब का हस्तलिखित संकलन तैयार किया। श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आदि पावन सरूप के संपादन के बाद गुरुद्वारों के साथ संलग्न आरंभिक स्कूलों के पाठ्यक्रम का विशेष विस्तार हुआ। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी बच्चों और बालगों को विशेष रूप से याद करवाई जाने लगी। गुरुद्वारों में जनता कथा-कीर्तन सुनती और निर्देश प्राप्त करती। प्रात: और सायं कीर्तन सुनना, नाम-सिमरन, कथा सुनना दैनिक दिनचर्या का अंग बन गया। *"सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥" "सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥ मन अंतर की उतरै चिंद ॥"* (पन्ना २९५) आदि निर्मल बचनों ने शिष्यों को दैवी ज्ञान प्रदान कर आध्यात्मिक विकास के लिए प्रेरित किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अध्ययन-अध्यापन को पाठ्यक्रम का अंग बना दिया। आध्यात्मिक, मानसिक, नैतिक और घर-गृहस्थ को सकुशल रूप में चलाने की शिक्षा का स्रोत यह ग्रंथ स्वयं गुरसिक्खों का पाठ्यक्रम बन गया। लेखनी को भी उत्साहित किया जाने लगा। गुरबाणी के शबदों को लिखने की प्रेरणा दी जाती: *"लिखु लेखणि कागदि मसवाणी ॥ राम नाम हरि अंम्रित बाणी ॥"* (पन्ना १८५) धार्मिक पुस्तकों के अध्यापन पर बल देते हुए गुरु जी कहते हैं: *"सासत सिंम्रिति बेद बीचारे महा पुरखन इउ कहिआ ॥"*

(पन्ना २१५)

श्री गुरु अरजन देव जी ने बच्चों को वर्णमाला सिखाने के लिए गुरबाणी पर आधारित कहावतों के रूप में "बावन अखरी" की रचना की जिससे बच्चों के लिए वर्णमाला को याद करना सरल हो गया :

१. चचा चरन कमल गुर लागा ॥ (पन्ना २५४)
२. ददा दाता एकु है सभ कउ देवनहार ॥ (पन्ना २५७)
३. बबा ब्रहमु जानत ते ब्रहमा ॥ (पन्ना २५८)
४. ववा वैरु न करीऐ काहू ॥ (पन्ना २५९)

छापेखाने के अभाव के उन दिनों में गुरबाणी के प्रचार के लिए अधिक से अधिक हस्तलिखित पोथियों का निर्माण-कार्य आरंभ हुआ। बच्चों को प्रारंभ से सुंदर लिखाई सिखाने पर बल दिया जाने लगा। सुंदर हस्तलिखित लिखाई एक कला बन गई। मोतियों जैसी सुंदर लिखाई लिखने की प्रेरणा दी जाती। अमृतसर हस्तलिखित पोथियां लिखने का केन्द्र बन गया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की अनेकों हस्तलिखित पांडुलिपियां तैयार होने लगीं। इनमें से कुछ हस्तलिखित पांडुलिपियां आज भी अमृतसर में स्थित सिक्ख पुस्तकालय में हैं।

श्री गुरु अरजन देव जी ने आध्यात्मिक और नैतिक रूप से विकसित आदर्श मनुष्य की विशेषताओं का वर्णन अपनी सुप्रसिद्ध बाणी "सुखमनी साहिब" में विस्तार से किया है और उसे 'ब्रहम गिआनी' की संज्ञा प्रदान की है। गुरु जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति द्वारा मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना है। ब्रह्मज्ञानी वह है जिसने सच्चा अध्यात्म-ज्ञान प्राप्त किया हुआ है, जो संसार में कंवल पुष्प की भांति निर्लिप्त रहता है। *"ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला ॥"* (पन्ना २७२) सम्पूर्ण सृष्टि की कल्याण-कामना करते हुए वह किसी का बुरा नहीं चाहता। *"ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥"* (पन्ना २७२) वह सम्पूर्ण मानवता को बिना भेदभाव के प्यार करता है।

"ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥ ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी ॥" (पन्ना २७२)

श्री गुरु अरजन देव जी मनुष्य के शैक्षणिक विकास के लिए जहां आध्यात्मिक एवं नैतिक उन्नति पर बल देते हैं वहां उद्योगिक, व्यापारिक विकास के द्वारा *"हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति"* (पन्ना ५२२) के लिए कड़े परिश्रम द्वारा किसी भी उद्योग, धंधे को अपनाकर जीविका-अर्जन पर बल देते हैं : *उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥ धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चित ॥* (पन्ना ५२२)

उद्योगिक शिक्षा द्वारा आत्मनिर्भर बनाना आधुनिक शिक्षा-प्रणाली का प्रमुख अंग है। इस कसौटी पर गुरु अरजन साहिब की शिक्षा प्रणाली खरी उतरती है। उन्होंने शिक्षा के उद्योगिक पक्ष के विकास के लिए विशेष व्यवहारिक प्रयास किए। निहारंजन रे के अनुसार, "अमृतसर के निर्माण ने व्यापारिक, उद्योगिक विकास में भारी योगदान दिया। गुरु बाजार अथवा गुरु का बाजार नामक व्यापारिक केंद्र का निर्माण किया गया।" श्री गुरु रामदास जी ने यह नगर बसाकर देश-कौम की प्रगति में बहुत बढ़ा हिस्सा डाला। प्रत्येक धर्म, जाति और कौम के लोगों को अमृतसर में बसाकर ५२ प्रकार के धंधों के व्यापारियों, कारीगरों, किसानों आदि को बसाया ताकि कृषि, व्यापार उद्योग आदि के धंधे प्रफुल्लित हों। इस प्रयास ने कौम को एक सुदृढ आर्थिक आधार प्रदान किया। कोई भी धंधा अब छोटा नहीं समझा जाता था। कड़े परिश्रम द्वारा जीविका कमाना पंजाबी सभ्याचार का अविभाजय अंग बन गया।

प्रिंसीपल तेजा सिंघ और डॉ. हरिराम गुप्ता के अनुसार गुरु अरजन साहिब के सिक्खों को घोड़ों के व्यापार के लिए काबुल, कंधार, ईरान और ऐशिआई देशों में भेजना शुरू किया। सिक्खों को अन्य देशों में व्यापार करने की प्रेरणा की। इसकी छाप आधुनिक युग में भी देखी जा सकती है जिसके फलस्वरूप संसार के प्रत्येक कोने में सिक्ख व्यापार आदि करते हुए खुशहाल जीवन व्यतीत करते देखे जा सकते हैं।

साहित्यिक, भावनात्मक, सांस्कृतिक विकास की शिक्षा के लिए *"धनु लेखारी नानका . . ॥"* (पन्ना ६३६) के महावाक्य का अनुसरण करते हुए आदि गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में बारहवीं सदी से लेकर सोलहवीं सदी तक पांच सौ वर्षीय आध्यात्मिक साहित्य को सम्पादित करके मानवता को एक बहुमूल्य अद्वितिय खजाना भेंट किया जो आज भी जनमानस की साहित्यिक, आध्यात्मिक, भावनात्मक भूख को शांत कर रहा है। गुरबाणी ने पंजाब के इतिहास का निर्माण किया है, सिक्खों की मानसिकता को घड़ा है, उनकी जीवन-शैली पर इसकी गहरी छाप है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ५८७१ शबद दर्ज हैं जिनमें २२१८ शबद श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा रचित हैं और उनकी सर्वोतम बाणी है "सुखमनी साहिब" जिसमें हमारी आत्मा आत्मिक-स्नान करती है। "सुखमनी साहिब" संगीत में निर्मित 'हरि मंदिर' है जो बहते दैवी चश्मे की तरह है। गुरु जी ने अमृत सरोवर में हरिमंदिर साहिब का निर्माण करके उसमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब की स्थापना करके असंख्य लोगों की आध्यात्मिक भूख को शांत किया है तथा नैतिक निर्माण में विशेष योगदान दिया है। ग्रीनलीस डक्कन (गासपल ऑफ गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ १५) के अनुसार उनकी बाणी का जहां धार्मिक महत्व है वहां वह विश्व काव्यक्षेत्र की श्रेष्ठतम काव्य रचना भी है।

सांझीवालता गुरु अरजन साहिब की शिक्षा का मूल आधार है। *"सभु को मीतु हम आपन*

कीना हम सभना के साजन ॥" (पन्ना ६७१) श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन के समय विभिन्न धर्मों, जातियों, प्रांतों के संतों-भक्तों की बाणी को शामिल कर एक धार्मिक ग्रंथ बना देना उनका राष्ट्रीय एकता को दृढ़ करने की ओर अहम कदम था। गुरु जी ने श्री हरिमंदर साहिब की नींव एक मुसलमान पीर दरवेश साईं मियां मीर जी से रखवाकर इस तथ्य को प्रमाणित किया कि वह भारत को एक सांझा धार्मिक ग्रंथ, सांझा तीर्थ स्थान देकर भारतवासियों को एक भावनात्मक लड़ी में पिरो कर राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए प्रत्येक संभव पग उठा रहे थे। श्री हरिमंदर साहिब के चार द्वार इस बात के सूचक हैं कि उनका उपदेश *"खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥"* (पन्ना ७४७-४८) आधुनिक युग में जबकि धार्मिक सद्भावना, सहनशीलता, एकता, समन्वय की बात राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर की जा रही है श्री गुरु अरजन देव जी का धार्मिक समन्वय का यह प्रयास इसकी आधारशिला के रूप में विशेष महत्व रखता है।

समय की नजाकत को देखते हुए गुरु अरजन साहिब ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को विभिन्न प्रकार की सैनिक शिक्षा दिलवाकर उन्हें *"दलि भंजन गुरु सूरमा बड जोधा बहु परउपकारी"* बना दिया। उनकी शहीदी एक युग-परिवर्तन करने वाली घटना थी जिसने गुरु साहिबान की शिक्षा-प्रणाली में सैनिक शिक्षा देना शामिल किया जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा सिक्ख धर्म की शिक्षा का अविभाजय अंग बना दी गई। श्री इन्दुभूषण बैनर्जी (खालसे का विकास, पृष्ठ ८) के अनुसार गुरु अरजन साहिब ने शहीदी के समय श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को सशस्त्र गद्दी पर बैठने का आदेश दिया और सेना रखने के लिए कहा। अब सिक्ख संत-सिपाही बनने लगे। गुरु अरजन साहिब द्वारा सैनिक सिखलाई का बीजा हुआ बीज श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा विकसित होता हुआ गुरु जी द्वारा एक स्थाई पैतृक सम्पत्ति के रूप में सिक्खों को मिल गया। सैनिक सिखलाई लेना, तलवार धारण करना सिक्खों की पोशाक का अंग बन गया।

श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी ने सिक्ख धर्म में शहीदी परंपरा विकसित करने के लिए बीज का कार्य किया। शहीद शिरोमणि गुरु जी को शहीदों के सिरताज होने के साथ सिक्ख धर्म के प्रथम शहीद होने का गौरव भी प्राप्त है। गुरु जी ने अपनी शहीदी द्वारा सदियों से चली आ रही गुलामी की जंजीरों में जकड़ी कौम को आजादी की राह पर सिर तली पर रख मृत्यु का आलिंगन करने वाली कौम बना दिया। इस प्रकार हंसते-हंसते देश और धर्म के लिए प्राण न्योछावर करने की परंपरा चलाई। श्री गुरु तेग बहादर साहिब, भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी, भाई दयाला जी, बड़े और छोटे साहिबजादों की शहीदियां पुकार-पुकार कर इस तथ्य को प्रकाशित कर रही हैं : *"सिरु दीजै काणि न कीजै ॥"* (पन्ना १४१२) और इस शहीदी परंपरा के नेता थे एक नूरानी शांत चेहरे वाले श्री गुरु अरजन देव जी जिनकी प्रशंसा हम प्रो. हरनाम दास के शब्दों में इस प्रकार कर सकते हैं :

गुरु अरजन जी ज्ञानी हैं, कवि करमी धिआनी हैं।
दैवी बैकुंठों में उनकी अमर कहानी है।
वे सच्ची-मुच्ची हैं सिरताज शहीदों के,
वे अरशी सितारा हैं सिक्खों की उम्मीदों के।



साईं मियां मीर जी

*–स. बिक्रमजीत सिंघ**

साईं मियां मीर जी का नाम सिक्ख इतिहास में बहुत प्रेम और सम्मान के साथ लिया जाता है। साईं मियां मीर जी उन सूफी संतों में से थे जिन्होंने जाति, कौम, मजहब इत्यादि की छोटी सोच वालों से ऊपर उठकर मानव-प्रेम और प्रभु-भक्ति पर जोर दिया। भाई संतोख सिंघ ने "श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" में साईं मियां मीर जी की शख्सियत पर रोशनी डालते हुए कहा :

मीआं मीर जु धीर गंभीर सुनि करि उचरति बच गुर तीर।

असल में साईं मियां मीर जी भारत की सूफी-परंपरा के प्रसिद्ध सूफी थे, जिनकी उपमा हर धर्म और संप्रदाय के लोगों ने खुले दिल से की है। वे चाहे सोलहवीं सदी के सूफी संत थे, परंतु उनकी तपस्या, त्याग और भक्ति के गुण प्राथमिक युग के सूफियों से मेल खाते थे। यही कारण था कि जब सिक्खों के पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी ने सभी धर्मों के लोगों के बीच परमात्मा का सच्चा प्यार जगाने हेतु एक सांझा आध्यात्मिक संगम-स्थल (श्री हरिमंदर साहिब) बनाना चाहा तो उनको इस अहम मुकाम का शिलान्यास करने के लिए जिस कामिल फकीर और संत का ख्याल आया वे हजरत साईं मियां मीर जी ही थे।

साईं मियां मीर जी का जन्म १५३१ ई. में सिंध के मशहूर शहर शीवस्तान में हुआ। उनके पिता जी का नाम साईं दित्ता और माता जी का नाम बीबी फातमा था। साईं जी का बचपन का नाम 'मीर मुहम्मद' था। इसके अलावा आपको मीर मुईन-अल-असलाम नाम से भी जाना जाता था।

साईं जी ने अपना बचपन सिंध में गुजारा, जिसके चलते आप भाषा भी सिंधी बोलते थे। छोटी आयु में आपके पिता का देहांत हो गया था, परंतु आप अपनी दरवेश मां के प्यार से बड़े हुए। आपके अलावा आपके तीन भाई--काजी बोलण, काजी असमान और काजी ताहिर और दो बहनें--जमला और जलाल थीं। साईं मियां मीर जी ने सात वर्ष की आयु में कुरान पढ़ लिया था। कुछ वर्षों की तलाश के बाद आप कामिल पीर (गुरु) की तलाश में शीवस्तान के जंगलों में चले गए जहां आपका मिलाप शेख खिजर कादरी के साथ हुआ जो कि उस समय इरफान के मुकाम अर्थात् ब्रह्मज्ञानी की अवस्था तक पहुंचे हुए थे। साईं जी ने शेख जी को अपना गुरु धारण कर लिया। इसके बाद मियां जी बहुत ही जल्द रुहानीयत के ऊंचे मुकाम पर पहुंच गये।

इसके पश्चात आप कोई पच्चीस वर्ष की आयु में शेख जी से आज्ञा लेकर लाहौर चले गये जहां अकबर के समय के मशहूर विद्वान असअदुल्लाह के शागिरदों (शिष्यों) में शामिल हो गए। इसके बाद साईं जी नियामतउल्लाह और मौलाना असअदुल्लाह के शिष्य भी बने। इन सबके अलावा आप ने और भी कई विद्वानों से

**सपुत्र स. रणजीतसिंघ, मकान नं. २९४६/७, बाजार लोहारा, चौंक लछमणसर, श्री अमृतसर, मो : ९४७८८-९६३७२*

प्रत्यक्ष ज्ञान और धर्म-शास्त्रों की शिक्षा ली। इस सबके साथ मीर जी अपना बहुत समय बंदगी में गुजारते। आप त्यागी स्वभाव के फकीर थे। आप अपने आप को तुच्छ-सा इंसान समझते थे। आपके गुरु-जन भी आपसे बहुत प्रभावित थे। धीरे-धीरे लोगों को जब मियां जी की हैसीयत के बारे में पता चला तो लोग बड़ी संख्या में उनके पास आने शुरू हो गये। लाहौर के लोग आपकी बहुत खिदमत करने लग पड़े, परंतु आप जी नहीं चाहते थे कि आपकी किसी भी किस्म की मकबूलियत हो। इस कारण आप ने लाहौर छोड़ने का इरादा कर लिया और सरहिंद आ गये। सरहिंद में बीमार हो जाने के कारण आप फिर वापिस लाहौर चले गये।

लाहौर निवास के समय जब कोई आपका मुरीद बनने आता तो मियां जी उसे मुरीद बनाने से इंकार कर देते और दीर्घ समय तक उसकी परीक्षाएं लेते। जब उनको यकीन हो जाता कि वह हकीकत में परमात्मा की बंदगी से जुड़ना चाहता है और उसके मन में दुनिया का मोह नहीं है तो आप उसको अपना मुरीद बनाते, फिर आप मुरीद को दुनिया के हर सहारे से अलग कर परमात्मा से जुड़ने की प्रेरणा देते।

साईं मियां मीर जी संयमी और त्यागी स्वभाव के फकीर थे। यहां तक कि आपकी दरवेशी के गुणों से समकालीन बादशाह जहांगीर भी बहुत प्रभावित हुआ था और उसने साईं जी का मुरीद बनने की इच्छा भी प्रकटाई थी, परंतु साईं जी ने उसे इंकार कर दिया था। "महिमा प्रकाश" में भी इस बात का जिक्र है:

मीआं मीर जग अवल फकीर।
भए मूरीद ता के जहांगीर।
आरफ कामल कसब की खान।
महां तिआगी बड़े सुजान।

मीर जी ने जहांगीर की श्रद्धा देखते हुए उसे एक अच्छा बादशाह बनने के लिए प्रेरा। उन्होंने जहांगीर को उसकी राज-सत्ता की गलतियों की तरफ ध्यान दिलाते हुए कहा कि बादशाह के लिए उसकी प्रजा संतान जैसी होती है, राजा को चाहिये कि सभी से समानता और न्याय का प्रकटावा करे।

साईं मियां मीर जी एक सूफी संत होने के नाते प्रत्येक धर्म का सत्कार करना अच्छी तरह से जानते थे। जहां मुगल हुक्मरान उनके आकीदतमंद थे वहां साधू-संत और सिक्ख गुरु साहिबान के साथ भी उनके प्रेमपूर्ण संबंध थे। माना जाता है कि साईं मियां मीर जी श्री गुरु अरजन देव जी के प्रिय मित्र और श्रद्धालु थे। साईं मियां मीर जी और श्री गुरु अरजन देव जी का आपस में अत्यंत गहरा प्रेम था।

विद्वानों के मुताबिक श्री गुरु अरजन देव जी की साईं मियां मीर जी के साथ मुलाकात तब हुई जब लाहौर में सहारी मल के बेटे की शादी पर आये हुए थे। एकांतवादी रुचि और शांतचित्त स्वभाव होने के कारण साईं जी का मेल शांति के पुंज श्री गुरु अरजन देव जी के साथ होना स्वाभाविक था। इसके बाद साईं जी और गुरु जी के संबंध काफी गहरे हो गए।

ज्ञानी गिआन सिंघ और प्रिं सतिबीर सिंघ के अनुसार साईं मियां मीर जी और श्री गुरु अरजन देव जी के बीच लंबे समय तक धार्मिक विचार-चर्चा होती रहती थी। डॉ मुहम्मद हबीब लिखते हैं कि गुरु साहिब और साईं मियां मीर जी एक-दूसरे से मुलाकात हेतु लाहौर तथा श्री अमृतसर आते-जाते थे।

१५८१ ई में जब श्री गुरु अरजन देव जी गुरगद्दी पर विराजे तो साईं जी ने गुरु जी को

एक दसतार भी भेजी थी।

श्री अमृतसर में श्री गुरु अरजन देव जी ने जब समूची मानवता के लिए एक सांझा स्थान श्री हरिमंदर साहिब बनवाने के लिये सभी तैयारियां कर ली थीं तो गुरु जी ने साईं मियां मीर जी को इस स्थान का शिलान्यास (नींव-पत्थर) करने के लिए श्री अमृतसर बुलवाया जो कि अब पूरे संसार में मानवता और भाईचारे की प्रत्यक्ष मिसाल है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर की तरफ से छपी पुस्तक "The Golden Temple" में भी इस बात की पुष्टि की गई है :

"The Temple was at first known as Hari Mandir, The foundation of the Mandir was laid on Magh 1, 1645 Samwat (January, 1589) by the Muslim Saint Mian Mir a friend and admirer of Guru Arjan Dev Ji and belonged to Lahore." (Page 6)

इतिहासकार लिखते हैं कि समकालीन बादशाह जहांगीर जब अपने धार्मिक जोश और कट्टरता में अंधा हो चुका था तो श्री गुरु अरजन देव जी के सिक्खी के विकास में डाले योगदान और सिक्खों के इस नये धर्म और धर्म-स्थान को देखते हुए उसने श्री गुरु अरजन देव जी को गिरफ्तार करके शहीद करने का हुक्म दे दिया।

उस समय साईं मिया मीर जी ने काफी कोशिश की कि इस शहादत को टाला जा सके, परंतु श्री गुरु अरजन देव जी ने उनको (साईं जी को) यह शहादत परमात्मा का हुक्म मान कर स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया। गुरु जी ने साईं जी को कहा कि जो कुछ हो रहा है परमात्मा की मर्जी के अनुसार हो रहा है। रिवायत के अनुसार गुरु जी ने श्लोक का उच्चारण किया :

धरति आकासु पातालु है चंदु सूरु बिनासी ॥
बादिसाह साह उमराव खान ढाहि डेरे जासी ॥
रंग तुंग गरीब मसत सभु लोकु सिधासी ॥
काजी सेख मसाइका सभे उठि जासी ॥
पीर पैकाबर अउलीए को थिरु न रहासी ॥ . .
निहचलु सचु खुदाइ एकु खुदाइ बंदा अबिनासी ॥
(पन्ना ११००)

उपरोक्त पंक्तियों में गुरु साहिब ने साईं मियां मीर जी को यह समझाने की कोशिश की है कि "दुनिया की हर वस्तु नाशवान है। आप मेरी चिंता छोड़ दें, परमात्मा के हुक्म को अपना काम करने दें। सदैव रहने वाली अस्ति केवल परमात्मा ही है और संसार में हुक्म भी उसी का चलता है।"

गुरु जी की शहीदी के बाद साईं जी और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के आपसी संबंध भी काफी खुशगवार रहे। साईं जी गुरु साहिब का बहुत आदर करते थे। यह भी माना जाता है कि जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ग्वालियर के किले में कैद कर दिये गए तो साईं मियां मीर जी ने गुरु जी की रिहाई के लिए भरपूर यत्न किये। गुरु जी की रिहाई के लिए साईं जी फकीरों और दरवेशों को साथ लेकर बादशाह के पास लाहौर से दिल्ली भी गये।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब भी साईं जी का बहुत आदर करते थे। यहां तक कि एक बार जब साईं मियां मीर जी कहीं जा रहे थे तो रास्ते में दूसरी तरफ से श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब मिल गए। एक-दूसरे को देखते ही दोनों एक-दूसरे की तरफ तेजकदमी के साथ बढ़े, जिसका वर्णन "श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" में लिखा है:

घर तों पीर थोर ही चले।
जाइ अगाऊं सतिगुर मिले।

लोक बिलोकति इस लखि पाये।
लेनि गुरु को आगे आये।

साईं मियां मीर जी का आचरण ऊंचा था। लोग उनकी मिसाल न केवल आम लोगों के समक्ष देते थे बल्कि दरवेश लोग भी उनका वर्णन सूफी महफिलों में करते थे।

साईं मियां मीर जी के आदर्शवादी और रहस्यवादी विचारों की पालना के लिए वे अपने मुरीदों और श्रद्धालुओं को कहते थे तथा उनकी पालना वे खुद भी अपने निजी जीवन में पूरी सख्ती के साथ करते थे। वे खुद अपने विचारों का जीता-जागता नमूना थे। उनका पहरावा इस तरह का होता था कि कोई भी नहीं समझ सकता था कि वे दरवेश हैं या कोई साधारण मनुष्य। वे बहुत ही सादा जीवन व्यतीत करते थे। साईं जी का दिल दुनिया और दुनियादारी से बेगाना हो चुका था। वे अमीरों और बादशाहों की जगह गरीबों के साथ रहना ज्यादा पसंद करते थे। मियां जी दरवेशी के रास्ते पर चलने वाले उन दरवेशों को पसंद नहीं करते थे जो दरवेशी के साथ-साथ दुनिया की धन-दौलत को जायज समझते थे।

साईं मियां मीर जी रब्बी याद में इतने वैराग्य भाव में रहते थे कि जीवन के अंतिम दिनों में उनकी आंखों की रोशनी बिलकुल खत्म हो चुकी थी, पर उनकी आत्मिक अवस्था के सामने सब कुछ रोशन था।

मियां जी ने अपने जीवन में केवल सैद्धांतिक पक्ष पर ही नहीं बल्कि व्यवहारिक पक्ष पर भी जोर दिया। उनके अनुसार केवल परमात्मा की बातें करना ही सब कुछ नहीं बल्कि उसकी प्राप्ति के लिये उसके रास्ते पर चलने के लिये भी जोर देते थे। मियां जी जब भी कुछ मांगते तो केवल परमात्मा से ही। उन्होंने अपनी सारी जिंदगी किसी इंसान और बादशाह से कुछ नहीं मांगा था। वे किसी भी व्यक्ति अथवा बादशाह की किसी दी गई भेंट को कभी स्वीकार नहीं करते थे।

साईं मियां मीर जी ने अपना अंतिम समय लाहौर में ही गुजारा। बुढ़ापे के कारण जब वे शारीरिक पक्ष से कमजोर हो गये तो उनको एक जानलेवा बीमारी लग गई जिस कारण वे पांच दिन तक बीमार रहे। मियां जी ११ अगस्त, १६३४ ई को इस फानी जहां को अलविदा कह गये।

आपके मुरीदों ने आपको नमाज-ए-जनाजा (अंतिम अरदास) पढ़ने के बाद वहां दफन कर दिया जहां आपने अपनी इच्छा अपने जीवन में पहले से ही बताई हुई थी। यह जगह लाहौर (पाकिस्तान) से आधा कोस के फासले पर आलमगंज के समीप है। यहां आज भी मियां जी की मजार शांति और इंसानी भाईचारे का पैगाम दे रही है।

सिक्ख गुरु साहिबान के साथ साईं मियां मीर जी का अत्यंत श्रद्धा और प्रेम भरा सम्बंध जुड़ा होने के कारण श्री हरिमंदर साहिब परिसर में स्थित "केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय" और "गुरु रामदास लंगर हाल" में साईं जी की बड़े आकार की तथा सुंदर तसवीरें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से सुशोभित की गईं हैं, ताकि हर आने वाला श्रद्धालु साईं जी की पाक याद को संभाल सके।

सहायक पुस्तकें :

१) पंजाबी दुनीआं (मासिक, पंजाबी) "गुरु अरजन देव विशेष अंक", जून २००६, भाषा विभाग, पटियाला।

२) "साईं मियां मीर जी", लेखक डॉ मुहम्मद हबीब, पंजाबी यूनीवर्सिटी प्रेस, पटियाला।

३) "The Golden Temple," Published by SGPC, Sri Amirtsar.



खालसा मेरो रूप है खास

*-बीबी जसपाल कौर**

दसम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की सृजना करके सन् १६९९ ई को बैसाखी के दिन श्री आनंदपुर साहिब में एक ऐतिहासिक एकत्रता की। आपने धर्म की रक्षार्थ अपने खालसे को और अधिक बलवान, साहसी और जुर्रत के धारक बनाने के लिये, अन्याय व अत्याचारों का मुकाबला करने के लिये अधिक से अधिक संगत को दरबार में बुलाया। सजे हुए दीवन में कृपाण की धार पर पूर्णत: जांच-परख कर खालसा सजाकर उन्हें "पंज प्यारा" नाम दिया। यह अकाल पुरख की महान इच्छा तथा हुक्म था कि ये खालसा सजे पांचों सिंघ जहां समस्त देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये थे वहीं सदियों से चली आ रही जाति-प्रणाली के मद्देनजर विभिन्न जातियों से भी संबंधित थे। खालसा सजने के बाद उनकी कोई जाति न रही बल्कि ये "खालिस" यानि विशुद्ध होकर एक ही रंग में रंग गये।

गुरु जी ने भाई दया राम जी, भाई धरम दास जी, भाई हिम्मत राय जी, भाई मोहकम चंद जी और भाई साहिब चंद जी को खंडे-बाटे का अमृत छकाकर, पांच ककार केश, कड़ा, कंघा, कृपाण, कछहरा धारण करवाकर सिंघ सजाकर और 'सिंघ' संज्ञा उनके नाम के साथ जोड़ने का आदेश देकर अपना एक खास रूप दिया जिससे कि लाखों की संख्या में भी सिंघ को पहचान लिया जाये। पांच प्यारे शूरवीर, त्याग और उत्सर्ग के स्वरूप बन गये। उनके चेहरों पर अद्भुत आभा, होंठों पर मृदु मुस्कान, आंखों में अद्वितीय चमक थी। वे पांचों अकाल पुरख के रूप में ढल चुके थे। शीश पर केसरी दस्तार, लंबे सुरमयी चोले, कमर में केसरी कमर कसे, तेड़ सफेद कछहरे और शरीर पर कृपाण धारण करते हुए भक्ति और शक्ति के पुंज बन गए।

आपने एक-एक सिक्ख को सवा लाख बताकर इन्हें "अकाल पुरख की फौज" नाम दिया। इतना ही नहीं महाबली संत, बादशाह-दरवेश गुरु जी ने खुद अपने हाथ फैलाकर इन पांचों से खंडे-बाटे के अमृत की दात प्राप्त की और *"वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला"* कहलाये। विश्व के इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी गुरु ने अपने शिष्य को अपने जैसा बनाकर माथा टेका हो। इतना ही नहीं गुरु जी ने अपना तन, मन, धन सभी कुछ खालसा जी को समर्पित कर दिया। आपका पावन फरमान था:

जुद्ध जिते इन ही के प्रसादि इन ही के प्रसादि सों दान करे ॥ . . .
इन ही की क्रिपा के सजे हम हैं नहीं मो से गरीब करोर परे ॥ (तितीस सवैये पा: १०)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उपदेश देते हुए पंज प्यारों को कहा कि आज से आप एक अकाल पुरख के पुत्रों के समान भाई-भाई हो। सबका इष्ट एक अकाल पुरख है, टेक संगत की है, परचा शबद-गुरु का है, रहित साबत-सूरत है, मन, वचन, कर्म की निर्मलता है। इस प्रकार गुरु जी ने खालसे को देग-तेग अथवा संत-सिपाही का रुतबा देकर पूरी दुनिया से न्यारा बनाया। गुरमति के अनुसार 'पंज प्यारे'

*२३५, गुरु नानकपुरा, आदर्श नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९४१३४-१८००४

सद्‌गुणों की खान हैं, विकारों से रहित हैं, उनका हृदय विशाल है, समय का सदुपयोग करने वाले हैं, सही समय पर सही निर्णय लेने वाले हैं। गुरु जी ने खालसा को 'किरत करो, नाम जपो और बांट खाओ' का संदेश दिया। गुरु जी ने स्पष्ट किया कि बिना शुभ कर्म के धर्म संभव नहीं हैं। यदि समाज में मिलजुल कर न चलें और एक-दूसरे का ध्यान न रखें तो चारों ओर असामाजिक तत्वों का राज्य हो जायेगा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की साजना करके अपने सिंघों में से मृत्यु का भय निकाल दिया, उनकी रग-रग में अमृत का संचार किया। वास्तव में मृत्यु का भय ही है जो इंसान को कई बार अन्याय सहन किये जाने के लिये विवश करता है और उसकी जद्दोजहद को धीमा करता है। जीते-जी मरने की अवस्था में वही पहुंचते हैं जिन पर गुरु की कृपा होती है। गुरु जी खालसा को महापुरुषों, ईश्वर-भक्तों, शूरवीरों को एक आदर्श उदाहरण बनाना चाहते थे। उन्होंने खालसे को आत्मस्वरूप प्रदान करके गुरु और खालसा में कोई भेद नहीं रहने दिया:

खालसा मेरो रूप है खास।
खालसे में हउं करउं निवास। . . .
खालसा मेरो इस्टि सुहिरद।
खालसा मेरो कहीअत बिरद ॥
हौं खालसे का खालसा मेरो ॥
ओत प्रोत सागर बुंदेरे ॥ (सरब लोह ग्रंथ)

खालसा निर्माण का श्रेय गुरु जी ने अकाल पुरख को देते हुए कहा कि :

खालसा अकाल पुरख की फौज।
प्रगटयो खालसा परमातम की मौज ॥
(सरब लोह ग्रंथ)

निश्चित वेशभूषा को धारण करने वाले खालसा के लिये जो आदर्श नियत किया गया वह इस बात का प्रमाण है कि गुरु जी ने ब्राहय चिन्हों को धारण करने का आदेश देने के साथ-साथ आंतरिक गुणों को भी विकसित करने की प्रेरणा दी है। उनके लिये खालसा कहलाने का अधिकारी वही गुरसिक्ख है जो :

जागति जोति जपै निसि बासुर एकु बिनां मनि नैक न आनै ॥
पूरन प्रेम प्रतीति सजै ब्रत गोर, मढ़ी, मठ भूल न मानै ॥
तीरथ दान दया तप संजम एकु बिनां नहि एक पछानै ॥
पूरन जोति जगै घट मैं तब खालिस ताहिं न खालिस जानै ॥ (तैंतीस सवैये)

बैसाखी पर्व केवल पंजाब में नहीं बल्कि सम्पूर्ण उत्तरी भारत में बड़ी धूमधाम व श्रद्धा से मनाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन के बाद किसान अपने खेतों की फसलों को देखकर झूमता-गाता है, मस्ती में सराबोर होकर गिद्दा-भांगड़ा साकार किया जाता है। सिक्ख पंथ इस पर्व को खालसाई जाहो-जलाल के साथ मनाता है। प्रात: काल से ही नानक नाम-लेवा सिक्ख नित्तनेम, आसा दी वार, सुखमनी साहिब आदि पावन बाणियों का पाठ करके और रागी जत्थों द्वारा कीर्तन करके गुरु-महिमा का गुणगान किया जाता है। इस दिन का ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक महत्व होने के साथ-साथ राजनैतिक महत्व भी है।

आज भारत देश में अत्याचारों का बोलबाला है। देश में जाति-प्रणाली के आधार पर भेदभाव और पक्षपात करते हुए आरक्षण की मांग की जाती है। ऐसे में गुरु जी द्वारा *'मानस की जाति सबै एकै पहचानबो'* का भाव भेदभाव और पक्षपात को विराम लगा सकता है। आवश्यकता है केवल उसी मनोभाव को, उसी स्नेही को, उसी गुरु को अपने दिल में बसाकर, अपने मन पर नियंत्रण करते हुए सभी दुर्व्यसनों से दूर रहने की, जैसी गुरु साहिबान ने पहचान दी थी। 

गुरबाणी चिंतनधारा : ५१

अनंदु साहिब की विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥
हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥
एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ ॥
गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥
कहै नानकु एहि नेत्र अंध से सतिगुरि मिलिऐ दिब द्रिसटि होई ॥३६॥

इस पउड़ी में आंखों को सम्बोधित करते हुए गुरु पातशाह आंखों की सार्थकता समझाते हुए पावन फरमान करते हैं कि हे मेरे नेत्रो! प्रभु ने तुम्हारे अंदर अपनी ज्योति टिकाई हुई है तभी तुम देखने में समर्थ हो सके हो। जिधर भी तुम देखो ईश्वर को ही देखो। ईश्वर के बिना तुम्हें कोई भी दिखाई न दे अर्थात् ऐसा कोई प्रकृति का कण या जीव न हो जिसमें तुम्हें उस परवरदिगार के दीदार न हों।

हे नेत्रो! हरि के बिना कोई और न देखो। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि मैंने अपनी दृष्टि से हर तरफ उस परमेश्वर को देख लिया है। यह सारा संसार जो तुम देखते हो, यह प्रभु का अपना ही रूप है।

गुरु की कृपा द्वारा मैंने यह समझ लिया है कि अब मैं जहां भी देखता हूं मुझे केवल एक अकाल पुरख ही दिखाई देता है, प्रभु के बिना कोई दूसरा नहीं।

श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं कि इंसान की ये सांसारिक आंखें ब्रह्म-ज्ञान के बिना अंधी या अर्थहीन् हैं। अब जब मुझे पूर्ण गुरु का मिलाप हुआ है तो मेरे अंदर समूची मानवता के समस्त जीवों में ब्रह्म को देखने वाली आत्मिक ज्ञान वाली दृष्टि बन गई है। सर्वत्र उस परमेश्वर की ज्योति व्यापक है, जैसा कि पावन गुरबाणी में श्री गुरु नानक देव जी का उपदेश है :

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
(पन्ना १३)

ऐसी अवस्था में समस्त शंकाओं का गुरु-कृपा से निवारण हो जाता है। भक्त कबीर जी की पावन बाणी इसी भाव को दृढ़ करवाती है:

अलहु अलखु न जाई लखिआ गुरि गुडु दीना मीठा ॥
कहि कबीर मेरी संका नासी सरब निरंजनु डीठा ॥ (पन्ना १३५०)

और ऐसी अवस्था गुरु-ज्ञान से ही संभव है, यथा :

गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥ (पन्ना २९३)

गुरु द्वारा बख्शे ज्ञान-सुरमे के बगैर मनुष्य के नेत्र सत्य को नहीं पहचान सकते और सत्य (ईश्वर) की पहचान के बिना ये अंधे

२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३

ही समझो। इस संदर्भ में दूसरे पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी कितनी सटीक है कि जो आंखें परमेश्वर के दर्शन नहीं करतीं वे अंधी हैं, यथा :

अंधे एहि न आखीअनि जिन मुखि लोइण नाहि ॥
अंधे सेई नानका खसमहु घुथे जाहि ॥
(पन्ना ९५४)

जिस पर उस अकाल पुरख की रहमत होती है उसका ही यह मानव-जीवन सार्थक हो सकता है। यह शरीर और ज्ञानेंद्रियां जिस उद्देश्य हेतु परवरदिगार ने बख्शी हैं, गुरु-दर्शाए मार्ग पर चलकर ही इसकी पूर्ति हो सकती है और जीव सहजावस्था में रहता हुआ आनंद की अनुभूति कर सकता है।

ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ॥
साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी ॥
जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥
सचु अलख विडाणी ता की गति कही न जाए ॥
कहै नानकु अंम्रित नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुनणै नो पठाए ॥३७॥ (पन्ना ९२२)

इस पउड़ी में श्री गुरु अमरदास जी कानों को सम्बोधित करते हुए हमारी इस ज्ञान-इंद्री का मुख्य उद्देश्य समझाते हुए पावन फरमान करते हैं कि हे मेरे कानो! सुनो। परमेश्वर ने तुम्हें नाम के श्रवण हेतु भेजा अथवा बनाया है। संसार में तुम्हारे आने का मकसद सत्य स्वरूप ईश्वर की स्तुति सुनना है। तुम्हें ज्ञान-इंद्री के रूप में शरीर पर इसी उद्देश्य से ही लगाया गया है कि तुम सच्ची बाणी का श्रवण करो।

जिस बाणी को सुनकर तन-मन प्रफुल्लित अथवा आनंद भरपूर हो जाता है, जीभ आत्म-रस से भर जाती है अर्थात् रसना आत्म-रस से सराबोर हो जाती है, वह परमेश्वर सदा कायम रहने वाला तथा आश्चर्य-रूप है। उसकी विलक्षणता का संकेत करने वाली कोई पहचान, कोई चक्र-चिन्ह आदि कोई लक्षण नहीं है। यह जानना या बयान करना नामुमकिन है कि वह कैसा है या किस जैसा है। उसकी मर्यादा अकथनीय है। उसके गुणों का अंत नहीं पाया जा सकता।

श्री गुरु अमरदास जी पावन फरमान करते हैं कि हे मेरे कानो! आत्मिक आनंद देने वाला अमृत तुल्य प्रभु का नाम सुना करो जिसकी बदौलत तुम पवित्र हो जाओगे तथा पारब्रह्म परमेश्वर ने तुम्हें संसार में प्रभु-उपमा हेतु ही भेजा है अथवा शरीर पर स्थापित किया है।

वस्तुत: भक्ति के नौ प्रकारों में से श्रवण-भक्ति का भी विशेष महत्व है। जपु जी साहिब की चार पउड़ियों में गुरु नानक पातशाह ने बाणी-श्रवण का महत्व दर्शाया है कि किस तरह पूर्ण निश्चय से प्रभु-नाम सुनने और उसमें सुरति जोड़ने वाले कितनी उच्च अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं।भक्तों के हृदय में सदैव आनंद बना रहता है तथा समस्त दुखों-क्लेशों का नाश हो जाता है, यथा:

सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥
सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥
सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥
सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ (पन्ना ३)

इसलिए गुरु पातशाह ने अनंदु साहिब की इस पउड़ी में कानों को सम्बोधित करते हुए

मार्गदर्शन किया है कि मनुष्य इन कानों से केवल निंदा तथा विकारयुक्त शब्द सुनने में ही अपना समय बर्बाद न करे अपितु हरि-यश श्रवण कर अपना जीवन सफल करे, यथा गुरबाणी-प्रमाण है :

बिखै नाद करन सुणि भीना ॥
हरि जसु सुनत आलसु मनि कीना ॥
(पन्ना ७३८)

अत: ईश्वर के चरणों में विनती करनी चाहिए कि वह हमें निंदा, चुगली आदि विकारों से बचा कर रखे :

मेरे मोहन स्रवनी इह न सुनाए ॥
साकत गीत नाद धुनि गावत बोलत बोल अजाए ॥ *(पन्ना ८२०)*

पावन बाणी का गायन, श्रवण तथा मनन समस्त दुखों-तकलीफों व संतापों से मुक्त कर आनंद की स्थिति में पहुंचाने में सक्षम है, यथा गुरबाणी प्रमाण है :

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥ *(पन्ना २)*
हरि जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥
वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइआ ॥
गुरदुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥
तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस का अंतु न जाई पाइआ ॥
कहै नानकु हरि पिआरै जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥३८॥

प्रस्तुत पउड़ी में गुरु साहिब ने इस शरीर की ज्ञानेन्द्रियों-कर्मेन्द्रियों आदि का जिक्र करते हुए स्पष्ट किया है कि उस परमेश्वर ने दसम द्वार गुप्त रखा है। स्वयं प्रभु ही जीव को गुरु दर्शाए मार्ग पर चला कर दसम द्वार के दर्शन करवा देता है।

गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि परमेश्वर ने शरीर रूपी गुफा में जीवात्मा को स्थापित कर श्वासों द्वारा शरीर को सजीव बनाया क्योंकि प्राणों के बिना यह शरीर निर्जीव है तथा उसमें पवन अथवा शबद का बाजा बजाया। उसे बोलने की समर्थता दी। नाक, कान, आंखें आदि नौ कर्मेन्द्रियां प्रत्यक्ष रूप से बनाकर दसवां द्वार गुप्त रखा।

अकाल पुरख वाहिगुरु ने कई जीवों को गुरु द्वारा ईश्वर के प्रति श्रद्धा-भाव प्रकट कर प्रेमा-भक्ति से प्रभु के दर्शन करने वाला दसवां द्वार प्रत्यक्ष करवा दिया है। यही प्रत्यक्ष दर्शन आत्मिक आनंद का मूल है। उस अवस्था में अर्थात् दसम द्वार में मनुष्य को अनेकों रंगों-रूपों में व्यापक प्रभु का नाम-खजाना भी प्राप्त हो जाता है, जिसका कोई अंत नहीं है।

श्री गुरु अमरदास जी कथन करते हैं कि परमेश्वर ने प्राणों को शरीर-गुफा में टिका कर जीव को बोलने की शक्ति बख्शी है।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु साहिब ने शरीर को गुफा रूप में वर्णित करते हुए जीवात्मा-परमात्मा का अंश-अशी सम्बंध भी दर्शाया है कि किस प्रकार ज्योति-स्वरूप प्रभु ने अपनी ज्योति जीव में स्थापित कर उसे बोलने-सुनने की शक्ति प्रदान की है।

श्री गुरु नानक देव जी ने भी मारू राग में यही भाव दृढ़ करवाया है, यथा :

भीतरि कोट गुफा घर जाई ॥
नउ घर थापे हुकमि रजाई ॥
दसवै पुरखु अलेखु अपारी आपे अलखु लखाइदा ॥
(पन्ना १०३३)

वस्तुत: प्रकट रूप से हमारी ज्ञान एवं

कर्मेन्द्रियां साधारणत: अधम रसों की ओर अग्रसर रहती हैं। उन्हें शबद द्वारा अंतरमुखी होकर ब्रह्म से जोड़ने में ही मानव-जीवन की सार्थकता है। श्री गुरु अमरदास जी माझ राग में इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं :

नउ दर ठाके धावतु रहाए ॥
दसवै निज घरि वासा पाए ॥ (पन्ना १२४)

भक्त कबीर जी तो यहां तक कथन करते हैं :

कहतु कबीर नवै घर मूसे दसवैं ततु समाई ॥
(पन्ना ३३९)

वाहिगुरु की अपार कृपा से ही यह दसवां द्वार प्रकट होता है नहीं तो जीव न जाने कितने जन्मों तक इन्हीं नौ द्वारों के रसों में गलतान हुआ आवागमन के चक्कर में पड़ा रहता है! भाई गुरदास जी इस संदर्भ में उल्लेखनीय कथन करते हैं :

पउणु गुरू गुर सबदु है वाहिगुरू गुर सबदु सुणाइआ। (वार ६:५)

वाहिगुरु रहमत करे, हमारे शरीर रूपी गुफा में बज रहे गुरु-शबद को हम श्रवण कर सकें ताकि हमारा मानव जीवन सार्थक हो जाये।

एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥
गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु धिआवहे ॥
सचो धिआवहि जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना बुझावहे ॥
इहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥
कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि गावहे ॥३९॥

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे भाई! आत्मिक आनंद प्रदान करने वाली परमेश्वर की सिफत-सलाह की बाणी सतिसंगत में बैठ कर गायन करो। इस साधसंगत रूपी सत्य-स्वरूप घर में आत्मिक आनंद प्रदान करने वाली बाणी का कीर्तन करो जहां गुरु के प्यारे सदा कायम रहने वाले परमेश्वर के गुणों का सदैव गायन करते हैं।

सदैव कायम रहने वाले प्रभु का वही जीव सिमरन करते हैं जो उसे प्यारे लगते हैं, अर्थात् प्रभु जिन्हें 'गुरु' द्वारा अपने सिमरन की स्वयं समझ बख्शे। सदा स्थिर प्रभु समस्त जीवों का मालिक है। जिस-जिस प्राणी पर वह कृपा करता है वही-वही जीव तुझे प्राप्त कर लेते हैं।

श्री गुरु अमरदास जी पावन फरमान करते हैं कि आत्मिक आनंद देने वाली पावन बाणी को सतसंग स्वरूप सच्चे घर में बैठकर भाग्यशाली जीव सदैव गायन करते हैं।

बिना श्रेष्ठ भाग्य के सतसंग नसीब नहीं होता और बिना सतसंग के विकारों की मैल उतर नहीं सकती। यही नहीं सतसंगत कैसी होनी चाहिए गुरबाणी में यह भी स्पष्ट है:

सतसंगति कैसी जाणीऐ ॥
जिथै एको नामु वखाणीऐ ॥ (पन्ना ७२)

जहां केवल और केवल एक प्रभु-परमेश्वर की सिफत-सलाह की जाये तथा अकाल पुरख का गुणगान हो वहां हर पल आनंद के निर्झर बहते हैं, लोक-परलोक के सुख वहां विराजमान रहते हैं।

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥
पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥
दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥
संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥
सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥
बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥४०॥

अनंदु साहिब की अंतिम पउड़ी में प्रभु-

प्यार में जुड़े, उसके रंग में रंगे भाग्यशाली जीवों को सम्बोधित करते हुए श्री गुरु अमरदास जी पावन फरमान करते हैं कि "हे भाग्यशाली जीवो! गुरमुखजनो! सदैव कायम रहने वाली 'अनंदु' बाणी श्रवण करो। आनंद प्रदान करने वाली बाणी को सुनने से तुम्हारी सारी मुरादें पूरी हो जायेंगी अर्थात् तुम समस्त मन-इच्छित फल प्राप्त कर लोगे। जिस इंसान ने गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलकर पारब्रह्म परमेश्वर को प्राप्त कर लिया उसकी समस्त चिंताएं मिट जाती हैं। जिसने यह गुरु की सच्ची बाणी श्रवण की है उस मनुष्य के दुख, क्लेश, बीमारियां, समस्त चिंताएं दूर हो जाती हैं।

जिसने पूर्ण गुरु की बाणी के माध्यम से पारब्रह्म परमेश्वर की सर्वव्यापकता का ज्ञान प्राप्त कर लिया ऐसे संत-जन, सतसंगी पुरुष आनंदमयी अवस्था हासिल कर सदैव आनंद-मग्न रहते हैं।

इस आनंद भरपूर बाणी को सुनने वाले पवित्र आत्मा वाले हो गए तथा कथन करने वाले अर्थात् पावन बाणी की कथा-वार्ता करने वाले भी पवित्र जीवन वाले हो गए, क्योंकि इस बाणी में सतिगुरु प्रत्यक्ष रूप से विद्यमान हैं।

आनंद एक आत्मिक अवस्था है जिसे वाहिगुरु की रहमत से और पूर्ण गुरु की अपार कृपा से कोई भाग्यशाली जीव ही प्राप्त कर सकता है। जिसे यह अवस्था नसीब होती है उसके समस्त दुख, क्लेश, चिंता, संताप, शोक, अवसाद मिट जाते हैं। दुख-क्लेश कहां है? गुरबाणी आशयानुसार जहां प्रभु का सिमरन नहीं, जैसे कि गुरबाणी का पावन फरमान है:

बिपति तहा जहा हरि सिमरनु नाही ॥
कोटि अनंद जह हरि गुन गाही ॥
(पन्ना १९७)

करोड़ो विपदाएं, मुसीबतें वहां हैं जहां प्रभु का सिमरन नहीं। जहां परमेश्वर की बाणी का सिमरन है वहां करोड़ों आनंद हैं। इस पावन बाणी को पढ़ने-सुनने वाले पवित्रतम् अवस्था को सहज ही प्राप्त करने में समर्थ हो जाते हैं। वस्तुतः उस परमेश्वर की रहमतों की वर्षा तो हर पल हो रही है, बस, गुरु-कृपा सदका जीव को पात्रता नसीब हो जाए, यथा गुरबाणी-प्रमाण:

झिमि झिमि वरसै अंम्रित धारा ॥
मनु पीवै सुनि सबदु बीचारा ॥
अनद बिनोद करे दिन राती
सदा सदा हरि केला जीउ ॥ (पन्ना १०२)

प्रभु-बख्शिश से जब नाम की दात प्राप्त हो जाती है तब सहज आनंद से हृदय भर जाता है, यथा :

बखसीस वजहु मिलि एकु नाम ॥
सूख सहज आनंद बिस्राम ॥ (पन्ना २१०)

श्री गुरु अमरदास जी ने मानव-जीवन के वास्तविक मनोरथ को समझाते हुए पावन बाणी का सतसंग में बैठकर गायन, श्रवण तथा मनन करने का महत्व समझाया है, जो गुरु की कृपा से ही संभव है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रत्येक जीव को वाहिगुरु के चरणों में नित्य अरदास करनी चाहिए। रहमतों का सागर अकाल पुरख हमारी झोलियां सच्ची खुशियों एवं आनंद से भर देगा और वे अनहद वाजे हमारे अंत:करण में भी बज उठेगें, जैसा कि पावन बाणी "अनंदु साहिब" की अंतिम पंक्ति में दर्शाया गया है :

बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥
(पन्ना ९२२)



दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-३९

उच्च विद्वान व श्रेष्ठ कवि भाई लक्खण राय

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ**

दशमेश पिता के दरबारी कवियों में एक उल्लेखनीय नाम कवि भाई लक्खण राय का भी है। भाई लक्खण राय हिमाचल के प्रसिद्ध शहर ऊना के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम श्री बीक चंद था। इनका एक भाई भी था- भोजराज। भाई लक्खण राय और भाई भोजराज दोनों नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी के श्रद्धालु सिक्ख थे और सदैव गुरु जी की सेवा में रहते थे।

नवम् पातशाह की शहादत के बाद दोनों भाई दशमेश पिता की सेवा में आ गये। भाई लक्खण राय विद्वान-कवि थे और नवम् पातशाह के समय से ही लेखनी-सेवा निभाते आ रहे थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी दशमेश पिता के दरबार में भी आपने अपनी यह विशेष साहित्य-सेवा जारी रखी।

इस प्रकार कवि भाई लक्खण राय दशमेश पिता के दरबारी कवियों में सबसे पुराने और वरिष्ठ कवि सिद्ध होते हैं। कवि ने सन् १६८० ई में 'हितोपदेश' का अनुवाद पूर्ण किया। कवि ने 'हितोपदेश' के मंगलाचरण में ही नवम् पातशाह के प्रति अपनी भक्ति और सेवा का बड़ी विनम्रता से वर्णन किया है :

जो तांकी शरणी पए, जग ते लिए छडाए।
तेग बहादर से गुरु, रहयो तासु गुन गाए।

आगे दशमेश पिता की स्तुति करते हुए कवि भाई लक्खण राय लिखते हैं :

जो प्रानी निस दिन रहहिं, गुर गोबिंद के दास।
जो सुख दुरलभ जगत मैं, सो सुख पावत तास।

कवि लक्खण राय ने 'हितोपदेश' के अलावा महाभारत के कुछ पर्वों का अनुवाद भी किया, परंतु अब यह उपलब्ध नहीं हैं।

कवि भाई लक्खण राय की रचना 'हितोपदेश' मात्र अनुवाद नहीं है अपितु इस काव्य के माध्यम से कवि के कवि-कौशल, विद्वता, आध्यात्मिक एवं सांसारिक ज्ञान तथा नीति-शास्त्र सम्बंधी समझ की गहरी पहचान मिलती है, जैसे कि :

जोबन धन अर संपति, प्रभू अविवेकी जान।
एक एक ते नास है, जहिं चारों तहिं हान।
भावी सब को होत है, भूपति येह कहैं।
हरि सोवत है सरप पर, हर जी नगन रहैं।
एक चक्र रथ न चलहि, दियो यह दृष्टांत।
बिन उदम करम फलै नहि, कहयो राय ब्रितांत।
होछे सों जो प्रीति है, होछी ही मति लेइ।
सम सिऊं सम प्रबीनता, वडा वडाई देइ।

इस प्रकार कवि भाई लक्खण राय न सिर्फ संस्कृत के विद्वान सिद्ध होते हैं बल्कि श्रेष्ठ एवं उच्च कोटि के कवि भी साबित होते हैं। इनकी भाषा ब्रज है परंतु उसमें पंजाबी भाषा के अनेक शब्द घुले-मिले-से हैं।

नवम् पातशाह एवं दशमेश पिता की कृपा प्राप्त करने वाले कवि भाई लक्खण राय दरबारी कवि के रूप में सदैव के लिए अमर हो गये हैं।



**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ०९४१७२-७६२७१*

आओ! स्त्री-पुरुष समानता का मर्म समझने का प्रयास करें

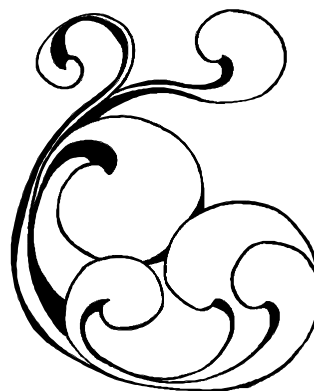
*-श्री प्रशांत अग्रवाल**

सतही समझ रखने वाले अनेक लोग स्त्री-पुरुष समानता का अर्थ प्राय: यह लगा लेते हैं कि स्त्री और पुरुष दोनों ही एक-दूसरे के कार्य-क्षेत्रों में बराबर का दखल रखते हों। ऐसे लोगों की नजर में स्त्री-पुरुष में पाई जाने वाली प्राकृतिक, स्वभावजन्य और मानसिक-शारीरिक विभिन्नताएं कोई विशेष महत्व नहीं रखतीं और यहीं से इनकी विचारधारा का मूल गड़बड़ा जाता है।

वास्तव में 'भेद' और 'भेदभाव' शब्दों में धरती-आसमान का अंतर है और इसी संदर्भ में मानना पड़ेगा कि स्त्री और पुरुष में पर्याप्त भेद है तथा उनका जनहित की दृष्टि से सम्मान करना चाहिए, किन्तु स्त्री-पुरुष में 'छोटे-बड़े' का 'भेदभाव' नहीं रखना चाहिए। 'ममता-वात्सल्य' शब्द आते ही प्राय: माता रूपी स्त्री का ही ध्यान आता है, पिता रूपी पुरुष का नहीं। इसी प्रकार खेती-किसानी शब्दों का प्रयोग प्राय: पुरुषों के ही संदर्भ में होता है, स्त्री संदर्भ में नहीं। इसका यह अर्थ बिलकुल नहीं है कि पिता में ममता-वात्सल्य नहीं होता या महिलाएं खेती-किसानी का काम नहीं कर सकतीं, बल्कि सवाल स्वाभाविक गुणों की प्रधानता का है, उन प्रकृतिप्रदत्त सहज नैसर्गिक गुणों को उसी दिशा में विकसित करने का है। स्त्री-पुरुष दोनों का कल्याण एक-दूसरे से स्पर्धा करने में नहीं बल्कि एक-दूसरे का पूरक बनने में है। देखने में दोनों हाथों की संरचना समान है लेकिन एक हाथ का दसताना दूसरे हाथ में फिट नहीं बैठेगा। ऐसे में दोनों हाथों में भेद होने के बावजूद भी वे स्पर्धा नहीं करते बल्कि एक-दूसरे का सहयोग करते हैं, पूरक बनते हैं।

प्रकृति हमें संकेत देती है, उसकी विविधताओं को विरोधाभासी न मानकर उनमें छिपी परस्पर-पूरकता, चक्रीय क्रमबद्धता को समझना और तदानुकूल आचरण करना हमारा काम है और इसी लिए मनुष्य को विवेक रूपी अनुपम वरदान मिला है। विवेक-बुद्धि को ताक पर रखकर 'समानता-बराबरी' के शोर में अगर हम विविध मिठाइयों का एक-दूसरे में घोलमेल करने लगेंगे तो वह एकरस मिठाई बेस्वाद, एकरंगी और भ्रमित करने वाली बन जायेगी।





*४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली (उ. प्र.)-२४३००३, मो: ०९४११६०७६७२

ख़बरनामा

पंथ रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा इंस्टीचियूट ऑफ ऐडवांस सटड्डीज इन सिक्खइजम का नींव-पत्थर

बहादरगढ़ : १६ मार्च- 'पंथ रत्न जथे: गुरचरन सिंघ टौहड़ा इंस्टीचियूट ऑफ ऐडवांस सटड्डीज इन सिक्खइजम' में शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के प्रबंध अधीन मिशनरी कॉलेजों में से मिशनरी कोर्स पास करने वाले और धार्मिक विषय में बी. ए. पास होनहार विद्यार्थियों को गुरबाणी और सिक्ख इतिहास की उच्च स्तरीय शिक्षा, दूसरे धर्मों की प्रारंभिक जानकारी, कौमांतरी स्तर की विभिन्न भाषाओं की ट्रेनिंग के अतिरिक्त पी. एच. डी. के पैटरन पर गुरबाणी, गुरमति तथा सिक्ख इतिहास की खोज विधि की जानकारी प्रदान की जाएगी। इन विचारों का प्रगटावा शिरोमणि कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने स्थानीय गुरुद्वारा साहिब पातशाही ९वीं में एकत्रित संगतों के विशाल जन-समूह को संबोधन करते हुए किया। उन्होंने बताया कि इस संस्था का मुख्य मिशन मिशनरी कोर्स के विद्यार्थियों को गुरबाणी, सिक्ख इतिहास में परिपक्वता के अतिरिक्त विभिन्न भाषाओं की जानकारी प्रदान करना है इसलिए कि वे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नवीन तथा अनुकूल विधियों के द्वारा सिक्ख धर्म का कुशलता सहित प्रचार कर सकें। उन्होंने कहा कि वास्तव में यह संस्था एक धार्मिक यूनीवर्सिटी का काम करेगी। इस संस्था के कार्य क्षेत्र का विवरण देते हुए उन्होंने बताया कि गुरबाणी और सिक्ख इतिहास की पढाई और सिखलाई के अतिरिक्त शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के प्रबंध अधीन चल रहे मिशनरी कॉलेजों के सिलेबस तैयार करने, परीक्षाएं लेने, धर्म प्रचार कमेटी द्वारा विभिन्न स्कूलों-कॉलेजों में ली जाने वाली धार्मिक परीक्षा लेने के लिए, विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र जारी करने और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की कल्याणकारी विचारधारा और सिक्ख धर्म की विलक्षणता को विश्व भर में पहुंचाने हेतु 'सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स' का काम भी यहां में किया जाएगा। खोज कार्यों में 'सिक्ख स्रोत ऐतिहासिक संपादना प्रोजेक्ट' भी इस संस्था का एक अहम हिस्सा होगा, जिसमें अब तन महाकवि भाई संतोख सिंघ कृत 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' की मुकम्मल ऐडिटिंग और ब्रज भाषा से सरल पंजाबी भाषा में अनुवाद करने का कार्य सफलतापूर्वक चल रहा है। उन्होंने और बताया कि प्राईवेट संस्थाओं की तरफ से खोले मिशनरी कॉलेजों को इस संस्था की ओर से मान्यता प्रदान करने के लिए परीक्षा लेने और प्रमाण पत्र जारी करने का कार्य भी किया जाएगा। उन्होंने बताया कि राजपुरा-पटियाला रोड पर १० एकड़ में बनने वाली इस आधुनिक प्रकार की इमारत पर १२ करोड़ रुपये व्यय होने का अनुमान है और यह इमारत दो वर्ष में मुकम्मल हो जाएगी और फिलहाल इस संस्था की आरंभता गुरुद्वारा साहिब की सराय की तीसरी मंजिल पर की जा रही है और इस संस्था की नव-नियुक्त डाइरेक्टर डॉ. राजिंदर कौर ने भी अपना कार्यभार संभाल लिया है।

श्री गुरु हरिराय साहिब जी के गुरतागद्दी दिवस को समर्पित संगत ने बड़ी गिनती में पौधे लगाये

अमृतसर : १४ मार्च- सातवें पातशाह साहिब श्री गुरु हरिराय साहिब जी के गुरतागद्दी दिवस

को समर्पित सिक्ख संगतें बड़ी गिनती में गुरुद्वारा साहिबान में नतमस्तक हुईं और अपने चौगिर्दे में पौधे लगाये। श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य प्रवेश द्वार के नजदीक श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ तथा शिरोमणि कमेटी के मैंबर स. जसविंदर सिंघ ऐडवोकेट ने संगतों को फलदार तथा छायादार पौधे बांटे। इस अवसर पर पत्रकारों के साथ बातचीत करते हुए सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने कहा कि कुदरती ढंग से क्रियाशील संतुलित वातावरण ही मानव-जीवन के लिए अच्छा रहने योग्य स्थान होता है। विकास की तीव्र गति, विज्ञान और तकनालोजी की आमद ने वातावरण के कुदरती स्रोतों को बहुत बड़ी पछाड़ लगाई है जो समूचे संसार के लिए चिंता का विषय है, परंतु गुरु साहिबान ने अपने जीवन-काल में स्वयं सुंदर बाग-बगीचे लगाये और वातावरण को सुंदर बनाने के लिए संगतों को प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि गुरबाणी के फरमान "पवण गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥" अनुसार हवा, पानी एवं वातावरण को शुद्ध रखना मानव का परम धर्म है। उन्होंने कहा कि गुरु साहिब की ओर से दर्शाये मार्ग पर चलते हुए वातावरण की संभाल भी यकीनी बनाई जाए। पौधे प्राप्त करने, लगाने के लिए संगतों में भारी उतसाह था। इसी दौरान शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने गुरु नानक कॉलेज मुक्तसर में पौधे लगाये और कॉलेज की सालाना कानवोकेशन के दौरान छात्रों को डिगरियों के साथ-साथ पौधे भी दिये गए। इन छात्रों ने ये पौधे अपने हाथों से लगाने और इन की संभाल करने का प्रण किया। श्री गुरु हरिराय साहिब के गुरतागद्दी पर्व पर शिरोमणि कमेटी की ओर से अपने प्रबंध अधीन समूह गुरुद्वारा साहिबान में और गुरुद्वारा कमेटियों के प्रबंधकों, अलग-अलग शिक्षण संस्थानों, धार्मिक संगठनों/जत्थेबंदियों के सहयोग से पौधे बांटने का बड़ा प्रबंध किया गया था। संगतों ने बहुत उत्साह के साथ अपने चौगिर्दे में अनुकूल स्थानों पर पौधे लगाये।

विदेशों में सिक्खों पर नस्ली आक्रमण चिंताजनक

अमृतसर: ८ मार्च- शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने गत दिन अमेरिका के कैलीफोरनिया प्रांत के शहर सैकाटामैंटों में नफरत तथा हिंसा के विषय में एक सिक्ख का कत्ल किये जाने की घटना पर चिंता का प्रगटावा करते हुए भारत के प्रधानमंत्री को अपील की है कि विदेशों में बस रहे सिक्खों की सुरक्षा के लिए नेक प्रयास करें। यहां से जारी प्रेस रिलीज में जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि सिक्ख जिस भी देश में बसे अपने परिश्रमी तथा उद्यमी स्वभाव के सदका उन्होंने वहां की प्रगति में बड़ा योगदान ही नहीं डाला बल्कि ऊंचे एवं निर्मल आचरण का सदका अपने विलक्षण तथा न्यारे अस्तित्व को स्थापित किया है, परंतु दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि विदेशों में सिक्ख नस्ली आक्रमणों का शिकार हो रहे हैं जो बहुत ही दुखदायक और चिंता का विषय है। उन्होंने अपील की कि ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए डिपलोमैटिक चैनलों द्वारा प्रभावकारी ढंग के साथ विदेशी सरकारों पर दबाव डालें।



प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०४-२०११